तूफान-यात्रा

[बिहार में विनोबा की ग्रामदान
तूफान-यात्रा की झाँकी]

०

सुरेश राम

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

प्रकाशक	:	मन्त्री, सर्व सेवा संघ,
		राजघाट, वाराणसी
संस्करण	:	पहला
प्रतियाँ	:	२,०००; नवम्बर, १९६६
मुद्रक	:	ओमप्रकाश कपूर,
		ज्ञानम
		वारा
मूल्य	:	तीन

Title	:	TOOFAN YATRA
Author	:	Suresh Ram
Subject		Gramdan
Publisher		Secretary,
		Sarva Seva Sangh,
		Rajghat, Varanasi
Edition		First
Copies		2,000; November, '66
Price		Rs. Three.

ग्रामदान तूफ़ान-यात्रा-टोली

के

साथियों को सस्नेह

समर्पित

दो शब्द

"आपके सामने पशु बनकर आया हूँ और काम है ग्रामदान गिरि लाँघने का। अब भगवान् का आश्वासन है भक्त के लिए 'पङ्गुम् लङ्घयते गिरिम्'। तो आप सब लोगों की सामूहिक इच्छा शक्ति भगवान् का मूर्तस्वरूप है। उस इच्छाशक्ति के बल से ग्रामदान गिरि लघम् पशु के न द्वारा आप करायगे।"—इन शब्दों के साथ विनोबा ने ११ सितम्बर, १९६५ को पटना से अपनी तूफान-यात्रा शुरू की। सच पूछा जाय तो इसका आरम्भ २३ अगस्त को ही हो गया, जब वे परधाम आश्रम से निकले। यात्रा चली २० दिसम्बर १९६५ तक। आगे उत्कल जानेवाले थे, लेकिन तबीयत ने साथ नहीं दिया और जमशेदपुर में ही रुक गये।

यह यात्रा अपने ढग की अनोखी थी। मोटर पर थी, लेकिन रूप रग पैदल का। पदयात्रा में विनोबा के साथ जो रहे हैं, वे जानते है कि चलने की कोई थकान नहीं आती। ऐसा लगता था, मानो किसीने दस-बारह मील उठाकर पहुँचा दिया हो। वही इस बार भी हुआ, सिर्फ फासला चौगुने के लगभग था। लेकिन एक घाटा रहता था—चलते समय जैसा विनोबा से बात करने-सुनने का मजा नहीं था। फायदा भी था—अन्त मुख रहना पडता, प्रकृति की छटा देखने को मिलती और जनमानस को समझने का मौका भी। इस यात्रा ने एक चेतना पैदा की है और क्रातिकारियो की सेना खडी कर दी है—या कहना चाहिए कि सोते हुए सिपाहियों को जगा दिया और अपने कर्तव्य का भान कराया। सब समझ गये हैं कि बिना ग्रामदान तूफान के कोई कहीं का नहीं रहेगा। दुनिया के आगे

एक बार फिरसे स्पष्ट हो गया कि भूमि के मसले को हल किये बिना भारत का सारा नियोजन डूब जायगा। बिहार निष्ठा के साथ इस चुनौती का जवाब पेश कर रहा है और ग्रामदान से प्रखण्डदान पर आ चुकने के बाद अनुमण्डल-दान और जिले-दान की तरफ बढ़कर बिहार-दान की राह खोल रहा है। और जो मंजिल आज बिहार तय कर लेगा, कल उस तक सारे देश के लिए पहुँचना आसान हो जायगा।

मेरी कल्पना भी इस यात्रा मे रहने की नहीं थी। लेकिन मित्रों का प्रेमभरा अनुरोध हुआ और मैं शरीक हो गया। फिर, बिहार तो मेरी पाठशाला या दीक्षा-भूमि है, जहाँ सन् १९५३ से ही स्वर्गीय श्री लक्ष्मी बाबू के प्यारभरे हुक्म पर, मैं आता रहा हूँ। दैवयोग है कि यह दो शब्द भी पटना में ही लिख रहा हूँ। यहाँ आन्दोलन के क ख ग का परिचय हुआ और क्राति के अनेक पहलुओ का अध्ययन करने का अवसर भी मिलता रहा।

मेरे लिए यह सारी यात्रा एक पावन प्रसंग है। साथियों ने बड़े स्नेह से मुझे सँभाला। श्री महादेवी ताई प्रायः भोजन के लिए पूछ लिया करती थीं भाई जयदेव और बाळ जगह खाली रखते, ताकि देर से पहुँचने पर भी पंगत में गुंजाइश बनी रहे। चाळीगाई से रात को सवा आठ बजे आकाशवाणी से समाचार सुनने को मिल जाता। कालिंदी बहन से बाबा के प्रवचन का साराश जब जरूरत हो, मिल जाता। रामनन्दन बाबू यह खयाल रखते कि निवास की ठीक व्यवस्था हो गयी है या नहीं। ब्रजेश्वर बाबू को फिकर रहती कि बाबा के पीछे चलनेवाली जीप में मुझे आराम से जगह मिल जाय। काशी के अपने त्रिभुवन भाई टाइप करने को सदा मुस्तैद रहते। रेफरेन्स के लिए कोई किताब चाहिए तो सर्वोदय प्रकाशन समिति की दूकान से सुरेन्द्रजी तुरत दे देते। किसी कोने में डाकखाना क्यों न हो, ड्राइवर रघुनाथ वहाँ मुझे ले जाते और डेरे पर वापस लिवा लाते। देशभर में तूफान की गति-

विधि की जानकारी कृष्णराज भाई से मिला करती। इस तरह सब साथियों की सहृदयता और उदारता का मुझे लाभ मिलता रहा, जिसकी वजह से तूफान-यात्रा की यह झाँकी पाठकों के सामने पेश करना सम्भव हो रहा है। इन्हीं साथियों को यह पुस्तक विनम्र भाव से समर्पित है।

पटना
३० अगस्त १९६६

—सुरेश राम

अनुक्रम

●

प्रधान मन्त्री स्व० लाल बहादुर शास्त्री
के साथ वार्तालाप करते हुए।
जमशेदपुर १९-१२-'६५.

टाटा कंपनी के संचालक
श्री जे० आर० डी० टाटा बाबा के
पास बैठे दिखाई दे रहे हैं।

पवनार से बिहार की ओर : १ :

महाराष्ट्र के दक्षिणी पूर्वी भाग के (जिसका नाम विदर्भ है, और जो पहले पुराने मध्यप्रदेश मे सम्मिलित था) दो जिलों का (अकोला और यवतमाल का, जहाँ लगभग पाँच सप्ताह में ढाई सौ ग्रामदान हुए) अपना दौरा पूरा करने के बाद विनोबा २३ अगस्त को ब्रह्मविद्या-मन्दिर, परधाम आश्रम, पवनार वापस आये और दूसरे दिन ही वहाँ से बिहार की यात्रा पर निकल पडे।

परधाम-आश्रम के सभी भाई बहन गद्‌गद थे। चेहरे पर सौम्यता थी। जहाँ बाबा के आने का आनन्द था, वहाँ दूसरे दिन उनके विदा होने का विषाद भी झलक रहा था। वातावरण में गम्भीरता थी और सभी अपने अपने काम मे लगे थे।

साढे नौ बजे घंटी लगी। ज्ञान भवन (लाल बंगले) मे सब जमा हो गये।

बाबा ने कहना शुरू किया "अभी मैं यहाँ आया। स्नान के बाद शरीर का तौल लिया गया, तो कोई खास फर्क नही निकला। लेकिन इससे आगे शरीर का कोई सवाल नहीं है। इसको अलग रखकर ही हम निकल रहे हैं।"

फिर कहा: "एक प्रेरणा है और उसम शरीर की कोई हस्ती नहीं है। अगर उसकी चिन्ता करनी है, तो यात्रा का आरम्भ नहीं करना चाहिए।"

अनेक ने आँख मूँद लीं, कुछ के आँसू ढल आये।

बाबा को प्रभु ईसामसीह की याद हो आयी—उनके अन्तिम समय की। अपने शिष्यों से उन्होंने कहा था कि "एक-दूसरे से प्यार करो और

इस तरह प्यार करो, जैसे मैं तुमसे करता हूँ।" और ईसा ने कैसा प्यार दिया ! शिष्यों के लिए, मित्रों के लिए अपना बलिदान कर दिया।

इसका स्मरण दिलाते हुए बाबा बोले : "बापू ने ठीक वैसा ही किया, जैसा ईसामसीह ने किया था।...कश्मीर के बारे में सन् १९४७ का स्मरण हुआ। वह स्मरण तो भूला नहीं। लेकिन उस खबर ने याद दिला दी कि सचमुच अपने देश की, दुनिया की, आज कैसी स्थिति है। बड़ी कशमकश चल रही है। शीत युद्ध है, गरम शान्ति है।"

फिर बाबा ने कहा :

"ऐसी हालत में अपना यह भाग्य होना चाहिए कि भगवान् हमें बलिदान का मौका दे।"

यह सुनकर मानो सारे ब्रह्म-विद्या-मन्दिर पर सन्नाटा छा गया। बलिदान ! बलिदान ! ! बलिदान ! ! !

* * *

अब क्या कहना बाकी रहा ! फिर भी, बाबा ने सूचनास्वरूप कुछ निर्देश दिये : "अब यहाँ मानव-प्रतिमा की प्रतिष्ठा नहीं होनी चाहिए और न कोई चित्र ही रखे जाने चाहिए। यहाँ रहनेवालों को कोई आसक्ति न रहे। भक्ति रहेगी, व्यापक प्रेम रहेगा। अब इस स्थान को आन्दोलन का पॉवर हाउस बनाना चाहिए।"

कार्यक्रम के सिलसिले में कहा कि "श्रम का, मजदूरी का काम चले। जीवन का आधार श्रम-निष्ठा हो, श्रम हो।" तीन कसौटियाँ बतलायीं : "जिन चीजों का हम इस्तेमाल करें, उनके बारे में सोचें कि १. क्या वे हाथ से बनती हैं, २. क्या देहात में बनती हैं और ३. क्या वे पूरी मजदूरी देकर बनवायी जाती हैं। यहाँ अध्ययन जरूर चले, लेकिन जीवन में इसकी कोई वासना न रहे।"

इसके बाद बाबा बोले : "अन्त में एक बात और। यहाँ ब्रह्म-विद्या-मन्दिर में भी बल्लभस्वामी की समाधि बनायी गयी है। मेरा बड़ा भाग्य रहा है कि सज्जनों की संगति मुझे बहुत मिली है। मेरा ख्याल है कि

सज्जन-संगति की होड लगायी जाय, तो दावा कर सकता हूँ कि मुझे उसमें काफी ऊँचा स्थान मिलेगा। उनके नाम क्या गिनाऊँ? लेकिन तीन पीढी के तीन नाम मैं भूल नहीं सकता। मेरी माँ तो मेरे साथ हमेशा रहती ही है, उसे छोडे देता हूँ। तो मेरी पहली पीढी से गाधीजी, मेरे बराबरीवाली पीढी से किशोरलालभाई और मेरे पीछेवाली पीढी से वल्लभस्वामी। इन तीनों का स्मरण मुझे हमेशा रहा करता है। हरएक की शक्ति अलग-अलग थी। तीनों नम्र थे, निरहकार थे। मैं कह रहा था कि वल्लभस्वामी की समाधि यहाँ ब्रह्म विद्या-मन्दिर में है। इसके आगे अब और कोई समाधि यहाँ नहीं बननी है और यही सर्व-समाधि मानी जाय। यहाँ महीने मे एक बार सब लोग मिलते रहें, मिल-मिलन होता रहे।"

* * *

करीब ११ बजे बिहार के कार्यक्रम के सम्बन्ध मे बात करने के लिए श्री वैद्यनाथबाबू बाबा से मिले। साथ में श्री सिद्धराजभाई और कृष्णराजजी भी थे। वैद्यनाथबाबू ने बाबा को तीन महीने की यात्रा का कार्यक्रम दिखाया। कृष्णराजजी ने पटना में तीन दिन, ग्यारह, बारह, तेरह सितम्बर को, जो करने का सोचा है, उसकी जानकारी दी। यह भी बताया कि बिहार के मुख्यमन्त्री श्री कृष्णवल्लभ सहायजी ने अनुकूलता दिखलायी है और स्वागत-समिति के अध्यक्ष भी वे ही हैं। भिन्न-भिन्न जिलों में जो काम हो रहा है, उसकी भी झाँकी दी।

सबकी सहानुभूति ले

बाबा ने इन सब बातों से बडा सतोष प्रकट किया और फिर कहा कि "राजा रामगढ से भी मिलना चाहिए। उनसे हमने अपेक्षाएँ रखी हैं। सुलभ ग्रामदान का विचार उन्हें पसन्द आयेगा। वे 'पेजेण्ट प्रोप्राइ-टरशिप' यानी कृपक स्वामित्व के माननेवाले है। सुलभ ग्रामदान मे वह चीज है। बेचने के हक के अलावा बाकी सब हक सुरक्षित हैं। ग्रामसभा के नाम मालकियत होने से किसान की खेती के लिए खतरा

नहीं, बल्कि रक्षा है। अगर यह उनके ध्यान में आ जाय तो वे जोरों से शामिल हो सकते हैं। उनका हमारे साथ प्रेम जुड़ जाय तो बड़ी तादाद में ग्रामदान हो सकते हैं। इस दृष्टि से उनसे मिलना चाहिए। अगर वे सुलभ ग्रामदान को मान्यता देते हैं, और जाहिर करते हैं कि मुझे यह पसन्द है, तो काम बढ़ेगा। बिहार में जितनी ताकतें हैं, उन सबकी सहानुभूति प्राप्त करने की बात है।"

बिहार से आशा

इसके बाद वैद्यनाथबाबू ने यात्रा के बारे में सुझाव माँगे। बाबा ने जवाब दिया : "सुझाव क्या, हम तो फीस चाहते हैं। एक हजार ग्रामदान की चिंता हमें नहीं है। चिंता है, बचे नौ हजार की। जयप्रकाशजी और आप सब जुटे ही हैं। इस एक हजार को शुभारम्भ मानना चाहिए। आपके यहाँ खादी का काम तेरह हजार गाँवों में फैला है। इसलिए तेरह हजार तो मिलने ही चाहिए। फिर दूसरे भी। बिहार का चुनाव करते समय कई कारणों में मेरे मन में एक कारण यह भी रहा कि यहाँ खादी का काम जोरदार है।"

बिहार के प्रति पूरा भरोसा जाहिर करते हुए बाबा ने कहा कि : "मुझे यहाँ हर जिले में शक्यता दीखती है। पूर्णिया जिला है। वहाँ पूर्ण काम हो। उसका असर बंगाल पर पड़ेगा, पाकिस्तान पर भी पड़ेगा। चम्पारन जिले में जमीन की कीमत ज्यादा है, लेकिन आबादी बहुत घनी है। वहाँ ग्रामदान खूब होने चाहिए, क्योंकि ग्रामसभा के पास जमीन आ जाने में सबकी हिफाजत है। पंचायतें इस काम को उठा लें। और, सारन जिला, यह तो अपने राजेन्द्रबाबू और जयप्रकाशबाबू का जिला है।"

यात्रा के कार्यक्रम के बारे में बाबा ने बताया कि "दो-दो, तीन-तीन महीनों का कार्यक्रम बनाकर अपने को बाँधना नहीं चाहिए। शान्ति में तो जनरल ही तय करता है कि अब इस मोर्चे पर डटे रहना है या

फौरन् निकलना है। पहले से ही तीन महीनों का बँधा रहे, तो वह रूटीन बन जाता है।"

साहित्य का भी तूफान खड़ा हो

साहित्य प्रचार के सम्बन्ध में बाबा ने कहा : "इस वक्त बिहार हमारा मुख्य फ्रंट है। वहाँ गाँव गाँव में साहित्य पहुँचाना चाहिए। बिहार जरा कमजोर है, साहित्य के बारे में। तो, इस पर ध्यान दिया जाय कि घर घर विचार कैसे पहुँचे। हर गाँव में शान्ति सेना खड़ी हो। खादी तो साथ साथ होगी ही।"

इसके बाद कहा "ग्रामदान के तूफान के साथ साहित्य का भी तूफान होना चाहिए। गाँव में कम-से कम एक ग्राहक हो। फिर उसके पढ़े जाने की भी योजना हो। इस समय एक पत्रिका काशी से निकलती है, एक पटना से। आप उचित समझें तो अखबार आज का डेढगुना हो जाय और दोनों एक हो जायँ। सम्मिलित कर लें और हर गाँव मे पहुँचाने की योजना बनाये।"

इतनी देर मे परधाम आश्रम की भोजन की घंटी बज गयी। बाबा ने कहा : "घंटी हो चुकी, यह 'एडमिनिस्ट्रेटिव प्रोपोजल' यानी व्यवस्था सम्बन्धी प्रस्ताव है।"

यह सुनकर हम सब हँस पडे और घंटी का हुक्म पूरा करने उठ खड़े हुए।

* * *

महायात्रा पर

शाम को वर्धा मे आम सभा हुई। उसमें बोलते हुए बाबा ने कहा . "बिहार में ग्रामदान का तूफान होगा। लेकिन वर्धावालों से अपेक्षा है कि आप यहाँ प्रयत्न करें। यहाँ अनेक कार्यकर्ता हैं, अनेक संस्थाएँ हैं। जब हम जेल में थे तो अंग्रेज सरकार ने सब संस्थाओं पर ताले लगा दिये थे। अब आप अपनी तरफ से वैसा करें और ग्रामदान के लिए निकल पड़ें।

वर्धा भारत का मध्यवर्ती स्थान है। सर्वोदय-विचार की राजधानी है। दिल्ली गौण है, वर्धा प्रधान।"

आखिर में विदा लेते हुए कहा : "कल सबेरे हम बिहार के लिए महायात्रा पर निकलेंगे। अपने हिन्दुस्तान में साठ बरस की उमर में पासपोर्ट मिल जाता है। बाबा को भी पासपोर्ट मिल ही चुका है। वीसा बाकी है। महत्त्व का प्रश्न यह नहीं है कि मैं यहाँ वापस आऊँ, बल्कि यह है कि वर्धा जिला सर्वोदय-जिला बने। आप कोशिश करें, प्रयोग करें। मैं परलोक गया, तब भी आप सबसे भेंट होती रहेगी।"

* * *

दूसरे दिन मंगलवार, २४ अगस्त को भरत-राम-मन्दिर में दर्शन करने के बाद बाबा निकल पड़े। ठीक ६ बजे थे। पवनार नदी के जल की मधुर कल-कल ध्वनि आ रही थी। आकाश पर बादल छाये हुए थे। कल ही डेढ़ महीने बाद वर्धा में पानी बरसा था और जोरदार बिजली चमकी थी। लेकिन पूर्व में अचानक पौ फटी और सूरज के दर्शन हुए।

महायात्रा शुरू हो गयी—पूर्व की ओर, बिहार की ओर, तूफान की ओर। ०

महाराष्ट्र से विदा : २ :

"हमारी गरज यह नहीं है कि सरकार हमारी मदद करे। बल्कि यह है कि सरकार का रग बदले, सारी प्लानिंग का रग बदले। आज जिनके हाथ में हमारा नियोजन है, उनकी बुद्धि टिकाने पर नहीं। वे हतप्रभ से दीखते हैं। प्लानिंग-कमीशन में घबराहट नजर आती है। सारे देश में डाँवाडोल स्थिति है। मुझे लगता है कि अगर हमने स्थिर बुद्धि और निर्वैर तथा अक्षुब्ध चित्त से काम नहीं किया तो आजादी ही गँवा देंगे।"

बाबा मराठी मे बोल रहे थे और महाराष्ट्र के लगभग ढाई सौ कार्यकर्ता और सर्वोदय प्रेमी मन्त्रमुग्ध हो सुन रहे थे। सबके चेहरे पर खुशी और आत्मविश्वास की झलक थी। जुलाई और अगस्त में लगभग ६ हफ्ते के अन्दर उन्होंने २४२ ग्रामदान प्राप्त किये थे। सवा सौ अकोला जिले मे और अस्सी यवतमाल में और बाकी चाँदा, नागपुर व अमरावती जिलों में। यह वह इलाका है, जो बहुत ही उपजाऊ माना जाता है और जहाँ कपास की बेहतरीन खेती होती है। जब बाबा को बिहारवालों ने ११ सितबर को बुलाने का तय किया, तो महाराष्ट्र के मित्रों ने उनके समय का उपयोग कर लेने की ठान ली। इस प्रकार बिहार के लिए निकलने के पहले बाबा की यात्रा सवा महीने तक महाराष्ट्र में चली।

लोभ और दान

इस क्षेत्र के लिए निकलने पर महाराष्ट्र के एक वरिष्ठ सज्जन से बाबा की भेंट हुई। उनको जब पता चला कि बाबा बरार जानेवाले हैं तो उन्होंने कहा · "अगर आपको ग्रामदान चाहिए तो बालाघाट आदि जिले ज्यादा ठीक रहेंगे, लेकिन हमारे बरार मे तो जमीन बहुत महँगी भी है और वहाँ जमीन का लोभ भी ज्यादा है।" बाबा ने जवाब दिया :

"बालाघाटवाली बात तो ठीक है, लेकिन जिस दृष्टि से आप यह कहते हैं कि बरार में ग्रामदान नहीं मिलेंगे, उस दृष्टि से मुझे लगता है कि वहाँ ग्रामदान खूब मिलने चाहिए। क्योंकि जहाँ लोभ की वासना ज्यादा है, वहाँ दान की और भी ज्यादा जरूरत है। लोभ का दान से निराकरण होता है।"

बाबा की बात पक्की साबित हुई और महाराष्ट्र के मित्रों को बड़ा उत्साह है कि जब अकोला और यवतमाल जैसे इलाकों में हमें ग्रामदान मिल सकते हैं, तो सारे प्रदेश में अब कहीं रुकावट नहीं होगी। महाराष्ट्र के साथियों को बधाई है कि उन्होंने बड़े-बड़े गाँव ग्रामदान में पाये। तीन-चार हजार की आबादीवाले तो कई गाँव मिले, लेकिन एक गाँव ऐसा भी मिला, जिसकी आबादी १० हजार के लगभग है और जिसे महाराष्ट्र का ही नहीं, सारे देश का सबसे बड़ा ग्रामदान मानना चाहिए। अकोला जिले के ही 'मानोरा' नाम के एक ब्लाक के निवासियों की तरफ से बाबा को आश्वासन दिया गया कि हम पूरे ब्लाक का ग्रामदान करेंगे। उनको यह विश्वास हो गया है कि ग्रामदान से जमीन सुरक्षित हो जाती है और गाँव से बाहर जाने का उसका कोई खतरा नहीं रहता। लोगों में जितना रिस्पांस, दायित्व बढ़ता है, उतना ही साथियों का विश्वास भी निखरता जाता है। फिर इसमें बाबा की प्रेरणा और भी जान डाल देती है।

यवतमाल जिले के 'कलम्ब' गाँव की बात है। १६ अगस्त को बाबा ने पूछा कि "२३ ता० को जब हम पवनार पहुँचेंगे तो किस रास्ते से जाना होगा?" बताया गया कि यवतमाल होकर, और थोड़े फेर के साथ। उन्होंने कहा कि "फेर से जाने की जरूरत नहीं है। सीधे रास्ते से चलो और यहाँ कलम्ब पड़ता है, जिसका ग्रामदान होना चाहिए।" साथी लोग बोले कि "वह तो बड़ा कड़ा गाँव है और वहाँ से कुछ आशा नहीं है।" बाबा ने उनको इतमीनान दिलाया कि "विश्वास के साथ जाइये और फिर आप देखिये कि ग्रामदान मिलेगा।" मित्र गये

और स्नेह के साथ सदेश घर-घर पहुँचाना शुरू किया। लगभग ६ हजार आबादी का गाँव। एक के बाद एक घर के लोग दस्तखत करने लगे और ग्रामदान हो गया। बाद मे बाबा ने बताया कि "यह गाँव लगभग ९ हजार साल पुराना है और यहाँ गृत्समद नाम के ऋषि रहते थे, जिन्होंने कपास की खेती का आविष्कार किया था। बहुत भारी विद्वान् थे और यह ग्रामदान मिलना उनका महान् आशीर्वाद है।"

* * *

२३ अगस्त को जब बाबा पवनार पहुँचे तो रास्ते में दत्तपुर कुष्ठधाम ठहरे। वहाँ कुष्ठ-सेवा के प्राण महात्मा मनोहर दीवाण मौजूद थे। अब इस केन्द्र को डॉ० रविशकर शर्मा देख रहे हैं और इस सस्था का सचालन श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे की देखरेख में होता है। बाबा का स्वागत करते हुए अण्णासाहब ने सवाल पूछा कि "सस्थाओं के लिए कार्यकर्ता मिलते नहीं और जो मिलते हैं, वे ज्यादा अरसे तक टिकते नही। तो क्या हमारे कार्यकर्ता में दोष है या हमारी परपरा में कोई बात है या हमारी ओर से कोई कमी है, जिसकी वजह से आगे काम नहीं बढता ?"

सुनकर बाबा ने कहा : "एक ऋषि थे। जब वे महाराज युधिष्ठिर के आश्रम में गये तो हाल-चाल पूछने लगे। पता चला कि पाण्डवों को दुख था कि द्रौपदी को बहुत कष्टों का सामना करना पडा। इस पर ऋषि ने कहा कि द्रौपदी ने जितने कष्ट उठाये, उससे कहीं ज्यादा सीता को उठाने पड़े थे। तो युधिष्ठिर महाराज ने प्रार्थना की कि जरा सीता की कथा सुनायें। अब यह नामुमकिन था कि महाराज युधिष्ठिर को सीता की कथा मालूम न हो। लेकिन जब ऋषि आया है तो उसके मुख से कुछ सुनना ही चाहिए।" यह हवाला देकर बाबा बोले : "पिछले पचीस-तीस साल में अण्णा ने जितने कार्यकर्ता पैदा किये हैं, उतने शायद ही किसीने किये हों। फिर भी वे पूछते हैं तो कुछ कहना चाहिए, इसलिए कहना पडता है।"

प्रेम और ज्ञान का संयोग हो

बाबा ने कहा कि "पुत्र बनते हैं प्रेम से, शिष्य बनते हैं ज्ञान से और कार्यकर्ता बनते हैं ज्ञान और प्रेम दोनों से। आज मुश्किल यह है कि हम न पूरा प्रेम कर पाते हैं और न पूरा ज्ञान दे पाते हैं। प्रेम के अभाव में दिल से दिल जुड़ता नहीं, ज्ञान के अभाव में दिमाग खोखला रह जाता है। हमें दोनों की उपासना करनी होगी और दोनों, ज्ञान और प्रेम के संयोग से, मुश्किल दूर होगी।"

संस्था चलानेवालों के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए बाबा ने कहा कि "मुझे उनके प्रति बहुत आदर है। मुझे तो रात को पूरी नींद चाहिए। मेरे जैसी हालत महाराष्ट्र में एक आदमी की थी—साने गुरुजी की। उन्होंने मुझे एक चिट्ठी भेजी, जिसमें इस आशय का मराठी पद्य था :

हृदय से सेवा, वचन से सेवा।

लेकिन सेवा हाथ में उतरती नहीं, क्या करूँ देवा।

इसके जवाब में मैंने साने गुरुजी को जवाब लिखा कि हाथों से थोड़ा-बहुत जो भी काम हो जाय, वह सब महात्मा गांधी को समर्पण! अपने को कोई चिंता नहीं। मैंने पद्य बना दिया, जिसका अभिप्राय था :

"हृदय से सेवा, वचन से सेवा।

लेकिन सेवा हाथ में उतरती नहीं, निश्चिन्त हूँ देवा।"

सुनकर हम सब लोग हँस पड़े।

फिर बाबा ने तुकाराम महाराज का हवाला दिया और कहा कि "अगर सेवा हृदय से भी न बने और वचन से ही चलती रहे तो भी हर्ज नहीं। एक दिन वह आयेगा, जब वचन का असर हृदय पर पड़ेगा।" अन्त में बाबा ने कहा कि "मैं भी करुण वचन बोलता घूमता हूँ और सत्य, प्रेम, करुणा जगह-जगह समझाता हूँ। बाकी काम आप लोग कर रहे हैं।"

वृद्धों की सेवा

दिनभर बाबा पवनार रहे और फिर २४ अगस्त को सुबह की

मोटर से नागपुर पहुँचे। रास्ते में वे पंचकुटी में रुके, जहाँ कमलाताई हास्पेट का केन्द्र है। कमलाताई हास्पेट महाराष्ट्र की एक अद्भुत और निष्ठावान् सेविका है, जिनकी प्रेरणा और प्रयत्न से आज महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश के बहुत-से स्थानों पर मातृसेवा-केन्द्र चल रहे हैं। यहाँ बाबा ने एक मंदिर में मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की और कहा कि "अपने देश में सर्वश्रेष्ठ गुण वृद्धों की सेवा माना गया है। अगर यह सेवा नहीं बनती तो जीवन का महामूल्य खण्डित होता है। सेवा के साथ-साथ यह जरूरी है कि अपनी बुद्धि आकाशगामी हो। दिमाग खुला और दिल बड़ा हो।"

नागपुर में बाबा के तीन महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुए। एक दोपहर ११ बजे से कार्यकर्ताओं के सामने, दूसरा ३ बजे से नागपुर युनिवर्सिटी में ग्रामदान-परिसंवाद में और फिर पटवर्धन मैदान में शाम को ५॥ बजे से आम सभा में। शाम को शुरू में कुछ देर तक महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री वसंतराव नाईक भी मौजूद थे।

पहली सभा में बोलते हुए बाबा ने कहा कि "आज देश की बडी शंकाशील अवस्था है। भारत के प्रधानमंत्री ने सूचना की कि प्लानिंग-कमीशन का प्लानिंग वर्षभर बन्द रहे, थोडा सिंहावलोकन किया जाय और खेती पर जोर दिया जाय। लेकिन दूसरे लोगों ने साथ नहीं दिया। महँगाई उत्तरोत्तर बढ रही है। लोगों में असंतोष है। मुख्य योजना यह होनी चाहिए कि प्राथमिक आवश्यकताएँ कैसे पूरी हों। इसका उपाय यही है कि लाखों की तादाद में ग्रामदान हों तो नकशा बदलेगा और चेतना पैदा होगी।"

* * *

शोषणमुक्त समाज कैसे?

नागपुर विश्वविद्यालय में ग्रामदान पर एक परिसंवाद चल रहा था। उसमें महाराष्ट्र सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण पाटील और

सुप्रसिद्ध जनसेवक प्रो० ठाकुरदास बंग के भाषण हुए थे। अन्त में कुछ प्रश्न बाबा के सामने रखे गये। उनके उत्तर देते हुए बाबा ने कहा : "हमारे सामने सवाल यह है कि शोषणमुक्त समाज कैसे बने ? इसके उत्तर का आरंभ ग्रामदान से होता है, पूरा उत्तर नहीं है। लेकिन कुछ शुरू हो जाने पर फिर रास्ता खुलेगा। आज तो कपास और धान गाँववाले पैदा करते हैं, लेकिन उनका भाव तय करते हैं न्यूयार्कवाले व्यापारी। यह सब बन्द होना चाहिए और उत्पादन करनेवाले खुद भाव का निर्णय करें। इसीलिए ग्रामदान की योजना में गाँव का सारा काम सर्वसम्मति या सर्वानुमति से चलेगा। पंच बोले परमेश्वर ! लेकिन तीन के खिलाफ दो खड़े हैं और तीन की बात मान ली गयी तो वह महँगा सौदा है। इसी वजह से सुरक्षा-परिषद् असुरक्षा-परिषद् बन गयी है। हमें मिलकर एक राय से काम करना चाहिए।

"मत-परिवर्तन की प्रक्रिया पर लोग अक्सर शंका करते हैं। लेकिन जो सबसे ज्यादा शंका करते हैं और इसे नहीं मानते, वे खुद ही मत-परिवर्तन की ठोस मिसाल हैं। कार्ल मार्क्स और लेनिन का साहित्य पढ़कर उनका विचार बदल गया। इसी तरह समझाने-बुझाने पर विचार-परिवर्तन होगा, जीवन-परिवर्तन होगा और फिर व्यवस्था-परिवर्तन होगा।"

शाम की आम सभा में ९ ग्रामदान नागपुर जिले से भेंट किये गये। आरंभ में मुख्यमंत्री ने कहा कि "मैं बाबा को आश्वासन देता हूँ कि ग्रामदान का जो काम शुरू किया गया है, महाराष्ट्र की सुबुद्ध जनता उसको पूरा करने में लगेगी।" इसके बाद वे अपने कार्यक्रम से बंबई चले गये।

नगर-निगम पक्ष-मुक्त हो

अपने प्रवचन में बाबा ने नगर-निवासियों से अपील करते हुए कहा :

"कारपोरेशन या नगर निगम में पक्षयुक्त चुनाव नहीं होना चाहिए।

जो सेवा भावना से प्रेरित हैं और जिनको उसकी लगन है, वे सेवा के लिए आगे आयें।" उन्होंने इस बात पर दु:ख प्रकट किया कि "नागपुर-निगम का काम ऐसी दु:खद हालत में है कि सरकार को उसे अपने हाथ में करना पड रहा है—मतलब यह कि जो सरकार नालायक साबित हो चुकी है, नगर-निगम उससे भी ज्यादा नालायक साबित हो रहा है। अगर पक्ष मुक्ति की ओर हम नहीं बढते तो नगर-निगम की जो भी दुर्दशा हो, थोडी है। जनता तो सरकार की सरकार है और जनता की सरकार है अन्तर्यामी भगवान्। जनता को अपने अभिक्रम पर बहुत सोच-समझकर काम करना चाहिए।"

देश में बढ़ती हुई पुरुषार्थहीनता पर दु:ख प्रकट करते हुए बाबा ने कहा :

"परिवार नियोजन की योजना देश को निर्वीर्य और पौरुषहीन बना देगी। ऐसी हालत में चीन का मुकाबला करना कठिन पड़ेगा। जो लोग देश के लिए मरने मिटने की बात कहते हैं, उनके मरने की तैयारी के माने हैं देश के गरीब लोगों के मरने की तैयारी। इसलिए बहुत जरूरी है कि आर्थिक और सामाजिक भेदभाव दूर हो। यूरोप में जब विज्ञान आया तो उससे वहाँ का जीवन समर्थ और पौरुषयुक्त बना। लेकिन भारत में विलासिता बढती गयी और पुरुषार्थहीनता पैदा हुई। दिल्ली भी बिल्ली बन गयी है और स्थिति सँभल नहीं रही है।"

अन्त में बाबा ने पूछा कि "क्या भारत को एक होने के लिए विदेशी आक्रमण होना जरूरी है? क्या ये जो हमारी गरीबी, बेकारी, बीमारी आदि की समस्याएँ हैं, उनसे एक होने की प्रेरणा नहीं मिलती? नगरवासियों को आरोग्य और स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए और उत्पादन बढाने के उपाय निकालने चाहिए। तभी भेदभाव दूर होगा और सर्वोदय समाज की स्थापना होगी :

जाति, धर्म, पंथ, भाषा, पक्ष, प्रांत।
इन सबों का अन्त हो तो सर्वोदय॥"

२५ ता० को सवेरे ५॥ बजे महाराष्ट्र के साथी यात्रा के पास फिर जमा हो गये और मार्गदर्शन की माँग की। बाबा ने कहा कि "हमें अपनी स्वतः की शक्ति पैदा करनी चाहिए और आत्मीकरण सधना चाहिए। आज वातावरण ज्यादा अनुकूल बनता जा रहा है और अगर हम अन्तर्मुख होकर काम करेंगे, तो आकर्षण और बढ़ेगा। इसलिए हमारी दृष्टि आध्यात्मिक रहनी चाहिए।"

करुणा का राज्य लाना है

६ बजे बाबा निकले और फिर कारपोरेशन-भवन पहुँचे, जहाँ विदाई-समारोह किया गया। नगर-निगम के सदस्यों को संबोधन करते हुए बाबा ने कहा कि "आज समाज में करुणा जरूर चलती है, लेकिन राज्य दंड-शक्ति का है। जैसे लड़ाई में रेडक्रॉस के सेवा-कार्य से लज्जत पैदा होती है, रुचि आ जाती है, उसी तरह आज करुणा का समाज में स्थान है। लेकिन हमें तो करुणा का राज्य स्थापित करना है।"

बाबा ने अपील की कि "पक्ष-निरपेक्ष वृत्ति से काम करना चाहिए और एक अवस्था के बाद सारी आसक्ति छोड़कर निष्काम लोक-सेवा में लगना चाहिए। क्या सात लाख के नागपुर नगर में सत्तर निष्काम सेवक भी नहीं निकलेंगे? अगर ये सत्तर भाई परस्पर सहकार से मिलकर काम करें तो नागपुर सर्वोदय-नगर बनेगा।"

सवेरे ८॥ बजे बाबा ने मध्यप्रदेश में प्रवेश किया और महाराष्ट्र की यात्रा समाप्त हुई। कुल मिलाकर महाराष्ट्र में ग्रामदानों की संख्या लगभग सवा हजार हो जाती है। इसमें पुराने ग्रामदान भी शामिल हैं। विचार की दृष्टि से महाराष्ट्र के साथियों का मानस और पकड़ सबसे ऊँची कही जा सकती है। हाल में जो करीब ढाई सौ ग्रामदान मिले हैं, उनसे नयी आशा जगी है और सब साथियों का अपने पर भरोसा जमा है। साफ दीख रहा है कि जो तूफान बिहार में होने जा रहा है, वह बढ़-चढ़कर महाराष्ट्र में भी आयेगा और इस तरह सारे देश में ग्राम-स्वराज्य की पक्की बुनियाद खड़ी करेगा।

मध्यप्रदेश का पराक्रम : ३ :

"अखबारों मे जाहिर हुआ है कि चीन सोच रहा है कि तिब्बत को एक सीमित आजादी दें। 'प्राविन्शियल ऑटोनामी' जैसी कुछ चीज नजर आती है। मेरा खयाल है कि यह भारत का विचार है, जो चीन पर असर कर रहा है। यह नहीं समझना चाहिए कि बाहर की दुनिया का असर भारत पर होगा और भारत का असर दुनिया पर नहीं होता। अगर हम यहाँ की भूमि-समस्या का हल शान्तिपूर्वक कर लेते हैं, तो दूर-दूर से और चीन से भी प्रतिनिधि-मण्डल उसे देखने आयेंगे। ग्रामदान के विचार मे दो बातें हैं: समाज की तरफ से व्यक्ति की आजादी सुरक्षित है और व्यक्ति की तरफ से समाज को समर्पण है। अगर आप यह विचार लेकर मध्यप्रदेश की जनता के पास जायंगे, जो बहुत श्रद्धालु और भक्तिवान् है, तो मुझे विश्वास है बडी तादाद मे ग्रामदान मिलेंगे।"

उपर्युक्त उद्गार २५ अगस्त को मध्यप्रदेश के पहले पडाव खवासा (जिला सिवनी) में बाबा ने प्रकट किये। मध्यप्रदेश में उनकी यह यात्रा ९ दिन तक चली। इसमें सिवनी, जबलपुर, सतना और रीवाँ जिलों मे होकर वे उत्तरप्रदेश के दक्षिणी पूर्वी हिस्से में होते हुए बिहार चले गये।

बहनें उपवास करें

खवासा मे तीसरे पहर बहुत सी महिलाएँ दर्शन को आयी। बाबा नानक का भजन 'पूरे के गुण गावो' गुनगुनाने लगे। फिर सक्षेप मे ग्रामदान का विचार समझाया। इसके बाद पूछा कि "हमने जो बात कही, वह आप बहनों को ठीक लगती है या नहीं?" सबने कहा :

"ठीक है।" लेकिन एक बहन के चेहरे पर कुछ भारीपन-सा था। बाबा ने पूछा : "इनके मन में कुछ कसक दीखती है!"

उस महिला ने जवाब दिया : "नहीं। बात आपकी ठीक है, लेकिन हमारे पास देने के लिए जमीन नहीं है।"

"इसकी चिन्ता न करें। पति, भाई, पिता, जिनके नाम जमीन हो, उनको आप समझायें और ग्रामदान में शामिल होने को कहें।"

"अगर वे न मानें!"

"अगर न मानें या न समझें तो बहन फाका करेगी। तब जिनके पास मालिकी है, उनकी गाँठ छूटेगी। आपके उपवास से उनका हृदय-परिवर्तन होगा।"

सुनकर बहन एकदम खिल उठी। बाबा ने कहा : "अब यह प्रस्ताव सर्वानुमति से पास हो गया। अगर आप इजाजत दें, तो शाम की सभा में मैं इसे जाहिर कर दूँ।"

सबने खुशी से जवाब दिया : "हाँ, जरूर!"

खवासा के निवासियों ने अपने पंचायत-भवन का उद्घाटन बाबा से करवाया। शाम की सभा में कुछ बूँदाबाँदी हो रही थी, लेकिन लोग चुपचाप बाबा का प्रवचन सुनते रहे। बाबा ने महिलाओं के प्रस्ताव का जिक्र किया और कहा कि "ग्रामदान के काम में पंचायतों, सहकारी समितियों और सब लोगों को मदद देनी चाहिए।"

दूसरे दिन का पड़ाव सिवनी में था, जिसके लिए बाबा के दिल में अपनी अनोखी जगह है। सिवनी-जेल में बाबा १५ महीने रहे हैं और आखिरी जेल-यात्रा पूरी कर ९ जुलाई १९४५ को यहीं से वे छूटे थे। इस जेल में उन्होंने जो प्रवचन दिये, वे 'स्थितप्रज्ञ दर्शन' के नाम से पुस्तक रूप में छप चुके हैं।

अनाज की तरह घर-घर में कपड़ा हो

मध्यप्रदेश के एक प्रतिष्ठित खादी-कार्यकर्ता बाबा से मिले। उन्होंने

इस बात पर दुःख जाहिर किया कि खादी की बिक्री घट रही है और सरकार से सरक्षण माँग करने की आवश्यकता बतलायी।

बाबा ने जवाब दिया कि "सरकार कितनी दूर तक जा सकती है, उसकी भी एक सीमा है। "खादी हर हालत में मिल के कपड़े से महँगी पड़नेवाली है। ऐसी स्थिति में असली सरक्षण तो जनता से ही मिल सकता है। अगर लोग अपना कपड़ा खुद बनाने लगें तो उससे बढ़कर कुछ नहीं।"

"लेकिन आज तो वे मिल का कपड़ा पसन्द करते हैं और खादी नहीं पहनते।"—हमारे मित्र ने अपनी कठिनाई बतायी।

"यह स्वाभाविक है। अगर आप उनसे पूछेंगे तो वे यही कहेंगे कि खादी श्रीमानों, बड़े लोगों के लिए सुरक्षित कर दी जाय और हम दूसरा कपड़ा पहनें।"

यह सुनकर वह भाई कुछ घबड़ा गये और पूछा कि "फिर इलाज क्या है?"

बाबा ने कहा कि "इलाज ग्रामदान है। अगर भूमिहीनों को जमीन मिल जाय और जमीन की मालकियत ग्रामसभा के सिपुर्द हो जाय, तो ग्रामसभा गाँव के अनाज और कपड़ आदि की फिक्र करेगी। बुनाई मुफ्त होने के कारण कत्तिन को खादी रूई के भाव मिलेगी। उसके पास जमीन है, उस पर कपास की खेती होती है, तो उसे अनाज की तरह कपड़ा आप-से आप पैदा करना सभव होगा। इसीलिए मैं ग्रामदान पर जोर देता हूँ।"

सिवनी की विशेषता

सिवनी नगर में एक विशेषता नजर आयी। बिजली के हर खम्भे पर साईनबोर्ड लगे थे, जिन पर सुभाषित लिखे थे। इसी तरह हर ताँगे पर भी सर्वोदय के वाक्य दिखलायी पड़े। यह सब श्री सत्यनारायण शर्मा के परिश्रम का परिणाम है, जो पिछले ९ साल से सिवनी नगर और

जिले में उत्साहपूर्वक काम कर रहे हैं। वहाँ ताँगेवालों ने अपना एक यूनियन बना लिया है और मुसाफिरों से सही और एक दाम लिया करते हैं। उनका यूनियन आड़े वक्त काम में आता है और ताँगेवालों को उधार वगैरह भी देता है। आपस की एकता की बदौलत सिवनी में ताँगेवालों के आगे रिक्शा नहीं चल सके। उनके इस काम की बाबा ने शाम की सभा में तारीफ करते हुए कहा कि "सिवनी के निवासियों को अपने नगर को सर्वोदय का रंग देना चाहिए।"

जबलपुर जाते हुए बाबा को तिनसी नामक स्थान पर २४ ग्रामदान मिले। ये सारे गाँव जबलपुर तहसील के 'बरगी' ब्लाक के हैं। इस क्षेत्र में शुरू में डॉ० दयानिधि पटनायक घूमे थे, जो कटक के विश्व-विद्यालय में रसायन-शास्त्र के प्रोफेसर रह चुके हैं। इंग्लैण्ड से उन्होंने डॉक्टरेट की डिग्री ली और रसायन-जगत् में प्रख्यात माने जाते हैं। लेकिन बाबा के आह्वान पर सब छोड़ आजकल जगह-जगह सर्वोदय का अलख जगा रहे हैं। इधर कई महीने से वे अपना समय मध्यप्रदेश, पंजाब आदि प्रदेशों में दे रहे हैं। डॉ० पटनायक के अलावा भाई पुजारी रायजी इस क्षेत्र में पहुँचे और ग्रामदान हासिल करने में सफल हुए। पुजारीजी उत्तरप्रदेश के उच्चकोटि के सर्वोदय सेवक हैं और सारे प्रदेश की अखंड पदयात्रा कर चुके हैं। उसके बाद बाबा के निर्देश पर इन्दौर के विसर्जन-आश्रम में आकर बैठ गये और अब ग्रामदान में लगे हैं।

भंगी-कष्ट-मुक्ति में देर क्यों ?

जबलपुर नगर में मेयर ने बाबा का स्वागत करते हुए उन्हें यह आश्वासन दिया कि भंगी-कष्ट-मुक्ति का काम नगर-निगम बापू-शताब्दी १९६९ तक पूरा कर देगा। बाबा ने उनको धन्यवाद दिया और कहा कि "यह चीज ऐसी है, जिसके लिए ठहरने की जरूरत नहीं है। चार साल तक आप क्यों रुकना चाहते हैं ? मुझे विश्वास है कि अगर आप भंगी-कष्ट-मुक्ति का काम १९६६ या ६७ तक पूरा कर डालते हैं, तो गांधी-

जी इसके लिए आप पर नाराज नहीं होंगे। समझने की बात है कि समाज में जो सबसे पददलित हमारे भाई है, उनकी भलाई करने में देर या संकोच करना ठीक नहीं।"

सतत काम करना चाहिए

कार्यकर्ताओं की सभा में एक भाई ने पूछा कि "ग्रामदान में सफलता का रहस्य क्या है?" बाबा ने कहा : "हर कार्यकर्ता को ब्रह्म विद्या जरूर आनी चाहिए, ताकि अन्दर से भूमिका पक्की हो। अगर अपने अन्दर अध्यात्म नहीं होता, तो बाहर की घटनाओं या अशांति से मन बैठने लगता है। इसीलिए हम हर जगह 'गीता प्रवचन', 'मंगल प्रभात' या बापूजी की 'आत्मकथा' जैसे ग्रंथों के मनन के लिए जोर देते हैं।"

बाबा ने आगे कहा. "एक बात यह भी है कि आपको क्रांति की सफलता की चिंता नहीं करनी चाहिए। वह सब परमात्मा पर है। हमारी कोशिश तो यह हो कि हम अपने काम में कभी ढीले न पड़ें। सातत्य नहीं छोडना चाहिए। अभी मैं यहाँ स्नान करने बैठा हूँ। सत्तर साल हो गये, रोज स्नान चलता है। अगर दस दिन न नहाऊँ, तो हर कोई कहेगा कि अरे कैसा गंदा है। शरीर गंदा होने में हार नहीं खाता, तो हम नहाने में हार नहीं खाते। जैसे सतत नहाते हैं, वैसे सतत काम करते रहना चाहिए।"

विसर्जन-आश्रम के बारे में बाबा ने कहा कि "इसका तो विसर्जन ही होना चाहिए। वहाँ अब कार्यकर्ताओं का शिक्षण चले और उसका बन्दोबस्त नगर के लोग करेंगे। आश्रम के जो भाई है, वे ग्रामदान के काम के लिए निकल पड़ें।"

एक कार्यकर्ता महीने में पचास गाँव घूमे

गांधी स्मारक निधि की मध्यप्रदेश की शाखा की कार्यकारिणी के सदस्य और उसके अध्यक्ष, वहाँ के नियोजनमन्त्री श्री मिश्रीलाल गंगवाल, बाबा से जबलपुर में मिले। आगे के कार्यक्रम के बारे में बाबा

ने सुझाया कि "कार्यकर्ता रोज दो गाँव घूमे तो २५ दिन में ५० गाँव घूम सकता है। पाँच दिन कहीं आराम करे और साथियों से चर्चा करे। इस तरह देश के ५ लाख गाँव के लिए हर महीने घूमनेवाले दस हजार कार्यकर्ता होने चाहिए। इस काम को गांधीनिधि और सर्व-सेवा संघ दोनों मिलकर उठायें तो अच्छा हो।"

कार्यकर्ताओं के योगक्षेम के बारे में बाबा ने कहा कि "श्राद्ध का अन्न खाना नहीं चाहिए। निधि का पैसा निर्माण या सामान आदि कामों में लगाया जाय, लेकिन योगक्षेम के लिए शरीर-श्रम और जनता का आधार लेना ही ठीक है।"

अपने बीच मुसलमान कम क्यों ?

बाबा ने इस बात पर भी चिंता जाहिर की कि "गांधी-निधि हो या सर्वोदय समाज, मुसलमान लोग हमारे बीच बहुत कम हैं। यह बड़ा सवाल है, जिस पर विचार करना चाहिए। पर देखना चाहिए कि हमारी कार्यप्रणाली में दोष है या हमारे चिंतन में या व्यवहार में या क्या बात है। हमारी कुछ कमी है, इसके लिए अंतर्निरीक्षण होना चाहिए। खादी में अहद फातमी, उड़ीसा में मुहम्मद बाजी, और ऐसे दस-बारह नाम और होंगे। लेकिन कुल मिलाकर बहुत कम हैं। इस पर सोचना चाहिए।"

एक भाई ने कहा कि "हिन्दू-मुसलमान आपस में अन्तर्जातीय विवाह करें तो यह गुत्थी कुछ सुलझेगी ?"

बाबा ने कहा "शादी के लिए मुसलमान तो तैयार हैं। लेकिन शादी-ब्याह में आप उनसे ज्यादा कट्टर हैं। प्रार्थना और उपासना आदि में आप उदार हैं। मैंने भी इस तरह की एक शादी करायी थी, लेकिन उसमें मैं बिल्कुल असफल रहा। फिर भी अगर यह हो कि लाखों शादियाँ हो सकें, तो ग्रामदान के बदले में शादी-आन्दोलन शुरू कर सकता हूँ।" यह सुनकर सब हँस पड़े।

जबलपुर से जब कटनी पहुँचे, तो बाबा ने पंडित नेहरू की एक मूर्ति का अनावरण किया। उन्होंने लोकात्मा नेहरू को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि "आजकल मूर्तियों आदि का रिवाज हो गया है। इसका उद्देश्य अच्छा है, लेकिन परिणाम अच्छा आता नहीं दीखता। मूर्ति तो धूप, बारिश, सर्दी सब सहन करती है और हम उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं देते। लोग घरों में चित्र और फोटो भी लगाते हैं, जिनके पीछे मच्छर, कीड़े मकोड़े आदि आराम से रहा करते हैं। मैं इसका कोई निषेध नहीं कर रहा हूँ। लेकिन कहने का सार यह है कि हमें कुछ सावधान रहने की जरूरत है और सत्पुरुषों के गुण ग्रहणकर उन्हें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।"

ईश्वर का औजार बनें

जब बाबा मैहर पहुँचे, तब तो तुलसीदासजी का स्मरण करके गद्‌गद हो गये। उन्होंने कहा कि "इस क्षेत्र में वे लोग बसते हैं, जिन्होंने भगवान् राम का मार्गदर्शन किया था। इसी तरह ईसामसीह का काम भी मछलीमारों और लकड़हारों आदि ने किया। तो मैं सोच रहा था कि जिन लोगों ने भगवान् को मार्ग दिखाया, वे हमारे स्वराज्य को भी मार्ग क्यों नहीं दिखायें? आप उठ खड़े हों और ग्रामदान का मार्ग सारी दुनिया को दिखलायें। इस काम में विद्वान् लोग असमर्थ साबित होते हैं, क्योंकि वे कभी एक राय पर नहीं पहुँचते। लेकिन आप लोग ईश्वर का औजार बनते हैं, क्योंकि आप पोल हैं, मन में विकार नहीं है। अब जो काम आप कर दिखलायेंगे, आगे चलकर विद्वान् लोग उसका तत्त्वज्ञान बनायेंगे और इतिहास आदि लिखेंगे।"

मैहर में सुबह १०॥ बजे मध्यप्रदेश के कानून मंत्री श्री गुल्शेर अहमद बाबा से मिले। उन्होंने भरोसा दिलाया कि अब जल्दी ही प्रदेश का भूदान ऐक्ट पास करायेंगे और ग्रामदान ऐक्ट भी बनवाने की दिशा में ज्यादा प्रयत्नशील होंगे।

मदद के बजाय शोषण

पंचों का भी सम्मेलन हुआ, जिसमें मेहर ब्लाक के बहुत-से पंच आये थे। सहकारी-समितियों के अधिकारी भी मौजूद थे। बाबा ने कहा कि "पंचायतों का उद्देश्य जनता को ऊँचा उठाना है। लेकिन जिस ढंग से सरकार का सारा काम किया जा रहा है, उसका परिणाम शोषण में होता है। यह सरकारी योजना बहुत अच्छी है, लेकिन गरीबों को मदद मिलने के बजाय उनका शोषण उससे होता है। सद्-उद्देश्य रखकर काम होता है, लेकिन परिणाम दूसरा निकलता है। पंचायतें आदि सेवा के लिए बनी थीं, लेकिन आज वे सेवा के साधन न रहकर सत्ता को नीचे से पकड़ने का माध्यम साबित हो रही हैं। अच्छा हो कि सहकारी-समितियाँ और पंचायतें ग्रामदान के काम को उठा लें। ग्रामदान होने पर ही गाँव में सच्ची सहकारिता शुरू हो सकती है।"

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ

दोपहर को ठीक १२ बजे भारत-विख्यात संगीतज्ञ उस्ताद अला-उद्दीन खाँ बाबा से मिले। उनकी आयु १२५ वर्ष की है। पास में महादेवी ताई बैठी हुई थीं। बाबा ने कहा कि "तुम्हारी उम्र ५५ और मेरी ७०, दोनों को मिलाकर इनकी आयु है।"

उस्ताद ने सरोद पर कुछ संगीत भी सुनाया। उसके बाद कहा कि "संगीत एक समुद्र है, जिसमें से एक बूँद हमें मिली है।"

बाबा ने पूछा कि "कोई इच्छा है?"

उस्ताद ने जवाब दिया : "इच्छा बस यही है कि परमात्मा के चरणों में स्थान मिले।"

शाम को प्रार्थना-सभा के बाद मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध मजदूर नेता श्री व्ही० व्ही० द्रविड़ बाबा से मिलने आये। बाबा ने उनको सलाह दी कि "अगर मजदूर भाई एक साल में आठ आना प्रति व्यक्ति भूमिहीन

मजदूरों के काम के लिए खुशी से दान देने को राजी हों, तो उससे उनमें भी बल आयेगा और भूदान-ग्रामदान का काम भी बढ़ेगा।"

रीवाँ में रैली

पहली सितम्बर को रीवाँ में मध्यप्रदेश के शांति-सैनिकों की रैली हुई। आगे बाबा की मोटर थी और उनके पीछे शांति-सैनिक भाई-बहनें। उनका नेतृत्व प्रदेश के शांतिसेना-संयोजक श्री चतुर्भुज पाठक कर रहे थे। बाबा ने उनका अभिनंदन करते हुए कहा कि "शांति सैनिक को घर-घर का प्यार हासिल करना चाहिए। एक शांतिसैनिक रोज सौ घर से संपर्क करे, तो दस दिन में हजार घर से नाता जोड़ लेगा। इस तरह महीने में तीन दफे हर घर में जाकर प्रेम से जानकारी लेगा और उनका हुक्म बजायेगा। इस ढंग से अगर शांति-सेना काम करेगी, तो उसे जनता का विश्वास और स्नेह हासिल होगा।

रीवाँ में शिक्षकों की एक भारी सभा हुई। उनकी तरफ से बाबा से सवाल पूछा गया कि "नयी तालीम के बारे में आपके क्या विचार हैं और वह आगे प्रगति क्यों नहीं कर रही है?" बाबा ने कहा : "आपमें से कितनों को यह जानकारी है कि शिक्षा के सम्बन्ध में मेरी एक किताब प्रकाशित हुई है, 'शिक्षण विचार'। हिन्दी, अंग्रेजी और कई भाषाओं में निकल चुकी है। आपमें से जिन्होंने उसे पढ़ा हो, अपने हाथ उठायें।"

पूरी सभा में मुश्किल से दो हाथ उठे। बाबा यह देखकर बहुत दुःखी हुए और कहा कि "जब नयी तालीम के शिक्षक ही नयी तालीम के बारे में इतनी उपेक्षा करेंगे तो फिर प्रगति कैसे होगी? आपकी उदासीनता खुद एक प्रमाण है। सिखाने के साथ अगर आप सीखने की प्रक्रिया जारी नहीं रखेंगे, तो कैसे चलेगा? भगवान् आपका भला करे।"

सौ ग्रामदान रोज प्राप्त करें

आखिरी पड़ाव ल्योंथर में था। मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री गणेशप्रसाद नायक, भूतपूर्व अध्यक्ष और प्रदेश के सबसे वयोवृद्ध

मार्गदर्शक श्री दादाभाई नाईक, अन्य अनुभवी साथी जैसे श्री रामानन्द दुबे, श्री गंगाधरराव पाटणकर, श्री महेन्द्रकुमार, मंडल के तरुण मन्त्री श्री नरेन्द्र दुबे तथा अन्य बहुत-से साथी मौजूद थे। मध्यप्रदेश के परम-प्रिय सेवक एवं 'भूमिक्रांति' साप्ताहिक के सम्पादक श्री देवेंद्र गुप्त भी आये थे, जिन्होंने कुछ दिन पहले (१५ अगस्त १९६५ से) दिल्ली में गांधी-स्मारक-निधि के मंत्रित्व का भार सँभालना शुरू किया था।

सब मित्रों ने आगे के लिए बाबा का मार्ग-दर्शन चाहा। बाबा ने संतोष प्रकट किया कि "नौ दिनों में आपने २६९ ग्रामदान हासिल किये यानी ३० ग्रामदान रोज। आपके प्रदेश में ६० हजार गाँव हैं और चुनाव के पहले डेढ़ साल का समय है। तब आपको तिगुनी ताकत से लग जाना चाहिए, ताकि सौ ग्रामदान रोज हासिल करें और प्रदेश का एक-एक गाँव ग्रामदान में आ जाय।"

मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल की तरफ से भाई दीपचंदजी लगातार यात्रा में साथ रहे। त्योंथर में बाबा ने अपने हाथ से एक चादर उन पर ओढ़ायी और 'मानव-मुनि' नाम रख दिया। सब साथियों को देखकर बाबा ने कहा कि "तरुण होने के साथ-साथ आप समर्थ भी हैं। संख्या कम है, लेकिन क्षमता काफी है। सचमुच इन सबकी बड़ी सुन्दर टीम बनी है और वे एक-दिल होकर काम करते हैं। इन दिनों मध्यप्रदेश में जो ग्रामदान का शानदार काम हुआ है, उस पर वे बधाई के पात्र हैं।"

o

उत्तर प्रदेश की कसौटी : ४ :

"अब आपकी कसौटी होनेवाली है कि नमक-हराम साबित होंगे या नमक-हलाल। हम बहुतों के जीवन को खादी आधार देती है। क्या हम उसे आधार देने के लिए तैयार हैं या सिर्फ उसका आधार लेनेवाले ही हैं?···तेरह साल पहले इन्हीं दिनों उत्तर प्रदेश में हमारी यात्रा चल रही थी। उस समय मैंने खादीवालों का बहुत उपकार माना था। वे काम न करते तो भूदान में ज्यादा लोग दिलचस्पी नहीं लेते। श्री गांधी आश्रम और अन्य रचनात्मक संस्थाओं ने दिलचस्पी दिखायी और भूदान-यज्ञ का काफी काम हुआ। पर उस आंदोलन और इस आंदोलन में काफी फर्क है। भूदान का काम दिल नरम करने का काम था, समझाने का काम था, जब कि यह आन्दोलन प्रत्यक्ष क्रान्ति करने का काम है। इस बार मैं खादी को आधार देने के लिए घूम रहा हूँ। इस आंदोलन से खादी को आधार मिलेगा।···ग्रामदान और शांतिसेना के साथ खादी जुड़ी रहेगी। खादीवाले उसके साथ पूरा योग देंगे, तभी खादी जीवित रहेगी और *भारत में गांधी विचार जीवित रहेगा।*"

यह चेतावनी बाबा ने अपनी यात्रा के दौरान में उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं को १० दिसम्बर को बनारस के टाउनहाल में दी, जहाँ वे उनसे मिलने जमा हुए थे। मध्य प्रदेश के त्योंथर पडाव से निकलकर ३ सितम्बर को बाबा ने इलाहाबाद जिले की सीमा पर चौखठा गाँव में प्रवेश करते हुए उत्तर प्रदेश की आठ दिन की यात्रा शुरू की। वहाँ प्रदेश की तरफ से उनका स्वागत करने के लिए मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपालानी आयी थीं। उन्होंने बाबा का अभिनंदन करते हुए कहा कि "ग्रामदान इस युग का संकेत है और उसमें यथाशक्ति सबको

मदद देनी चाहिए ।" गद्‌गद स्वर से बाबा बोले : "नर्मदा मैया के प्रदेश से अभी आ रहा हूँ और गंगा मैया के प्रदेश में प्रवेश कर रहा हूँ। आप लोगों का मंगल-दर्शन प्रातःकाल की मंगलवेला में हो रहा है। आप सब मेरे लिए पूजनीय और आदरणीय हैं। मैं आपके सेवकों का सेवक हूँ और बहुत आशा तथा भक्ति के साथ घूम रहा हूँ।"

उत्तर प्रदेश का आदर और डर

बाबा ने आगे कहा : "यह उत्तर प्रदेश सब प्रकार से हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा हिस्सा है। यहाँ प्राचीन काल में राम, कृष्ण और बुद्ध हुए थे। यहाँ बीच के जमाने में तुलसीदास, सूरदास आदि कवियों ने भगवान् के गीत सबको सुनाये। अर्वाचीन काल में पण्डित मालवीयजी, राजर्षि टंडन, लोकात्मा नेहरू जैसे महान् नेता हो गये। इन तीनों का मुझे दर्शन करने का मौका मिला है और इनका प्रेम तथा आशीर्वाद भी मिला है।

"उत्तर प्रदेश के लिए मेरे मन में बड़ा आदर है और कुछ डर भी। 'डर' शब्द हिन्दी है और 'आदर' शब्द संस्कृत। आदर पर से डर शब्द पैदा हुआ है। बहुत बड़ा प्रदेश है और यहाँ बहुत बड़े-बड़े नेता हैं, तो अपनी यहाँ क्या चलेगी, ऐसा एक भाव मन में आता है। लेकिन जिस बाढ़ में बड़े-बड़े पेड़ नहीं टिकते, वहाँ कभी-कभी छोटी घास टिक जाती है। इसी उम्मीद से भक्ति के साथ, आदर के साथ मैं प्रवेश कर रहा हूँ।"

इलाहाबाद नगरी में बाबा का निवास सुप्रसिद्ध आनन्द-भवन में रखा गया था, जहाँ उनका पहली बार आगमन हुआ। पहुँचने पर वे दक्षिण की तरफवाले बड़े चबूतरे पर जाकर बैठ गये और समाधिस्थ हो गये। शायद स्वाधीनता-आन्दोलन का पूरा इतिहास उनके सामने सजीव हो उठा होगा और उस जमाने का भी ध्यान अवश्य आया

होगा, जब गगा पास मे ही बहती थी और भरद्वाज मुनि के आश्रम में दूर दूर से जिज्ञासी और यात्री आते थे।

ग्यारह बजे के करीब आनन्द-भवन के हरे-भरे लॉन में नगर के प्रमुख जन बाबा के स्वागत को जमा हुए। सुचेताजी भी मौजूद थीं। बाबा ने सहारा देकर उनको अपने पास चौकी पर बिठा लिया। इस सभा में बाबा ने मानो सक्षेप मे अपना मूल विचार पेश किया। उन्होंने कहा कि "भारत की सभ्यता मे मुख्य विचार सत्य, प्रेम और करुणा का है। ये तीन भारत के बडे अवतार हैं। रामचन्द्र सत्य के अवतार हैं, भगवान् कृष्ण प्रेम के अवतार है और महात्मा गौतम बुद्ध करुणा के अवतार। मैंने ये तीन शब्द उठा लिये हैं। कुल भारत की सस्कृति का यह निचोड है। ये ही तीन गुण हैं, जिन गुणों की दुनिया के सारे महात्माओं ने निरन्तर स्मृति रखी है। फिर चाहे वे ईसामसीह हों, चाहे पैगम्बर हों, चाहे तुलसीदास।

प्रेम-शक्ति ही समाज को बचायेगी

बाबा ने आगे कहा : "जमाना बदला है, यह मैं दोनों आँखो से देख रहा हूँ। अन्दर की तीसरी आँख तो देखती ही है, लेकिन चर्म-चक्षु से मैं देख रहा हूँ कि आगे आनेवाला जमाना कहता है कि प्रेम की शक्ति को पहचानो। प्रेम का स्वाद तो सबको मालूम है। प्रेम को नमक की उपमा देते हैं, लेकिन वे प्रेम की शक्ति को महसूस नहीं करते। खतरे से बचाव की शक्ति प्रेमशक्ति है। 'जैसे समाज को जोडने की शक्ति प्रेमशक्ति है, वैसे ही अगर आक्रमण हुआ तो उससे बचाने के लिए भी प्रेमशक्ति काम मे आ सकती है' ऐसी ध्वनि मैं सुन रहा हूँ, जो अणु अस्त्र बोल रहे हैं।

"आणविक अस्त्र अहिंसा के बिल्कुल नजदीक है, जैसे वर्तुल के दो सिरे बिल्कुल नजदीक और बीच के बिन्दु दूर-दूर होते हैं। सामान्य शस्त्र, जिन्हें 'कन्वेन्शनल वेपन्स' कहते हैं, अहिंसा से बहुत दूर है।

वे अहिंसा को आने नहीं देते। लेकिन आणविक अस्त्र अहिंसा के बिलकुल नजदीक है। वे दुनिया के सामने एक स्पष्ट चुनाव रखते हैं कि आप या तो प्रेम से रहें या सर्वनाश के लिए तैयार हो जायँ। इसलिए जब से आणविक अस्त्र आये हैं, तब से मैं बिलकुल आनन्द में मग्न हूँ।"

भारत के विचार की विजय

आगे चलकर बाबा ने कहा कि "लोगों के मन की हालत उस पक्षी की तरह हो रही है, जो अपने पेड़ से निकल चुका है, लेकिन दूसरे पेड़ पर बैठा नहीं है। हिंसा पर से उनका विश्वास उठ गया है और अहिंसा पर बैठा नहीं। आज मनुष्य की यह बीच की हालत है। हिंसा की ताकतें टूट रही हैं। इस समय मैं भारत के विचारों की विजय देखता हूँ। चीन ने तिब्बत को बन्द कर रखा था। अब वह उसे स्वायत्तता, मर्यादित क्यों न हो, दे रहा है, क्योंकि उसके ध्यान में आया है कि मामला इससे नहीं बनेगा। तो, यह अहिंसा के लिए हो रहा है। यानी हिंसा में विश्वास रखनेवाले करुणावादी लोगों का अहिंसा में प्रवेश हो रहा है। मैं उन्हें करुणावादी कहता हूँ, लेकिन उनका मूढ़ विचार है। वे मानते हैं कि करुणा को हिंसा द्वारा लाना है। यह बहुत विसंगति दीखती है।"

अन्त में बाबा बोले: "आज सवेरे सुचेता देवी ने कहा कि 'ग्रामदान संकेत है।' संकेत तो है ही, लेकिन वह ठोस संकेत है। महात्मा गांधी ने नमक का सत्याग्रह उठाया था, वह संकेत था। वैसे ही यह भी संकेत है, लेकिन उससे ज्यादा ठोस है। इससे देश की ताकत बढ़ेगी। आज देश के अन्दर और बाहर संकट खड़े हैं। भिन्न-भिन्न पार्टियों में झगड़े हैं। ऐसी स्थिति में भारत को बचाना है, तो ग्रामदान से ही यह बचेगा। सरकार भी इसकी मदद करेगी। सरकार इसका स्वागत करती है, क्योंकि वह समझती है कि यह स्वराज्य की बुनियाद बन रही

है। अगर नीचे का तल्ला पक्का बन गया, तो ऊपर का मजबूत बन जायगा।"

विद्यार्थियों का कर्तव्य

शाम को तीन बजे के करीब बाबा इलाहाबाद युनिवर्सिटी आये। बहुत शानदार सभा थी और बड़ी तादाद में छात्र और छात्राएँ मौजूद थीं। बाबा ने उनसे कहा कि "भारत में अध्ययन की सख्त जरूरत है—अनेक भाषाओं का अध्ययन, अनेक शास्त्रों का अध्ययन, अनेक प्रकार के विज्ञानों का अध्ययन आत्मज्ञान का अध्ययन आदि। बिना सब शास्त्रों के अध्ययन के भारत का सर्वांग सम्पन्न नहीं होगा और भारत का दुनिया के लिए जो सन्देश है—विश्व में शान्ति स्थापित करना, 'जय जगत्' की घोषणा और मानवीय कल्याण का सभव प्रयास करना—इस प्रकार भारत का जो मिशन है—वह पूरा न होगा, अगर विद्यार्थी अध्ययनशील न रहे।"

नये राज्य में तालीम भी नयी हो

बड़े दत्तचित्त हो बाबा उन्हे समझा रहे थे। आज की शिक्षा-प्रणाली पर दु ख प्रकट करते हुए कहा कि "जिस तरह नये राज्य मे पुराना झडा नहीं चलता, उसी तरह नये राज्य में पुरानी तालीम नहीं चलनी चाहिए थी। अगर पुरानी तालीम चल रही है, तो समझना चाहिए कि पुराना राज्य ही चल रहा है, नाम नये राज्य का है। राज्य जाना ही है, इसलिए गाधीजी ने तैयारी कर रखी थी। मान लीजिये जिसे वे 'बुनियादी तालीम' कहते थे, वह सबको पसन्द न थी तो कोई हर्ज नहीं। अगर राज्य की बागडोर मेरे हाथ में होती, तो मैं कहता कि स्वराज्य हुआ है, विद्यार्थियों को छुट्टी दी जाय। वे तीन महीने खूब खेलें, कूदें, मजबूत बनें और हम इन तीन महीनों में देश मे चलाने के लिए तालीम का निर्णय ले लें। फिर शिक्षावेत्ताओं की समिति मुकर्रर करते और तब नयी तालीम शुरू करते। पुरानी तालीम एक दिन

भी न चलने देते। लेकिन, आज १८ साल बीत गये, तालीम का ढाँचा क्या हो, उसका स्वरूप क्या हो, उसके लिए अब एक समिति मुकर्रर की गयी है। इसमें कुछ देश के लोग हैं, कुछ विदेश के। वे रिपोर्ट पेश करेंगे, उसके बाद इस पर सोचा जायगा। सीताजी रामचन्द्रजी से आज कहती हैं—'मन्द-मन्द गति चलिये प्रभुजी, मन्द-मन्द गति चलिये।' तो क्या रामचन्द्रजी दो-चार साल के बाद निर्णय करेंगे कि धीरे चलूँ या जोर से चलूँ ? १५ अगस्त १९४७ को आजादी मिली थी और शिक्षा के सम्बन्ध में निर्णय २० साल बाद होगा कि कौन-सी तालीम दी जाय ?

"आज अन्धे और लँगड़ेवाली स्थिति भारत में है। किसीको आँख है तो किसीको पैर, पूरा अंग किसीके पास नहीं है। इस तरह हमारी सारी जनता अन्धी है और भारत का जो शिक्षित वर्ग है, वह लँगड़ा है। वह जनता के कन्धे पर बैठकर जोर-जोर से चिल्ला रहा है। उससे अगर पूछा जाय कि तेरे हाथ से कोई 'क्रान्ति' होगी, तो वह बोलेगा, 'भैया मेरे हाथ से क्या होगा, मैं तो लँगड़ा-लूला हूँ, दूसरे के कन्धे पर बैठनेवाला हूँ।'

"इस तरह एक जमात दूसरी जमात के कन्धे पर बैठी है। दोनों जमातों का परस्पर सहयोग हो, दोनों सक्षम बनें, दोनों को समर्थ बनाने की योजना हो। एक पूर्ण, दूसरा भी पूर्ण, इस प्रकार मिलकर परिपूर्ण हों। आज यह है कि एक अपूर्ण, दूसरा भी अपूर्ण और दोनों मिलकर पूर्ण बनना चाहते हैं। दोनों मिलकर दो अपूर्ण होते हैं, एक पूर्ण नहीं होगा। यह समझने की बात है। यही वजह है कि आज तालीम बिलकुल निर्वीर्य करती है। इसलिए एक क्षण इसे चालू नहीं रखना चाहिए।"

जहाँ विद्या, वहाँ सुख कैसा ?

अक्सर देखा जाता है कि आज के विद्यार्थी बहुत आराम-तलब हैं और अपने लिए विशेष रियायतें चाहते हैं। इस पर खेद जाहिर करते हुए बाबा ने कहा कि "हमारे विद्यार्थी इतने नरम बन गये हैं कि कोम-

ल्ता से बात करते हैं। हमें चीन, पाकिस्तान और और भी दूसरे देशों का मुकाबला करना है। 'हजारों फुट ऊपर जाकर कौन काम करने के लिए तैयार है ?' यह पूछने पर विद्यार्थी पूछते हैं कि 'विद्यार्थियों के लिए सुविधाएँ क्या क्या होंगी ?' यानी सुभीते क्या क्या होंगे ? पर वे यह नहीं पूछते कि विद्यार्थियों को किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

"लेकिन वे समझ लें कि अगर आप सुख चाहते हैं तो विद्या नहीं मिलेगी और अगर विद्या चाहते है तो सुख नही। लेकिन आप तो चाहते हैं दोनों—सुख और विद्या भी। इस प्रकार विद्या हासिल नही होती। इसके लिए मधुर वेला में उठना पड़ेगा, व्यायाम करना पड़ेगा, शरीर सयम के साथ रखना पडेगा, अपनी इन्द्रियों और अपनी बुद्धि पर काबू पाना पड़ेगा। कोई कहेगा कि हम सुबह कैसे उठ सकते हैं, शाम को तो जल्दी हमे नींद आती ही नहीं ? क्यों भाई, नींद क्यों नहीं आयी ? किसने रोका ? तुम जब चाहो तब नींद आ सकती है। हमारे हाथ मे ताला कुंजी है, जब चाहें सो जायँ और जब चाहें जग जायँ।"

नयी ज्यामिति

अन्त मे बाबा ने इस बात पर जोर दिया कि "पडोसी देशों के साथ हमारे सम्बन्ध प्रेम और मैत्री के होने चाहिए।' उन्होंने कहा कि "भारत की आजादी को मजबूत करना है, तो नयी ज्यामिति सीखनी चाहिए। वह ज्यामिति मैंने कश्मीर मे खोजी है। वहाँ लोग कहते थे—जे० एण्ड के०। हमने कहा कि शायद तुम लोग अंग्रेजी पढ़े हो। जे० के० के साथ 'एल' आता है तो आपको कहना चाहिए जे० एण्ड के० एल०। लद्दाख तुम्हारा था, लकिन उसका कभी स्मरण तुम लोगो को नही हुआ। इसलिए लद्दाख खतम समझो। यह मैंने कश्मीर मे कहा था। उसके बाद उनके ध्यान म आया कि लद्दाख भी उनकी चीज है और उसकी भी रक्षा करनी चाहिए। सबसे ही कहिये, चीन ने हमला करके उसकी अहमियत भी समझा दी।"

ए० बी० सी० वाला त्रिभुज

बाबा ने कहा : "मैंने कश्मीर में ए० बी० सी० के ट्रेंगिल की ज्यामेट्री सिखायी। शायद इन छात्रों में से कोई इसका अर्थ नहीं जानता होगा ? अफगानिस्तान, बर्मा और सीलोन एक नया त्रिभुज है। जब यह हो जायगा तो इससे हिन्दुस्तान की रक्षा होगी। भारत को अब बहुत कठिन काम करना है। आवश्यकता यह नहीं कि ये तीनों देश एक हुकूमत में रहें, लेकिन इस त्रिभुज की परिधि में आनेवाले देशों का—तिब्बत, अफगानिस्तान, बर्मा, सीलोन, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का एक 'कान्फिडरेशन' बने। तब विश्व में शान्ति होगी, यह तो मैंने सहज (विद्यार्थियों के सामने) रख दिया। छोटी-मोटी बातों में आपको नहीं पड़ना चाहिए। छोटे-मोटे मसलों के लिए लड़ाई-झगड़े चल रहे हैं, उनमें विद्यार्थियों को नहीं पड़ना चाहिए। आपको कहना चाहिए कि हम तो सारे विश्व के दायरे में सोचनेवाले हैं, हम तो विश्वव्यापक दृष्टि से सोचेंगे। काम चाहे हम गाँव में या घर के दायरे में ही करें, लेकिन चिन्तन विश्वव्यापी होगा।"

गरीब-अमीर का भेद मिटे

अगले दिन सवेरे बाबा हरिजन-आश्रम गये। वहाँ इन्टरमीडिएट कालेज चलता है और कुछ ग्रामोद्योग भी। इस आश्रम की स्थापना स्वर्गीय मुंशी ईश्वरशरण ने की थी। आजकल इसका संचालन उनके सुपुत्र श्री शंकरशरणजी (जिन्हें हम सब जज साहब कहा करते हैं) द्वारा हो रहा है। उन्होंने ही बाबा का स्वागत किया। कालेज के छात्रों को आशीर्वाद देते हुए बाबा ने कहा कि "हमारे सामने यह सवाल है कि क्या हम गरीबी खतम करना चाहते हैं ? खासकर यह सवाल करुणावान् कम्युनिस्टों ने पेश किया है। उन्हें इसके हल का जो रास्ता सूझा है, वह तो दुःखी और सुखी दो वर्ग कायम रखने की बात है। जो दुःखी वर्ग है, उसे सुखी बनायेंगे, सुखी वर्ग को दुःखी करके। इसलिए

रास्ते की बात नहीं, जो सवाल पेश किया है वह महत्त्व का है। पोप ने भी कहा था कि क्या हमने गरीबों को रखने का ठीका लिया है? यह ख्रिस्त के सेवकों का काम है कि गरीब मुक्त हों। 'कम्युनिस्ट' शब्द भी जेसस क्राइस्ट के वाक्य में से निकला है। जेसस के शिष्य 'कम्यून' करके रहते थे। अपनी सारी जायदाद, संपत्ति-समूह को समर्पण करके एक परिवार की तरह रहते थे। उसे 'कम्यून' कहते थे। उस पर से 'कम्युनिस्ट' शब्द निकला। मैं कहना यह चाहता हूँ कि यह विचार आध्यात्मिक विचार है। गरीब और अमीर, यह भेद ही मिटा देना है।"

बाबा ने आगे कहा "हमें फिर सेवा का मौका नहीं रहेगा। पिता होता है और बेटा होता है। जब तक बेटा छोटा है, तब तक पिता को उसकी सेवा करनी है और पिता बूढ़ा होगा, तो बेटे को उसकी सेवा करनी होगी। लेकिन एक समाज दलित है, एक समाज ऊँचा है और हमें दलितों की सेवा करनी है, यह जो भेदमूलक, अहंकारमूलक बात है, वह जल्दी खतम होनी चाहिए। उसके लिए छटपटाहट होनी चाहिए।

चुनाव और छूतछात

"इस संस्था से ऐसे सेवक निकलें और वे भारत में जायँ और कहें कि छूत अछूत का भेद खतम हो गया है। यह चीज खतम हो गयी थी, लेकिन इन चुनाववालों ने इसे संजीवन दिया। नहीं तो वह मरनेवाली ही थी। मुझे बहुत खुशी हुई कि यहाँ सेवा का काम चल रहा है। त्रिवेणी संगम पर यह आश्रम शोभादायी है। तप और विद्या, दोनों एक क्रिया है। इससे कार्य हो रहा है। भगवान् करे उसका गुप्त अर्थ जल्द से-जल्द प्रकट हो।"

स्त्रियाँ शील-रक्षा और शान्ति-रक्षा करें

दोपहर में आनन्द भवन में ही महिला-सभा हुई। वहाँ धूप थी, वहीं आमों की छाया। बैठने का इन्तजाम ठीक नहीं था। इसलिए

माताएँ और बहनें इधर-उधर बिखरी थीं और शोर-गुल हो रहा था। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "मैं चाहता हूँ कि भारत की स्त्रियाँ अपनी आत्म-शक्ति का भान रखकर सामने आ जायँ। धीरे-धीरे स्त्रियों के हाथ में समाज का अंकुश जानेवाला है। आपके इस प्रदेश की बागडोर सुचेताजी के हाथ में है। वे यहाँ मौजूद हैं। उन्होंने अपना सारा जीवन देश-सेवा में ही लगा दिया है। उनमें दिन-रात काम करने की ताकत है। मैं स्त्रियों को यही सलाह देता हूँ कि वे राजनीति का सूक्ष्म अध्ययन करें और पुरुषों को राजनीति से मुक्त करने का व्रत धारण करें। राजनीति में क्या-क्या हो रहा है, यह बराबर उन्हें निरीक्षण करते रहना चाहिए।

"स्त्रियों की रक्षा पुरुषों पर सदियों से है। जब तक यह भावना रहेगी, तब तक स्त्रियों की सच्ची रक्षा असम्भव है। वास्तव में यह मानने की जरूरत ही नहीं कि स्त्री को रक्षण की आवश्यकता है। आज पुरुषों ने समाज का जो कारोबार चला रखा है, वह ठीक से नहीं चल रहा है। आज कल तो पुरुषों को अहिंसा सिखाने के बदले समानता के नाम पर स्त्रियों की ही पलटनें बनायी जा रही हैं, याने स्त्रियों का पुरुषीकरण चल रहा है। पुरुषों ने जो संहार मचा रखा है, उसमें जब स्त्रियाँ भी योग देने लगेंगी, तब फिर विश्व को कौन बचायेगा!"

अन्त में बाबा ने कहा कि "मैं चाहता हूँ कि महिलाएँ शान्ति-सेना और सर्वोदय-पात्र का काम उठा लें। 'शान्ति' शब्द की व्युत्पत्ति स्त्रीलिंग है। शान्ति-सैनिक का काम पक्षमुक्त होकर ही किया जा सकता है। सर्वोदय-पात्र द्वारा घर-घर से सम्पर्क बनेगा। अगर स्त्री-शक्ति राष्ट्र के काम में लग जाय, तो निश्चय ही राष्ट्र प्रगति करेगा। पुरुषों को बुद्धि-भ्रम हो गया है। वे हिंसा के क्षेत्र में बहुत आगे पहुँच गये हैं। अब पुरुषों की लाज सँवारने के लिए स्त्रियों को आगे आना चाहिए, क्योंकि आगे आनेवाला युग महिलाओं का ही होगा। पिछले दो महायुद्धों ने सिद्ध कर दिया है कि समाज-संचालन के काम में पुरुष नादान साबित

हुए हैं। शील रक्षा और शान्ति रक्षा के लिए बहनों को सामने आना चाहिए।"

इलाहाबाद की मुख्य सभा चार तारीख की शाम को पुरुषोत्तमदास पार्क में हुई। इलाहाबाद का यह सरनाम पार्क पिछले ४५ वर्ष से राष्ट्रीय गतिविधि का प्रमुख केन्द्र रहा है। स्वाधीनता इतिहास के कई अध्यायों का श्रीगणेश यहाँ हुआ। उस दिन भी बाबा की एक सभा मे पूरा पार्क खचाखच भरा था। उसके बाहर भी चारों तरफ सडकों पर दूर दूर तक लोग जमा थे।

विकसित बुद्धि और छोटा दिल

बाबा का यह प्रवचन अस्सी मिनट का हुआ। तूफान-यात्रा मे इससे लम्बा भाषण उनका कहीं भी नहीं सुनने मे आया। लोग ऐसे जमकर बैठे थे, मानो बाबा से एकरूप हो गये हों। अपने प्रवचन मे बाबा ने देश की कई समस्याओं पर गम्भीरता से अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि "आज दुनिया सघर्षों का केन्द्र बन गयी है। अभी पाकिस्तान के साथ सघर्ष है। लेकिन असल में अलग अलग नहीं, एक ही सघर्ष है। जगह जगह अनेक प्रकार के सघर्ष आदि हो रहे हैं। यह सघर्ष है विकसित बुद्धि और छोटे दिल का। विज्ञान तो विकसित हो रहा है और ज्ञान-क्षेत्र भी व्यापक होता जा रहा है। लेकिन मैं समझता हूँ कि दिल पिछड गया है, दिल को भी व्यापक बनाना होगा। मुझे विश्वास है कि यह होगा।

इलाहाबाद को सर्वोदय-नगर बनाये

"आपके इलाहाबाद मे नगर निगम है। नगर निगम के लोगों को यह तय करना चाहिए कि हम इस नगर को 'सर्वोदय-नगर' बनायेंगे। वे चाहेंगे तो यह नगरी सर्वोदय नगरी बन सकती है। लेकिन इसमें भी सियासत दखल देती है, जिसकी अब वहाँ जरूरत नहीं। नगर निगम के लोगों को नगर की सेवा करनी है, जगह जगह मैं यही समझा रहा

नगर-निगम में राजनीति के प्रवेश के साथ ही सेवा का स्थान 'सत्ता' ग्रहण कर लेती है। इस तूफान-यात्रा के शुरू में ही एक नगर-निगम ऐसा मिला, जिसका कारोबार इतना नालायक हो गया कि सरकार, जो खुद नालायक साबित हुई है, उसे अपने कब्जे में लेने का सोच रही है। अगर देश को मजबूत बनाना है, तो नगर-निगम को 'नगर-स्वराज्य' में परिणत होना चाहिए और गाँव को गाँव-स्वराज्य में। अगर स्वराज्य के ऐसे नमूने हुए, तो देश बहुत मजबूत होगा और फिर देश पर बाहर का आक्रमण होने का डर नहीं रहेगा। आज हिन्दुस्तान की स्थिति 'पराधीन गाँवों का बना हुआ स्वाधीन देश' है।

"नगर को सर्वोदय-नगर बनाने के लिए आपका नगर-निगम पक्ष-मुक्त होना चाहिए। पक्ष, यह कुबुद्धि है। आपकी नगरी में भृगु ऋषि आये थे, याज्ञवल्क्य आये थे, ऐसी कहानी है। यह लोकात्मा नेहरू का स्थान है, राजर्षि टंडन का स्थान है, गंगा-यमुना का संगम-स्थान है। उस नगरी की यह हालत है! समझने की बात है कि यहाँ रामायण, गीता-प्रवचन, महात्मा गांधी की आत्म-कथा जैसी पुस्तकों का अध्ययन हो, अच्छा साहित्य यहाँ पढ़ा जाय। पाँच साल पहले जब मैं इसी रास्ते से काशी जा रहा था, तो कुछ लोग मेरे पास आये थे और उन्होंने कहा कि यहाँ बहुत गन्दा साहित्य तैयार होता है, वह बन्द होना चाहिए। कल मैंने बहनों से भी कहा था कि बहनों को इस काम को उठा लेना चाहिए।"

माता कस्तूरबा का पुण्य-स्मरण

दो दिन इलाहाबाद में रहने के बाद ५ सितम्बर को सवेरे बाबा आनन्द-भवन से बिदा हुए। उस दिन का पडाव इलाहाबाद जिले के ग्रामदानी गाँव बरनपुर में था। रास्ते में कुछ मिनट के लिए बाबा पसना गाँव में ठहरे, जहाँ श्री धीरेन्द्रभाई के मार्ग-दर्शन में कस्तूरबा श्रम-निकेतन खुलनेवाला है। इसका सचालन कस्तूरबा गाधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट की तरफ से होगा। श्रम निकेतन का शिलान्यास करते हुए बाबा ने कहा कि "माता कस्तूरबा को गये हुए इक्कीस साल हो गये। एक पुश्त बीत गया, लेकिन स्मृति अमर है। महात्मा गाधी की दुनिया में प्रसिद्धि है कि उन्होंने दुनिया के दलितों को, दुःखियों को, दीन लोगों को बहुत आधार दिया। लेकिन उनको भी आधार कस्तूरबा ने दिया। इस प्रकार स्त्री शक्ति का रूप प्रकट हुआ। तो, यह स्थान बहनों को जीवन देनेवाला बने। यहाँ 'अबला' ही 'सबला' बन जाय। बहनों के लिए कितना कार्यक्रम प्रस्तुत है। आगे आनेवाला जमाना स्त्रियों के लिए विशेष स्थान रखता है, बल्कि उनका मार्ग-दर्शन चाहता है।"

अल्प विज्ञान भयानक है

८। बजे बाबा बरनपुर पहुँचे। यह इलाहाबाद जिले का पहला ग्रामदानी गाँव है। यह ग्रामदान ४ जनवरी १९५८ को श्री नवकृष्ण चौधरी को भेट किया गया था। पिछले कई साल से बरनपुर में श्री धीरेन्द्रभाई बैठे हैं और अपना श्रम आधारित प्रयोग चला रहे हैं। उन्होंने कमल के फूल से बाबा का स्वागत किया। गाँव के और आस-पास के लोग जमा थे। बाबा ने कहा कि "यह स्थान बोलने का नहीं, मौन रहने का और हृदय में शक्ति और भक्ति का सयोग करने का है। यहाँ जो नयी दुनिया बन रही है, उसके पीछे कुछ दृष्टि मिलेगी। जितना विज्ञान बढ़ेगा, समाज का जीवन उतना 'कम्प्लेक्स' बनेगा, अन्योन्याश्रित होगा। लेकिन जिस तरह अल्प ज्ञान भयानक वस्तु है, उसी तरह अल्प-विज्ञान भी भयानक है—'लिटिल साइंस इज ए डेंजरस थिंग'।

"इस समय विज्ञान के प्रथम हमले में पुराने मूल्य, पुरानी रचना टूट रही है। सब टूटने लायक है, ऐसा नहीं। लेकिन जब सैलाब आता है, तो भला-बुरा सभी बह जाता है। इसके बाद चित्त शान्त होगा। पंच महाभूतों का महत्त्व सामने आयेगा। पवनार में एक लड़के की शादी थी, वह मेरे परिचय का था। एक दिन वह मेरे पास घड़ी माँगने आया। मैंने दे दी। दूसरे दिन वह उसे वापस कर गया। बोला—कल मेरी शादी थी। उसमें जरूरत थी। इस तरह शादी का घड़ी से सम्बन्ध आया। यह विज्ञान का पहला ऑनस्लॉट (आक्रमण) है। उससे यह हो रहा है। बाढ़ निकल जायगी, फिर गहरा विज्ञान आयेगा।

सही दृष्टिकोण अब आयेगा

"अब लोग आकाश में, अन्तराल में जा रहे हैं। रेडियो एस्ट्रोनामी नामक एक विज्ञान निकला है। वह बताता है कि जिसे आकाश-गंगा कहते हैं, उसमें असख्य सितारे हैं। अनन्तकोटिब्रह्माण्ड-वाली बात सामने आ रही है। इससे मनुष्य अल्प बनेगा। इसे राइट परस्पेक्टिव (सही दृष्टिकोण) आयेगा। यह जो खेतों की सीमाओं के या राष्ट्रों की सीमाओं के झगड़े चलते हैं, वे अब ज्यादा दिन नहीं चलेंगे। विज्ञान के कारण मनुष्य उदार बनेगा।"

भूदान की भूल ग्रामदान में नहीं

फिर बाबा ने बताया कि भूदान के बँटवारे के सम्बन्ध में कई अर्जियाँ उनको मिली हैं। उनका हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि "इसमें भूल हुई है। अगर मालिकों का बँटवारे में हाथ रहता तो यह बात नहीं होती। हमने यह गलती की। लेकिन अब जो ग्रामदान का सिलसिला चला है, उसमें वह गलती नहीं है। इस मुलभ ग्रामदान में अनेक के हाथ लग सकते हैं। यह पुराने ग्रामदान से ज्यादा मानवीय है। शुरू में मैं भूदान माँगता था, बाद में ध्यान में आया कि धर्म तो वह है, जो सबको लागू हो, जैसे सत्य। इसी तरह दान अगर धर्म है,

तो सबको लागू होना चाहिए। अब जिनके पास जमीन नहीं है वह क्या दगे। उनके पास श्रम शक्ति है। और कुछ नहीं तो प्रेम है ही। हरएक को यह 'हैव' है, 'हैव-नाट' कोई नहीं। इस ग्रामदान में सब को शिरकत करनी है।

पूरा इलाहाबाद जिला ग्रामदान हो

शाम की सभा म तेरह ग्रामदान दिये गये। सभा म पहाडी इलाके के रहनेवाले भाई-बहन दूर-दूर से आये थे। शाम का समय था। मीनी मीनी हवा चल रही थी। बडा सुन्दर दृश्य था। अपने प्रवचन मे बाबा ने कहा कि "बारह तेरह ग्रामदानों से मेरा समाधान नहीं होता। सारा इलाका ही ग्रामदान होना चाहिए। पूरा इलाहाबाद जिला ग्राम दान हो, तो आपकी आवाज में ताकत आयेगी और सरकार में आपका रग आयेगा।

"आज तेरह ग्रामदान दिये 'तेरह' 'तेरह तेरा तेरा तेरा माने मेरा नहीं, यानी जमीन मेरी नहीं, सबकी। जमीन माता है और हम उसके बच्चे हैं। अपने पास जो जमीन हो वह आपस मे बाँट लो.

रूखा सूखा राम का टुकड़ा
फीका और सलोना भी।

हम 'राम' का टुकडा खायगे, 'हराम' का नहीं। राम का टुकडा खाने से हम मजबूत बनगे और देश मजबूत बनेगा। आपकी तीन बातें करनी हैं—जमीन सबकी हो, मक्खन खूब खाइये और अपना कपडा खुद बनाइये।"

राजा माडा का दान

अगले दिन, ६ सितम्बर की सुबह बाबा बरनपुर से निकलकर थोडी देर के लिए कोराव म ठहरे। वहाँ श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह (राजा माडा) का एक स्कूल चलता है। राजा साहब ने बाबा के हाथों स्कूल के विज्ञान-भवन का शिलान्यास कराया। स्कूल के प्रधानाचार्य

श्री इन्द्रद्युम्नसिंह ने बाबा का स्वागत किया। अपने भाषण में भैयाजी (राजा साहब को हम सब इसी नाम से पुकारते हैं) ने कहा कि "बाबा ने कक्ष का शिलान्यास तो किया, लेकिन असली शिलान्यास उनके विचारों का है, जिन पर हमें अमल करना है। पिछले चौदह साल से बाबा घूम रहे हैं और गांधीजी के बताये रास्ते पर, सत्य और अहिंसा के आधार पर नयी समाज-रचना खडी करने के लिए हम सबको आवाहन दे रहे हैं। इसीलिए उन्होंने हमें ग्रामदान का मन्त्र दिया है।"

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "राजा साहब ने कुछ दान दिया और उसके आधार पर एक क्रान्ति-संस्था खड़ी हो गयी। सुना है, यह इलाका ग्रामदानी इलाका बनने जा रहा है। जिस काम का त्याग से और भगवान् के नाम से आरम्भ होता है, वह बहुत फूलता-फलता है। बहुत बड़ी मिसाल दुनिया के लिए गौतम बुद्ध की है। वे राजपुत्र थे और वैभव परित्याग करके निकल पड़े। बहुत बड़ी क्रान्ति वे दुनिया के विचारों में लाये, जिसका आज तक असर है और आगे बढनेवाला ही है। एक महान् त्याग पूर्ण निष्ठा से किया, उसका फल यह हुआ। राजा साहब की यह छोटी मिसाल है, लेकिन उसी लाइन में है। वह महात्याग की है और यह दान की है। हम आशा करते हैं कि राजा साहब के जीवन में वह त्याग भी आयेगा। सब प्रकार की झिझक छोड़कर इस इलाके को 'ग्राम-स्वराज्य-क्षेत्र' बनाने के लिए वह अपना जीवन लगायेंगे। मार्गदर्शन तो उनको मिल रहा है, भगवत्-कृपा से आगे भी मिलता रहेगा, लेकिन वे खुद ही निकल पड़ें, तो प्रकाश बढ़ेगा।

दोष मेरा है

"मुझे कहा गया कि यहाँ भूमि का बँटवारा गलत ढंग से हुआ है। उसमें और किसीको मैं क्या दोष दूँ! दोष मेरा ही है, क्योंकि मैंने एक भावना में आकर एक कल्पना कर ली थी कि क्रांतिकारक कार्यकर्ता होंगे, उनके द्वारा जमीन बँटेगी, तो उसका परिणाम मालिकी-विसर्जन में आने

होगा। अनुभव दूसरा आया। यह कलियुग है। विकारों का असर है ही मन पर। इसलिए मैं इसे अपना ही दोष मानता हूँ। मैंने तो अपने मन मे निधिमुक्ति, तन्त्रमुक्ति का विचार ही रख लिया है। मन में निश्चय कर रहा हूँ कि कोई समितियाँ विचार क्रांति को फैला नहीं सकतीं। वह एक मोह है, विचार को आचार मे फैलाने के लिए। गौतम बुद्ध ने समिति बनायी नहीं और वे निकल पड़े। उसके बाद समितियाँ बनने लगीं। तब बुद्ध धर्म का क्षय होने लगा। यह इतिहास है। इसाइयत का भी यही हाल है। उससे हमें बोध लेना चाहिए। एकआध एडहॉक समिति बने, अगर जरूरत हो और काम खतम होने के बाद समाप्त हो जाय। यह सर्व सेवा संघ को सोचना है, लेकिन यह दोष 'ग्रामदान' को लागू नहीं होता।

"ग्रामदान में मालिकी ग्रामसभा को विसर्जन होती है और ग्राम सभा यानी गाँव के सब लोग मिलकर भूमि का बँटवारा करते है। अपनी जमीन का बीसवा हिस्सा भूमिहीनों के लिए दान देकर ग्रामसभा के द्वारा बँटवारा करते हैं। किस तरह बँटवारा करना, यह उनकी मर्जी पर है। उनके अनुसार वह किया जायेगा।"

मेरा सर्वश्रेष्ठ विचार सर्वोदय पात्र

करीब आठ बजे बाबा मिर्जापुर पहुँचे। उस समय थोडी बारिश हो रही थी, जिसकी लोगों को बहुत जरूरत थी। बाबा ने कहा कि "अगर मुझसे कोई पूछे कि आपके विचारों में सबसे श्रेष्ठ कौन सा विचार है, तो मैं कहूँगा कि सर्व श्रेष्ठ विचार सर्वोदय-पात्र का है। कार्यकर्ताओं को भी यह जँचा नहीं है, क्योंकि यह मेहनत का काम है। साथ ही साथ सर्वोदय पात्र के पीछे लोक सम्मति भी है। अगर हिन्दुस्तान में शान्ति सेना खड़ी है, शांति रखनी है तो उनके पीछे लोक सम्मति चाहिए।

आज सरगुजा से माता राजमोहिनी देवीजी बाबा से मिलने आयीं। वे यहाँ की अत्यंत प्रिय सेवकों में से हैं। वहाँ उनके नेतृत्व में शराब—

बन्दी का काम बहुत जोर-शोर से चल रहा है। इधर उन्होंने ग्रामदान में भी दिलचस्पी लेनी शुरू की है। बाबा चेतनदास भी यहाँ मिले, जो पिछले ४५ साल से गुजरात छोड़कर उत्तर प्रदेश की जनता की सेवा कर रहे हैं। इन दिनों उनकी रुचि साहित्य-प्रचार में लगी है।

शाम की सभा में ३८ ग्रामदान दिये गये। बाबा ने कहा कि "यहाँ ४० से लेकर ४०० तक की जनसंख्या के ग्रामदान हुए, लेकिन महाराष्ट्र में बहुत बड़े-बड़े ग्रामदान हुए हैं। इस क्षेत्र में बड़े गाँव आने चाहिए।

शराब की आमदनी का नशा

श्रीमती राजमोहिनी देवी का हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि "उनके कहने से बहुत-से लोगों ने शराब पीना छोड़ दिया है और उसी क्षेत्र में सरकार शराब की दूकानें खोल रही है। यह क्या गोरखधन्धा सरकार ने किया। यह एक ऐसा नशा है, जिसका सरकार को चस्का लग गया है। लोगों को शराब पीने का चस्का लगा है और सरकार को नशे की दूकान से मिलनेवाली आमदनी का चस्का लगा है। यह नशा शराब के नशे से खराब है। आज आप चीन के मुकाबले की बात करते हैं, लेकिन यह चीन कई साल पहले अफीम पी पीकर सुस्त पड़ा हुआ था और अंग्रेजों के कब्जे में था। वहाँ के नेताओं ने चीन को अफीम से मुक्त किया। तो क्या अफीम से मुक्त हुए चीन का मुकाबला शराब से युक्त हुए आप करेंगे? यह बिल्कुल सादी बात है और समझ में नहीं आता कि सरकार क्यों पैसा-पैसा रट रही है। पैसों की कीमत अब नहीं रही दुनिया में, तो सरकार शराब को क्यों बढ़ावा दे रही है? इसलिए मैं सरकार से अपील करता हूँ कि आदिवासी क्षेत्र में शराब की दूकानें न खोलें और राजमोहिनी देवीजी यह सत्कार्य कर रही हैं उसको बढ़ावा दे।"

दो सौ करोड़ लोगों का दुःख

आगे चलकर बाबा ने कहा कि "सारी दुनिया में आज तीन सौ करोड़ लोग हैं। तीन सौ में से कम-से-कम दो सौ करोड़ लोग ऐसे

हैं, जिनको भरपेट अन्न मिलता नहीं। हिन्दुस्तान के ही नहीं, कुल दुनिया के। आज जो कशमकश चल रही है, वह इन दो सौ करोड लोगों को न्याय मिले और जीवन की सहूलियत मिले, इसलिए चल रही है। तो चाहे वह कम्युनिज्म हो, चाहे वह वेल्फेयरिज्म हो, चाहे सोशलिज्म हो, चाहे कैपिटलिज्म हो, सब यही चाहते हैं कि हर मनुष्य को 'मिनिमम' मिलना चाहिए। इसे आप भौतिकवाद कैसे कहेंगे? दो सौ करोड लोगों को कम से-कम मिले, तो कैसे मिलेगा? एक तो उत्पादन बढाना होगा, दूसरा अपने भाग मे से कुछ हिस्सा दो सौ करोड लोगों को देना होगा। यानी दानधारा चलती रहनी चाहिए। इसलिए यह जो चीज चली है, वह भौतिकवाद नहीं।

सर्वोदय-साहित्य की जरूरत

"समाज मे रजोगुणी, तमोगुणी लोग तो होते ही है, वे आज भी हैं, लेकिन दुनिया मे जो प्रयत्न चल रहा है, उसके लिए चाहे किसी भी 'वाद' के लोग क्यों न हों, उन सबके द्वारा कोशिश यह हो रही है कि गरीबी मिटे। उनको आप यह नहीं कह सकते कि भौतिक प्रेरणा चल रही है। छापखाने को भारत में आये सौ साल हो गये। उससे पुस्तके प्रकाशित करने की सहूलियत हो गयी। मै पूछता हूँ कि भौतिक साहित्य में पढी जानेवाली कोई भौतिक किताब है, जो तुलसीदासजी की रामायण से ज्यादा पढी जाती हो? कोई भी किताब इतनी नहीं पढ़ी जाती। पदयात्रा मे भी सब से ज्यादा प्रतियाँ 'गीता-प्रवचन' की ही बिकी हैं, १२ लाख। इसलिए मैं सर्वोदय-साहित्य पर जोर दिया करता हूँ।"

अन्त में बाबा ने कहा कि "आज दुनिया के एक छोटे-से हिस्से में भी अगर जरा-सी लडाई हो जाय, तो सारी दुनिया में हो हल्ला मच जाता है, क्योंकि आज दुनिया एक हो गयी है। ये लडाइयाँ जो होती है, वह जैसे दीपक बुझने के पहले लौ ऊँची होकर बुझता है, उसी तरह

नार्ई मासेज'। परिशुद्ध ग्रामदान पाँच-पचास हो सकें, उसके बदले में जिसमें सबका सहयोग मिल सकता है, ऐसे ग्रामदान लाखों की तादाद में हों। इसलिए जरा 'डाइजेस्टेड फूड' बच्चों को पचाने के लिए आसान बनाकर दे दिया। आज जो हो रहा है, उसका चार महीने पहले मुझे कोई अन्दाजा नहीं था।

तूफान-कार्यकर्ताओं से माँग

"अब हवा में चीज आ गयी है। हम लोग तो इसीके आधार पर खड़े हैं। हम तो इसे जीवन का आधार मानते हैं। फिर चाहे वह गांधी निधि हो, चाहे और कोई हो, सबको इसमें अपना सब कुछ उँडेलना है, सब कुछ न्यौछावर करना है। यह हमारी आखिरी लड़ाई है। इसमें हम खतम होंगे तो सब कुछ खतम करने के बाद ही खतम होंगे। हम ऐसा करते हैं, तभी काम बनता है।

"शान्तिसेना को हम ग्रामदान के साथ जोड़ते हैं, उसका कारण यह है कि मान लीजिये, लाखों ग्रामदान हो जायँ और उनमें शान्ति-सेना खड़ी हो जाय, तो सारे देश का 'डिफेन्स' तैयार होगा और इतने बड़े पैमाने पर गाँव तैयार होंगे। उसके अलावा थोड़ा शहर में भी करना पड़ेगा। मैं काफी चिन्तित हूँ, अनुभव की बात है, प्रयोग करना चाहिए। ग्रामदान के साथ शान्तिसेना का अंश जितना जुड़ा हुआ है यह बिल्कुल साफ है। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप सब लोग इसमें लग जायँ।"

बाबा ने आगे कहा "काशी से असम तक का प्रदेश पूर्व दिगचल है। यहीं से सूर्योदय होता है। अगर ऐसा हुआ तो फिर ये पश्चिम के लोग गुजरात, महाराष्ट्र वगैरह हिसाब जानते हैं। अगर उनके हिसाब में यह आ जाता है, तो वे काम को उठा लेंगे। गुजरात के विचारक ऐसे नतीजे पर आये हैं कि सुलभ ग्रामदान अच्छा है। तो वहाँ अच्छा मौका है। महाराष्ट्र के बारे में तो मैं क्या कहूँ, भिन्न भिन्न प्रान्त के बारे

हो रही हैं। हिंसा एक दफा जरा बड़ा जोर लगायेगी और फिर ये सारी सियासत, धर्म-पन्थ खतम हो जायेंगे। तब अध्यात्म-विद्या और विज्ञान आयेगा। इसलिए भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद मनुष्य की देह और आत्मा की भाँति एक ही हैं, इन्हें 'एक' करने में ही कल्याण है।"

काशी में आगमन

७ सितंबर को सुबह बाबा काशी पहुँचे और सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र में ठहरे। देशभर के ग्रामदान-तूफान आन्दोलन में लगे कार्यकर्ता जमा थे। उनको संबोधित करते बाबा ने कहा : "सन् १९४७-४८ में जो भारत की स्थिति थी, उससे कम गंभीर आज की स्थिति नहीं है। हमारी सरकार का जो प्लानिंग चलता है, उससे आशा की गयी थी कि बहुत कुछ क्रांतिकारी परिणाम आयेगा। जिन्होंने ऐसी आशा की थी, वे भी निराश हो गये हैं। सरकारी योजना-आयोग में देहात को उठाने की अन्तिम प्राथमिकता है और दूसरे कामों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है। तो मैं कई दफा कह चुका हूँ कि योजना-आयोग देहात को जगाने में समर्थ नहीं होगा। हमारे प्लानिंग में एक बहुत बड़ी कमी रही है। वह यह कि वह यह मानकर चली कि दुनिया में और हिन्दुस्तान के आस-पास शांति रहेगी। अगर कभी लड़ाई की सूरत पैदा हो जाय, तो हमारी पंचवर्षीय योजना बिलकुल 'हाउस आफ कार्ड' (ताश के बँगले) की तरह गिर पड़ेगी। वह आज देखने का मौका आया है। प्लानिंग चलती तो भी देहात को बहुत ज्यादा आधार मिलनेवाला नहीं था। लेकिन अब वह प्लान ही गिरनेवाला है।

"चीन के आक्रमण को देखकर मैंने ग्रामदान सुलभ किया है। मुझे लगा कि अपना यह सर्वांगसुन्दर ग्रामदान का रूप भले ही कुछ कम आकर्षक हो, लेकिन लाखों की तादाद में बन सकता हो तो बने। बापू ने एक दफा शब्द दिया था 'मास प्रोडक्शन' के बदले 'प्रोडक्शन

गाई भासेज'। परिशुद्ध ग्रामदान पाँच-पचास हो सके, उसके बदले में जिसमें सबका सहयोग मिल सकता है, ऐसे ग्रामदान लाखो की तादाद में हो। इसलिए जरा 'डाइजेस्टेड फूड' बच्चो को पचाने के लिए आसान बनाकर दे दिया। आज जो हो रहा है, उसका चार महीने पहले मुझे कोई अंदाजा नहीं था।

तूफान कार्यकर्ताओं से माँग

"अब हवा में चीज आ गयी है। हम लोग तो इसीके आधार पर खडे हैं। हम तो इसे जीवन का आधार मानते है। फिर चाहे वह गाधी निधि हो, चाहे और कोइ हो, सबको इसमें अपना सब कुछ उँडेलना है, सब कुछ न्यौछावर करना है। यह हमारी आखिरी लडाई है। इसमें हम खतम होंगे तो सब कुछ खतम करने के बाद ही खतम होंगे। हम ऐसा करते है, तभी काम बनता है।

"शान्तिसेना को हम ग्रामदान के साथ जोडते है, उसका कारण यह है कि मान लीजिये, लाखों ग्रामदान हो जायँ ओर उनमें शान्ति-सेना खडी हो जाय तो सारे देश का 'डिफेन्स' तैयार होगा और इतने बडे पैमाने पर गाँव तैयार होगे। उसके अलावा थोडा शहर में भी करना पडेगा। मैं काफी चिन्तित हूँ, अनुभव की बात है, प्रयोग करना चाहिए। ग्रामदान के साथ शान्तिसेना का अश जितना जुडा हुआ है यह बिल्कुल साफ है। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप सब लोग इसमें लग जायँ।"

बाबा ने आगे कहा "काशी से असम तक का प्रदेश पूर्व दिगचल है। यहीं से सूर्योदय होता है। अगर ऐसा हुआ तो फिर ये पश्चिम के लोग गुजरात, महाराष्ट्र वगैरह हिसाब जानते है। अगर उनके हिसाब में यह आ जाता है, तो वे काम को उठा लेंगे। गुजरात के विचारक ऐसे नतीजे पर आये हैं कि सुलभ ग्रामदान अच्छा है। तो वहाँ अच्छा मौका है। महाराष्ट्र के बारे में तो मैं क्या कहूँ, भिन्न भिन्न प्रान्त के बारे

में तो जजमेंट देना मैं उचित नहीं मानता। लेकिन आप ताकत लगाइये। चार-छह महीना पूरी ताकत लगाइये, फिर देखिये।"

सब मानव-देहधारी जेल में ही हैं

काशी में बाबा चार दिन, १० सितम्बर तक रहे। रोजाना उनके कई कार्यक्रम रहते थे। ८ तारीख को सबेरे वे बनारस सेण्ट्रल जेल गये। वहाँ अंबर-कताई और अन्य उद्योग उन्होंने देखे। जेल के सभी निवासियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि "हमे करना क्या है? देह से मुक्त होना है। मरने से यह नहीं होता। मरता तो हर कोई ही है, लेकिन वासना छूटती नहीं। इसलिए हम मानते हैं कि जितने मानव देहधारी हैं, सब जेल में हैं और सबको उस जेल से मुक्त होना है। सचाई से रहना, सत्य से रहना, किसी पर अपना भार न पड़े और सतत काम करते रहना। यह है मुक्ति की साधना। इसके लिए आपको बहुत अच्छा मौका मिला है, आप उसका उपयोग करें। भगवान् का ध्यान करें। जेल में ध्यान के लिए अच्छा मौका मिलता है।

"आजकल जेल में बहुत-सी चीजों की शिक्षा दी जाती है। लेकिन वह बहुत ज्यादा उपयोग में नहीं आयेगी। मदद देता है काम और नाम। हमारे सन्तों ने कहा है कि हाथ में काम हो, मुख में नाम हो, हृदय में राम हो, उसीसे मनुष्य छूटता है, दण्ड से नहीं। कोई मनुष्य पकड़ा गया, उससे उसका दिल बदल जाता है। फिर उसको सजा देते हैं। राम ने गुनाह किया, कृष्ण को पकड़ा, हरि पर मुकदमा चलाया और गोविन्द को सजा दी। ऐसा अक्सर होता है और चारों को एक ही मान लेते हैं, क्योंकि शकल वही होती है।"

मत्सर का राष्ट्रीयकरण

बनारस की जिला-परिषद् के सदस्यों और कार्यकर्ताओं ने भी बाबा से भेंट की। बाबा ने इनसे कहा कि "जिला-परिषद् के मानी विकेन्द्रित

राज्य हो। केन्द्रित राज्य दिल्ली में है। उसका कुछ हिस्सा लखनऊ में और कुछ वाराणसी में आया। इस तरह सरकार द्वारा गाँव तक 'ग्राम-स्वराज्य' पहुँचाने की कोशिश की गयी। लेकिन, मैंने एक दफा कहा था कि बड़े पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े करेंगे, तब भी वह पत्थर ही होगा, मक्खन नहीं होगा। वैसे ही केन्द्रित-सत्ता के टुकड़े करेंगे तब भी वह केन्द्रित सत्ता ही रहेगी। इसका नाम मैंने दिया 'मत्सर का राष्ट्रीयकरण'। पुराने जमाने में सरदारों के बीच यह 'मत्सर' रहता था। वैसे आज दिल्ली से लेकर गाँव तक सबको मत्सर करने का हक हासिल हो गया है। इस हालत में जो ग्राम-पचायत बनती है, वह मत्सर की प्रतिनिधि बनकर जनता के समक्ष आती है, सेवा की नहीं। यह बात जिला-परिषद्-वालों के ध्यान में आ जाय, तो अच्छा है।"

विकेन्द्रित शोषण

आगे चलकर बाबा बोले कि "पहली चीज तो मत्सर का राष्ट्रीयकरण हुई और दूसरी है विकेन्द्रित शोषण-योजना। एक केन्द्र के द्वारा शोषण करना चाहें तो 'प्रभूत शोषण' नहीं हो सकता है। इसलिए विकेन्द्रित शोषण की रक्षा के लिए मत्सर योजना बनी है। अगर वह सत्ता नीचे आ गयी तो पूरा-पूरा समाज शरीर बिगड़ेगा। ऐसा न हो, इच्छा तो सबकी है, लेकिन अच्छी इच्छा के होते हुए भी भारत का नखशिखान्त शरीर दूषित हो जाय तो परिणाम विपरीत आयेगा। इसलिए प्रेम की ग्राम-सभा बने और ग्राम का उत्थान हो।"

संयम की जरूरत

साधना केन्द्र में रहने और काम करनेवाले, सर्व सेवा सघ और गाधी विद्या-सस्थान के मित्रों की सभा भी उसी दिन हुई। बसत कालेज के शिक्षक और सचालकगण भी आये थे। उन सबको सबोधित करते हुए बाबा ने कहा कि "एक ही शब्द में भारतीय सस्कृति का लक्षण बताने के लिए कहा जाय तो वह शब्द 'सयम' होगा। श्रमण सस्कृति,

वैदिक संस्कृति, वैष्णव और शैवों की संस्कृति और महात्मा गांधी तथा जो-जो द्रष्टा हो गये हैं, उन सबका दर्शन एक शब्द में निहित है, वह है—'संयम'। पुरानी भाषा में इसे 'ब्रह्मचर्य' कहते थे, जो बहुत भावपूर्ण शब्द है, जिसमें साक्षात् ध्येय का और प्राप्ति का एकत्र दर्शन मिलता है। तो संयम या ब्रह्मचर्य का एक जमाने में मूल्य था, ज्यादातर आध्यात्मिक मूल्य था, वह मूल्य आज भी कायम है, कुछ बढ़ा ही है। बढ़ा इसलिए है कि उसकी आवश्यकता ज्यादा हुई। विज्ञान के प्रवाह में उसको आध्यात्मिक मूल्य के साथ ही एक सामाजिक मूल्य भी प्राप्त हुआ है।"

गांधी-विद्या का अर्थ

आगे चलकर बाबा ने कहा कि "गांधी-विद्या का अर्थ है, सर्वोदय का संशोधन। संशोधन की आवश्यकता के बारे में दो राय हो नहीं सकती। जहाँ एक सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक मूल्य-परिवर्तन का कार्य चल रहा हो, उसके साथ-साथ सतत निरीक्षण, परीक्षण और आजकल एक नया शब्द निकला है सर्वेक्षण—यह सब भी होना चाहिए। बल्कि उपनिषद् में वर्णन आया है कि परमात्मा ने सृष्टि-निर्माण के विचार के बाद उसका निरीक्षण किया। निरीक्षण के बिना गाड़ी कहीं से कहीं चली जायगी। खुशी की बात है कि यहाँ निरीक्षण शुरू हुआ है।

मन में पीड़ा बनी रहे

"मेरे, आपके और इन संशोधकों के सामने यह सवाल है कि क्या संशोधन का आडम्बर प्राप्त करने के लिए गरीबी की हस्ती कायम रखना लाजिमी है, ताकि उनकी सेवा और उनकी सेवा के संशोधन का आनन्द मिले! इस सवाल को अगर किसीने हार्दिकता के साथ पेश किया है, तो वह लिओ टालस्टाय और कार्ल मार्क्स ने पेश किया है। इस जमाने के साधन-सर्ग के सिलसिले में विभिन्न विचारवाले दो मनीषियों का एक विचार में समन्वय हुआ कि गरीबी मिटानी होगी। गरीबों की

सेवा करते रहिये, इतना ही पर्याप्त नहीं है, उनकी गरीबी मिटाना लक्ष्य है। विज्ञान शक्ति हमारे हाथ में भगवान् ने सौंपी है, तो गरीबी मिटा सकते हैं। इसलिए संशोधन म जो लगे हैं उनका जीवन सामान्य रहे। मेरा अर्थ यह नही कि तकलीफमय हो। मैं मानता हूँ कि ऐसे ज्ञान और सशोधन में जरूरी है कि जीवन की सामान्य जरूरतें पूरी हो और वे सशोधकों को प्राप्त हों। फिर भी जिस अन्तःकरण से प्रेरित होकर सशोधन कर रहे है, वह सदा द्रवित रहना चाहिए, सूखना नहा चाहिए। जो दुर्दशा आज दुनिया की है, उसके लिए उनके मन मे पीडा होनी चाहिए।

जीवन-पद्धति में फर्क करें

"कार्यकर्ताओं की सारी जमात यहाँ इकट्ठा हुई है। इसे इत्तिफाक की बात ही कहे कि इतने कार्यकर्ताओं में मुश्किल से दो तीन मुसल्मान हैं। इतनी बडी जमात, जो दुनियाभर के लिए जाहिर करती है कि मजहब को मिटाना है और रूहानियत को आना है। मजहब और सियासत को जाना है और विज्ञान को आना है, ऐसा विचार मानने वाली जमात में भी इतनी जनसख्या क्यों होनी चाहिए? सोचने की बात है। मै कहना यह चाहता था कि हिन्दुस्तान ओर पाकिस्तान मे कोई अन्दरूनी सहार न शुरू हो जाय। अगर अन्दर अन्दर शुरू हो गया तो दोनों देशों की राजनीति समाप्त हो जायगी। यह कल्पना अपने आपमें ही भयानक है। उसके लिए हमें सजग रहना होगा।" अगर हमारी जीवन पद्धति में कोई ऐसी चीज हो, जिसके कारण दूसरी जमात वाले कम आते हों, तो इस जीवन पद्धति मे थोडा बहुत फर्क कर लेना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि हमें दूसरी जमातों के सेवक भी मिल। मैंने ऊँचे-से-ऊँचे कई आश्रम देखे, लेकिन वहाँ भी यही हालत। शान्ति सेना को तो मैंने अपने मन में 'सेवा-सेना' नाम दे दिया है, लेकिन उस जमात में भिन्न भिन्न जमातो के लोग शामिल हों, उनको उसमें खींचा जाय ऐसी कोशिश ध्यानपूर्वक करनी होगी।"

पाँच हजार कार्यकर्ता निकल पड़ें

तीसरे दिन बाबा सेवापुरी गये। वहाँ गांधी स्मारक-निधि के प्रान्तीय संचालक तथा मुख्य कार्यकर्ता आये थे। एक सार्वजनिक सभा भी वहाँ हुई। उसमें बाबा ने कहा कि "हिन्दुस्तान में पाँच लाख गाँव हैं। उन गाँवों के साथ हमारा किसीका सम्पर्क है नहीं, इसलिए जो कुछ घटनाएँ देश में हुआ करती हैं, वह सब ऊपर के स्तर पर ही रह जाती हैं। नीचे तक पहुँचती ही नहीं, यह मैंने बहुत दफा देखा है। इसका अनुभव सारे भारत को है। इसलिए मैं कह रहा था कि पाँच लाख गाँवों में प्रदक्षिणा करने के लिए यदि पाँच हजार कार्यकर्ता निकल पड़ें, तो हर कार्यकर्ता के जिम्मे सौ गाँव आयेंगे। रोज दो गाँवों में सुबह और शाम पहुँचें, तो पचास दिन में एक प्रदक्षिणा सारे भारत की हो जायगी और सालभर में ६ दफा अपना सन्देश गाँववालों के सामने सुनाने का मौका मिलेगा। गाँववालों की बात इधर हम लोगों तक भी पहुँच सकेगी। ५० दिन घूमना और १० दिन आराम, यह हर दो महीने का कार्यक्रम है। इस तरह पाँच हजार कार्यकर्ता एक साल के लिए निकल सकते हैं।"

तटस्थ चिन्तन हो

अगले दिन ९ तारीख को बाबा बनारस के रोटरी क्लब में गये। उन्होंने वहाँ कहा कि "यहाँ मुझे कुछ विजातीयता का भास हो रहा है।...तुलसीदासजी ने विश्व-विकासी काशी कहा है। काशी विश्व को प्रकाशित करेगी, ऐसी अपेक्षा काशी से की गयी है। ऐसी नगरी में रोटरी क्लब है, तो उससे यह अपेक्षा और बढ़ जाती है। आपके अनचाहे ही उतनी प्रतिष्ठा आपको उपलब्ध है, जितनी आपने नहीं चाही होगी। यह ध्यान में रखकर आप काम कीजिये। दुनिया में जो मसले हैं, उनका निरन्तर अध्ययन किया जाय। उन पर चर्चा करके फैसले घोषित किये जायँ और फैसले न होते हों, तो सिर्फ चर्चा ही सही, लेकिन लोगों के सामने अपनी विचारधारा रखनी चाहिए।

"आज भारत मे जो परिस्थितियाँ हैं, उनके कारण इस वक्त सबके सामने दुविधा है। हमारा पडोसी पाकिस्तान जो हमारा अंग है, इन्ही दोनों अगों के बीच मे झगड़ा चल रहा है। परमात्मा करे झगड़ा ज्यादा न बढ़े। दुनिया मे ऐसे भी लोग हैं, जो सुलह पसन्द करते हैं, वे चाहते है कि सुलह हो जाय और झगडा जल्दी मिटे। इसके बावजूद जब तक झगड़ा जारी रहेगा, तब तक देश को ठीक से दिशा-दर्शन मिलना चाहिए। अन्यथा देश कहीं-का-कहीं चला जायेगा। भारत पर पाकिस्तान का आक्रमण हुआ है। हम तटस्थ बुद्धि से सोचने की कोशिश करते हैं। हमने जय-जगत् का मन्त्र ही अपनाया है। इसलिए इस सन्दर्भ मे हमे तटस्थ चिन्तन करना चाहिए।

हर घर के साथ सम्पर्क हो

"दूसरी बात, काशी के बारे में आपको करनी है। दुनियाभर का चिन्तन कर, दुनिया को रास्ता दिखाने का काम करें और काशी में कुछ भी न किया जाय, तो हम क्षीण होंगे। क्योंकि नजदीक के क्षेत्र में जो कुछ होता है, उसका असर बहुत दूर तक होता है। इसलिए काशी आपका प्रायोगिक स्कूल हो। विश्वव्यापी भूमिका से विचार हो और उस विचार की शहर मे कुछ शक्ल दी जा सकेगी या नहीं, यह देखना चाहिए। यहाँ कुछ-न-कुछ होना चाहिए। काशी मे हर घर के साथ हमारा सम्पर्क होना चाहिए।"' इस तरह काशी आपका कार्यक्षेत्र है और विश्व आपका विचार क्षेत्र होगा। ऐसी योजना बनेगी, तब यह रोटरी क्लब ज्यादा प्रेरणादायी होगा।

खादीवालों से अपेक्षा

गाधी आश्रम के भण्डार का भी उद्घाटन बाबा ने किया। उस समय उन्होंने कहा कि "अब खादी-भण्डार आदि खोलने का काम पुरानी परम्परा का आखिरी कार्य माना जाय, पुरानी परम्परा का आखिरी कार्य। और इसके आगे नया कार्यारम्भ किया जाय—गाँव-

गाँव में जाना और अलख जगाना। गाँववालों से कहना यह है कि "उद्धरेत् आत्मनात्मानम्"—अर्थात् तुम्हारा उद्धार तुम्हारे हाथ में है। गाँववालों से कहा जाय कि तुम्हारे उद्धार का प्रथम सोपान खादी-संकल्प है। यदि इतना काम कार्यकर्ता उठा लें, तो फिर समझो देश में बिल्कुल नयी चेतना आयेगी।

"देश अभी राह देखता है, क्योंकि जिनसे अपेक्षा थी, उनसे अपेक्षा भंग हुई है। यह एक निराशाजनक कार्य हो चुका है कि दूसरे लोगों से अपेक्षा भंग हो चुकी है। अब खादीवालों से देशवासियों की एक अपेक्षा बनी है और आगे भी बन रही है। इस अवस्था में अगर खादी-वाले दायित्व उठा लेंगे, तो सबको नयी प्रेरणा मिलेगी।"

नागरी लिपि की शक्ति

१० सितम्बर को पहला कार्यक्रम नागरीप्रचारिणी सभा में था। वहाँ बाबा ने कहा कि "भिन्न-भिन्न लिपियाँ हिन्दुस्तान में चली हैं और चलती हैं। उन सबकी अपनी-अपनी खूबियाँ होती हैं। मैं सबसे कहता हूँ कि आपकी भाषा नागरी में लिखी जाय, तो सारे भारत के शिक्षितों को जोड़ने में बड़ी मदद मिलेगी। नागरी लिपि परिपूर्ण बनी है, ऐसा किसीका दावा तो है नहीं, और कोई लिपि दुनिया को परिपूर्ण है भी नहीं। लेकिन दुनिया में जो लिपियाँ हैं, उनमें यह नागरी और रोमन दो ही लिपियाँ अधिक पूर्ण हैं। रोमन लिपि में जो गुण हैं, वे जाहिर हैं, उनसे कोई इनकार नहीं कर सकता। मेरे मन में इस लिपि के प्रति बड़ा आदर है।

"नागरी लिपि का कोई अभिमान या अहंकार हो, उसका कोई कारण मैं मानता नहीं। लेकिन, जो लिपियाँ हमारे यहाँ मौजूद हैं, उन सबमें थोड़े से फर्क से, जो पूर्ण हो सकती है, वह नागरी लिपि है। इसमें थोड़ा सा फर्क किया जाय तो यह पूर्ण हो सकती है। दो-तीन अक्षरों

की जरूरत है। हिन्दुस्तान की सब भाषाएँ इसमें व्यक्त करने के लिए नुक्ते से बन सकती है, और जरा स्वर-भेद की जरूरत है।

"अगर हम लोगों में नागरी का प्रेम है, तो हम कोशिश करें नागरी में दूसरी लिपियों के साहित्य को लाने की। जैसा कि आप नागरी प्रचारिणी सभावाले सोच रहे हैं, उसके लिए मैं धन्यवाद देता हूँ। हमारा काम भक्ति से होनेवाला है, शक्ति से नहीं। नागरी लिपि में वह शक्ति मौजूद है। यह काम प्यार से, त्याग से बढ़ेगा। इसलिए आप और हम 'भी वादी' हो जायँ, फिर अपना बेड़ा पार है।"

सारा उत्तर प्रदेश ग्रामदानी हो

नागरी प्रचारिणी सभा भवन से बाबा सीधे टाउनहाल में गये। वहाँ उत्तर प्रदेश के बहुत-से सर्वोदय-कार्यकर्ता और प्रेमीजन थे। वहाँ बाबा ने कहा कि "आप सब चिन्तनशील लोग यहाँ इकट्ठे हैं। गांधीजी के जमाने से जिन्होंने चिन्तन किया है, ऐसे लोग यहाँ मौजूद हैं। सिखों में कहावत है कि 'एक सिख लाख के बराबर है।' उनको मन्त्र दिया गया है—'निर्भउ निर्वैर।' मैंने कहा कि उसके साथ 'निष्पक्ष' भी हो। ऐसी हम लोगों की स्थिति हो जाय, तो हमारा एक आदमी लाख के बराबर हो जायगा, क्योंकि लाख लोग उसे चाहेंगे।

"उत्तर प्रदेश में एक भी गाँव ऐसा न हो, जिसका ग्रामदान न हो। हर गाँव में ग्राम-स्वराज्य आना चाहिए। आप सबको इस काम में लगना चाहिए। इसमें संगठन का सवाल आयेगा। बापू ने कहा था कि अहिंसा में संगठन किया नहीं जाता, हो जाता है, क्योंकि उसमें अहंकार नहीं होता। हमें सख्य-भक्ति करनी है। एक दूसरे को मार्ग-दर्शन नहीं देना है। एक दूसरे से बातचीत करनी है। अन्यान्य बोधन करके आगे बढ़ते जाना है। विचित्रभाई हैं, करणभाई हैं—करणम् सर्व करम्। और ब्रह्मदेव भी हैं—सब लोग मिल-जुलकर काम करें।"

बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज में भी बाबा गये। वहाँ उन्होंने भारत सरकार

की सुस्ती पर बड़ा दुःख जाहिर किया। उन्होंने कहा कि "यूरोप, अमेरिका का तो सवाल ही नहीं, एशिया मे मुझे ऐसी कोई सरकार मालूम नही, जो इतनी सुस्ती से काम करती हो। २०-२२ साल के बाद यह तय होगा कि तालीम का ढाँचा क्या हो ?

चीन में तालीम

"अभी हमारा मुकाबला चीन से हो रहा है, लेकिन चीन में इस समय क्या चल रहा है ? वहाँ जो स्कूल चलते हैं, उनके नाम हाफ आफ स्कूल, यानी आधे समय सबको मेहनत-मशक्कत करनी होगी और आधे समय पढ़ाई चलेगी। मेहनत कोई सांकेतिक तौर पर नहीं कि एक वर्ग गज कपड़ा बना लिया, दो गुंडी सूत कात लिया और प्रशिक्षण खतम हो गया, बल्कि जैसे किसान और बढ़ई काम करता है, उस तरह से उन्हें काम करना होगा। आधे समय आजीविका प्राप्त करने की योग्यता और आधे समय विद्या, सबको समान रूप से प्राप्त करनी होगी।

"आखिर महात्मा गांधी की बात सुननेवाला एक देश तो निकल गया चीन। अब भारत भी उनकी बात सुनेगा, ऐसी आशा हम करेंगे। नहीं सुनेगा तो मार खायेगा, हार खायेगा, इसमें कोई शक नहीं, क्योंकि समस्याएँ खड़ी होंगी। अगर आप तालीम बढ़ाते हैं तो बेकारी खड़ी होगी और नहीं बढ़ाते हैं तो अज्ञान बढ़ेगा। इस प्रकार यह दो गत्यन्तर खड़े हैं कि ज्ञान बढ़ायें या अज्ञान बढ़ायें—इन दोनों में से एक को तो बढ़ाना ही चाहिए। ज्ञान और कर्म का जोड़ हम करें, यह नयी तालीम का बिल्कुल सीधा-सादा, सरल तन्त्र है। इसमें कोई पेंच नहीं, कोई समझने में कठिन बात नहीं है।

तालीम का ढाँचा बदले

"बहुत जरूरी है कि तालीम का ढाँचा बदले। हर मनुष्य में शरीर-परिश्रम की निष्ठा पैदा हो। निष्ठा पैदा कैसे हो, इसके लिए महात्मा

गाधी ने कहा—'घर में बैठे-बैठे चरखा कातो। आधा घण्टा कातेंगे तो कुल मिल्वालों की बराबरी हो जायगी और उत्पादन बढेगा'। इस तरह की छोटी छोटी हिदायतें देश को उन्होंने दीं।

"हमारा दिमाग बडी-बडी चीजों से लग गया है और छोटी चीजें हमें आकर्षित नहीं करतीं, लेकिन यही छोटी चीजें जब करोडों हाथों से होती हैं, तो उनका आकार बडा हो जाता है और अगर सबका उसमें सहयोग होता है तो उसम से हार्दिक एकता बनती है, आध्यात्मिक एकता पैदा होती है और देश को मिलती है एक प्रेरणा। यही है नयी तालीम का सार।"

काशी शराब मुक्त हो

काशी म बाबा का अन्तिम कार्यक्रम सार्वजनिक सभा का था, जो डी० ए० वी० काल्ेज के मैदान में हुई। काशी के नागरिको के सामने बाबा ने तीन बात रखीं "शराब से मुक्त रहो, स्वच्छ काशी बनाओ और जीवन सुखमय मत बनाओ, सख्त बनाओ, समस्यामय बनाओ। उन्होंने आशा प्रकट की कि नगर निगम इस पर सोचेगा। मालूम नहीं नगर निगम 'निगम' शब्द के लायक है या नही। 'निगम' तो हमारे यहाँ भगवान् को कहते ह, उनकी आज्ञा सबको शिरोधार्य होती है, शास्त्रों को 'अगम' कहते है, वेद को 'निगम' कहते हैं, जो आज्ञा देता है। नगर निगम का अर्थ होता है वह सस्था, जिसे सब लोगों ने अपने लिए शिरोधार्य माना है और जिसकी आज्ञा सबको मान्य है। तो यहाँ का नगर निगम और सर्व सेवा सघ मिलकर काशी को शराब मुक्त तथा स्वच्छ बनाने का हर सभव प्रयास कर।"

काशी में चार दिन रहने के बाद, १० तारीख की रात को बाबा मुगलसराय गये और वहाँ तूफान एक्सप्रेस से सवार होकर बिहार के लिए निकले। ग्यारह तारीख की भोर में ही पटना पहुँच गये।

उत्तर प्रदेश की जिम्मेदारी

उत्तर प्रदेश में बाबा ने इस यात्रा में आठ दिन बिताये। जिले तो वे तीन ही घूमे। लेकिन ग्रामदान की उनकी माँग प्रदेश के हर जिले के कार्यकर्ताओं के कानों तक पहुँच गयी। ग्रामदान आन्दोलन में उत्तर प्रदेश सबसे पीछेवालों में है। अभी तक यहाँ जनमानस में ऐसी चेतना नहीं आयी है, जैसी बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र या तमिलनाड में है। और कौन नहीं जानता कि राजनीतिक दृष्टि से जितनी भयानक स्थिति उत्तर प्रदेश की है, उतनी किसी और की नहीं। आर्थिक दृष्टि से यहाँ गरीबी भी किसीसे कम नहीं है। इन दोनों का जवाब ग्रामदान की क्रान्ति में है। यह सिद्ध करने की जिम्मेदारी हमारी है। ●

विहार से माँग : ५ :

"हिन्दुस्तान के सामने इस समय दोहरा सकट है—एक, हिंसा का प्रचार करनेवाले साम्यवाद के सिद्धान्त से और दूसरा, सम्प्रदायवाद या कौमवाद से इनका हमे अक्षोभ चित्त और निर्भय वृत्ति से मकाबला करना है। यह तभी सम्भव होगा जब गॉव गॉव म ग्राम स्वराज्य और नगर नगर में नगर स्वराज्य की स्थापना होगी। इसलिए बिहार से मेरी माँग है कि यहाँ जो ७५ हजार गॉव हैं, वे सब के-सब ग्रामदान में आयें। मुझे विश्वास है कि यहाँ लोक-क्रान्ति होगी और देश को नयी प्रेरणा मिलेगी।"

उपर्युक्त उद्गार गत ११ सितम्बर को पटना की विशाल सार्वजनिक सभा में बाबा ने प्रकट किये। उसी दिन सबेरे तूफान एक्सप्रेस से वे काशी से पटना आये थे। यह उनकी बिहार में दूसरी यात्रा थी और वैसे देखा जाय तो चौथी। पहली बार भूदान का सन्देश लेकर बाबा ने १४ सितम्बर १९५२ को बिहार में प्रवेश किया और फिर २७ महीने उसका अलख गाँव-गॉव म जगाकर १ जनवरी १९५५ को बगाल चले गये। इसके बाद जनवरी १९६१ में जब वे असम जा रहे थे, तो बिहार से गुजरे थे और उसे एक मन्त्र दिया था—

"दान दो इकट्ठा, बीघे में कट्ठा।"

असम से वापसी के समय, सेवाग्राम जाते हुए अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर १९६३ में कुछ समय बिहार में बिताया। लेकिन सन् १९५२ के बाद यह पहला मौका है, जब वे एक ठोस लक्ष्य सामने रखकर बिहार आये।

सामूहिक इच्छा-शक्ति

मुगलसराय से पटना तक बाबा ने ट्रेन से यात्रा की। पिछली बार १९५० में उन्होंने ट्रेन का आखिरी उपयोग किया था। स्वागत के लिए बिहार के मुख्यमन्त्री श्री कृष्णवल्लभ सहाय, श्री जयप्रकाशबाबू और दीदी प्रभावतीजी और विशाल जनसमूह मौजूद था। स्टेशन पर ही उनका स्वागत किया गया। उस समय उन्होंने कहा कि "मैं पंगु स्थिति में आया हूँ और काम है ग्रामदान गिरि को लाँघने का!—आप सब-की सामूहिक इच्छा-शक्ति मेरे लिए भगवान् का मूर्त-स्वरूप है। इस इच्छा-शक्ति के बल पर इस पंगु को आप ग्रामदान गिरि का लंघन करायेंगे।"

बाबा का निवास पटना में गंगा नदी के किनारे अनुग्रहनारायण-संस्थान में था। बिहार का यह प्रसिद्ध और ऐतिहासिक स्थान है। राष्ट्र-पिता यहीं पर सन् १९४६-४७ में ठहरे और बिहार की धधकती हुई साम्प्रदायिक ज्वाला को बुझाये थे। इन दिनों यहाँ बिहार के सुप्रसिद्ध सेवक और लोक-नायक श्री अनुग्रहनारायण सिंह की स्मृति में एक संस्थान चलता है, जहाँ समाजशास्त्र पर अध्ययन, मनन और खोज हुआ करती है।

यहीं ११ सितम्बर को १० बजे बाबा की ७०वीं वर्षगाँठ का उत्सव मनाया गया। पटना के नृत्य-कला-मन्दिर के संचालक श्री उप्पलजी ने बहुत रमणीक ढंग से सारा सजाया था। ७० दीपक जल रहे थे और सामने गंगा बह रही थीं। मंगलाचरण के बाद सब धर्मों की प्रार्थना हुई और फिर भारत की हर भाषा में एक-एक भजन हुआ। इस कार्य-क्रम का आयोजन श्री कृष्णराजभाई ने किया था। बाबा को सूत और फूल की मालाएँ भेंट की गयीं। सबका आभार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा : "एक व्यापक सर्वजनहितकारी पवित्र काम लेकर मैं १५ साल से घूम रहा हूँ। उसके शीघ्र प्रचार में जितनी चित्त-शुद्धि की जरूरत है, उसमें अगर न्यूनता या कमी रही, तो वह बाधारूप बन सकती है। मुझे

विश्वास है कि आपकी शुभ-कामना के परिणामस्वरूप चित्त में जो मल रह गये हैं, वे शून्य हो जायेंगे और 'अहं' शून्य होगा। यहाँ भगवान् बुद्ध और महावीर का विहार हुआ है। हम भी उनके चरण चिह्नों पर चलने की कोशिश करेंगे। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह मुझे निरहंकार और शून्य बनाये। हम सब पर उसका आशीर्वाद हो।

मुख्यमंत्री का आश्वासन

शाम की सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता बिहार के मुख्यमन्त्री श्री कृष्णवल्लभ बाबू ने की। दोपहर में बारिश हो जाने के बावजूद बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। कृष्णवल्लभबाबू ने बाबा को१,४७,५०१। रु० की थैली भेंट की। साथ में उन्होंने आश्वासन दिया कि "जिस पवित्र उद्देश्य के लिए विनोबाजी यहा आये हैं, उसमें हम सक्रिय सहयोग करेंगे। उन्होंने उठाया हुआ काम उनका अपना काम नहीं, बल्कि हम सबका काम है। वह ऐसा काम है, जिसके किये बिना कुछ भी नहीं होगा।"

ग्रामदान तूफान समिति के अध्यक्ष श्री जयप्रकाशबाबू ने ७७९ ग्राम दान भेंट किये और कहा कि "अनुभव यह आ रहा है कि ग्रामदान लेनेवाले की कमी है, देनेवालों की नहीं।" उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि "बाबा ने जो बिहार से माँग की है, उसे हम पूरा करने में समर्थ होंगे।" जयप्रकाशजी ने यह भी घोषणा की कि 'हमने एक लाख रुपये की थैली का संकल्प किया था, इसलिए जितनी बेशी रकम हुई है (यानी ४७, ५०१ रुपये) वह हम लाजपतराय स्मारक निधि को भेंट में देते हैं।"

इसी अवसर पर सर्वसेवा संघ के अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी ने ८९६ ग्रामदान भेंट किये, जो गोपुरी अधिवेशन के बाद देश के विभिन्न प्रान्तों में हुए • मध्यप्रदेश में २६९, महाराष्ट्र में २४०, उड़ीसा में २०१, आन्ध्र में १०१, उत्तरप्रदेश में ६०, गुजरात में १४ और

प० बंगाल में ११। उन्होंने यह भी बताया कि 'अब तक देशभर में हुए कुल ग्रामदानों की तादाद ८. ९९४ हो जाती है।'

अपने प्रवचन में बाबा ने आनन्द प्रकट करते हुए कहा कि "बिहार का हृदय विशाल है। पिछले चन्द महीनों में जो ग्रामदान देश में हुए, वे बता रहे हैं कि ग्रामदान के अनुकूल हवा बन रही है। मुझे आशा है कि बिहार में नयी शक्ति प्रकट होगी और जैसा संकल्प बिहार ने किया है, वैसा अगर हर प्रान्त कर लें तो विशाल क्रान्ति का साक्षात्कार होगा। आठ वर्ष पहले मैंने येलवाल में कहा था कि ग्रामदान 'डिफेन्स मेजर' है। उस समय कोई संकट नहीं आया था। लेकिन मुझे स्पष्ट दीख रहा था कि विकट परिस्थिति आने पर योजना के अनुसार नियोजन नहीं चल सकेगा और संकट का मुकाबला करने की तैयारी जनता के स्तर पर करनी जरूरी होगी। उस हालत में ग्रामदान सर्वोत्तम उपाय है। इस काम में सबको पूरा सहयोग देना चाहिए। अगर लाखों की तादाद में ग्रामदान होते हैं, तो सरकार और प्लानिंग का भी रंग बदल जायगा।

आज खादी मर रही है

दूसरे दिन १२ सितम्बर को सबेरे ९ बजे खादी-ग्रामोद्योग संघ तथा अन्य खादी और रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के हॉल में बाबा से मिले।

सभा के अध्यक्ष श्री ध्वजाप्रसाद साहू ने कहा कि "आज खादी की शान-शौकत बढ़ रही है, लेकिन खादी मर रही है। पहले तो हम यह समझते थे कि खादी के साथ-साथ भूदान-ग्रामदान का काम करेंगे। लेकिन अब देख रहे हैं कि ग्रामदान का काम ज्यादा जरूरी है और बिना इसके खादी नहीं टिकेगी। चाहे अपना बलिदान क्यों न हो जाय, हम सबको ग्रामदान के काम में जुट जाना है। बिहार में खादी का काम १३ हजार गाँवों में फैला है, इन सबका ग्रामदान होना चाहिए।"

बाबा ने कहा : "जब मैंने दस हजार गाँव की माँग की थी, जिसे तीन महीने से ऊपर हो गये, उस समय पाकिस्तान का आक्रमण भी नहीं था। अब तो यह काम तीन महीने में होना ही चाहिए। मुझे विश्वास है कि आप सब इसमें लग जायँ, तो यह हो सकता है।"

दोपहर को १२ बजे कृष्णवल्लभबाबू बाबा से मिलने आये। साथ मे अन्य मन्त्री भी थे। बाबा ने कहा कि "ग्रामदान की हवा सब दूर बन रही है। उसमें जितना सहयोग सरकार से मिलेगा, उतना वह काम सफल होगा और शीघ्र ही बनेगा। ऐसे कामों की सफलता कुछ तो उनकी शीघ्रता और कुछ उनकी स्थिरता पर निर्भर करती है। शीघ्र काम होता है तो उसका जन-समाज पर असर पडता है। और अगर स्थिरता होती है तब वह टिकता है, वरना क्रांति की बजाय प्रतिक्रान्ति होने का डर है! मेरा दावा है कि मन्त्रिमण्डल में शामिल न होते हुए मैं आपके मन्त्रिमण्डल का काम कर रहा हूँ। इसलिए आपकी तरफ से पूरा सहयोग मिलना चाहिए।"

इसके बाद चर्चा होने लगी, जिसमे श्री जयप्रकाशबाबू और श्री वैद्यनाथबाबू ने भाग लिया।

तीसरे पहर विभिन्न राजनीतिक पक्षों के कार्यकर्ताओं ने बाबा से मुलाकात की। कांग्रेस, सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी तथा प्रजा-समाजवादी पार्टी की तरफ से आश्वासन मिला कि हम इसमें पूरी मदद करेंगे। श्री जयप्रकाशबाबू बोले कि "सभी पार्टियों का नैतिक समर्थन तो हमें प्राप्त है, लेकिन अब सक्रिय सहयोग की जरूरत है। बिहार के एक-एक गाँव का ग्रामदान होना है। यह काम हम मुट्ठीभर लोग नही कर सकते। होना तो यह चाहिए कि ,आप सब इस काम को उठा लें और हम आपकी मदद करें।"

पक्षों में मतच्छेद

उनको सम्बोधित करते हुए बाबा ने कहा कि "हिन्दुस्तान में जो दृश्य दीख रहा है, वह राजनैतिक पक्षों के बीच मतभेद का नहीं,

मतभेद का है। आज एक-एक पार्टी टूट रही है। आपस में गुटबंदी या ग्रुपिज्म चल रहा है। इसका कारण यह है कि यहाँ जो राजनीतिक ढाँचा हमने चालू किया है, वह इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि की नकल है। ...जैसे कि गांधीजी ने सुझाया था, राजनीतिक पक्षों को समझना चाहिए कि राजनीति के संशोधन के लिए सत्ता-मुक्त सेवा-संस्था की जरूरत है। आज सब पार्टियाँ थर्मामीटर देखा करती हैं कि अगर बाहर के आक्रमण के कारण टेम्परेचर, पारा खतरे के बिन्दु पर आ जाय, तो हम एक हो जायेंगी, कम खतरा हो तो एकता कम और खतरा न रहा तो एकता वापस ले लेंगी। यह कोई एकता है? क्या पाकिस्तान और चीन के बिना भारत में एकता नहीं बन सकती?

"मेरे सामने सवाल यह है कि सब राजनीतिक पक्षों में एकता बनाने की प्रक्रिया क्या हो? चुनाव में क्या होगा, कह नहीं सकता। लेकिन कोई भी पार्टी वहाँ जाय, तो क्या अपने दावे पाँच साल में पूरे कर सकेगी? इसका उत्तर 'नहीं' है। मैं कहता हूँ, 'हाँ' में होना चाहिए। अगर 'हाँ' में उत्तर नहीं तो यह कहना पड़ेगा कि हम मनुष्य नहीं हैं। हमें मानवता का दावा छोड़ देना होगा। हमारा राजनीतिक विचार जो भी हो, निकम्मा साबित होगा। इसलिए आप जितना चिन्तन करेंगे, उतना ज्यादा महसूस करेंगे कि ग्रामदान से राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सब तरह क्रांति होगी।...मेरे सामने जो आप सब बैठे हैं, उनका सहयोग मिल जाय तो बहुत काम बढ़ेगा।"

तीसरे दिन सबेरे छह बजे श्री जयप्रकाशबाबू के साथ बाबा सदाकत आश्रम गये और 'राजेन्द्र स्मृति-संग्रहालय' देखा। इसके बाद कमला नेहरू शिशु-विहार में वे गये, जो महिला-चरखा-समिति की शाखा और दीदी प्रभावतीजी की देखरेख में चलता है। वहाँ छोटे बच्चों का छात्रावास है, जिसमें तीस लड़के-लड़कियाँ रहती हैं।

युवक क्या करें?

साढ़े आठ बजे पटना के 'नेशनल यूथ फ्रंट' के छह युवक कार्य-

कर्ता बाबा से मिले। उन्होंने कई सवाल पूछे, जिनमें एक यह भी था कि "नवयुवक तूफान आन्दोलन में किस तरह मदद कर सकते है?" बाबा ने जवाब दिया : "तीन तरह से। पहले पाँव मजबूत हों और वे निकल पडे। दूसरे मधुर वाणी बोले, किसीका दिल न दुखायें। तीसरे, विचारों की सफाई रखे। यह अच्छी तरह समझ ले कि ग्रामदान क्या है, ताकि गॉव गॉव में जाकर आसानी से समझा सकें। अगर आवश्यकता हो तो शिविर भी लिये जा सकते हैं।"

इसके बाद बिहार हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के हॉल में शिक्षकों, साहित्यिकों और पत्रकारों की गोष्ठी हुई, जिसकी अध्यक्षता बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु ने की। बाबा ने कहा कि "आज के जमाने की सबसे बडी समस्या यह है कि दिमाग तो बड़ा हुआ है, लेकिन दिल छोटा रह गया। इसलिए जरूरी यह है कि जब दिमाग बडा हो, तो दिल भी बडा होना चाहिए। ग्रामदान बड़े दिल का सबूत है। शिक्षकों से मेरी अपील है कि वे ग्रामदानी गाँवों में जाकर बैठें और सारे गाँव को स्कूल समझें।" "साहित्यिकों को सबोधित करते हुए बाबा बोले : "इस समय साहित्यिकों की भूमिका बहुत कठिन है। आजकल अक्सर दुनिया में दो तरह के लोग मिलते हैं—एक, वैराग्य-सम्पन्न ज्ञानी और दूसरे, ससार आसक्त जनता। साहित्यिक की भूमिका दोनों से भिन्न है। उसे ससार से विरक्ति रखनी है और ससारी जीवों के लिए सहानुभूति भी। ससाराभिमुख विरक्ति चाहिए, तभी वे उत्तम साहित्य का निर्माण कर सकेंगे।" "पत्रकारों से बाबा ने कहा कि "जो भी खबर वे देते हैं, उन पर टीका करते हुए अधिक तटस्थ बुद्धि का अभ्यास करें। कुल मिलाकर भारत के पत्रकारों ने सयम दिखाया है। लेकिन मेरा खयाल है कि और अधिक सयम की जरूरत है।"

शाम को बिहार के सर्वोदय कार्यकर्ता जब जमा हुए, तो बाबा ने उनसे कहा कि "हमें मत्सर और अहकार से दूर रहते हुए सावधानी के साथ अपना काम करना चाहिए।"

ता० १४ को सबेरे बाबा पटना से निकले और ६२ मील के सफर के बाद मोकामा पहुँचे। यह पटना जिले का एक प्रसिद्ध स्थान और रेल्वे का बड़ा केन्द्र है। शाम की आम सभा में ३ ग्रामदान दिये गये। २ ग्रामदान ११ सितम्बर तक हो चुके थे। इस तरह पटना जिले से कुल मिलाकर ५ ग्रामदान हुए हैं। यहाँ के साथियों ने आश्वासन दिया कि 'अब पत्थर फूट रहा है और आगे खूब ग्रामदान मिलेंगे।'

यह लड़ाई भारत पर लादी गयी है

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "जहाँ तक मैंने सोचा है, यह लड़ाई भारत पर लादी गयी है। इसलिए इस लड़ाई को हमने ठीक माना है। इसका अर्थ यह नहीं कि लड़ाई की हमें कोई खुशी है। बल्कि भारत-सरकार लाचार होकर लड़ रही है। उसे भी लड़ने में खुशी नहीं है। इसलिए हम चाहते हैं कि जल्द-से-जल्द कोई सूरत निकले और झगड़ा खत्म हो।"··आप रेडियो पर सुनते हैं कि इतने लोग भारत के मारे गये और इतने पाकिस्तान के। इतना नुकसान भारत का हुआ और इतना पाकिस्तान का। मान लीजिये, आपको यह मालूम हुआ कि भारत के पचास आदमी गये और पाकिस्तान के सौ, तो आपको खुशी होती होगी। पर यह ठीक नहीं। दोनों मिलकर १५० मारे गये और वे सारे हमारे ही हैं। सत्रह-अठारह साल पहले हम दोनों एक थे, एक ही राज्य था। व्यवस्था की दृष्टि से दो बन गये···। उधर एक करोड़ हिन्दू हैं, तो यहाँ पाँच करोड़ मुसलमान। एक ही समाज के अंग हैं। हजारों वर्षों से साथ रह रहे हैं। इसलिए हानि या लाभ की बात ही नहीं है। कोई भी जीते या हारे, दोनों की हार होगी। हम प्रार्थना करें कि झगड़ा जल्दी खत्म हो।"···अन्त में बाबा ने कहा कि "हमें पूरा काम करना चाहिए। थोड़े में संतोष कर लेना निकम्मी बात और तमोगुण है।"

१५ सितम्बर से मुंगेर जिले की यात्रा शुरू हो गयी।

उद्धार में उधारी नहीं : ६ :

"प्लानिंग कमीशन की तरफ से जाहिर किया गया है कि गरीबों का उद्धार १९८० में कर सकेंगे। पर कोई आदमी अगर १९६५ में डूब रहा हो तो क्या उसका उद्धार बीस साल बाद किया जायगा? अगर १९६५ के सितम्बर महीने की १६ तारीख को पाँच बजकर पचीस मिनट पर (बाबा की घड़ी में तब यही समय था) कोई डूब रहा है, तो उसे बचाने के लिए उसी साल, उसी महीने, उसी दिन, उसी घंटा, उसी मिनट पर कूदना होगा। अगर पाँच बजकर पचीस मिनट के बाद पन्द्रह सेकेण्ड हुए हैं, तो सोलहवाँ सेकेण्ड का भी इन्तजार नहीं करना होगा—उद्धार में उधारी नहीं चलेगी! डूबनेवाले के लिए उधार क्या?—ऐसी हालत में जब सरकार ने अपनी असमर्थता दिखला दी, तो गरीबों को उठाने के लिए ग्रामदान का यह काम आपको फौरन अपने हाथ में ले लेना चाहिए।"

इन शब्दों में मुंगेर जिले की यात्रा में अपने मन की वेदना रखते हुए बाबा ने माँग की कि 'पूरा जिला ग्रामदान में आये।'

सारे इन्सान एक हैं

पहला पड़ाव मुंगेर नगर में १५ सितम्बर को था। उस दिन दोपहर को बाबा जामिया रहमानी में गये। यह अरबी विद्या का बिहार का बहुत प्रसिद्ध मदरसा है। इसमें ३३७ लड़के पढ़ते हैं, जिनमें करीब १५० बोर्डिंग में हैं। मदरसे के मन्त्री मौलाना आरीफ साहब ने बाबा को एक खिताबनामा (मानपत्र) पेश किया। उनका शुक्रिया अदा करते

हुए बाबा ने कहा कि "कुरान में कहा है कि सब मजहबों की जितनी किताबें हैं और जितने भी रसूल हो गये हैं, उन सबको हम मानते हैं। इस्लाम का पैगाम कुल दुनिया को एक बनानेवाला है। जब इन्सान समझता है कि अल्लाह एक है, तो वह यह भी समझे कि सारे इन्सान एक हैं। अब जब कि अणु-अस्त्र आये हैं, तब तो इन्सान और इन्सानियत के लिए खतरा पैदा हो गया है। इसलिए यह जरूरी है कि जितनी भी कौमें हैं, सब एक हो जायँ।"

हमारे तीन शत्रु

मुंगेर की प्रार्थना-सभा में बाबा ने तीन शत्रुओं का सामना करने का आवाहन किया : १. भुखमरी, २. साम्प्रदायिकता और ३. हिंसक साम्यवाद। आपने कहा कि "आज की लड़ाइयाँ केवल मोर्चों पर नहीं लड़ी जातीं। खेतों और कारखानों में, दफ्तरों और स्कूलों में भी हमें तैयारी करनी होगी। अगर हम दिनभर रेडियो सुनते रहें, तो कहीं के साबित नहीं होंगे। ग्रामदान से गाँव एक बनेगा और ग्रामसभा की मार्फत आयात-निर्यात भी काबू में आयेगा। इसलिए उसे पूरा करने के लिए जुट जाना चाहिए। तभी हम हर मोर्चे का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकेंगे।"

खड़गपुर में हमारा निवास एक झील के ऊपर डाक-बँगले में था। बहुत ही सुन्दर दृश्य था। पहाड़ियों से घिरी यह झील मुंगेर जिले में ही नहीं, बल्कि सारे बिहार में आकर्षण का केन्द्र मानी जाती है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर अक्सर यहाँ आते थे। आजकल भी यहाँ हर साल विश्वभारती के छात्र और अध्यापक पिकनिक के लिए आते हैं।

मुंगेर जिले में विशेष बात यह थी कि ११ बजे के करीब भाई राममूर्तिजी अपने निकट के साथियों के साथ बाबा के पास चर्चा के लिए आते। दोपहर को दो से तीन बजे तक क्षेत्र के लोग, विभिन्न पक्षों के कार्यकर्ता और सर्वोदय-प्रेमी जमा हुआ करते। शाम की आम

सभाओं में भी बहुत भीड़ रहती। एक दिन तो मैंने देखा कि लोग एक लाश लेकर आ रहे थे। जब उन्हें बाबा की सभा का मालूम हुआ, तो नीम के पेड़ के तले लाश रख वे सभा में आये और उसके समाप्त होने के बाद ही लाश को दाह संस्कार के लिए ले गये।

खादीग्राम में

१७ सितम्बर को हमारा पड़ाव खादीग्राम में था, जो देश की सुप्रसिद्ध रचनात्मक संस्था है। इसकी स्थापना सन् १९५२ में पूज्य धीरेन्द्र भाई ने की थी। भूदान आन्दोलन में यह संस्था बहुत आगे रही है। अब आचार्य राममूर्तिजी की अध्यक्षता में यह ग्रामदान की क्रान्ति में भी तेजी से आगे बढ़ रही है।

बाबा जब खादीग्राम पहुँचे, तो एक सुन्दर प्रदर्शनी दिखलायी गयी। नाम था ग्रामदान-दर्शन। राममूर्तिजी की पुस्तक 'गाँव का विद्रोह' के आधार पर हमारे तरुण कलाकार श्री अनिल सेनगुप्त ने उसे सजाया था। अनिल बाबू ने दिखलाया कि आज का गाँव कैसा दुःखी और शोषित है और ग्रामदान होने पर कैसे उसकी काया पलट जायगी।

झाझा नगरी में विशेषकर बीड़ी का धन्धा चलता है। आस पास में लगभग पचीस तीस हजार लोग उस काम में लगे हैं। जब यहाँ के व्यापारी बाबा से मिलने आये, तो उन्होंने कहा कि बीस बीडियों में से एक बीड़ी हमें दीजिये, यानी उद्योग का बीसवाँ हिस्सा हम दें। आप ये जो दान करें, वह यह समझकर नहीं कि उपकार कर रहे हैं, बल्कि यह कि दान लेनेवाले उपकार कर रहे हैं। यह कोई टैक्स लगाने का काम नहीं है, बल्कि खुशी से निरन्तर देना है।

विद्यालयों से माँग

लखीसराय में हमारा पड़ाव सुप्रसिद्ध महिला शिक्षण-संस्था 'बालिका विद्यापीठ' में था। वहाँ मैट्रिक तक की पढ़ाई होती है और

लगभग डेढ सौ लड़कियाँ पढती हैं। सभी छात्राएँ छात्रावास में रहती हैं। विद्यापीठ की शिक्षिकाएँ बाबा से मिलने आयीं और उन्होंने आन्दोलन में मदद करने की इच्छा जाहिर की। बाबा ने पूछा : "आपके यहाँ कुल शिक्षक कितने हैं ?"

"सोलह।"

"यहाँ औसत वेतन कितना है ?"

"लगभग सौ रुपया।"

"आपने पूछा है कि ग्रामदान-आन्दोलन में हम कैसी मदद दे सकते हैं। तो मैं कहूँगा कि अपने में से एक शिक्षक दीजिये और उसके वेतन का भार आपस में मिलकर उठाइये। ऐसा होने पर इस स्कूल को टोन (प्रेरणा) मिलेगा और ग्रामदान के आन्दोलन से आपका अनुबंध रहेगा।" फिर बाबा ने पूछा : "यह ज्यादा बोझ तो नहीं हो जायगा ?"

"कोई ज्यादा नहीं है, अवश्य उठायेंगे।"—जवाब में कहा गया।

हर नागरिक अपने कर्तव्य का पालन करे

शाम की प्रार्थना-सभा में बाबा ने बताया कि "ब्रिटिश सेनापति नेल्सन का मशहूर वाक्य है—'इंग्लैण्ड एक्सपेक्ट्स एवी मैन टु डू हिज ड्यूटी' (इंग्लैण्ड आशा करता है कि उसका हर निवासी अपने कर्तव्य का पालन करेगा)। वैसे ही आपका भारत यह अपेक्षा करता है कि हर नागरिक अपने कर्तव्य का पालन करे, परलोक के लिए नहीं—इसी लोक के, इसी जीवन के लिए। जमुई का पूरा-का-पूरा सबडिवीजन ग्रामदान में आना चाहिए। जमुई का नमुना बने तो सारे जिले का रंग बदलेगा। सारे देश पर उसका असर पड़ेगा।"

असन्तुष्टः द्विजः फम्युनिस्टः

गगढ़िया में ११ बजे के करीब सबडिविजन के सरकारी अधिकारी मिलने आये। उनसे बाबा ने कहा कि "अब तो भारत में बाहर से

अनाज आते रहने का भरोसा नहा है । ऐसी हालत में आप अधिकारियों पर बडी जिम्मेवारी आती है । देश म लगभग पचपन लाख सरकारी नौकर हैं और कोई दस लाख आदमी मिलीटरी म होंगे । इसका मतलब है कि पद्रह मनुष्यों की सेवा के लिए एक मनुष्य लगा है । इसका भार पडता है मजदूर और किसानों पर । भारत में लगभग तीस प्रतिशत लोग पढे लिखे हैं । यानी ४५ करोड में ९ करोड । और नौकरी म ६० लाख । इसके मानी हैं कि १५ शिक्षितों में एक को नौकरी मिलेगी और बाकी चौदह ईर्ष्या करेगे । सस्कृत मे शिक्षित लोग 'द्विज' कहलाते हैं । सस्कृत की कहावत है कि 'असन्तुष्टो द्विजो नष्ट' । मैंने उसकी जगह बनाया है—'असन्तुष्ट द्विज कम्युनिस्ट' । ये सारे असन्तुष्ट लोग कम्युनिज्म की तरफ जाते हैं ।

सरकारी कर्मचारियों से

सरकारी मुलाजिमो के सामने मेरे तीन सुझाव हैं । पहला तो यह कि आपकी स्त्रियाँ समाज के काम के लिए मिलनी चाहिए । वे दो घण्टा रोज भी समय दे सकें तो ठीक है । वे लोगों के घरा म अन्दर जाकर हाल-चाल पूछगी । कोई बीमार हो तो दवा दारू की व्यवस्था कर दगी । चरखा या मोटे उद्योग के लिए सुविधा करायेंगी । अगर आपकी पत्नियाँ या बहनों द्वारा भारत की अन्दरूनी सेवा होने लगे, तो सिविल सर्विस का बोझ महसूस नही होगा । दूसरे, यह कि भूदान ग्रामदान का आप प्रचार कर । मेरा दावा है कि यह काम 'लॉ ऐण्ड आर्डर' का काम है, उत्पादन बढाने का काम है, 'इमोशनल इण्टीग्रेशन' पैदा करने का काम है । यह कुल का कुल सरकारी काम मैं कर रहा हूँ । तीसरे, आपको सर्वोदय साहित्य का अध्ययन, मनन करना चाहिए । यह सुनकर अधिकारियों की तरफ से एक सज्जन ने अंग्रेजी में लिखकर दिया—"आल ऑफ अस विल मेक सीरियस एफर्ट्स एलाग दि लाइन एक्समाप्लिफाइड बाई आचार्य श्री विनोबा भावे"—यानी आपने जो राह बतायी है, उस पर चलने की हम सब गम्भीर कोशिश करगे ।

सरकार और युद्ध

बेगूसराय मे कार्यकर्ताओं की सभा में एक भाई ने शंका जाहिर की कि 'आप जय-जगत् का मन्त्र बोलते हैं, लेकिन संकुचित दृष्टि के साथ युद्ध में भारत का समर्थन भी करते है।' बाबा ने कहा : "इस सम्बन्ध मे आपको हमारे विचार शायद मालूम नहीं। मेरा मानना है कि यह युद्ध भारत पर लादा गया है। अगर मुझे मालूम हो जाय कि पाकिस्तान निरपराध है, तो बाबा वैसा जरूर जाहिर कर देगा। भले ही सरकार बाबा को जेल में डाले या खुला रखे, बार-बार वह यही कहता रहेगा। हम सरकार का समर्थन करते हैं, इसके यह मानी नहीं कि हम युद्ध-नीति या हिंसा का समर्थन करते हैं। मान लीजिये, एक पागल है। तलवार लेकर टूट पड़ता है और आप हैं विश्व-मानव। तो क्या उस पागल को मानव समझकर शान्त बैठे रहेंगे ? उसके दोनों हाथ पकड़ेंगे या नहीं ? और अगर नहीं पकड़ पाते तो स्टेनगन से कत्ल नहीं करेंगे ? न्याय-अन्याय भी कुछ होता है या नहीं ?…बोलने मात्र से विश्व-मानव नहीं होगा। इससे तो हम विश्व-मानव नहीं, 'विश्व-मूढ़' साबित होंगे।"

वहाँ शाम की सभा बहुत जोरदार थी। लोग व्यवस्थित ढंग से बैठे थे। गणेश कालेज का विशाल मैदान पूरा भरा था। सभा में इस जिले के प्राणवान् कार्यकर्ता और पुराने सेवक श्री ब्रजमोहन शर्मा ने २४ ग्रामदान भेंट किये। उनमें से नौ गाँव 'कैथ' नामक पंचायत के हैं—पूरी पंचायत का ग्रामदान हुआ। अपने प्रवचन में बाबा ने आनन्द प्रकट किया कि "सभा के शास्त्र का, जिसे सभा-अनुशासन कहते हैं, यहाँ पालन किया गया है। इस वक्त बड़ी जिम्मेदारी भारत पर है और अनुशासन की अत्यन्त आवश्यकता है। अगर ग्रामदान सफल होता है, तो आर्थिक और सामाजिक प्रश्नों के हल करने की कुंजी दुनिया के हाथ आयेगी।"

बाबा ने कहा कि "अक्सर बोला जाता है कि 'हिन्दी भाषा बेचारी है।' पर हिन्दी भाषा नहीं, हम लोग बेचारे हैं। वह हजार-डेढ़ हजार साल से चली आ रही है। संस्कृत का उसका सम्बन्ध है। अरबी-फारसी का भी उस पर असर है। भारत की सब भाषाओं की उसे मदद मिली है। कमी हमारे अपने अन्दर है। कमी क्या है? हम लोग नालायक हैं। इसी तरह ग्रामदान-आन्दोलन की भी ताक्त कम नहीं है। कमी हम नालायकों की है। बिहार में ग्रामदान के लिए अत्यन्त अनुकूलता है। तब भी अगर हम सफल न हों तो कमबख्त और अन्धे कहे जायेंगे।"

मुंगेर जिले का आखिरी पडाव २२ सितम्बर को सिकन्दरा में था। ठीक ८ बजे हम लोग वहाँ पहुँचे। जिले में और स्थानों की तरह बाबा ने यहाँ भी पीला साफा लगाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि "पीला साफा लगाने से बुद्धि पर जो काला मैल रहता है वह सब धुल जाता है। जो लोग शांति चाहते हैं और मानते हैं कि अपनी तरफ से अशान्ति नहीं करेंगे, कहीं होती हो तो उसे दूर करने के लिए जुट जायेंगे—वे सभी पीला साफा पहन सकते हैं।"

खादीवाले पराक्रम करें

दोपहर को खादी पर कुछ चर्चा हुई। बाबा ने कहा कि "अगर आप हजारों ग्रामदान हासिल करते हैं, तो खादीवालों का मन भी बदलेगा। उनका मन एक ढाँचे में ढला है, लेकिन असद् भावना नहीं है। नये नये नजारे उनके सामने आयेंगे तो वे तैयार हो जायेंगे। अभी ये खादीवाले परशुराम के अवतार हैं, राम की तरह आप कुछ पराक्रम करके दिखलाइये, तो उन पर असर पड़ेगा।"

बाबा ने आगे कहा: "खादीवालों पर हमें दया तब आती है जब वे गांधीजी के नाम पर उनकी जयन्ती पर कपडा सस्ता कर देते हैं। होना तो यह चाहिए कि वे कहें कि गांधीजी के नाम पर कपड़े

का दाम बढ़ाया जा रहा है, ताकि कातनेवालों को पूरी मजदूरी मिल सके। वे जोर-शोर से जाहिर करें—भाइयो, गांधी-जयन्ती पर खादी महँगी हो रही है, आकर खरीदिये और गरीबों की मदद कीजिये।"

शाम की आम सभा में बाबा ने कहा कि "जिन लोगों ने ग्रामदान किया है, वे दूसरे गाँवों में जाकर समझायें और नये-नये ग्रामदान हासिल करें। कुल के कुल गाँव ग्रामदान में आने चाहिए। एक तारीख मुकर्रर कर दी जाय कि उस दिन कुल के कुल गाँव ग्रामदान होंगे और गाँव-सभाएँ बनेंगी। जैसे एक ही दिन सारे देश में दिवाली मनाते हैं, वैसे एक ही दिन सब गाँवों में ग्रामसभा बने और जमीन बाँटी जाय।"

मुंगेर जिले की इस यात्रा में ७४ ग्रामदान मिले और साहित्य बिक्री लगभग डेढ़ हजार रुपये की हुई। ११ सितम्बर को मिले ग्रामदानों को लेकर कुल ग्रामदान ३१४ हो जाते हैं। विभिन्न पड़ावों पर मिलाकर लगभग अठारह हजार रुपये की थैलियाँ दी गयीं। सन्तोष की बात यह है कि मुंगेर जिले के साथियों में बड़ा उत्साह है। हमें यकीन है कि भारत की भू-क्रान्ति के इतिहास में उनकी बड़ी उज्ज्वल देन होगी। ●

भगवान् बुद्ध के चरण-चिह्नों पर : ७ :

"सात हफ्तों के झगड़े के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच 'सीज-फायर' (युद्ध विराम) हुआ है।" ···हम रोज सुनते थे कि लड़ाई में इसका इतना नुकसान हुआ, उसका उतना। हम तो दोनों का योग करते और समझते कि कुल नुकसान कितना हुआ। आज मानव को यह भान हो गया है कि हमें एक होकर रहना होगा, लेकिन उसका स्पर्श होना बाकी है। आज जो लड़ाई-झगड़े चल रहे हैं, वे पुरानी आदत से चल रहे हैं। अब समय आ गया है कि चित्त में ही 'सीज फायर' हो जाय और हम ऐसा अभ्यास करें कि द्वेष, क्रोध, वैर आदि छोड़ दें।"

यह उद्‌गार गया जिले में प्रवेश करते ही जयप्रकाश बाबू के आश्रम (सोखोदेवरा) में बाबा ने प्रकट किये। गया जिले से बाबा का पुराना परिचय है। कहा जा सकता है कि गया जिले की भूमि को उनका पग-पग पहचानता है।

पहला पड़ाव जयप्रकाशबाबू के आश्रम में ही था। जयप्रकाशजी और दीदी प्रभावती चार दिन पहले से आश्रम आ गये थे। बाबा तथा यात्रीदल के निवास की व्यवस्था का इन्तजाम बहुत बारीकी और स्नेह के साथ किया गया था। हर चीज अपनी जगह पर मौजूद थी, कुछ पूछने या कहने की कहीं जरूरत नहीं पड़ी। दोनों इस तरह सेवा में लगे थे, मानो घर पर बारात आयी हो। हमारा अनुभव है कि लोग बारात की चिन्ता जितनी करते हैं, उससे कहीं ज्यादा बाबा की यात्रा की करते हैं। यह प्रेम और सत्कार देखकर किसका हृदय गद्‌गद हुए बिना नहीं रहेगा! लेकिन वह दिन एक तरह से फीका हो गया, क्योंकि

बारिश ने जरा भी चैन नहीं लेने दी। मगर यह बारिश वरदान था। एक रोज पहले ही शाम को जब श्री गौरीबाबू सिकन्दरा में लेने आये तो कहते थे कि 'अगर आठ दिन तक बारिश और न हुई तो अकाल पड़ जाने का डर है।' बाबा गया जिले में बारिश के साथ घुसे और माँग की कि "जैसे बारिश सब दूर बरसती है, वैसे ग्रामदान भी सब तरफ होने चाहिए।"

चुनाव की जगह मनाव

दोपहर को ११॥ बजे आश्रम के कार्यकर्ताओं से चर्चा करते हुए बाबा ने कहा कि ५ अगस्त से लड़ाई शुरू हुई और सात हफ्ते तक चली। उनका लड़ाई का कार्यक्रम चला और बाबा का तूफान का कार्यक्रम, जो अभी भी चल रहा है। केवल शक्ति की उपासना से शक्ति नहीं मिलती और केवल लक्ष्मी की उपासना से लक्ष्मी भी नहीं मिलती है। शिव की उपासना करने से शिव और शक्ति, दोनों की प्राप्ति होती है। इसी तरह विष्णु की उपासना करने से विष्णु और लक्ष्मी दोनों की प्राप्ति। शक्ति की खोज करनेवाली विरोधी पार्टियाँ हैं। वे अगर शिव की उपासना करेंगी तो शक्ति आपसे-आप आयेगी। ग्रामदान जैसा लोक-कल्याण का काम अगर वे उठा लें, तो देश पर अच्छा असर पड़ेगा, चुनाव की जगह मनाव आयेगा और तनाव मिट जायगा। तब चुनाव लड़ा नहीं, खेला जायेगा। उसमें जो जीतेगा, वह विष्णु का स्थान लेकर राज्यपालन करेगा और जो हार जाय, वह शंकर का स्थान लेकर फकीर बनकर सेवा करेगा।

दिनभर में गया पहुँचे

दूसरे दिन पानी की वजह से सबेरे ६ बजे निकलने की बजाय दोपहर को १२॥ बजे निकल सके। आश्रम के निकट जो सड़क है, वह पानी में डूबी थी। जयप्रकाश बाबू खुद उसे देखने गये और कोशिश की कि कोई सूरत निकले। लेकिन बहाव इतना तेज था कि उसे पार

करना नामुमकिन था। इन्तजार करते करते दोपहर हो गयी। खयाल था कि पुलिया के बाद फिर कोई दिक्कत नहा पड़ेगी। लेकिन कुछ दूर चलकर जब कादिरगज पहुँचे तो वहाँ लोगो ने बताया कि आगे बँधे तक पानी है। हम लोग थोडा झिझके। लेकिन रामनन्दन बाबू ने कहा कि 'यहाँ रुके रहना ठीक नहा। हम लोग पानी तक चलें।' रामनन्दन बाबू, कृष्णराज भाई और मैं, तीनों आगे बढे। पानी कुछ कम हो चला था। हमारी जीप आगे निकली। उसके बाद गौरीबाबू की स्टेशन वैगन भी आ गयी। लेकिन बाबा की गाडी का निकलना मुश्किल था। उसके ड्राइवर, भाई मुरलीधर ने कहा कि 'पानी और कम हो, तभी आगे चलेंगे।' उन्होंने ठीक ही किया, क्योंकि बीच में हमारे सामने एक एम्बेसेडर गाडी आयी जो पानी में फँस गयी और बडी मुश्किल से निकल पायी। पानी कम होने के बाद गाडी आगे बढी।

लेकिन नवादा भी नहीं पहुँचे थे कि फिर वही मुसीबत सामने आ गयी। हमारी जीप और स्टेशन वैगन उस पार और बाबा की गाडी इस पार। इसी बीच इतजार करते-करते जब सबेरे के आठ से दोपहर के डेढ बज गये, तो गया के मित्रों ने द्वारकोभाइ को खबर लेने को भेजा। हमलोगो से मिलकर उनको जहाँ खुशी हुइ, वहाँ जवाब भी तलब करने लगे। सारी कहानी सुनने पर बोले "अब क्या किया जाय। इसके आगे तो कोइ चारा ही नहीं है।"

इसी बीच देखा कि उस पार से बकरियों का एक झुण्ड ग्वालों के साथ चला आ रहा है। पानी के बहाव की वजह से कुछ बकरियाँ बह गयीं और एक तो डूबने ही लगी। इसी दौरान म जयप्रकाश बाबू भी पहुँच गये। उनके साथ आश्रम के मत्री त्रिपुरारी भाई भी थे। जब बकरी को डूबते देखा, तो त्रिपुरारीजी फौरन पानी म कूद पड़े और बकरी को बचा लिया। ग्वाला अपनी बकरी पाकर गद्गद हो गया और एहसान मानने लगा। त्रिपुरारी भाइ ने मुस्कुराकर उसे विदा दी।

इस तरह शाम को पौने ६ बजे बाबा गया पहुँचे। टाउन हाल में उनका स्वागत किया गया। स्वागत-समिति के अध्यक्ष और बिहार के शिक्षामंत्री श्री सत्येन्द्रनारायण सिंह ने कहा कि "विश्वास दिलाते हैं कि हम सभी इस पुनीत काम में आपको सहयोग देंगे और ज्यादा से ज्यादा ग्रामदान दिलाने की कोशिश करेंगे।" बाबा ने कहा कि "तूफान में परिंदे ही नहीं, पत्ते भी उड़ते हैं। इसमें अहिंसा से मसले हल करने के नये तरीके के शोध हैं। हमें यह दिखाना है कि क्या अहिंसा से आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान हो सकता है? यह पराक्रम अहिंसा को करके दिखलाना है। इसीलिए 'तूफान' शब्द निकला। गया जिले में पूरा काम होना चाहिए, थोड़ा या ढीला नहीं। इसका नाम 'गया' है, 'गया-बीता' नहीं।

गया नगरी में दो दिन निवास तय था। दोनों दिनों का कार्यक्रम अब एक ही दिन में बैठाया गया। ११ बजे बाबा गया कालेज गये, जहाँ मगध विश्वविद्यालय के वाइसचासलर श्री जीदार हुसेन ने उनका स्वागत किया। बाबा ने कहा कि "विद्यार्थियों को अपने अन्दर विद्या प्राप्त करने की शक्ति पैदा करनी चाहिए। अध्ययन रोज चला करे, इन्द्रियों पर काबू और नींद पर नियंत्रण हो। सहूलियत का जीवन विद्या के अनुकूल नहीं पड़ता। मेरी आपसे सिफारिश है कि अपने को समर्थ बनायें। विद्या स्कूल या कालेज में पूरी नहीं होती, उसकी पूर्ति करने के लिए सामर्थ्य पैदा करें।"

पंचायतों की जिम्मेवारी

तीसरे पहर पंचायत-परिषद् के कार्यकर्ता बाबा से मिले। बिहार पंचायत-परिषद् के उपाध्यक्ष श्री लालसिंह त्यागी ने कहा कि "इस समय पंचायतें उद्बुद्ध हो रही हैं। आशा है, ग्रामदान में पूरा हाथ बँटायेंगी।" बाबा ने बताया कि "ग्रामदान पंचायतों को सेवा-संस्था बनाने का रास्ता खोल देता है। आज जो पंचायतें चल रही हैं, उनमें मतलब

का राष्ट्रीकरण हो रहा है। दिल्ली और पटना का मत्सर गाँव गाँव पहुँच रहा है। पचायत क्या है? विकेन्द्रित शोषण योजना है।" श्री जयप्रकाश बाबू भी बैठे हुए थे। उन्होंने पचायत के मित्रों से पूछा कि "आप कितने ग्रामदान कराइयेगा?" जवाब मिला कि "कोशिश करेंगे।"

धर्म-स्थापना का मार्ग

गया की सार्वजनिक सभा मे बाबा ने कहा कि "धर्म स्थापित ही कहाँ हुआ है? थोडी श्रद्धा उसके लिए पैदा हुई है। लेकिन धर्म लाना है। हम जिस हाल में बैठे है, उसमें हर दीवाल समकोण पर खडी है। समकोण पर दीवार का सिद्धान्त सर्वत्र माना जाता है। हम पूछना चाहते हैं कि क्या धर्म का कोई ऐसा सिद्धान्त निश्चित है। सत्य पालन मे भी कितनों को छूट है—व्यापारी को, वकील को, कर्मचारी को आदि। फिर सत्य कहाँ रहा? बच्चों के लिए, तो इसे सत्य की स्थापना कैसे कह सकते हैं? हमारा मानना है कि धर्म-स्थापना तब तक नहीं होगी, जब तक 'विश्वराज्य' नहीं आयेगा और 'विश्व मानव' नही बनेगा। इसकी कोशिश सयुक्त राष्ट्रसघ म चल रही है और उसे मजबूत बनाना चाहिए। दुनिया के सब राष्ट्रों को अपनी सत्ता और शस्त्र सयुक्त राष्ट्रसघ को समर्पित करने चाहिए, तभी विश्वराज्य बनेगा। इसका आरम्भ ग्राम स्वराज्य से होता है, जो 'ग्रामदान' के आधार पर खडा होगा।"

शेरघाटी में शाम की सभा मे बाबा के हाथ से भूमिहीनों को भूमि के प्रमाणपत्र दिलवाये गये। इस पर बाबा ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा "कलियुग मे दान ही सबसे बडा धर्म है। भूमिदान होता है, तो दिल से दिल जुडते ह। अब ग्रामदान उनको मजबूत बनाने के लिए हैं। बिहार मे ३७ हजार गाँवों मे जो भूदान मिला, उससे प्रेम और करुणा का भाव पैदा हुआ। इस प्रेम से शक्ति पैदा करनी है तो विश्वास हासिल करना होगा। जैसे घर में बिजली आ गयी, लेकिन बटन नहीं दबाया तो अंधेरा ही रहेगा। बटन विश्वास है, तो प्रेम है बिजली।"

भारत और एटम-बम

औरंगाबाद में दोपहर को वकील, डॉक्टर, शिक्षक, व्यापारी और सरकारी अधिकारी आदि जमा हुए। एक भाई ने सवाल पूछा कि "भारत को अणुबम बनाना चाहिए या नहीं? यह कदम उठाना कहाँ तक उचित होगा?" बाबा मुसकराये और बोले: "मराठी में एक कहावत है, जिसका मतलब है कि दूसरे का अपशकुन करने के लिए अपनी नाक कटा दी। (यह सुनकर सब हँस पड़े। बाबा आगे बोले कि) ऐटम बम बनाना यानी अपनी नाक कटाना है। इसका कोई उपयोग तो है नहीं। रूस और अमेरिका के पास उनका इतना ढेर है कि हमारे एक-दो बम से क्या होगा? इसीको कहते हैं गुनाह बेलज्जत।...चीन के पास ऐटम बम है, इसलिए हम भी उसे रखें, इसमें क्या अर्थ है? अगर चीन उसका इस्तेमाल करेगा, तो दुनिया में आणविक युद्ध शुरू हो जायगा। जो भी हो, हमें अक्षोभ-रहित चिन्तन करना चाहिए और निर्वैर-वृत्ति से अपना काम जारी रखना चाहिए।"

समन्वय-आश्रम में

गया जिले की यात्रा में दो दिन हमारा पड़ाव समन्वय-आश्रम में रहा। दशहरा वहीं बिताया। बाबा की पहली सभा बोधि-वृक्ष के नीचे सवेरे के समय हुई। बाबा ने कहा कि "यह स्थान बोलने का नहीं, ध्यान, चिंतन और मनन करने का है।" समन्वय-आश्रम का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि "यह आप सबकी सेवा के लिए है। जो भी यहाँ आयें, रह सकते हैं। आपको मालूम होगा कि यहाँ खुदाई करते समय भगवान् बुद्ध की एक बड़ी सुन्दर मूर्ति मिली। इस आश्रम के लिए इससे बढ़कर भगवान् बुद्ध का प्रसाद और क्या हो सकता है! दूसरे, हमने गौतम बुद्ध की वाणी का "धम्मपद" नाम से संकलन किया है। हम चाहते हैं कि यहाँ उसका अच्छा अध्ययन हो और पूरे एशिया के देशों की भाषाओं में उसका तर्जुमा हो। उन भाषाओं के लोग इस

स्थान में रहते भी हैं। ऐसा होने पर भगवान् बुद्ध का विचार ठीक और व्यवस्थित ढंग से दुनिया के सामने आयेगा। तीसरी बात यह कहनी है कि भगवान् बुद्ध का जो विचार है, उसीको आगे चलाने की हम ग्राम दान द्वारा कोशिश कर रहे हैं। सारनाथ जब हम गये थे, तब वहाँ के भिक्षुओं ने कहा था कि आप धर्म-चक्र प्रवर्तन का ही काम रहे हैं।"

दशहरे के दिन समन्वय-आश्रम में श्री काका साहब कालेलकर की अध्यक्षता में समन्वय-पर्व मनाया गया। यह एक नया आरंभ है और बहुत अनोखा है। आज देखा यह जाता है कि तरह-तरह के त्यौहार और पर्व मनाये जाते हैं, लेकिन उनमें उन्हींके माननेवाले लोग शरीक होते हैं, दूसरे नहीं। इस पर्व के पीछे कल्पना यह है कि सब धर्मों के लोग मिलेंगे, सत्संग करेंगे और विचार विनिमय भी होगा।"

समन्वय-आश्रम के हॉल में द्वारकोभाइ ने बड़ी सुन्दर सजावट की थी। आस पास के लोग जमा थे। गाधी निधि की बिहार-शाखा के सचालक श्री सरजूबाबू ने सबका स्वागत किया और कहा कि "विचार यह है कि दशहरे से लेकर शरद् पूर्णिमा तक यह पर्व मनाया जाय।" अपने अध्यक्षीय भाषण में काका साहब ने कहा कि "यह पर्व सर्व धर्म समन्वय का है। शिक्षित और अशिक्षित, गरीब और अमीर, ग्रामवासी या नगरवासी सबके लिए यह खुला है। सब जाति और धर्म के लोग एक जगह बैठकर इसे मना सकते हैं और मनाना चाहिए।"

सब धर्म सावधान हो जायँ

बाबा ने अपने प्रवचन में कहा कि "आज का दिन हम सबके लिए बड़ा ही मंगल दिन है, क्योंकि एक नवीनतम सद्विचार का आरंभ ही हो रहा है। आज के विज्ञान ने चेतावनी दी है कि सब धर्मों को साव धान हो जाना चाहिए। विज्ञान उनसे कह रहा है कि तुम एक हो जाओ या मिट जाओ। आज की परिस्थिति में पुराने ढंग से काम नहीं चलेगा। सत्य, प्रेम, करुणा की बात दुनिया में चली। यह विचार

बहुत पुराना है। लेकिन समन्वय का विचार भारत का अपना विचार मानता हूँ। यह दुनिया के लिए भारत की विशेष देन है। अब जमाना आया है, जब भिन्न धर्मों का समन्वय होना चाहिए। विचार पुराना है, लेकिन विनियोग व्यापक पद्धति से करना है। महात्मा गौतम बुद्ध की प्रेरणा से यह काम इस भूमि पर हो रहा है, इसकी मुझे खुशी है।

"समन्वय के सिलसिले में मुझे यह भी कहना है कि आपको बोध-गया की बस्ती ग्रामदान में लानी चाहिए। इससे समन्वय-पर्व कोबड़ी पुष्टि मिलेगी। दुनियाभर में एकदम इसकी कीर्ति फैलेगी कि महात्मा गौतम बुद्ध का बोधि-स्थान ग्रामदान हो गया। बोधगया का ग्रामदान होनेसे समन्वय-पर्व के लिए शुभ आरम्भ माना जायगा और इसकी बुनियाद पक्की बनेगी।"

वेदान्त की बुनियाद पर अहिंसा का मकान

समन्वय-आश्रम के ट्रस्टी-मण्डल की पहली बैठक भी बाबा के सामने सबेरे ८॥ बजे हुई। बाबा ने कहा कि "स्थूल रूप से एक आरम्भ हो गया है। उसके आगे व्यापक काम करने का है। पूरे बिहार में यह पर्व मनाया जाय। इसके बाद सब दूर भी फैलेगा। वेदान्त हमारी बुनियाद है और उसके ऊपर अहिंसा का मकान बनाना है। यह चीज इस स्थान के निमित्त हो जाय, ऐसी हमारी कोशिश है। इस स्थान में सबका स्वागत हो। अनेक भाषाएँ यहाँ के लोग सीखें और बाहर से आनेवालों के साथ प्रेम का सम्बन्ध जुड़े। हमारा सुझाव है कि हर पूर्णिमा को लोग जमा हों और विशेषकर बुद्ध पूर्णिमा और शरद् पूर्णिमा को।"

आश्रम के ट्रस्टी-मण्डल के अध्यक्ष हैं श्री काका साहब और ट्रस्टियों में हैं श्री गौरीबाबू, कृष्णराजभाई और द्वारकोभाई। द्वारकोजी ही समन्वय-आश्रम के प्राण हैं और पिछले ११ साल से यहाँ डटे हैं। उसके पहले ये बाबा के पास परंधाम आश्रम में थे। उन्होंने 'गीता प्रवचन' का अपनी मातृभाषा सिन्धी में अनुवाद किया है।

गया जिले का आखिरी पड़ाव रजौली में था। श्री गौरीबाबू का यह अपना गाँव है। उस दिन नाश्ते में क्या, दोपहर के भोजन में क्या, गौरीबाबू बड़े प्रेम से हम सबको भोजन कराते थे। बाबा ने माँग की कि 'यह पूरा गाँव ग्रामदान में आना चाहिए।' दोपहर को कार्यकर्ताओं की बैठक में एक भाई ने अपनी कठिनाई पेश करते हुए कहा कि "खादीवाले गाँव ग्रामदान में नहीं आ रहे हैं।"

खादी और गाँव

बाबा ने जवाब दिया कि "अगर मैं खादीवाला होता, तो लोगों को ग्रामदान का विचार समझाता और देखता कि वे नहीं समझ रहे हैं तो एक तारीख तय करके उनको बता देता कि अगर तब तक ग्रामदान में शामिल नहीं होते, तो खादी का काम बन्द कर दूँगे। क्योंकि अगर गाँव ग्रामदान में नहीं आता, तो गाँव कभी खादीवाला नहीं बन सकता, मजदूरी का ही काम करेगा। मैं मजदूरी के खिलाफ नहीं, लेकिन गाँव को खादीधारी बनना चाहिए। वे कहेंगे कि हम तैयार नहीं हैं, केवल कातने को तैयार हैं, तो इसके मानी यह है कि वे खुद खादी पहनना नहीं चाहते और उसे बम्बई और कलकत्ते के बाजार में भेजना चाहते हैं। तो मैं कहूँगा कि मेरी राय में खादी का यह रास्ता नहीं है और अब मैं यहाँ से चला।"

गया जिले की इस यात्रा में ३१० ग्रामदान मिले। जयप्रकाश बाबू की प्रेरणा से यहाँ के साथियों में बड़ा उत्साह है, लेकिन अभी तक बड़े-बड़े गाँव में नहीं गये थे। बाबा ने दिवाकरजी और अन्य मित्रों से कहा कि यहाँ का ग्रामदान तो होना ही चाहिए। उससे उनकी हिम्मत बढ़ी है। खुशी की बात है कि अब गया में बड़े-बड़े गाँव लेने की कोशिश हो रही है। वह दिन दूर नहीं, जब सारा जिला ग्रामदान में आयेगा।

ग्राम-स्वराज्य डिलेड
इज ग्राम-स्वराज्य डिनाइड :८:

"बाहर से रक्षा के लिए तो सेना है। सरकार उस पर हर साल लगभग एक हजार करोड़ रुपये खर्च कर रही है। रखवाली के लिए जैसे बड़े मालिक पुरवैये रखते हैं, वैसे ही सरकार सेना पर खर्च कर रही है। लेकिन अगर आमदनी को पुरवैया ही खा जाय तो वह सौदा महँगा पड़ेगा।...उस हालत में गाँव-गाँव को कौन सँभालेगा? हर गाँव में ग्रामदान हो और ग्रामसभा बने। अगर यह होने में देरी हुई, तो जिस न्याय की अपेक्षा है, वह गाँव को नहीं मिलेगा। अंग्रेजी में कहावत है कि 'जस्टिस डिलेड इज जस्टिस डिनाइड'—यानी विलम्ब होने से अन्याय होता है। इसी तरह मैं कहता हूँ कि 'ग्रामस्वराज्य डिलेड इज ग्रामस्वराज्य डिनाइड' और 'ग्रामदान डिलेड इज ग्रामदान डिनाइड।' देरी में अगर ग्रामदान करते हैं, तो उसका कोई असर नहीं होगा।"

बाबा की यह वाणी आज बिहार के सारे आकाश में गूँज रही है। २८ सितम्बर को जब वे छोटा नागपुर प्रदेश के पलामू जिले के मुख्य स्थान डाल्टनगंज में पहुँचे, तो ये दर्द-भरे शब्द कहे। सन्तोष की बात है कि उनकी तीव्रता का असर मित्रों पर पड़ रहा है और काम में तेजी आ रही है।

प्लानिंग ग्रामाभिमुख नहीं है

देश की प्लानिंग की स्थिति पर दुःख प्रकट करते हुए बाबा ने कहा कि "आज सरकार की प्लानिंग ग्रामाभिमुख नहीं है। ग्रामदान के लिए तीन साल पहले एक करोड़ रुपया मंजूर किया गया था। आज उसकी

कीमत ३५ लाख होगी। क्या चाहते हो उस पैसे को? जहाँ २० हजार करोड रुपया खर्च होता है, वहाँ बेचारा एक करोड क्या मानी रखता है? मैं तो उसे लेना भी नही चाहूँगा। बीस हजार में से एक! यानी बड़े मकान मे घर में फोटो के पीछे मच्छर के लिए जितनी जगह दी जाती है, प्लानिंग में ग्रामदान को उतनी ही जगह दी गयी है। एक नैतिक आन्दोलन, एक नैतिक शक्ति की यह कितनी विडम्बना है! हमारे देश के अलावा कहीं ऐसा नही होता होगा। हम चाहते हैं कि सरकार के प्लानिंग का रंग बदले, वह ग्रामाधार बने, ग्रामनिष्ठ बने, ग्राममूलक बने और हजारों-करोडों रुपया देहात के लिए खर्च करना पड़े।"

लातेहार मे हमारा निवास एक टीचर्स ट्रेनिंग-कालेज मे था। बाबा ऐसे स्थानो को विनय मन्दिर की सज्ञा देते हैं। बोले: "शिक्षा के तीन मन्दिर होते हैं—एक तो 'विद्या मन्दिर', जहाँ बच्चों को शिक्षा देते हैं। दूसरे 'विवेक मन्दिर', जिसे आजकल कालेज नाम दिया गया है। और तीसरे टीचर्स ट्रेनिंग के स्थान, ये 'विनय मन्दिर' हैं। अपेक्षा की जाती है कि आज का जो सर्वोदय विचार है, उसका यहाँ अच्छी तरह अध्ययन हो। नहीं तो क्या विनय पायगे? समाज को एकरस बनाना है, ऊँच-नीच मिटाना है, यह सारा यहाँ सिखाया जायगा, तभी शिक्षक विनय-सम्पन्न और विनीत होकर समाज की कुछ सेवा कर सकेंगे।"

आदिवासियों के लिए पॉच काम

दोपहर को विभिन्न पक्षो के कार्यकर्ताओं, सरकारी अधिकारियो और सर्वोदय प्रेमियो के बीच बोलते हुए बाबा ने कहा कि "सन्यास लेना पैसिफिज्म (pacifism) नही है और न कर्मयोग आप्टीमिज्म (optimism) है। असल मे तो सन्यास माने क्वायटिज्म (quietism) और कर्मयोग माने एक्टिविज्म (activism) है।"

शाम की सभा मे बाबा ने हाथ की पाँच अँगुलियाँ गिनाते हुए पाँच बातें आदिवासियों के सामने रखी: "१. जमीन सबकी है, २. मक्खन

खाना है, ३. कपड़ा बनाना है, ४. शराब छोड़नी है और ५. भगवान् को नहीं भूलना है। ये पाँच बातें आप याद रखें और उन पर अमल करें तो गाँव का गोकुल बन जायगा और चित को शान्ति मिलेगी।"

इसके बाद राजा लोगों का हवाला देते हुए कहा कि "मुझे इनसे बड़ी उम्मीद थी। अगर ये राजनीतिक पक्षों में न जाते, तो इनकी बड़ी ताकत बन सकती थी। राजा यानी सारी प्रजा के सेवक और पार्टी यानी टुकड़ा, अगर राजा पार्टियों से अलग रहते, तो उनका वजन बढ़ता, लोकप्रिय बनते और प्रतिष्ठा मिलती। लेकिन राजनीतिक आकांक्षा रहती है, इसलिए कुछ कांग्रेस में गये तो कुछ अन्य पार्टियों में। जो भी छोटे-बड़े राजा हैं, उनसे मेरी प्रार्थना है कि वे पक्षों से मुक्त हो जायँ, तो सेवा कर सकेंगे।"

खाते हैं, तो खिलाइये भी

राँची जिले में एक दिन पड़ाव था—राँची शहर में। वहाँ बाबा ने कहा कि "आदिवासियों की भाषाओं में उनका प्रवचन प्रकाशित होना चाहिए। ईसाई-मिशनरियों ने उनके हाथ में किताब दी और उन्हें किताब का अधिकार दिया। अगर हम उन्हें किताब देते हैं, तो उनमें शक्ति प्रकट होगी।"

दोपहर को एक भाई ने सवाल पूछा कि वर्तमान युद्ध के वातावरण में कितनी शक्ति युद्ध में लगानी चाहिए और कितनी ग्रामदान में? बाबा बोले : ' इसके बजाय पूछना यह चाहिए कि वर्तमान वातावरण में युद्ध में कितनी शक्ति लगानी चाहिए और खाने-पीने में कितनी? अगर आपका खाना पीना चलता है, तो क्या गरीबों का न चले? खाते हैं, तो खिलाइये भी।······अगर खिलाना नहीं है, तो गाँव-गाँव में युद्ध खड़ा होगा, भूखे लोग बगावत खड़ी कर देंगे। इसलिए ग्रामदान सेकेण्ड फ्रंट और प्रतिरक्षा के लिए साधन है।"

तीन बजे बिहार के राज्यपाल श्री अनंतशयनम् आयंगार बाबा से

मिलने आये। उन्होंने कहा कि "कल मैंने बिहार ग्रामदान आर्डिनेंस पर हस्ताक्षर कर दिये हैं और वह राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए गया है।" बाबा ने इस पर खुशी जाहिर की और उन्हें धन्यवाद दिया। बातचीत के दौरान में राज्यपाल बोले कि 'इस समय देश के लिए मैं दो चीजें बहुत जरूरी मानता हूँ—एक तो अनाज की पैदावार बढ़नी चाहिए, दूसरे देश की सुरक्षा होनी चाहिए। इसके लिए यह जरूरी है कि सबको लाजिमी तौर पर फौजी तालीम दी जाय।" बाबा बोले: "मैं आपसे सहमत हूँ। लेकिन जहाँ तक लाजिमी फौजी तालीम की बात है, मैं मानता हूँ कि वह वैकल्पिक (आप्शनल) रखी जाय। और जैसा इंग्लैण्ड में है, कांसेंस्स आब्जेक्टर को छूट दी जाय।"

क्रान्ति बनाम कोटा

शाम की सभा की अध्यक्षता राज्यपाल ने ही की। सभा में आदिम जाति सेवा मण्डल के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री नारायणजी ने ५ ग्रामदान भेंट किये और ६ महीने में १०१ ग्रामदान का कोटा पूरा करने को कहा। अपने प्रवचन में बाबा बोले कि "मुझे कोटे की बात सुनकर अत्यंत दया आयी। कृपा करके यह काम आप मत कीजिये। इस जिले में तीन हजार से ज्यादा गांव हैं, उसमें १०० ग्रामदान होना क्या माने रखता है? आपको दर्शन नहीं है। यह क्रांति का काम है। १०० ग्रामदान २९०० गाँवों की मार खायेंगे। चारों ओर गरम गरम हवा हो और एक गाँव को आप ठंडा रखना चाहें तो नहीं रख सकते। अब कहते हैं कि कोटा पूरा करेंगे। धिक्कार है तुम्हारे कोटे को! कोटे से क्रांति नहीं होती। क्रांति तो तब होती है, जब भावना प्रज्वलित होती है। यह क्रांति कार्य है।"

हजारीबाग में जब बाबा पहुँचे, तो मुख्यमंत्री श्री कृष्णवल्लभबाबू स्वागत के लिए मौजूद थे। वे इसी नगर के रहनेवाले हैं। दोपहर को जिला कांग्रेस के अध्यक्ष श्री पुनीत बाबू ने पूछा कि "स्वराज्य के बाद

राजनीतिक लोगों का चरित्र इतना क्यों गिरा है ?" बाबा ने कहा कि "हम गिरे हैं, हम गिरे हैं, यह बोलने से ही मनुष्य गिरता है। इसलिए शास्त्रों ने कहा कि 'तू ब्रह्म है।' जिसे लगता है कि हम गिरे हैं, वह गिरा नहीं है। बिहार में कांग्रेस में जो चलता है, उसे 'बोगस' कहते हैं। दूसरे प्रान्तों में भी वही हालत है। फर्क इतना ही है कि वहाँ बोगस करेंगे तो कबूल नहीं करेंगे। बोगस काम की कमी न बंगाल में है, न बिहार में, न आन्ध्र में, न उत्तर प्रदेश में। बिहारवाले इनकार करने की बजाय यह कह देते हैं कि दूसरों ने भी तो किया है। इसलिए यह खयाल मन से निकाल दीजिये।"

कल्पना-शक्ति और हृदय-शक्ति

शाम की आम सभा में बाबा ने कहा कि "आज की दुनिया में जो तरह-तरह के सवाल हैं, उनके पीछे एक ही चीज है। वह यह कि मनुष्य की कल्पना-शक्ति बढ़ गयी है, लेकिन हृदय की शक्ति नहीं बढ़ी है। बुद्धि जितनी विशाल हुई है, उतना हृदय नहीं। सारा झगड़ा विकसित बुद्धि और संकुचित हृदय का है। इसी कारण जीवन में विसंगति पैदा हुई है। पशुओं के जीवन में विसंगति नहीं, सुसंगति है। उनका दिमाग छोटा और दिल भी छोटा होता है। लेकिन अंग्रेजी में कहावत है कि 'एक सन्तुष्ट सुअर होने के बजाय मैं असन्तुष्ट सॉक्रेटीज (सुकरात) होना पसन्द करूँगा।' इसलिए हृदय को विशाल बनाना होगा, दिल का पैमाना बड़ा करना होगा। इसी वजह से ग्रामदान की मेरी माँग है, जिसमें ग्राम को परिवार का रूप मिलता है।

गांधी-जयन्ती के दिन हम लोग हजारीबाग जिले के चतरा नामक मुकाम पर थे। यह सबडिवीजन का सदर मुकाम है। एक जमाने में, अंग्रेजी राज में छोटा नागपुर की कमिश्नरी का केन्द्र भी यहीं बना रखा गया था। बाबा अपनी पिछली बिहार-यात्रा में यहाँ नहीं आये थे।

दोपहर को २ बजे जिले के करीब १५ कार्यकर्त्ता बाबा के पास जमा हुए। बाबा ने कहा कि "हजारीबाग नाम है, तो कम-से कम एक हजार ग्रामदान होना चाहिए।"

एक भाई बोले : "हमे समय कम मिला है। बापू की शताब्दी तक कर देंगे।"

बाबा : "शताब्दी तक तो पूरा बिहार ग्रामदान में आना है। फिर, शताब्दी को कौन रहेगा और कौन नहीं ? स्थिति भी मालूम नहीं क्या हो जाय ? चीन से मुकाबला है, पाकिस्तान से मुकाबला है। अगर चीन और पाकिस्तान कहे कि शताब्दी तक हम कुछ नहीं करेंगे तब तो ठीक है। इसलिए आपको १९ दिसम्बर तक यह काम कर लेना है। उस दिन हम जमशेदपुर में होंगे और बिहार के सारे काम का स्टाक चेकिंग करेंगे। तो आपके जिम्मे ७७ दिन मिलते हैं।"

गाँवों पर संकट

इस यात्रा में शायद सब से ज्यादा भाले भाले लोग हण्टरगंज की आम सभा में आये थे। बाबा ने उनसे हाथ उठवाये कि कौन-कौन पढना लिखना नहीं जानते। सैकड़ों हाथ उठ गये। बाबा बोले : "इसका मतलब यह कि इधर शिक्षा का प्रचार नहीं हुआ है। इसका यह अर्थ नहीं कि लोग ज्ञान नहीं रखते। इनको किताबी तालीम नहीं मिली, लेकिन अनुभव की तालीम मिली है। भगवान् ने प्रेम की तालीम का मुख्य इन्तजाम कर रखा है, जो माँ के उदर में ही मिलने लगती है।"

सभा में ही बाबा ने एक धागा लेकर दिखलाया। उसे जहा हाथ लगाया, वहीं टूट जाता। बाबा बोले : "इस धागे की तरह आज का गाँव है। जरा सा मुकाबला होते ही वह टूट जाता है। आज गाँव को वकील का, साहूकार का, व्यापारी का, सरकारी कर्मचारी का, बाजार का—सबका मुकाबला करना पड़ता है। उसमें हमारे गाँव हार खाते, मार खाते और टूट जाते हे।" फिर बाबा ने उस धागे को बट दे दिया

और कहा कि "देखो, अब यह मजबूत हो गया और टूटता नहीं। इसी तरह अगर गाँव को प्रेम का बट दे दिया जाय, तो वह मजबूत बनेगा। गाँव में जितने घर हैं, उन सबको प्रेमरूपी बट दे देने पर ग्रामदान हो जाता है।

मिल-मालिकों से

झुमरी-तलैया सारे देश में अभरक के लिए मशहूर है। बाबा वहाँ पर एक बड़े श्रीमान् होरिलराम के यहाँ ठहराये गये थे। मजदूरों के प्रतिनिधि भी मिलने आये थे। बाबा ने उनसे पूछा कि "आपमें और मालिक में प्रेम है या नहीं?" मजदूर-नेता चुप-से हो गये।

इसका हवाला देते हुए बाबा ने अपने स्वागतोत्तर प्रवचन में कहा : "स्वराज्य-प्राप्ति के बाद जितने नेता थे, वे तो राजनीति के झगड़े में फँस गये और बाकी लोग अपने स्वार्थ साधने में लगे। जिनका सध गया, वे सुखी हैं और जिनका नहीं सधा, वे दुःखी हैं। जो दुःखी हैं, वे अत्यन्त पस्त-हिम्मत हैं और जो सुखी हैं, वे विषयासक्त, भोगाग्रस्त और अन्धे बन गये हैं। दुनिया किधर जा रही है, इसका उन्हें भान नहीं। जो दुःखी हैं, वे मायूस हैं और उनमें कोई हिम्मत नहीं है। आज देश में मजदूर हैं, मालिक हैं और महाजन हैं। कुछ चिन्तक जन यानी ब्राह्मण भी हैं। हम इन चारों को मिलाना चाहते हैं, ताकि गाँव की शक्ति बने। हमारा काम सबके दिलों को जोड़ना है।"

दोपहर को हम लोग (कृष्णराज भाई, कालिन्दी बहन, निर्मल भाई और मैं)—एक छोटी-सी खदान देखने गये। वह ढाई सौ फुट गहरी थी। देखा कि मजदूरों की हालत बहुत चिंताजनक है। करीब एक बजे वहाँ से लौटे। झुमरी-तलैया में घर-घर में अभ्रक का काम होता है। कुछ बड़े कारखाने भी हैं। वहाँ खदानों से आनेवाले माल को अच्छी तरह काट-छाँट कर विदेश भेजा जाता है।

दोपहर को कार्यकर्ताओं की सभा में बाबा ने कहा कि "मालिकों से

हमारी सलाह है कि वे अपने धन्धे का जो नफा हो, उसके चार हिस्से करें—एक मालिक का, एक मजदूर का, तीसरा धन्धा बढाने के लिए और चौथा सार्वजनिक दान के लिए। इसके अलावा मालिकों से मैं दान माँगूंगा कि घर खर्च का एक हिस्सा बाबा के लिए रखें। बाबा धन्धे में नहीं बैठता, लेकिन घर में बैठता है। घर में अगर ९ खानेवाले हों, तो दसवाँ बाबा को समझ लीजिये।"

भारत सेवक समाज के मन्त्री भी मौजूद थे। बाबा बोले कि "भारत सेवक समाज में सारे जाग्रत लोग हैं। जो जाग्रत हैं, उनको जगाना सम्भव नहीं। उनसे प्रार्थना करें कि आप इस काम मे मदद करें, तो इसमें उनकी बुद्धि का अपमान होगा। इसलिए हम अपने बढते जाते हैं और कहीं बाबा की मृत्यु के बाद सूझेगा तो उसकी पुण्यतिथि मनाने के लिए कुछ ग्रामदान का सकल्प कर लेंगे। अभी तो बाबा की जन्म-तिथि पर दीर्घायु की प्रार्थना करते हैं, ताकि बाबा काम करे और हमें यह काम न करना पड़े।"

मन्त्री महोदय ने जाहिर किया कि सवा सौ ग्रामदान हासिल करगे।

तिरस्कार, होड़ और मत्सर

डोरडा हजारीबाग जिले का अतिम पडाव था। वहाँ बाबा ने कहा कि "बिहार में ग्रामदान की हवा बन गयी है। अब लोगों के पास पहुँचने की जरूरत है। हमने जो काम उठाया है, वह दिल को जोडने-वाला है। अभी भारत पर सकट था, तो सारा देश एक हो गया। लेकिन सकट के समय एकता तो जानवरों में भी आ जाती है। तीन साल पहले चीन का आक्रमण हुआ, तो एकता हो गयी थी। उसके आक्रमण वापस लेने पर यहाँ एकता भी वापस ले ली गयी। अच्छा हो, अगर अब एकता आगे भी बनी रहे। लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि गाँव-गाँव में भेद, फरक या सघर्ष नहीं होगा। एकता लाने

के लिए कोई विधायक प्रयत्न (पाजिटिव एफर्ट) करने चाहिए। आज नीचेवाले के लिए तिरस्कार है, बराबरवाले से होड़ है और ऊपरवाले से मत्सर है। इनकी जगह करुणा, मैत्री-प्रेम और आदरभाव आयेगा, तभी समाज मजबूत बनेगा।"

यह विषमता और दारिद्र्य

छोटा नागपुर में ५ जिले हैं। उनमें से पलामू, राँची और हजारीबाग में तो इस वक्त यात्रा हुई और बाकी दो जिलों में—सिंहभूमि और धनबाद में दिसम्बर में होगी। यह इलाका संपत्ति के लिहाज से बहुत मालदार है। यहाँ तरह-तरह की खानें हैं। लेकिन उतनी ही यहाँ विषमता और भयानक दारिद्र्य है। बाहरवाले जो उद्योग या व्यापार के लिए आते हैं, वे स्थानीय निवासियों से अलग ही रहते हैं। कभी उनसे समरस होने या उनको अपनाने की कोशिश नहीं करते। इस क्षेत्र के आदिवासी कब तक यह शोषण बरदाश्त करेंगे, कहा नहीं जा सकता। दुर्भाग्य से ग्रामदान या सर्वोदय का सन्देश भी उनके पास ठीक से नहीं पहुँचा है। वैसे यह इलाका ग्रामदान के लिए बहुत अनुकूल है, क्योंकि यहाँ जमीन की व्यक्तिगत मालिकी का रिवाज ही नहीं है। सर्वोदय-प्रेमियों के लिए छोटा नागपुर बहुत बड़ी चुनौती है। ●

हर जिला देव-जिला बने : ९ :

"देवघर तो हमारे देश का बहुत बड़ा तीर्थस्थान है। नाम भी इसका 'देवघर' है। जाहिर है कि यहाँ का हर घरवाला अपने घर को अपना नहीं, भगवान् का घर मानता है—'देवघर'। मैं भी यही बात समझता हुआ देश में १३ १४ साल से घूम रहा हूँ कि भाई, जो गाँव की जमीन है, वह भगवान् की है। उस पर किसीकी मालिकी नहीं हो सकती। हर गाँव देव गाँव है, हर घर देव-घर है, हर राष्ट्र देवराष्ट्र है। यह समझने की बात है और विज्ञान के इस युग में वह बहुत जरूरी है। अब छोटी-छोटी कल्पनाएँ नहीं टिक सकती। मैं आशा करता हूँ कि सथाल-परगना जिला, जो आदिवासी और पिछडी हुई जमातो का जिला माना जाता है, देव जिला हो जायगा। अगर वह देव-जिला हो जाय, तो पिछडा नही रहेगा, एकदम 'अगुआ' यानी सारे देश के लिए मार्गदर्शक बनेगा।" इन शब्दों के साथ बाबा ने १० अक्तूबर को सथाल परगना जिले मे प्रवेश करने पर देवघर की स्वागत-सभा मे अपने उद्‌गार प्रकट किये।

पोद्दारजी के चिकित्सालय में

रास्ते मे चढ़ाई से देवघर आते हुए वे जसीडीह में श्री महावीरप्रसाद-जी पोद्दार के प्राकृतिक चिकित्सालय मे ठहरे। वहाँ १० मिनट तक समाधिस्थ की हालत मे प्रवचन दिया। बाबा बोले : "बहुत खुशी की बात है कि इस पुण्यपावन स्थान में आने का मौका मिला। यहाँ बीमारों की सेवा चलती है। सेवा स्वयमेव पावन है। इसके अलावा यह सेवा प्रकृति के सम्पर्क से चलती है, प्रकृति माता के आधार पर चलती है।

इसलिए इस सेवा की पावनता और बढ़ जाती है। कभी इधर के ऐसे लोग मुझसे मिलते हैं, जिनको उपचार की जरूरत महसूस करता हूँ, तो उनको यहीं का नाम सुझाता हूँ। यह स्थान मेरे ध्यान में है। सारे भारत में इस तरह के कोई बीस-पचीस स्थान होंगे।"

महाराष्ट्र के अमरावती जिले के 'कुष्ठधाम' की याद करते हुए बाबा ने कहा : "वहाँ की दीवारों पर एक वचन लिखा देखा—'हम दवा देते हैं, लेकिन रोग भगवान् दुरुस्त करता है'।" कहते-कहते बाबा मौन हो गये और फिर एक श्लोक बोले : "यस्य स्मरण मात्रेण···" फिर मौन हो गये। इसके बाद बोले कि "जिसके स्मरण मात्र से साक्षात् भवरोग मिट जाते हैं···।" बाबा फिर मौन! आँखों से अश्रुधारा बह निकली। दर्शकों में कुछ को आश्चर्य हो रहा था कि क्या बात है! लेकिन साफ जाहिर था कि बाबा एकदम ध्यानावस्थित अवस्था में थे और गद्गद वाणी से वचन निकल रहे थे।

अपने बारे में उन्होंने कहा कि "आप जानते हैं कि मैं बीच-बीच में बीमार भी पड़ा हूँ। कभी कुछ दवाइयाँ भी ली है। लेकिन ज्यादातर टाला है, जितना हो सके। लेकिन आग्रह नहीं रखा। एक मनुष्य के दो स्वधर्म नहीं हो सकते। मैंने मुख्य स्वधर्म यह माना कि पदयात्रा जारी रहे। उसे कायम रखते हुए और बातों को करने की कोशिश की है। यह आक्षेप कि मैं अपनी श्रद्धा पर कायम नहीं रहा, मुझपर लागू हो सकता है। लेकिन आखिर हम कौन होते हैं जो किसी आग्रह को सँभाल सकें। मैं तो भगवान् की शरण में हूँ। जैसे वह नचाता है, नाचना अपना कर्तव्य मानता हूँ। लेकिन जो कुछ भी दवाई ली है, उसका बचाव नहीं करता, बल्कि उसके लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।"

देवघर में ११ बजे बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री विनोदानन्द झा बाबा से मिलने आये। वे बहुत निष्ठा के साथ ग्रामदान के काम में लगे हैं। स्वयं गाँव-गाँव जाकर इसका अलख जगाते हैं। बाबा से उन्होंने कहा कि "मुझे आशानुरूप सफलता नहीं मिली, लेकिन निराश नहीं हूँ।

लोगों में उत्साह है और ठीक काम करके उन्हें दिखाना होगा।" बाबा ने मुस्कराकर कहा "अगर यह जिला ग्रामदान हो जाय, तो इसका श्रेय मालूम है किसे देना होगा?" बाबा ने खुद ही जवाब दिया "कामराज को!" यह सुनकर सब हँस पड़े।

दोपहर को दो बजे कार्यकर्ताओं की सभा मे प्रश्नोत्तर हुए। ज्यादा तर आध्यात्मिक थे। बाबा ने कहा कि "मैं नहीं मानता कि गुरु के *रूप में कोई पूर्ण पुरुष मिल सकता है। पूर्ण पुरुष के अभाव में किसी* को अपना गुरु मानने में मेरी श्रद्धा नहीं। अव्यक्त रूप से महापुरुषों और सत्पुरुषों के प्रभाव का मुझे अनुभव होता है।"

समाजवाद या राज्यवाद?

ग्राम की आम सभा में शुरू म श्री विनोदाबाबू का व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा कि "इस आन्दोलन से नये जीवन की लहर आयी है। हम बाबा के बड कृतज्ञ हैं कि उन्होंने यह आन्दोलन चलाकर एक नया रास्ता खोल दिया। जिस वृक्ष का बिहार में वे आरोपण कर चुके हैं, उसके फल भी बिहार के लोगों को मिलगे। पचायतो के कारण गाँव गाँव म कटुता बढ गयी है और छोटे-छोटे गाँव तक में बड़े-बड़े झगड़े पहुँच गये हैं। जमींदारी गयी, लेकिन सरकार की जमींदारी आ गयी। ग्रामदान आन्दोलन इस सकट से हमे बचायेगा।"

जिला सर्वोदय मण्डल के सयोजक श्री लक्ष्मीनारायण राय ने ५७ ग्रामदान पेश किये और देवघर के व्यापारियों की ओर से विनोदाबाबू ने ४००१) की थैली भेंट की।

अपने प्रवचन म बाबा ने कहा कि "बदनीयती के कारण नहीं लेकिन नासमझी की वजह से समाजवाद के नाम पर राज्यवाद आ रहा है। इस प्रवृत्ति को रोककर शांतिमय उपायों से जनतान्त्रिक समाजवाद लाने का माध्यम ग्रामदान है। विनोदाबाबू ने विश्वास प्रकट किया है कि इस जिले में हजारों ग्रामदान हो सकते हैं, जरूर होंगे। आपके इस

जिले में दो पंगु हैं, लेकिन दोनों समर्थ हैं। एक तो हैं मोती बाबू जो अन्ध हैं, दूसरे विनोदाबाबू हैं, जिन्हें आप देख ही रहे हैं। इनके लिए बड़ा सुन्दर स्थान जसीडीह में बना है। इन दोनों पर जनता की श्रद्धा है और हमारी भी श्रद्धा है कि यह जिला ग्रामदानी जिला हो सकता है।"

सभा के बाद एक महीने के काम का स्टाक टेकिंग हुआ। बाबा की बिहार यात्रा को आज एक महीना पूरा हुआ। ध्वजाबाबू, विनोदा-बाबू, बिहार प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मिश्र और कुछ अन्य मित्र भी थे। १४ सितम्बर को बाबा पटना से निकले। तबसे आज तक २०१ ग्रामदान हुए। बाबा ने कहा कि "इसमें एक शून्य और जोड़ने का है।"

दूसरे दिन सवेरे ६ बजे निकलकर बाबा सात बजे सारठ पहुँचे। वहाँ मोतीबाबू मिले। उन्होंने बाबा के स्वागत में व्याख्यान देते हुए कहा कि "विनोबा केवल संत नहीं हैं, क्रान्तिकारी हैं, युग-परिवर्तन-कारी हैं।"

श्री विनोदाबाबू ने १४ ग्रामदान भेंट किये, जिनमें बमनगामा गाँव भी शामिल है, जिसकी आबादी ढाई हजार के लगभग है।

अपने १० मिनट के प्रवचन में बाबा ने कहा कि "यहाँ संताल लोग रहते हैं। हम सारे भारत को संताल बनाना चाहते हैं। सन्ताल माने सन्तों के मार्फत चलनेवाला। इसका नमूना सन्ताल-परगना में आप दिखायेंगे। यह मेरी खास आग्रहपूर्वक प्रार्थना है। इसे पूरा करने में आप ताकत लगायें।"

बादल हैं, तूफान नहीं

आज दोपहर को दो बजे वैद्यनाथबाबू घोरमारा पहुँचे। ध्वजा-बाबू के साथ वे बाबा से मिले। बाबा ने कहा कि "रोज के १० ग्राम-दान इस महीने में हुए। इस गति से तो १० हजार के लिए तीन साल लगेंगे। इसके माने हैं कि बादल ही आये हैं, तूफान नहीं। तूफान को

जगाना चाहिए।" इस पर वैद्यनाथबाबू ने कहा कि "इस महीने में तो ज्यादा काम हो नहीं सका, क्योंकि ११ सितम्बर को पटना में ग्रामदान भेंट किये ही गये थे। उसके बाद काम करने का समय नहीं मिला। लेकिन अब एक महीना पूरा बीत गया है और जगह जगह काम हो रहा है। भगवान् ने चाहा तो दूसरे महीने के अन्त में आपको कहीं ज्यादा अच्छा काम दिखलायी पड़ेगा।"

विलक्षण दर्शन

सबेरे जब सारठ से बाबा घोरमारा के लिए निकलने लगे, तो वहाँ बाबा की मोटर में आगे के हिस्से में एक गोला फूलों के साथ सँजोकर लगा दिया। उसमें सारठ में मिले हुए १४ ग्रामदानी गाँवों के नाम की परचियाँ भी थीं। मोटर घोरमारा तक तेज गति से आयी। उस गोले के वे परचे हवा में फर-फर उड़ते रहे, लेकिन आश्चर्य की बात है कि एक भी फटा नहीं।

बाबा ने इस चीज का हवाला देते हुए शाम को अपने प्रार्थना-प्रवचन में कहा : "इन चिट्ठियों के न फटने पर मेरे ध्यान में आया कि ये जो ग्रामदान बने हैं, वे नहीं टूटेंगे। इसका मतलब मैंने लगाया कि ये ग्रामदान पक्के हैं। मुझे तो ऐसी चीजों से विलक्षण दर्शन होता है। वह मुझे बल देता है। मतलब यह कि ग्रामदान का विचार पक्का है। इस तरह एक-एक संकेत से बाबा पोषण हासिल करता है। इसलिए बाबा बिल्कुल मजबूत है और उसे भास ही नहीं होता कि बूढ़ा हो गया।" बाबा ने भूदान शुरू किया पचपन साल की उम्र में। तो पचपन के बाद बाबा का बचपन शुरू हुआ। बाबा न बुढ़ापा महसूस करता है, न जवानी। बिल्कुल बचपन महसूस करता है।"

अन्त में उन्होंने अपील की कि "ग्रामदान देनेवाले लोग दूसरे गाँव में जायँ, वे ज्यादा अच्छी तरह समझा सकेंगे। 'खग जाने खग ही की भाषा'। समझना चाहिए कि अगर आसपास गैर ग्रामदानी गाँव हैं और बीच में ग्रामदानी गाँव, तो ग्रामदान को सुरक्षा नहीं है। अपनी सुरक्षा

का खयाल करके ग्रामदानी गाँवों के लोगों को ग्रामदान का काम बढ़ाना चाहिए।"

शाम को वैद्यनाथ बाबू ने बाबा से पूछा : "सुना है कि आपने शाम का खाना बन्द किया है। हम लोगों को इससे बड़ी चिंता हो गयी है। इसका आपके स्वास्थ्य पर जरूर हानिकारक असर पड़ेगा।" बाबा ने जवाब में कहा कि "मेरी माता ४२ साल की उम्र में गुजर गयी थी। उसके पाँच-छह साल पहले तक मैं उसके साथ रहा। वह आये दिन उपवास किया करती। लेकिन मेरे लिए उसने साल में तीन उपवास की इजाजत दी : शिवरात्रि, जन्माष्टमी और रामनवमी। जब मैं पूछता कि 'मुझे उपवास क्यों नहीं करने देती!' तो कहती : 'तेरे उपवास के दिन आगे आयेंगे।' तो मैंने सोचा कि अब वे दिन आ गये। शाम को सूर्यास्त के बाद न खाना जैन-साधना है और दोपहर को भोजन के बाद न खाना बौद्ध-साधना का अंग है। लेकिन मेरे न खाने से स्वास्थ्य पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि मैं विश्राम ज्यादा करता हूँ। खुराक घटायी है तो नींद बढ़ायी है।"

अगले दिन घोरमारा से ६ बजे निकलकर ६४ मील की मंजिल तय कर बाबा साढ़े आठ बजे जामताड़ा पहुँचे। एक कालेज में निवास था। स्वागत में आये लोग बहुत ही अव्यवस्थित ढंग से बैठे और खड़े थे। बाबा ने केवल पाँच मिनट मौन प्रार्थना करायी।

सफलता से सफलता की ओर

दोपहर को कार्यकर्ता सभा में मोतीबाबू ने पूछा कि "इस वृद्धावस्था में होने के कारण आपको ग्रामदान की प्राप्ति या अप्राप्ति पर हर्ष-विषाद का होना समझ में नहीं आता।" बाबा ने मुस्कराते हुए जवाब दिया कि "यह चीज मुझ पर लागू नहीं है। मैं साधारण मनुष्य ही हूँ, सिद्ध-पुरुष नहीं। आम आदमियों से ऊँचा नहीं, थोड़ा अलग जरूर हूँ। यह इसलिए कि अगर थर्मामीटर को अपना बुखार हो, तो दूसरे का बुखार नहीं नाप सकेगा।" आगे चलकर बाबा बोले कि "हमारा काम

असफलता से सफलता (Failure to success) के तरीके से नहीं, बल्कि सफलता से सफलता (Success to success) के ढग से चलना चाहिए। अगर इसमें असफलता मिलती है, तो आप बाबा के पीछे चलनेवाले पागल कहे जायेंगे। सफलता मिली तो अकलवाले कहलायेंगे। इसलिए जोर लगाइये।"

आज की हालत

शाम की आम सभा में बाबा ने चेतावनी दी कि "१८ साल के स्वराज्य के बाद भी हालत सँभली नहीं है। उनको समझना चाहिए कि अगर नीचे का तल्ला गिर गया तो ऊपर का तल्ला टिक नहीं पायेगा। आज जो हालत चल रही है, अगर वह जारी रहेगी तो सब पढे लिखे अच्छे लोग शहरों में चले जायेंगे और गाँव में निर्जीव और अशिक्षित लोग बच जायेंगे, जो भूमिवानों की दया पर निर्भर रहेंगे। यह बडी भयानक स्थिति होगी। अगर देश को बचाना है, तो यह स्थिति बदलनी चाहिए। इसका उपाय ग्रामदान है।"

१२ ता० को रास्ते में लागा गाँव में ५ मिनट के लिए बाबा ठहरे, जो बाबा की गाडी के ड्राइवर श्री मुरलीमनोहर की जन्मभूमि है। वहाँ उनको थैली भेंट में दी गयी। उसके बाद पालाजोरी गाँव पर रुके, जहाँ ६ ग्रामदान मिले। उनको बधाई देते हुए बाबा ने कहा कि "आपको दूसरे गाँव में जाकर ग्रामदान हासिल करना चाहिए।" सवा आठ बजे बाबा डुमरा पहुँचे जो जिले का मुख्य स्थान है।

दोपहर को एक भाई ने पूछा कि "आप अगर विदेश जायँ, तो सर्वोदय का प्रचार अच्छा होगा।" बाबा ने कहा कि "इनका मतलब यह है कि बाबा चाहे परदेश जाय चाहे परलोक, लेकिन बिहार से इनका पीछा छोड दे।" यह सुनकर सभी हँस पड़े।

हिन्दी की उन्नति का मार्ग

एक सवाल हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के बारे में किया गया "व्यापारिक

संस्थाओं ने उन्हें ले लिया है और बड़ी-बड़ी मोहक उपाधियों और पुरस्कारों के मोह में साहित्यिक फँस गये हैं। इससे बचने का क्या उपाय है?" बाबा ने कहा : "अगर साहित्यिक पैसे के शिकंजे में आ जाते हैं, तो उनका उतना ही मूल्य समझना चाहिए। क्या तुलसीदास को, क्या कबीर को, उन्हें किसी व्यापारी ने पकड़ा था या किसी राजा के वश में वे आये थे? आजकल के साहित्यिक किसी पेपर या सरकार की पालिसी के अनुसार लिखते जाते हैं। उनकी अपनी कोई हस्ती नहीं है। भारत में प्रिंटिंग प्रेस सौ साल से है। इस अरसे में हिन्दुस्तान में कौन ऐसी पुस्तक निकली, जो तुलसी रामायण की तरह चली हो। इन किताबों की हस्ती नहीं, कोई स्थायी मूल्य नहीं। हिन्दी तब उन्नति करेगी, जब उसमें प्रतिभा-संपन्न, स्वतंत्र-बुद्धि के, वैज्ञानिक दृष्टिवाले कवि और लेखक निकलें। मजे की बात यह कि विद्या के प्रेमी सरस्वती की बजाय लक्ष्मी की उपासना करते हैं। अगर वे सरस्वती की अनन्य भक्ति करते और लक्ष्मी की तरफ देखते तक नहीं, तो उनका असर पड़ता। लेकिन जब लक्ष्मी की तरफ देखेंगे तो लक्ष्मीवालों द्वारा उनको खरीद लेना स्वाभाविक है।"

शाम की प्रार्थना-सभा में ४ ग्रामदान दिये गये। सबेरे के ६ मिलाकर १० हो गये। ग्रामदान के संकल्प-पत्र एक नौजवान ने पेश किये, नाम है शिवलाल माझी मालपहाड़िया। उसने कहा कि "मैं बाबा को अपना जीवन-दान करता हूँ और यह भौतिक शरीर भी अर्पण करता हूँ।"

इस क्षेत्र से संसद् के सदस्य श्री प्रभुदयाल हिंमतसिंहका ने आश्वासन दिया कि ग्रामदानी गाँव को व्यापारी मदद देंगे। ७४ वर्ष के होने पर भी श्री प्रभुदयालजी में नवयुवकों जैसा उत्साह है। पिछले ५५ साल से सार्वजनिक सेवा में लगे हैं। देश की अनेक शिक्षण और सामाजिक संस्थाओं से उनका सम्बन्ध है। प्राकृतिक चिकित्सा में उनकी विशेष रुचि है। बाबा की यात्रा में संथाल परगना के आठों पड़ावों पर वे साथ रहे और हम सबकी चिन्ता रखते थे।

छह प्रतिशत घटाव

अपने प्रवचन में बाबा ने दुमका नगरी के निवासियों से सौ सेवकों की माँग की और व्यापारियों से अपील की कि "ग्रामसभा में शामिल हों, अपनी आमदनी का ४० वाँ हिस्सा हर साल दें और अपनी बुद्धि तथा नियोजन शक्ति का भी लाभ उसे दें। इसके अलावा ग्राम विकास के लिए कर्जा भी खुशी से दें। और इस कर्जे में सूद लेने की बजाय ६ प्रतिशत घटाव स्वीकार करें। यानी १००) दें और साल भर बाद ९४) वापस लेकर कर्जा चुकता मान लें। ऐसा करने पर भारत में आर्थिक क्रांति के साथ साथ आध्यात्मिक क्रान्ति भी होगी। व्यापारियों को इससे आंतरिक समाधान होगा, उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और वे सचमुच समाज के नेता या महाजन बनेंगे।"

अगला पड़ाव महेशपुरराज में था। श्री विनोदाबाबू पहले से मौजूद थे। उनके प्रयास से इस क्षेत्र में पड़ाव पर १७ ग्रामदान मिले।

वैद्यनाथधाम के ट्रस्टियों से

स्वागत प्रवचन में बाबा ने कहा कि "आज मेरे ध्यान में आया कि इस जिले पर वैद्यनाथधाम का राज्य है। कुछ लोगों को मालूम होगा कि वैद्यनाथधाम से जगन्नाथपुरी जाने का रास्ता रानी अहिल्याबाई होल्कर ने अपने निजी खर्च से बनवाया था। उस जमाने में ये सारे तीर्थस्थान लोक-सेवा के बड़े केन्द्र थे और यहाँ पर ज्ञानी लोग जमा होकर आपस में विचार विनिमय भी करते थे। ये ज्ञान केन्द्र, भक्ति केन्द्र, सेवा केन्द्र थे, लेकिन अब ये पुराने पुण्य को बेचकर खा रहे हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि इन तीर्थ-स्थानों की हस्ती बनी रहे और वैद्यनाथधाम ग्रामदान के काम को उठा ले। यह भगवान् का काम है। इससे लोगों को त्याग की प्रेरणा मिलेगी, पुरुषार्थ जाग्रत होगा। यह काम सबको जोड़नेवाला साबित होगा। वैद्यनाथधाम पर लोगों की बहुत श्रद्धा है। अगर यहाँ के ट्रस्टीगण इस काम को उठा लेते हैं, तो उस काम को श्रेय मिलेगा और लोगों को भी बल मिलेगा।"

दोपहर को कार्यकर्ता सभा में जब पूछा गया कि "संस्थाओं में कुछ दिनों में बहुत-से दोष आ जाते हैं। उनका इलाज क्या है!" बाबा ने जवाब दिया कि "दोष हर चीज में आता है। इसी वजह से घर में रोज झाड़ू लगाते हैं, शरीर को रोज स्नान कराते हैं। इसलिए संस्था की जरूरत पड़ने पर बनाया और जरूरत खत्म होने पर उसे बन्द कर दिया। बनाया, मिटाया। मैंने आज सवेरे ही वैद्यनाथधाम को मजबूत करने का सुझाव दिया। अब अगर वे ग्रामदान को उठा लेते हैं और सौ कार्यकर्ता तैयार करते हैं, जो उनको तरफ से जिले में घूम रहे हैं, तो फिर से एक दफा संस्था जाग्रत होगी। नव-जाग्रति आयेगी।" ध्यान-चिन्तन के बारे में बोलते हुए बाबा ने कहा कि "मुख्य वस्तु है चित्त में विकार न हो। चित्त को निर्मल करने की प्रक्रिया ढूँढनी चाहिए, न कि एकाग्र करने की। चित्त इधर-उधर नहीं जाना चाहिए।"

आदिवासियों में प्रगति की सम्भावना

शाम की आम सभा में गाँव के मुखिया शेख नायबजान ने कहा कि "इस इलाके से १७ ग्रामदान बाबा को ११ सितम्बर को पटना में दिये गये, आज फिर १७ दिये जा रहे हैं और आगे १०० ग्रामदान का हम अह्द करते हैं। हमें सब पार्टियों और जमातों का सहयोग मिल रहा है।"

अपने प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि "आज हम आदिवासी क्षेत्र में आये हैं। आदिवासी भाइयों की बुद्धि सैकड़ों वर्षों से परती रही है। ऐसी जमीन में अगर खेती करते हैं, तो बहुत ज्यादा फसल होगी। अगर आदिवासियों को अच्छी शिक्षा मिले, तो बहुत बड़ा परिणाम आयेगा और उनकी बुद्धिमत्ता ब्राह्मणों की बुद्धिमत्ता को मात करेगी। ब्राह्मणों की बुद्धि पर तो सैकड़ों वर्षों से हल चल रहा है। वे उससे तीन-तीन फसलें लेते हैं। वह अपना सत्त्व खो चुकी है, ज्यादा नहीं निकलता। ब्राह्मणों को मेरी सलाह है कि बुद्धि को जरा परती रखें, थोड़ा परिश्रम करें। पाँच-पचीस साल भी अगर परती रखें, तो उसके

बाद की पीढ़ी में अच्छी फसल आयेगी। ब्राह्मण मेरी बात मानें या न मानें, उनकी मर्जी की बात है।

महाभारत व्यासजी ने लिखा है। व्यास का अर्थ है, विशाल बुद्धिवाला। वेदव्यास प्राज्ञ पुरुष थे। उनकी माता आदिवासी थीं। यह मैं विनोद नहीं कर रहा हूँ। मतलब यह कि इनमें दो संस्कार इकट्ठे हुए थे—ब्राह्मण की परम्परा थी और आदिवासी की ताजगी भी। इधर से बुद्धि का संचार, तो उधर से प्राण का संचार! मेरा विश्वास है कि आदिवासियों को अगर उपनिषद् और आधुनिक विज्ञान पढ़ाया जाय तो इस क्षेत्र में महाज्ञानी पैदा होंगे। ब्रह्मविद्या उन्हीं-के लिए है। इस क्षेत्र में गाँव-गाँव में श्रवण-वर्ग खोले जायँ। मेरा आदर्श है कि आदिवासी लोग उपनिषद् के मंत्र गा रहे हैं और खेती कर रहे हैं। ऐसा आदर्श यहाँ खड़ा करना होगा।"

१५ तारीख को सबेरे रास्ते में एक ग्रामदान दिया गया। ठीक आठ बजे बाबा नौनिहाट पहुँचे। अपने स्वागत भाषण के उत्तर में उन्होंने कहा कि "जसिडीह में जो आरोग्य-केन्द्र बना है, वहाँ ज्यादातर बड़े और वजनदार लोग जाते हैं। वजन घटाने की विद्या में वहाँवाले प्रवीण हो गये हैं। हमें लगा कि जसिडीह की शाखाएँ गाँव-गाँव में हों। सब ग्रामदानी गाँव नहीं तो कुछ में तो जरूर हों। वहाँ उपचार के ऐसे तरीके बताये जायँ कि किसान और मजदूर खेतों में काम कर सकें और उपचार भी। संशोधन का नया दालान खुल जायगा और सारे भारत में प्राकृतिक उपचार फैलना आसान होगा।"

ध्यान और धर्म

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "ध्यान एक शक्ति है। इसका उपयोग और दुरुपयोग दोनों हो सकते हैं। आध्यात्मिक साधना तब होती है, जब चित्त भगवान् को समर्पित होता है। चित्त का धर्म तो दौड़ना है। लोगों ने भगवान् की कुछ ऐसी कल्पना कर रखी है,

मानो यह समाज से अलग हो। जब चित्त में अनेक चीजें भरी हैं, तब भगवान् वहाँ कैसे बैठेगा ?"

नौनिहाट से बाबा सबेरे ६ बजे निकले। एक ही घण्टे का रास्ता था, पर १५ मील चलने के बाद गाड़ी कुछ खराब हो गयी और पीछे कोई दूसरी गाड़ी न रहने के कारण पौरैयाहाट गाँव में रुकना पड़ा। बाबा वहीं उतरे और गाँव के स्कूल में चले गये। थोड़ी देर के अन्दर काफी लोग जमा हो गये। बाबा ने उनसे कहा कि "ईश्वर की योजना हमें इस गाँव में ले आयी है। अब आपको इस गाँव का ग्रामदान करना चाहिए। बाद में पता चला कि पहले इसी जगह पड़ाव रखा गया था, पर बाद में बदल दिया गया। वहाँवालों को संतोष रहा कि पड़ाव बदलने के बावजूद बाबा का दर्शन और वाणी सुनने का मौका मिला।

फसल तैयार है

पौने आठ बजे बाबा गोड्डा पहुँचे। इस इलाके में यह एक बड़ा कस्बा है। बाबा ने स्वागत-प्रवचन में प्रभु ईसामसीह का उद्धरण देते हुए कहा कि फसल तैयार है, लेकिन काटनेवालों की कमी है। ईसा को तो काटनेवाले साथी कम मिले। लेकिन अब यह कमी नहीं रहनी चाहिए। मैं यहाँ बड़ी आशा से आया हूँ। मुझे भरोसा है कि आप थोड़े में संतोष नहीं करेंगे। जब तक पूरा काम नहीं होता, चैन नहीं लेंगे। 'राम काज कीन्हें बिना मोहिं कहाँ विश्राम।'

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बोलते हुए बाबा ने कहा कि "अगर सैकड़ों ग्रामदान होते हैं, तो मुसीबत जरूर खड़ी होगी। हजारों होते हैं तो मुसीबत कम हो जायगी। और अगर लाखों होते हैं, तो एकदम मुसीबत नहीं रहेगी। प्लानिंग का नकशा बदलेगा और सरकार का भी नकशा बदलेगा। यह क्रान्तिकारी कार्यक्रम है।"

क्रोध, द्वेष आदि के बारे में एक प्रश्न के उत्तर में बाबा बोले: "क्रोध एक निर्दोष रिपु है, एक उफान है। लेकिन द्वेष बहुत खतरनाक

चीज है और उसमें कोई दम नहीं। सार्वजनिक काम में लगे लोगों को दो बातों पर ध्यान रखना चाहिए। पहला यह कि जो काम वे करें, उससे उनकी चित्त शुद्धि हो। और दूसरे यह देखें कि उससे सबका भला होता है। इसके बजाय अगर वे द्वेष और मत्सर करते हैं, तो मैं उनसे कहूँगा कि वे सार्वजनिक काम से हट जायँ और निजी काम में लगे। हमें किसी तरह का अहकार नहीं रखना चाहिए।"

आश्रमो के लिए सन्देश

आम सभा के लिए जाते समय बाबा श्री रमणी मोहन झा 'विमल' के आश्रम में गये। वहाँ पाँच मिनट ठहरे। इस आश्रम की स्थापना श्री जयप्रकाश बाबू ने अक्तूबर १९६५ में की थी। आश्रम के बारे में जब विमलजी ने सन्देश माँगा तो बाबा ने लिखकर दिया :

"बाबा के आशीर्वाद—

(१) फिलहाल आश्रम मे बैठने का मौका नहीं। पूरा गोड्डा प्रखण्ड ग्रामदान में आ जाय, सथाल परगना ग्रामदानी बन जाय, तो वह मौका आ सकता है।

(२) आश्रम के लिए कर्जा नहा निकालना चाहिए।

—विनोबा का जयजगत्।"

शाम की आम सभा में ५७ ग्रामदान दिये गये। उन्हें पेश करते हुए श्री बुद्धिनाथ झा, एम० एल० सी० ने कहा कि "अभी तो धीमी धीमी बयार बह रही है। फिर तूफान आयेगा, जिससे आर्थिक विषमता और राजनीतिक जडता मिटेगी।"

ग्रामदान से ग्रामप्राप्ति

श्री विनोबा बाबू ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि "आज गाँव केवल सरकारी कागज में हैं। गाँव में घर जरूर है, लेकिन गाँव नहीं

हैं। ग्रामदान होने पर गाँव ग्रामसभा के पास आ जाता है। इसलिए यह आन्दोलन ग्रामदान का नहीं, ग्राम-प्राप्ति का है।"

अपने प्रवचन में बाबा ने प्रधानों को सावधान किया और कहा कि "वे शोषक जैसे काम न करें, वरना उनका भविष्य खतरे में है। प्रधान या मुखिया को मुख-सा होना चाहिए और जनता का मुख्य सेवक बनना चाहिए। उसका शोषण करना, जो ऊपर से चला आता है, अगर चलता रहा तो उनकी जाति ही खतम हो जायगी। इसलिए मैं उनसे अपील करता हूँ कि वे जनता के सेवक बन जायँ।"

जिले का आखिरी पड़ाव सरैयाहाट में था। यह गोड्डा से २४ मील की दूरी पर है। यहाँ बाबा ७ बजे पहुँचे। स्वागत-प्रवचन में बाबा ने कहा कि "सात-आठ दिन इस जिले में हमारी यात्रा चली। सामने जो श्रोता बैठे हैं, उनमें से कई चेहरे हमारे परिचित हो गये हैं। शास्त्रों ने कहा है कि सात कदम चलने से दोस्ती बनती है। हम तो आपके साथ सात दिन रहे और अब दोस्ती बन गयी। मैं आशा करता हूँ कि इस मैत्री की अनुभूति हम सबको होगी।"

आज काशी से श्री कृष्णराजभाई आये। उनके साथ श्री ए० टी० आर्यरत्नजी भी थे, जो लंका में कई साल से रचनात्मक काम कर रहे हैं और वहाँ जेटिक सर्वोदय श्रमदान-संघ के मंत्री हैं। अभी वे इजराइल से लौटते हुए दिल्ली आये और फिर काशी से यहाँ पहुँचे। उन्होंने बाबा को लंका में आने का निमन्त्रण दिया। बाबा ने कहा कि "हमारी इच्छा वहाँ जाने की अवश्य है। लेकिन अभी निश्चय-पूर्वक समय तय नहीं कर सकते।"

दोपहर की सभा के पहले जिले के सब कार्यकर्ता जमा हुए और डेढ़ हजार ग्रामदान प्राप्त करने का निश्चय किया। बाबा को उसकी सूचना दी गयी तो वे बोले कि "यह ठीक है, लेकिन यह नाहता ही है।" इस पर मोतीबाबू ने कहा कि "आप हमें एक महीने का समय

इस जिले में दीजिये, तो पूरा भोजन और तस्मै जरूर खिलायगे।" बाबा हँसते हुए बोले : "अभी तो हम नाश्ते पर ही सन्तोष करेंगे।"

भारी गद्दारी

शाम की आम सभा में श्री विनोबा बाबू ने अपने मार्मिक भाषण में कहा कि "भारत की गरीबी हमारे स्वराज्य की भावना के साथ गद्दारी है। अगर हमारे देहात रेगिस्तान हो जायँगे तो, वहाँ की धूल शहरों को भी रेगिस्तान बना देगी। वे भी जायगे और आप भी। इसलिए बिहार में क्रान्ति होनी चाहिए और बाबा की जो माँग है, वह पूरी होनी चाहिए। उससे सच्ची क्रान्ति होगी।"

आज २३ ग्रामदान दिये गये। जिला सर्वोदय-मण्डल के मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण राय ने सब पडावों पर मिले ग्रामदानों का ब्योरा दिया और बताया कि "कुल मिलाकर इस यात्रा में १९२ ग्रामदान बाबा को दिये गये। इसके पहले पटना में ५७ ग्रामदान दिये गये और ८५ ग्राम-दान पुराने हैं। इस तरह जिले में ग्रामदानों की तादाद ३३२ हो गयी।

ग्रामदान में दोहरी शक्ति

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "दो सौ बरस की गुलामी ने इस देश को एकदम दीन-हीन बना दिया। अब हमें दारिद्र्य मिटाना है और ग्राम-स्वराज्य की स्थापना करनी है। सुरक्षा और उत्पादन बढ़ाना, दोनों चीज एकरूप हो गयी है। अगर आप ग्राम-स्वराज्य की स्थापना कर लेते हैं और बाहरी आक्रमण रोकने के लिए सेना की जरूरत ही नहीं रहती, तो ऐसी स्थिति का निर्माण करके आप सेना का विघटन कर सकते हैं। अगर आपको सेना मजबूत करनी है, तो ग्राम-स्वराज्य की आवश्यकता है और अगर उसका विघटन करना चाहते हैं, तो भी ग्राम स्वराज्य आवश्यक है। दोहरी शक्ति इसमें है। मानता हूँ कि कांग्रेस और दूसरी पार्टीवाले भी यह चीज समझ गये हैं। इसलिए सबको विश्वास

होना चाहिए कि यह काम होनेवाला ही है। भगवान् कर चुका है। हमें तो खाली निमित्त मात्र बनना है।"

अन्त में बाबा ने कहा कि "आपने फिर से बुलाया है। आप अद्‌भुत पराक्रमी लोग हैं। साक्षात् भगवान् जो शेषशय्या पर रहना चाहता है, *उसे भी आपने अवतार लेने को मजबूर किया। जोरदार* अधर्म चलता है तो उसे आना ही पड़ता है। ऐसे पराक्रमी उन्हें दुबारा भी बुला सकते हैं। आप बुलायें और पूरा जिला दान करें तो वे अवश्य आयेंगे। न बुलायें और पूरा जिला ग्रामदान हो, तो आपको परमवीर-चक्र देंगे।

सभा के बाद प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका ने दुमका के व्यापारियों की तरफ से १७५१ रु० की थैली भेंट की।

रात को जिलेभर के मित्रों की फिरसे बैठक हुई और आगे के लिए व्यूह-रचना की गयी। मोतीबाबू की तपस्या इस जिले का महान् आधार है। तन, मन, प्राण से वे आन्दोलन में लगे हैं और जरा भी चैन नहीं लेते। इस जिले का बड़ा सौभाग्य है कि श्री विनोदाबाबू जैसी हस्ती का ग्रामदान में योगदान मिल रहा है। इन दोनों की वजह से एक नयी स्फूर्ति का संचार हुआ है। हमें यकीन है कि संथाल-परगना पूरा जिला ग्रामदान में आयेगा और सारा जिला देव-जिला बनेगा। ●

सज्जनता को चुनौती : १० :

"गाँव एक बनेगा तो उसकी ताकत बनेगी और शोषण से उसे मुक्ति मिलेगी। सरकार इस शोषण से आपको निकालने में असमर्थ रही है। यह आपको खुद करना होगा, जिसके लिए ग्रामदान का कार्यक्रम है। या फिर बगावत हो सकती है, अगर यही भगवान् को मजूर हो। जैसा कि चीन मे, रूस में हुआ, यहाँ भी कत्लेआम होगा और छोटे लोग बडो का सफाया करेंगे। मुझे उससे दु ख होगा, लेकिन आज की जो स्थिति है, उसकी अपेक्षा कम होगा। आज जो चल रहा है, वह स्टेटस्को (जैसे के तैसे) मैं पसद नहीं करता। नीचेवाले सतत दबाये जा रहे हैं और उनका शोषण हो रहा है। उनके साथ यह जो कायम की हिंसा चली आ रही है, वह बरदाश्त के बाहर है। एक सैलाब आयेगा और खूनी क्रान्ति मे सबको लपेट लेगा। इसका दु ख तो बाबा को होगा, उसे देखने के लिए वह जीवित नहा रहेगा। अहिंसक ढग से क्रान्ति हो, इसके लिए अपनी जान दे देगा। लेकिन आज की हालत देखते हुए उसे अति दु ख नहीं होगा। इसलिए हम कहना चाहते है कि गाँव के लोगों को प्रेम से परिवार बनाकर रहना चाहिए।"

कोसी-क्षेत्र की यात्रा के दौरान म सुपौल की नगरी में शाम की सार्वजनिक सभा में बाबा ने ३० अक्तूबर को ये उद्गार प्रकट किये। इससे उनके अन्दर जलनेवाली आग और उनकी वेदना का कुछ अदाज मिलता है। आज हम अधिकाश डरे हुए हैं और हिम्मत के साथ कदम उठाने में सकोच करते हैं। बाबा की यह तूफान-यात्रा हमारे

पुरुषार्थ और चेतना को जगाने के लिए आखिरी चीज है। अगर अब भी हम नहीं चेते, तो फिर जो न हो जाय सो थोड़ा है।

बिहार में भागलपुर का जिला बहुत प्रसिद्ध है। सन् '५४ तक यह हिमालय की तराई से लेकर गंगा के दक्षिण तक लम्बा फैला चला गया था। फिर इसके दो भाग हो गये। उत्तरी हिस्सा सहरसा जिला हो गया और बाकी भागलपुर। दोनों जिलों में अक्तूबर-नवम्बर में बाबा की आठ दिन यात्रा चली। संथाल परगने के सरैया पड़ाव के बाद १८ अक्तूबर को बाँका में पड़ाव था। यह भागलपुर जिले के सदर सब-डिवीजन में है।

मार्क्स का चैलेंज

८॥ बजे बाबा वहाँ पहुँचे। लगभग पौन घंटे तक प्रवचन दिया और सांगोपांग सारे विषय रखे। उन्होंने कहा: "अब भ्रम-निरसन हो चुका है और जनतान्त्रिक समाजवाद के लिए ग्रामदान से बढ़कर मार्ग नहीं है। अगर इसे नहीं अपनाते, तो आप खूनी क्रान्ति के लिए आवाहन देते हैं।' "पिछले १८ सालों में यह स्पष्ट हो गया है कि दिल्ली के आधार पर देश टिक नहीं सकता। दिल्ली तो बिल्ली है। देहात-देहात जाकर ग्राम-स्वराज्य स्थापित करना होगा। तभी पैदावार बढ़ेगी। अगर केवल बोलने से बढ सकती, तो १८ साल में कितनी ही बढ जाती। मजदूरों की उपेक्षा करके भारत की पैदावार नहीं बढ़ सकती। हमें यह खूब समझ लेना होगा कि चीन का हमला बाहर से नहीं, अन्दर से है। आज केरल, बंगाल और आन्ध्र के कुछ हिस्सों में इसका असर है। जहाँ-जहाँ भूख है, वहाँ-वहाँ साम्यवाद जोर मारता है। इसलिए गरीबी दूर करनी ही होगी। हमारा यह काम नहीं कि गरीबों की सेवा करते रहें और गरीबी कायम रखें। गरीबी मिटानी होगी या कम-से-कम जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हर आदमी के पास पहुँचने की व्यवस्था करनी होगी। कायम के लिए गरीबी रखें और कुछ दान-धर्म करते रहेंगे, यह नहीं चलेगा।

इसके खिलाफ महामुनि मार्क्स ने चैलेंज पेश किया है। इस जमाने में उत्तम चिंतन करनेवालों में दो मनीषी हो गये हैं : एक मार्क्स और दूसरे टाल्स्टाय। एक की प्रक्रिया मत्सर की है, तो दूसरे की करुणा की। हमें दिखलाना होगा कि करुणा और प्रेम के रास्ते से गरीबी मिटायी जा सकती है और उसीके लिए यह ग्रामदान है।"

भागलपुर जिले में भूदान का काम अच्छा हुआ था। लेकिन फिर कुछ सुस्ती आ गयी और लगता था कि ग्रामदान की दृष्टि से शायद यह पिछड़ा रहे। सौभाग्य से यहाँ के नवयुवकों में स्फूर्ति आयी और वे लग गये। उनके केन्द्र हैं प्रोफेसर रामजी सिंह, जो भागलपुर विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक हैं। युनिवर्सिटी में कुशलतापूर्वक वे अपना काम करते हैं और क्या शिक्षक, क्या छात्र, सभी के आदर के पात्र हैं। जितना समय भी बचा पाते हैं, वह सब-का-सब इस क्रान्ति में लगा रहे हैं। नतीजा यह है कि तरुणों की एक अच्छी सेना भागलपुर जिले में खड़ी हो गयी है और काम आगे बढ़ रहा है।"

वजनदार नेताओं से

दोपहर को बाँका की कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "हमने तो भगवान् की प्रेरणा से आन्दोलन शुरू कर दिया है। फिर उनकी प्रेरणा जिन-जिन पर होगी, वे इसे उठा लेंगे। मैं देख रहा हूँ कि बिहार में जो नेता हैं, सब बहुत वजनदार हैं। मेरा खयाल है कि इनको दो-दो महीने जसिडीह के प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र में रहना चाहिए। इतने वजन को शरीर पर हरदम रखने से प्राण शक्ति कुंठित होती है। कुली के सिर पर बोझ चंद मिनट के लिए होता है, लेकिन इनकी छाती पर तो चौबीसों घंटे यह रहता है। फिर शरीर का असर चित्त पर पड़ता है। जिनका वजन ज्यादा है, उन्हें दीर्घ-जीवन भी प्राप्त नहीं होता। उपचार करके, फाका करके वजन घटा लिया जाय तो स्फूर्ति आयेगी।"

शाम की आम सभा के समय बूँदा-बाँदी हो रही थी। डाक बंगले के

बरामदे और मैदान में लोग ठसाठस भरे थे। चार बजे जब बाबा अपने कमरे से सभा के लिए बाहर निकले, तो बरामदे के लोगों को खुले मैदान में जाने को कहा और खड़े-खड़े संक्षेप में प्रवचन दिया। उन्होंने समझाया: "शहर माने सौ घर हों तो दो सौ परिवार। गाँव माने सौ घर तो सौ परिवार। लेकिन ग्रामदान का मतलब है, सौ घर तो एक परिवार। यह बात आप जगह-जगह समझाइये और भागलपुर को ग्रामदानी जिला बनाइये।"

बाबा के पुराने मित्र और भागलपुर जिला कांग्रेस-कमेटी के मंत्री श्री सियाराम बाबू बाबा से मिले और उन्होंने ग्रामदान-आन्दोलन में लगने का वचन दिया। बिहार के स्टेट ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर श्री राजेन्द्र नारायण सिंह भी, जो इसी जिले के रहनेवाले हैं, मिलने आये और कहा कि "यथासंभव मैं योगदान करूँगा।"

भागलपुर नगर में १९ ता० को सबेरे सवा आठ बजे बाबा पहुँचे। निवास की व्यवस्था खादी-ग्रामोद्योग संघ के लक्ष्मीनारायण-भवन में की गयी। वहाँ पहुँचने पर बाबा ने पाँच मिनट की मौन प्रार्थना करायी। फिर उसके बाद उठ गये।

आज बाबा से मिलने के लिए डॉ० सुशीला नायर दिल्ली से आयी थीं और श्री नारायण देसाई काशी से। ११ बजे भागलपुर के श्री रामजी-भाई पाँच प्रमुख नेताओं के साथ—श्री भगवत झा आजाद एम० पी०, श्री जोगेश्वर मंडल, अध्यक्ष जिला बोर्ड, श्री कीर्तिनारायण सिंह, अध्यक्ष जिला कांग्रेस कमेटी, श्री राघवेन्द्र नारायण सिंह और श्री सियाराम शरण सिंह—बाबा के पास पहुँचे और कहा कि "अगर ये पाँचों थोड़ी दिल-चस्पी लें, तो जिले में काम बहुत बढ़ सकता है।" बाबा ने कहा: "जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मैं किसी व्यक्ति-विशेष को कोई निर्देश नहीं दे सकता। मैं तो नर-रूप नारायण का उपासक हूँ। परमेश्वर को साक्षी रखकर आम जनता से जो कहना होता है, कहता हूँ। व्यक्तिगत कोई बात किसीको सुझाना हो, तो वह अन्तर्यामी कह सकता है। या

यह वह कर सकता है, जिसका चिर परिचय हो, वैयक्तिक मित्रता (पर्सनल फ्रैंडशिप) हो। मेरी कुल दुनिया के साथ अवैयक्तिक मित्रता (इम्पर्सनल फ्रैंडशिप) है। दुनिया में एक भी व्यक्ति नहीं, जिसके विषय में मैं कह सकूँ कि वह मेरा व्यक्तिगत मित्र है या मेरा दुश्मन। सबके लिए मैं आदर रखता हूँ और चाहता हूँ कि हरएक मनुष्य अपनी प्रेरणा के अनुसार काम करे।

"इस आन्दोलन में जब किसीको समय देने की बात आती है, तो सवाल उठता है कि वह दूसरे काम में लगा है। कोई कारगर मनुष्य हो और खाली या व्यर्थ भी हो, यह कैसे बन सकता है। अगर समर्थ है तो बेकार नहीं होगा किसी न किसी काम में लगा होगा। और अगर बेकार होगा तो समर्थ नहीं होगा। आप समर्थों में से हैं और अपने अपने काम में लगे हैं। आपको तौलकर देखना होगा कि अपने कामों के साथ इसे भी समय दे सकते हैं या छोड़ दे सकते हैं। या थोड़ा समय, दो महीने का दे सकते हैं।"

देश किसे सौंप रहे हैं ?

आगे चलकर बाबा ने कहा कि "आपको सोचना होगा कि अपने बाद आप जिनका गांधीजी के साथ कुछ भी सीधा सम्बन्ध रहा है, किसके हाथ काम अपना सौंपनेवाले हैं। किसी तरह मिनिस्ट्री बनी रहे, यह सवाल नहीं है। दूसरे लोग ज्यादा लायक नहीं तो नालायकों में से चुन लेंगे, दूसरे नालायकों से कम नालायक समझकर। लेकिन यह सवाल आपके सामने है ही कि अपने जाने के बाद जिनके हाथ में आप जनता को सौंपें, उन्हें लोगों का आदर प्राप्त हो, उनका विश्वास हासिल हो, जनता उन्हें मानती हो। आज साम्यवाद और सम्प्रदायवाद बढ़ रहे हैं। दूसरी तरफ गरीबी बढ़ रही है। ऐसी हालत में भारत के नये लोग किधर झुकेंगे ? ओल्ड गार्ड पर जिम्मेदारी है कि जितना हो सके करते जायँ। इसलिए सवाल यह है कि आगे भारत को हम किसके हाथ

में छोड़कर जाते हैं ? इधर से विज्ञान का तकाजा है, उधर से मृत्यु का। इसलिए तीव्रता के साथ सोचना चाहिए।···अगर आप इतना ही स्वीकार करें कि ग्रामदान का विचार हम पसन्द करते हैं और जितना कर सकते हैं उसके लिए करेंगे, तो मेरे लिए वही बस है। अगर समझने के लिए कुछ बाकी हो, तो मैं समझाने के लिए तैयार हूँ। मैं सुझाना चाहता हूँ कि अगर कांग्रेस यह कार्यक्रम उठा लेती है, तो उसकी मशिनरी जो ढीली पड़ी हुई है, वह मजबूत हो जायगी।"

बाबा लगभग चालीस मिनट बोले। उसके बाद श्री जगेश्वर बाबू ने कहा कि "आपकी जो अपेक्षा है, वह पूरी होगी।" बाबा बोले कि "मेरे लिए इतना बस है। फिर आपको स्थूल रूप से पैमाना तय करना हो तो अलग से तय कर सकते हैं।"

शराब की आमदनी का चसका

दोपहर को दो बजे कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "सरकार को शराब से ज्यादा चस्का शराब की आमदनी का लगा है। वह बहुत खतरनाक चीज है। हमें भारत की इच्छा-शक्ति जगानी है।"

तीन बजे भागलपुर विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर और रजिस्ट्रार बाबा से मिलने आये। उन्होंने पूछा कि "हम इस आन्दोलन के लिए क्या कर सकते हैं ?" बाबा ने कहा : "बीस पीछे एक के हिसाब से ग्रामदान के काम के लिए शिक्षक दीजिये। उनका भार दूसरे शिक्षक आपस में मिलकर उठायें। अगर इतना हो जाता है, तो उसका असर आपके विश्वविद्यालय पर पड़ेगा और आन्दोलन से आपका सीधा नाता जुड़ जायगा।"

बाबा ने पूछा : "मेरी माँग भारी तो नहीं है।"

वाइसचांसलर ने जवाब दिया : "है भी, और नहीं भी।"

बाबा ने कहा : "बीसवाँ हिस्सा देना भारी हो, तो कुछ कम भी कर सकते हैं, पचीसवाँ दीजिये। मैं नहीं चाहता कि कोई भार पड़े। हमारा

यह प्रस्ताव आप अपनी कमेटी आदि में रखियेगा और विचार कीजियेगा।"

माओ की धमकियाँ

शाम की सभा में पाँच ग्रामदान भेंट किये गये, जो बाँका से भागलपुर आते हुए रास्ते में मिले थे। श्री राघवेन्द्रबाबू ने भागलपुर के नागरिकों की तरफ से ५,००१) की थैली भेंट की। बाबा ने अपने प्रवचन में जनशक्ति द्वारा नगर स्वराज्य और ग्राम-स्वराज्य स्थापित करने की अपील की। आपने कहा "नगर पालिका पक्षमुक्त होनी चाहिए और उसका काम सर्वसम्मति से चलना चाहिए। भाषावार प्रान्त जब देश में बने हैं, तो पंजाबी को क्यों वंचित रखा जाय?" युद्ध की निरर्थकता बतलाते हुए बाबा ने कहा कि "लडाइ से ये मसले हल नहीं हो सकते। आपस की बातचीत या समझौते से ही दुनिया के मसले हल होने चाहिए और हल होंगे, ऐसा सभी महसूस करने लगे हैं। चीन भी अन्दर ही अन्दर यह समझता है, लेकिन ऊपर से दूसरी भाषा बोलता है। माओ धमकाता है। बोलता भी खूब है। कहता है कि अमेरिका पेपर टाइगर (कागजी बाघ) है। ऐसा बोलता तो है, लेकिन डरपोक है। वरना ताइवान पर क्यों नहीं हमला कर देता? वह जानता है कि उस बाघ को पंजे और दाँत हैं। आज जो संकुचित भावनाएँ हमारे अन्दर हैं, उन पर सोचना होगा, तभी शंका का समाधान हो सकेगा।"

गाँव का परिवार बने

भागलपुर की सभा से हम लोग सीधे सुल्तानगंज चले गये। पौने छह बजे बाबा वहाँ पहुँचे। खादी-ग्रामोद्योग संघ के केन्द्र में निवास था। पहुँचते ही विशाल सभा हुई। उसमें दो ग्रामदान दिये गये और १५२८) की थैली। बाबा ने अपने प्रवचन में कहा कि "ग्रामदान से गाँवों का परिवार बनता है। जो प्रेम घर के अन्दर है, वह अगर घर के अन्दर ही सीमित रहता है, तो सडकर कामवासना का रूप लेता है। अगर वह

घर के बाहर फैले, तो भक्ति का रूप लेगा। इसलिए गाँवों को परिवार बनाना चाहिए। उससे सभी सुखी होंगे और गाँव भी मजबूत होगा।"

अगले दिन सबेरे ५॥ बजे बाबा जलपान कर रहे थे, तो श्री शिवरामकृष्णन् उनसे मिले। श्री शिवरामभाई तमिलनाड के पुराने और अनुभवी रचनात्मक सेवक हैं। मगनवाड़ी में लगभग १० वर्ष स्वर्गीय जे० सी० कुमारप्पा की छत्रछाया में रहकर काम किया है। आजकल कुमारप्पा स्मारक-कोष के मंत्री हैं और मद्रास में सर्वोदय प्रेस सर्विस का काम भी चला रहे हैं। शिवरामभाई ने बाबा से मद्रास की पत्र-पत्रिकाओं के लिए संदेश माँगा। बाबा ने कहा कि "मेरी यात्रा ही संदेश है।" श्री शिवरामभाई ने बताया कि "तमिलनाड में जो पहला ग्रामदान बायलूर का मिला था, उसके आसपास के क्षेत्र को ग्रामदानी क्षेत्र बनाने का विचार है।"

मुँगेर जिले से माँग

सबेरे ६ बजे बाबा सुल्तानगंज से निकले। घाट पर आकर जहाज में बैठे और फिर गंगा पार की। करीब पौन घंटा लगा। इसके बाद थोड़ी दूर तक मुँगेर जिला पड़ता था, वहाँ 'पर्वत्ता' नाम के गाँव में जिला-संयोजक श्री गोखलेजी चौधरी ने आम सभा रखवायी थी। उसमें एक ग्रामदान दिया गया और १०४१) की थैली। बाबा ने कहा कि "मुँगेर की पहचान ग्रामदान से है। जब तक पूरा जिला ग्रामदान में नहीं आता, तब तक हम मुँगेर को नहीं पहचानते।"

९। बजे बाबा नौगछिया पहुँचे। बारिश हो रही थी। स्वागत सभा नहीं हो सकी। ११ बजे मौलाना अबुल लैस (सदर, जमायत इस्लामी, दिल्ली) बाबा से मिले। सर्वोदय-विचार और ग्रामदान-आन्दोलन के बारे में चर्चा करने आये थे। इनके करीब २५ सवाल थे। बाबा ने कहा कि "इनमें से ज्यादातर सवालों पर हम अपने विचार प्रकट कर चुके हैं और कुछ जानकारी की चीजें हैं। इसलिए आप इनसे (मुझसे) बात कर लीजिये और फिर अगर कुछ बाकी रहे, तो हमसे ४ बजे मिल सकते हैं।"

दाता की सम्मति से जमीन बँटे

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा मे एक भाई ने पूछा कि "भूदान मे मिली जमीन की बेदखलियाँ ग्रामदान के लिए चुनौती सिद्ध हो रही हैं।" बाबा ने कहा : "यह सब हमारी गल्ती है, ऐसा हम मानते हैं। बहुत बड़े पैमाने पर बिहार में जमीन मिली। उसके बँटवारे का अधिकार उसी कमेटी को दिया गया। उद्देश्य यह था कि वह ठीक से बाँटेगी, लेकिन वह नहीं हो सका। दाता की सम्मति से जमीन बँटती, तो यह गल्ती न होती। लेकिन ग्रामदान मे इन सब दोषों का परिहार है, क्योंकि ग्रामदान में जो ग्रामसभा बनेगी, वह सबकी एक राय से काम करेगी और जमीन आदि का बँटवारा भी समाधानकारक होगा। जहाँ तक बेदखली की बात है, उसके खिलाफ सत्याग्रह भी किया जा सकता है।"

आज श्री गोविंदराव शिंदे की चिट्ठी आयी कि महाराष्ट्र के ठाणा जिला मे २२५ ग्रामदान मिले हैं। बाबा ने उसका हवाला देते हुए कहा कि "सारे भारत में ग्रामदान की प्रेरणा काम कर रही है। बिहार की पचायत परिषदों को यह काम उठा लेना चाहिए।"

मौलाना से मुलाकात

४ बजे मौलाना अबुल लैस साहब की मुलाकात हुई। उन्होंने पूछा कि "सर्वोदय का बुनियादी विचार क्या है?" बाबा ने जवाब दिया : "तीन : १. सत्य यानी हक, २. प्रेम यानी मुहब्बत और ३. करुणा यानी रहम।" मौलाना साहब का एक सवाल यह भी था कि "हम आपकी तहरीक मे क्या मदद कर सकते है?" बाबा ने कहा : "एक ही बात करनी है, वह यह कि इस तहरीक को आपकी बजाय मेरी समझ। इतना कर लेने पर आपको खुद वाजे हो जायगा कि आपको क्या करना है।" मौलाना साहब को बाबा से मिलकर बडी खुशी हुई और उन्होने बाद मे मुझसे कहा कि "बाबाजी बहुत-सी ऐसी बाते फरमाते है, जो हमारे दिल की आवाज है।"

नये जमाने का नया ब्रह्म

शाम की आम सभा में २६ ग्रामदान दिये गये और ५०१) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "हर जमाने का अपना ब्रह्म होता है। पराधीन काल में 'स्वराज्य' अपना ब्रह्म था। स्वराज्य के बाद अब 'सर्वोदय' हमारा ब्रह्म है। हमेशा नया ध्येय रखकर काम करना चाहिए। इसके बाद नया ब्रह्म कौनसा होगा ? 'विश्व-शान्ति और विश्व-राज्य की स्थापना।' इस तरह एक के बाद एक नये ब्रह्म सामने आते जाते हैं और पुरुषार्थ के लिए प्रेरणा मिलती जाती है। नया ब्रह्म, नयी पीढ़ी, नये उत्साह, इस तरह समाज दिन-दिन आगे बढ़ता जाता है।"

यथाशक्ति प्रयत्न करें

अन्त में बाबा ने कहा कि "आज एक भाई ने हमें आश्वासन दिया है कि भागलपुर जिले में हर गाँव में जाकर दस-दस पीले साफे (शांति-सैनिक) तैयार करेंगे। अगर आप कोशिश करें, तो यह काम जरूर होगा। यथाशक्ति प्रयत्न करते हैं, तो सफलता निश्चय मिलती है। पाणिनि के व्याकरण के अनुसार शक्ति की हद टूटने तक, आखिरी शक्ति टूटने के पहले तक काम करने को 'यथाशक्ति' काम करना कहते हैं। यथाशक्ति माने शक्ति का अतिक्रमण न हो, तब तक काम करना। कोई चल सकता है २० मील और चला २ फर्लांङ्ग या २ मील, तो वह यथाशक्ति नहीं कहा जायगा। २० मील चल सकता है तो वह १९ मील चला, तो कहा जायगा कि यथाशक्ति चला। इसी तरह शक्ति के न टूटने तक प्रयत्न करना यथाशक्ति माना जायगा। हम आशा करते हैं कि आप लोग यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे।"

सहर्षा में डबल इन्जन

शाम को श्री वैद्यनाथबाबू बाबा से मिले। २१ तारीख से २७ तक पूर्णिया जिले तक यात्रा चली। फिर २८ अक्तूबर को सबेरे बाबा वन-

मनखी से निकलकर ६४ मील की यात्रा तय करने के बाद साढ़े नौ बजे कर्जन बाजार पहुँचे। रास्ते में करीब हर ५ मील पर स्वागत के लिए फाटक आदि बने थे। इसके अलावा भी बीच-बीच में भीड जमा हो जाती थी। अब सहर्षा जिले में ४ दिन का कार्यक्रम था। बिहार प्रदेश के काग्रेस के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मिश्र और बिहार खादी-ग्रामोद्योग के अध्यक्ष श्री गोपाल झा शास्त्री ने बाबा का स्वागत किया। दोनों सहर्षा जिले के निवासी हैं। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट तथा अन्य अधिकारी भी मौजूद थे। बाबा ने कहा कि "यहाँ तो डबल इजन है—मिश्रजी और शास्त्री-जी। हम आशा करते हैं कि यह जिला न० १ मे आयेगा। सहर्षा मे हर्ष के साथ काम मे लग जाइये तो उत्तम परिणाम आयेगे।"

दोपहर को श्री खूबलाल महतो बाबा से मिले। ये बिहार विधान-सभा के सदस्य हैं। सन् १९२३ मे इन्होंने नागपुर झंडा-सत्याग्रह में भाग लिया था और अकोला-जेल मे बाबा के साथ रहे। बाबा ने उनको देख-कर अन्य मित्रों से कहा कि "यह भाई सन् १९२३ मे २० साल की उम्र मे हमारे साथ जेल में थे। बिहार का २० साल का लडका सत्याग्रह करता है नागपुर में। उस जमाने के नौजवानो को इतनी प्रेरणा थी। वहाँ जेल मे सख्त मेहनत का काम मिला था और हम लोग गिट्टी फोडा करते थे।"

ग्रामाय दानम्

कार्यकर्ताओ की सभा मे बाबा ने कहा कि "ग्रामदान का अर्थ है 'ग्रामाय दानम्।' यानी गाँव के लिए दान। जैसे टी-कप और गोल्ड-कप। आप यह समझ लीजिये कि ग्रामदान कोई चटनी नहीं है। भोजन में खाने की मुख्य चीजे दूसरी रहती हैं और स्वाद के लिए रहती है चटनी। ग्रामदान का उद्देश्य है कि सरकार का रंग बदले और उसकी योजना ग्रामदानी बने। हर गॉव ग्रामदान में आ जाय। आप बाबा की जेल कबूल कीजिये और सालभर घर के कामकाज से अलग रहकर ग्रामदान में लग जाइये।"

अफीममुक्त चीन और शराबयुक्त भारत

शाम की आम सभा में श्री राजेन्द्र मिश्र ने २००१ रुपये की थैली भेंट की। जिला सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री टेकनारायण ने आठ ग्रामदान ऐलान किये। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "पिछले १७-१८ साल में कई अरब रुपया खर्च हुआ और फिर भी गाँवों की हालत ज्यादा सुधरी नहीं। देश में पैदावार बढ़ी है शक्कर की, सिगरेट की, शराब की और अन्य ऐसी चीजों की, लेकिन प्रतिव्यक्ति दूध का उत्पादन घटा है। अनाज और तरकारी घटी है। शराब की तो नदियाँ बहती हैं—क्या दिल्ली में और क्या पटना में। ५० साल पहले चीन में सब लोग अफीम का व्यसन करते थे, लेकिन वहाँ एक नेता पैदा हुए डॉक्टर सनयातसेन, जिन्होंने कहा कि अफीम पटक दो। आज चीन अफीम-मुक्त है। सवाल यह है कि क्या आज अफीम-मुक्त चीन का मुकाबला शराब-युक्त भारत कर सकता है? सरकार को शराब की आमदनी का चसका लग गया है। ऐसी हालत में देश कैसे आगे बढ़ सकता है? देश में शराब बढ़ रही है, सिनेमा बढ़ रहा है, बीड़ी, सिगरेट बढ़ रहे हैं, अश्लील साहित्य बढ़ रहा है। कांग्रेसवाले अपनी ही सरकार के होते हुए इनसे सबको बचाने में लाचारी महसूस करते हैं।

जय किसान कब और कैसे?

"१८ साल तक 'रिपवान विन्किल' की तरह सरकार सोयी हुई थी और अब जागी है। अब हमारे प्रधानमंत्री कह रहे हैं, 'जय किसान!' बड़ी कृपा है कि १८ साल बाद भारत का किसान याद आया। अभी तक था 'जय कारखाना, हार किसान!' अब सूझती है, 'जय किसान!' क्यों सूझी? अमेरिका ने नाक दबायी। नाक खुलने पर मुँह खुलता है। अब शंका आयी है कि लड़ाई की सूरत में अनाज मँगाना मुश्किल हो जायगा और वह ठीक भी नहीं है। बड़े-बड़े कारखाने और बड़े-बड़े बाँध बनाये गये, लेकिन कुँए तो बने ही नहीं। हर खेत में अगर

१० एकड़ जमीन के पीछे एक कुँआ बनता, तो आज सारे भारत में खाने का इन्तजाम हो जाता।

"बेचारा किसान आज कैसे टिकेगा? उसके खिलाफ कितनी ही ताकतें खड़ी हैं—साहूकार से उसे मुकाबला करना है। व्यापारी, वकील, पुलिस, सरकारी अधिकारी–अगर वह इन सबसे अलग-अलग मुकाबला करेगा तो कैसे टिकेगा। इसलिए किसान एक होंगे, तभी उनकी जय होगी। इसीलिए यह ग्रामदान है।"

वानप्रस्थ लेकर निकल पड़ें

अन्त में बाबा ने कहा कि "५० साल की ऊपर उम्रवाले जो चौथेपन में आ गये हैं, वे घर का झगड़ा छोड़कर अगर राजनीति का झमेला उठायें तो पके बाल और दिमाग दोनों सड़ जायँगे। इसलिए वे घर और राजनीति दोनों छोड़कर निकल पड़ें। सहर्षा में एक हजार सेवक मिल जायँ तो यहाँ क्रान्ति हो जायगी। हमारी भूदान यात्रा के दिनों में बिहार में लोग कहने लगे थे कि बाबा, भूदान लीजिये। इसी तरह अब भी यहाँ कहेंगे कि ग्रामदान लीजिये।"

अगले दिन हम लोग सहर्षा पहुँचे। यह जिले का मुख्य स्थान है। यह जिला सन् १९५४ में ही बना है। पहले भागलपुर में शामिल था। यह कोसी नदी का क्षेत्र है। उसमें नहर आदि निकालकर अब यहाँ सिंचाई का बड़ा सुन्दर प्रबन्ध किया जा रहा है।

सरकार और जन-सहयोग

सहर्षा की शाम की सभा में ७ ग्रामदान और ११०० रुपये की थैली दी गयी। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "देश में जो प्लानिंग १४-१५ साल से चली, उससे कुछ लोगों के पास ज्यादा पैसा हो गया और उनके दिमाग खोखले हो गये। दूसरी तरफ जो गरीब लोग हैं, उनके पास कुछ भी नहीं। जीवन की आवश्यकता तक पूरी नहीं कर पाते। अब कहते हैं कि अनाज की उपज बढ़ानी है। खैर, देर में ही

सही। तो, अब जल्दी करनी चाहिए। अन्न, वस्त्र और मकान इनमें हर गाँव को स्वावलम्बी होना जरूरी है। इसीके लिए हमने ग्रामदान सुझाया है।'''सरकार कहती है कि 'जनता का सहयोग नहीं मिलता' पर क्या सहयोग मिले? लोगों को तो आपने बैल समझ रखा है। उनको योजना बनाने का अधिकार भी नहीं है। योजना बनायेगी दिल्ली और थोड़ा-बहुत पटना। दिल्लीवाले के पास डेढ़ अकल है और पटनावाले के पास एक अकल। बाकी जनता को बैल मानते हैं। जब तक यह चलता रहेगा, सहयोग की बात करना बेकार है। पर (फिर बाबा ने ताली बजाकर दिखायी) दोनों हाथ बराबर रखने से मामूली ताली बजती है। अगर दाहिना हाथ (जनता) ऊपर हो और बाँयाँ हाथ (सरकार) नीचे, तो बहुत अच्छी बजती है। अगर बाँयाँ हाथ ऊपर और दाहिना नीचे तो धीमी बजती है। लेकिन चौदह साल से क्या चल रहा है?'''बाबा ने बाँयाँ हाथ हिलाकर दिखाया, ताली बजती ही नहीं। यह देखकर सब लोग जोर से हँस पड़े। अंत में बाबा ने आह्वान किया कि "जितनी जल्दी ग्रामदान के काम को पूरा करेंगे, उतनी जल्दी देश मजबूत बनेगा।"

खंडन मिश्र ज्यादा मिलते हैं

३० अक्तूबर को सवेरे पौने आठ बजे बाबा सुपौल पहुँचे। साथ में श्री राजेंद्र मिश्र थे। रास्ते में उन्होंने बाबा को बताया कि "श्री मंडन मिश्र (जिनका आदिगुरु शंकराचार्य के साथ शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है) का स्थान नजदीक में ही है।" उसका हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि "उस शास्त्रार्थ में निर्णय श्री मंडन की धर्मपत्नी के ऊपर छोड़ा गया था। यह तय था कि अगर संन्यास ऊँचा ठहराया जाय, तो मंडन मिश्र संन्यास ले लें और गृहस्थ-आश्रम ऊँचा साबित हो, तो शंकराचार्य गृहस्थ बनेंगे। उस विदुषी ने सन्यास को ऊँचा ठहराया। तदनुसार श्री मंडन मिश्र ने संन्यास ले लिया और शंकराचार्य के शिष्य हो गये। उन्होंने उनको दक्षिण में शृंगेरी भेज दिया। तब से वह मठ आज तक चला आता है।" इस प्रसंग का हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि

"आजकल अपने देश में मडन मिश्र नहीं, खडन मिश्र ज्यादा मिलते हैं। एक-दूसरे की नीका करगे और रचनात्मक काम कुछ नहीं। या तो बाहर से लडाई हो, नहीं तो आपस में लड़गे।"

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "मैं अपनी अलग जमात बनाना नहीं चाहता और न उससे कोई लाभ ही होगा। जो भी मेरे सामने है, वह मेरा कार्यकर्ता है। मैं अलग से कोई 'केडर' या समूह नहीं खडा करूँगा। इस आन्दोलन का काम तो पार्ट टाइम वर्कर के द्वारा ही होगा। दफ्तर में पत्र व्यवहार और हिसाब किताब के लिए कुछ स्थायी कार्यकर्ता रखे जा सकते हैं।"

शाम की सभा में श्री लहटन चौधरी, एम० पी० ने २१००) की थैली भेंट की। चौधरीजी सन् '५३ ' ५४ में बाबा की सहर्षा जिले की यात्रा म साथ रहे थे और लालटेन लेकर रास्ता दिखाते थे। तब से उनका प्रेम का नाम लालटेन चौधरी पड गया है। सभा में ७ ग्रामदान दिये गये।

बेदखली एकदम बन्द हो

अपने प्रवचन म बाबा ने कहा कि "यहाँ दरभगा के महाराजाधिराज ने भूदान में जमीन दी थी। उसमें से बहुत सारी जमीन बँट गयी है। राजा दरभगा का महान् व्यक्तित्व था। उनके दिल में दया भी थी। वह प्रजा की सेवा करते थे। मैं उनकी गिनती बडौदा और मैसूर के राजाओं की कोटि म करता हूँ। उन्होंने जो दान दिया, वह बहुत सारा अच्छा दान था। हमें एक भाई ने सुनाया कि दरभगा के कर्मचारी पैसा लेकर भूमिवानों को वह जमीन बेच रहे हैं और भूदान के लोगों को बेदखल कर रहे हैं। अगर यह हो रहा है, तो मेरी समझ में नहीं आता कि यहाँ दो बड़े-बड़े इजन क्या कर रहे हैं! दोनों के रहते ऐसा होता है, तो बड़े आश्चर्य की बात है। उसका तुरन्त विरोध होना चाहिए। जिस जमीन का भूदान म बँटवारा हो चुका, उसका पट्टा बदलकर दूसरे को देना गैरकानूनी माना जायगा, खिलाफ कार्-

बाई समझा जायगा। उसके ऊपर कोर्ट में केस चल सकता है। प्रांतीय भूदान कमेटी को भी ध्यान देना चाहिए। यह ऐसी चीज है कि इस पर सत्याग्रह भी हो सकता है। मैं नहीं जानता, आपमें से कितने लोग जानते हैं कि हाल ही में मद्रास में इसी तरीके का एक सत्याग्रह चला था। सात-आठ सौ लोगों को सरकार ने जेल में डाल दिया। आखिर उनकी बात माननी पड़ी। यह सत्याग्रह मीनाक्षी-मंदिर की जमीन के बारे में था। भूमिहीनों के बजाय बड़े-बड़े लोगों को जमीन दी जा रही थी। बीच के एजेंट्स को, दलालों को दे दी जाती थी। यह बात मीनाक्षी-मंदिर की है, जो देश के बड़े-से-बड़े मन्दिरों में माना जाता है। वह मंदिर बड़ा विशाल है। उस मंदिर की जमीन के बारे में सत्याग्रह करना पड़ा। हमने आशीर्वाद दिया था। आखिर श्री कामराज बीच में पड़े। यहाँ भी वैसा सत्याग्रह हो सकता है। बेदखल करना बिलकुल गैर-कानूनी बात है। मुझे आश्चर्य है कि इतने दिनों तक इसे कैसे सहन किया गया? ये चीजें एकदम बन्द हो जानी चाहिए।

अब नहीं ठहरा जा सकता

"हमने बहुत राह देखी है। ज्यादा नहीं ठहरा जा सकता है। ग्राम-स्वराज्य की स्थापना और ग्रामदान जल्दी-से-जल्दी होना चाहिए। अब नन्दाजी कह रहे हैं कि मैं 'डिमुइल्युजन्ड सोशलिस्ट' हूँ, यानी समाजवादी हूँ और अब मेरा भ्रम-निरसन हो गया है। दूसरों ने, श्रीमानों ने, बड़े गाल्विों ने जिस तरह जमीन के मामले में किया, उससे उनका भ्रम दूर हो गया। वे कहते हैं कि भूमि-सुधार जल्दी करना होगा। उसके बिना उत्पादन नहीं बढ़ सकता। पर कब से यह चल रहा है? इस तरह कहने से क्या होगा? बाबा जो आपको दवा दे रहा है, वह कड़ुवी नहीं है, मीठी है। अक्सीर भी है। यह प्रेम का संदेश गाँव-गाँव में पहुँच जाय और गाँव एक हो जाय, तो सब बचेंगे।

"मैं पूछना चाहता हूँ कि यह काम करने को कौन कटिबद्ध है?

बिहार-सरकार ने आर्डिनेन्स जारी किया है, उससे पता चलता है कि वह मदद को उत्सुक है और ग्रामदान के लिए उसकी तीव्रता है। अभी कृष्णवल्लभबाबू मिले थे। वे बोले कि 'आर्डिनेन्स के अनुसार नियम बनाने में जल्दी करनी होगी, ताकि मदद जल्दी कर सकें।' उन्होंने यह उत्सुकता दिखायी। तो मैं जरा पूछ लूँ कि जो लोग इस काम को समय देने के लिए तैयार हैं, वे हाथ उठायें। (बहुत से हाथ उठ गये)

"तो ठीक है। काफी लोगों ने हाथ उठाये। इनमें से कुछ तो काम जरूर करेंगे। कुछ हाथ गाँव के लोगों ने भी उठाये हैं। इसका अर्थ यह है कि उनके ग्राम में आप जायँगे, तो वे ग्रामदान करने को राजी हैं। आपका यह जिला तो छोटा-सा है। करीब डेढ हजार गाँव है। दरभंगा इससे तिगुना होगा। इसलिए यहाँ का ग्रामदान होना आसान है। अब काम में लग जाइये। एक दिन भी बेकार नहीं जाना चाहिए। जो काम सातत्य के साथ होता है, वही प्रभावशाली होता है। लालटेनबाबू (श्री लहटन चौधरी, एम० पी०) यहाँ हैं। बाबा की यात्रा में लालटेन लेकर रोज खड़े हो जाते थे। तो हम आशा करते हैं कि सब लोग यहाँ काम में लगेंगे और अखंड काम चलेगा।"

उर्दूवालों को सुझाव

सहर्षा जिले का आखिरी पड़ाव मधेपुरा में था। सुपौल से मधेपुरा आते वक्त बाबा एक मदरसे में गये। वहाँ उनको सिपासनामा दिया गया। उसके लिए शुक्रिया अदा करते हुए बाबा ने कहा कि "उर्दू जबान एक अच्छी जबान है और भारत की अपनी जबान है, यहीं बनी है। आपसे मेरी सिफारिश है कि जो उर्दू साहित्य है, वह उर्दू लिपि में तो लिखा ही जाय, नागरी लिपि में भी उसका प्रचार हो, तब वह चीज फैलेगी और उर्दू का असर भी पड़ेगा।"

पौने आठ बजे बाबा पाँच मिनट के लिए मुहुआ नामक गाँव में ठहरे, जहाँ महेन्द्रभाई और उनके साथियों का आश्रम है। बाबा ने कहा

कि "इस जिले में १५०० गाँव हैं। अगर कार्यकर्ता निकल पड़ें, तो २५ ग्रामदान रोज प्राप्त करें तो सारा जिला दो महीने में ग्रामदान में आ सकता है।"

ग्रामदान से चेतन-संयोग

शाम की आम सभा में १५ ग्रामदान टेकनारायणभाई ने भेंट किये और १०७५) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "कोई भी काम तब होता है, जब जड़ और चेतन का संयोग इकट्ठा हो जाय। जड़-संयोग माने जमीन को पानी, खाद और बीज आदि अच्छा मिले। चेतन-संयोग का मतलब है, मालिक, मजदूर और महाजन के मेल और सहयोग से काम हो। मेरे सामने सवाल यह है कि चेतन-सहयोग के लिए क्या किया जाय? जड़-संयोग के लिए क्या करना, यह सोचना सरकार का काम है। मुझसे पूछते हैं कि ग्रामदान हो गया, लेकिन पानी न हो तो क्या होगा? यह बाबा को पूछना गलत है। बाबा चेतन को ज्यादा महत्त्व देता है, क्योंकि दोनों में वही प्रधान है। आखिर जड़ वस्तु को भी चालना चेतन से ही मिलेगी। मेरा फार्मूला है $च_2ज$, यानी दो हिस्से चेतन और एक हिस्सा जड़, जैसे H_2O यानी पानी। जड़-चेतन के संयोग से ही काम होगा। अक्सर पूछा जाता है कि ग्रामदान होने के बाद वहाँ कौन देखेगा? अगर हमारे कार्यकर्ता जड़-संग्रह में लग जायेंगे, तो वे जड़ साबित होंगे, बुद्धिहीनता का लक्षण होगा। हमारा काम तो चेतन-सहयोग करने का है, जो सरकार नहीं कर सकती। इसलिए ग्रामदान-प्राप्ति बड़ी-से-बड़ी तादाद में आपको करनी चाहिए और फिर आगे का काम दूसरे लोग देखेंगे।"

भागलपुर जिले का चौथा पड़ाव २ नवम्बर को थाना बिहपुर में था। वहाँ पहुँचने पर बाबा ने माँग की कि "पीला साफा हर सर के ऊपर दीखना चाहिए।" आपने कहा : "सफेद टोपी एक जमाने में त्याग

और साहस की निशानी थी, लेकिन आज वह लाइसेन्स और परमिट लेनेवाली बन गयी। "ग्रामदान तूफान का मतलब है कि ग्रामदान का मौसम आया है, एक के बाद दूसरे ग्राम का ग्रामदान होना चाहिए। भगवान् बुद्ध ने कहा है कि धर्म का काम तेज गति से चलना चाहिए। नहीं तो पाप का आक्रमण तुरन्त शुरू हो जाता है।"

सर्वोदय का दावा

दोपहर को कार्यकर्ता सभा मे एक प्रश्न के उत्तर मे बाबा ने बताया कि "पूँजीवाद थीसिस है, साम्यवाद एन्टी थीसिस है। थीसिस में स्टेटस को है यानी आज की स्थिति बनी रहे। साम्यवाद मे युगान्तर है, लेकिन हिंसा है। स्टेटस-को वाले अहिंसावादी अपने को कहते हैं और कुछ थोड़ा सुधार करेंगे। अहिंसक बन गये सुधारवादी और हिंसक बन गये क्रान्तिवादी। सर्वोदय सिन्थेसिस है—क्रान्तिवादी अहिंसक। यह दावा हमें सिद्ध करना है।"

गुण भी और संख्या भी

किसी भाई ने पूछा कि "आप इतनी बडी तादाद में ग्रामदान क्यों चाहते हैं? अगर सख्या के फेर में रहेंगे, तो गुण की हानि होगी।" बाबा ने कहा . "मैं एक सीधी-सादी सी बात पूछूँ कि आप लाखों की तादाद मे सैनिक क्यों खड़े करते हैं? क्या दो चार अच्छे सैनिकों से काम नहीं चलेगा? नेपोलियन बोनापार्ट जैसा एक सैनिक काफी नहीं है? अगर आप अपने लालबहादुरजी से पूछेंगे कि आपको वीरता चाहिए या बडी सख्या मे सैनिक चाहिए। तो वे कहेंगे कि मुझे बडी सख्या में सैनिक भी चाहिए और वीर भी चाहिए। गीता में कहा है •

'एकं साख्यं च योग च य. पश्यति स पश्यति।'

"साख्य यानी सख्या और योग यानी क्वालिटी। इसमे साख्य और योग का विरोध नहीं। कहीं ५० सज्जन बैठे हैं, तो क्या आप कहेंगे कि ५० का सज्जन से विरोध है और दुर्जनों के साथ विरोध नहीं है?

सज्जन अगर होंगे तो एक या दो। कितना डरते हैं आप! यह मैं नहीं मानता। यह विचार के विरुद्ध है। संख्या और गुण में विरोध मानना गलत है। गंगा आपके भागलपुर में है और कलकत्ते में गंगासागर है। यहाँ गंगा जितनी बड़ी है, उससे ज्यादा गंगासागर में है। तो क्या वह कम पवित्र है? जो गंगा का अनुभव है, वही ग्रामदान का है।

"संख्या और गुण में विरोध मानना बड़ा भारी भ्रम है। लेकिन यह भ्रम बड़े-बड़े लोगों को है। ये लोग संख्या से डरते हैं। मैं तो कहता हूँ कि सज्जनो! तुम्हें हिम्मत होनी चाहिए कि दुनिया के तीन सौ करोड़ लोगों को, सबको सज्जन बनायेंगे। यह नहीं कि तीन-चार सज्जन होंगे और बाकी सब दुर्जन। मेरी समझ में नहीं आता कि सज्जन हार क्यों खाते हैं! मानव जन्म मिला है तो अपने में न्यूनता या हीनता महसूस करना ठीक नहीं। यह मत डरो कि संख्या बढ़ेगी तो हम बिगड़ जायँगे। उम्मीद रखनी चाहिए कि सज्जनता लगातार बढ़ती जायगी और सारा समाज सात्त्विक बनेगा। अपने अन्दर से 'इन्फीरियारिटी कंप्लेक्स' (अपने को दुर्बल मानने की भावना) निकाल देना चाहिए।

"इसलिए बाबा कहता है कि हर गाँव का ग्रामदान होना चाहिए। लेकिन बाबा यह नहीं कहता कि झूठ बोलकर, मार-पीटकर या ठगकर या किसी तरह ग्रामदान हासिल करें। अगर बाबा यह कहता कि नशा सुँघाकर दान-पत्र पर दस्तखत करा लो, तब तो आपको कहने की गुंजाइश थी। लेकिन हम ग्रामदान प्रेम से माँगते हैं और कहते हैं कि देनेवाले समझ-बूझकर दें। जब लोग यह समझेंगे कि ग्रामदान से जीवन है, तो फिर करोड़ों की तादाद में ग्रामदान क्यों नहीं होंगे! लेकिन आप बिल्कुल हारे हुए लोग हैं, डिफीटिस्ट मेन्टेलिटी (पराजयवादी मनोवृत्ति) बना ली है और घबड़ा जाते हैं। यह हिन्दुस्तान की हारी हुई सज्जनता है। इसी कारण तो हिन्दुस्तान में सज्जनों का मेल सज्जनों से नहीं बैठता।

अलग अलग पथ हो गये हैं–यह शकरपथी, यह रामानुजपथी, यह कबीरपथी, यह नानकपथी। इनकी इनसे नहीं बनेगी, उसकी उसमे नहीं बनेगी! मालूम नहीं, फिर काहेके सज्जन कहलाते है।"

दान का प्रवाह् अखंड बहता रहे

शाम की सभा में प्रो० रामजीसिह ने ५१ ग्रामदान भेट किये और श्री मुखदेव चौधरी, एम० एल० ए० ने १००१) की थैली। बाबा ने अपने प्रवचन मे कहा कि "अन्न-उत्पादन के बारे मे बहुत अपील की जाती है। प्रधानमन्त्री ने हफ्ते मे एक जून खाना छोडने का अभी कहा है। लेकिन जिन्ह अभी भरपेट खाना मिलता ही नहा, वे अगर एक दफा छोडेंगे तो उनके हाथ से कैसे काम बनेगा? उत्पादन तभी बढेगा, जब मालिक और मजदूर में आपस का प्रेम हो। 'दान का प्रवाह अखण्ड चलना चाहिए। प्रकृति सुन्दर है, क्योकि उसमें सब देते रहते हैं। वैसे ही हम भी देंगे तो प्रकृति से भी ज्यादा सुन्दर बनगे। जोरो से लग जाइये और एक एक प्रखण्ड ग्रामदान में लाकर कुल जिला ग्रामदानी बनाइये। फिर ग्रामदान के आधार पर ग्राम स्वराज्य का भवन खडा किया जायगा।"

इस तरह चार दिन भागलपुर जिले मे और चार दिन सहर्षा जिले मे बाबा की यात्रा चली। इन दोनों जिलों में शक्ति कम ही थी, लेकिन प्रो० रामजीसिंह और भाई महेन्द्रजी अब योजनापूर्वक काम कर रहे है और आगे बडी तादाद मे ग्रामदान होंगे। सभी महसूस करते हैं कि ग्रामदान से हर तरह भला है। लेकिन थोडा डर है कि अगर सब ग्राम दान हो जायँगे तो क्या होगा। सचमुच ग्रामदान से केवल भूमि-क्रांति ही नही होगी, बल्कि हमारी सज्जनता के लिए भी इसके अन्दर चुनौती छिपी है। ग्रामदान से नये मानव का निर्माण होगा और सच्चे और व्यापक अर्थ मे धर्म का श्रीगणेश होगा।

●

प्रखंड-दान और अखंड-दान : ११ :

"हमारी यह इच्छा नहीं कि पाकिस्तान मिटे या खतम हो। हम चाहते हैं कि दोनों जियें और पड़ोसी की तरह मिल-जुलकर प्रेम से रहें। भारत और पाकिस्तान एक ही शरीर के दो अंग हैं। जब मैं पूर्वी पाकिस्तान गया था, तो आते समय सीमा पर दोनों तरफ के लोग इकट्ठे मिले। इधर का बाप, उधर का बेटा! पंद्रह साल बाद दोनों का मिलन हो रहा था। बहुत आनन्द का प्रसंग रहा। मैं कहना यह चाहता हूँ कि इन *सियासतवालों ने बंगाल के टुकड़े किये, पंजाब के किये, कोरिया* के किये, जर्मनी के किये। सियासतवाले तोड़ना ही जानते हैं, पर हमारा काम जोड़ने का है। यही ग्रामदान का मकसद है। इसलिए आप ग्रामदान दीजिये, प्रखंड-दान दीजिये, अखंड-दान दीजिये, पूरा जिला दान में दीजिये। पूर्णिया में पूर्ण काम होना चाहिए।"

पूर्णिया जिले की आठ दिन की यात्रा में बाबा ने जिला-दान की माँग करते हुए उसका रास्ता बताया : "प्रखंड-दान हो और वह अखंड चले। इस तरह एक के बाद एक प्रखंड-दान में आता चला जाय और पूरा जिला ग्रामदान में हो जाय। इस जिले की विशेषता यह है कि इसको श्री वैद्यनाथप्रसाद चौधरी (जो जिलेभर में प्रेम से बाबा कहे जाते हैं) जैसी शक्ति हासिल है। पिछले ४० साल से वैद्यनाथबाबू सार्वजनिक सेवा में लगे हैं और बिहार के प्रतिष्ठित कांग्रेसी नेताओं और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में आपकी गिनती है। भूदान की पुकार पर वैद्यनाथबाबू ने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी और मनसा-वाचा-कर्मणा इस अहिंसक क्रांति में लग गये। पूर्णिया नगर से १२ मील की दूरी पर रानीपतरा गाँव

में उनका सर्वोदय आश्रम है, जो इस जिले का अहिंसक शक्ति का पावर हाउस है।"

२१ अक्तूबर को सवेरे ६ बजे नौगछिया से निकले। कोई १२ मील तय करने के बाद कोसी नदी के किनारे आये और उसे जहाज से पार किया। वहाँ से कुछ दूर पर कुरसेला गाँव में पूर्णिया जिले की ओर से श्री वैद्यनाथबाबू ने स्वागत किया। पाँच गाँव ग्रामदान में मिले।

रास्ते में जगह-जगह स्वागत द्वार बने हुए थे। कोढा नामक गाँव मे सर्वोदय विद्यालय मे एक ग्रामदान दिया गया और सभा हुई। पौने नौ बजे बाबा पूर्णिया नगरी मे पहुँचे। बाबा ने कहा कि "यह जिला हमारा खास चुना हुआ जिला है और यह ग्रामदानी जिला बनना चाहिए।"

निर्माण कार्य की जिम्मेवारी

दोपहर की कार्यकर्ता सभा मे जिला सर्वोदय मडल के सयोजक श्री अनिरुद्ध प्रसाद सिंह ने पूछा कि "बाबा! हम जब गाँव मे जाते हैं, ग्रामदान तो मिलता है, लेकिन लोग पूछते हैं कि आगे निर्माण-कार्य के लिए किसे बिठायेंगे और उसका नक्शा क्या होगा? हमारी इस गुत्थी को आप सुलझाइये। हमारे पास इतने कार्यकर्ता नहीं कि हर गाँव मे जा-जाकर स्थायी तौर पर बैठ सकें।"

बाबा ने कहा कि "निर्माण-कार्य तो गाँववालों को ही करना है। जो खेती करता है, वह कार्यकर्ता है, जो बढईगीरी करता है, वह कार्यकर्ता है, जो कुम्हार है, वह कार्यकर्ता है। बाहर से कार्यकर्ता भेजना सभव नही है। हम ट्रेनिंग दे सकते हैं, कुछ सलाह भी दे सकते हैं, लेकिन गाँव में निर्माण की जिम्मेदारी गाँवसभा की होगी, गाँव के लोगों की होगी। हम गाँव गाँव के लिए कार्यकर्ता सप्लाई नहीं कर सकते।

"यह खयाल गलत है कि सर्वोदय-समाज निर्माण-कार्य करेगा। जो सर्वोदय को पसद करता है, वह सर्वोदय-समाज मे है। गाँव ने ग्रामदान किया, तो वहाँ सर्वोदय-समाज हो गया। जहाँ हरएक ने खुशी से अपनी मालिकी छोड दी, बीसवें हिस्से का भूमिहीनों के लिए दान दे दिया,

हर साल फसल का चालीसवाँ हिस्सा ग्राम-कोष के लिए देना और ग्राम-सभा का काम सर्व-सम्मति या सर्वानुमति से करना तय कर लिया, तो ग्रामदानी गाँव में सर्वोदय-समाज बन गया समझिये।

"हम लोगों में कुछ भ्रम है कि निर्माण-कार्य हम करेंगे। समझना चाहिए कि एक बाजू सरकार है और दूसरी बाजू समाज। उसमें व्यापारी हैं, महाजन हैं, सरकारी नौकर हैं और बी०डी०ओ०, एस० डी० ओ० आदि। आखिर इनका काम निर्माण करना नहीं तो क्या है? इनके अलावा और कौन होंगे, जो निर्माण की जिम्मेदारी उठायेंगे? कहा जाता है कि नमूने के तौर पर कुछ गाँव हम बनायें। लेकिन मैंने देखा है कि *जिस गाँव को नमूने का करेंगे, वह नमूने का नहीं होगा,* क्योंकि उसमें ज्यादा कार्यकर्ता और ज्यादा साधन और सम्पत्ति डाली जाती है। नमूने का गाँव माने लाड़ला गाँव, बिगड़ा हुआ गाँव, सेवा लेनेवाला गाँव, ऐसे गाँव का अनुकरण नहीं किया जा सकता। नमूना तो वह होगा, जहाँ गैरमामूली मदद न आयी हो और जो भी थोड़ी-सी आयी, वह हर गाँव को मिल सके।"

बाबा की जेल कबूल करें

पूर्णिया जिले में काम का संयोजन करने की दृष्टि से बाबा ने पूछा कि "इस जिले में कितने गाँव हैं?" जवाब मिला : "३६०० के लगभग।" बाबा बोले : "रोज के १० गाँव ग्रामदान हों तो पूरा जिला एक साल में ग्रामदान हो सकता है। चंद दिनों के लिए आप अपने सब मामूली काम बन्द कर दीजिये। गांधीजी के जमाने में लोग जेल जाते थे, तो क्या करते थे? आश्रम के आश्रम कई साल के लिए बन्द पड़े रहते थे। १८ दिसम्बर को हमारी बिहार-यात्रा के १०० दिन पूरे होंगे, तब तक यानी डेढ़ महीने के लिए आप 'बाबा की जेल' कबूल कीजिये। पर की संस्थाओं का माया-मोह छोड़कर निकल पड़िये और पूर्ण काम कीजिये। इससे अच्छा समय नहीं मिलेगा।"

शाम की सभा में २३ ग्रामदान दिये गये और पॉच हजार की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "१८ साल हो गये, लेकिन जो लोग नीचे के स्तर पर हैं, उनकी हालत में कोई फर्क नहीं पड़ा। जो सबसे दु:खी और पिछड़े हैं, उनकी स्थिति वैसी की वैसी ही रही। ऐसी हालत में देश की ताकत नहीं बन सकती। ग्रामदान से गॉव एक रस और समाज मजबूत बनेगा।"

पार्टीबाजों की घुस-पैठ

बाबा ने खादी पहननेवालों से हाथ उठवाये तो भरी सभा में चंद हाथ उठे। उन्होंने कहा कि "खादी का आन्दोलन सन् १९२० में शुरू हुआ। ४५ साल के बाद यह हालत है। एक नाटक किया कांग्रेसवालों ने कि सक्रिय सदस्य को खादी पहननी चाहिए। चार आनेवाले प्राथमिक सदस्य को खादी आवश्यक नहीं मानी गयी। पुराना ही नियम चल आ रहा है। इस तरह खादी चलाने में कोई जान नहीं है। यह प्राणशून्य है। इससे शक्ति नहीं पैदा होती। कहना हम यह चाहते हैं कि अपने सभी कार्यक्रमों पर ताला लगायें। पंचायतवाले स्वराज्य स्थापना के लिए क्या कर रहे हैं? वहाँ चुनाव चलते हैं, जिनमें पार्टीवाले घुसपैठ करते हैं। पार्टीवालों का तरीका बन गया है कि जहाँ-कहीं अच्छा काम होता हो, वहाँ घुसपैठ करो और उसे बिगाड़ दो। यह घुसपैठ जोरों से चल रही है। इसमें कुछ घुस, तो कुछ पैठ है। 'घुस' माने लोगों की इच्छा के मुताबिक घुस जाना और 'पैठ' माने ऐसी कुशलता से अपने लिए जगह बना लेना कि लोग स्वागत करें। कश्मीर में बाहर की घुसपैठ थी, यह अन्दर की है। सेना के स्थानों को इन्होंने सत्ता का स्थान माना है। इससे अधिक बेवकूफी क्या हो सकती है? इससे देश का बहुत नुकसान हो रहा है। ग्रामदान इन सब झगड़ों को मिटानेवाला है।"

अन्त में बाबा ने कहा कि "बिहार से मैंने आशा रखी है। मेरी श्रद्धा है कि यहाँ की जनता ग्रामदान का विचार समझेगी। बिहार में सामूहिक

परिवार चलते हैं। इसी परिवार-भावना को बढ़ाना है। विहार से सारे देश को मार्ग-दर्शन होगा। यही श्रद्धा, यही निष्ठा, यही आस्था रखकर मैं यहाँ आया हूँ। आप गाँव-गाँव में जायेंगे और विचार समझायेंगे, तो लोक-क्रांति होगी।"

२२ अक्तूबर को किशनगंज जाते हुए एक ग्रामदान मिला और ७१४) की थैली। बाबा ने कहा कि "एक को उर्दू में अलिफ कहते हैं। अलिफ यानी अल्लाह। अल्लाह के नाम से जो आपने काम शुरू किया है, उसको आगे बढ़ाइये।"

पौने आठ बजे बाबा किशनगंज पहुँचे। श्री अनाथकान्त वसु और स्वामी सत्यानन्दजी मौजूद थे। किशनगंज पाकिस्तान की सीमा पर पड़ता है। रास्ते में आते वक्त जगह-जगह मिलिटरी दिखायी पड़ी। पटसन के खेत भी दीखे। बहुत दुखदायी दृश्य था।

सीमा का हर गाँव ग्रामदान में आये

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "यहाँ से पाकिस्तान की सीमा नजदीक है। लेकिन लोग महामाया में फँसे हैं। कोई जागृति ही नहीं है। बुद्धि आहत है। मालूम नहीं, ईश्वर क्या सोचता है। कभी संहार के बाद बुद्धि देता है। फिर नयी चेतना आती है। गुरुदेव बताते हैं कि एक युग का अन्त होने पर अग्नि प्रकट होती है। एक अजीब शब्द का उन्होंने प्रयोग किया—चल-स्नान, जैसे अग्नि में तपाने में शुद्धि होती है, उसी तरह संहार से। फिर नयी रचना सामने आती है। इस हालत में अन्दर से देश की हालत सँभालने का ग्रामदान से बढ़कर कोई दूसरा तरीका नहीं। यह सही है कि मिलिटरी बाहर के हमले से बचाने के काम आती है, लेकिन कल अगर मिलिटरी का ही हमला हो जाय, तो उससे कौन बचायेगा? बर्मा, नेपाल, पाकिस्तान, मिस्र, चीन और रूस आदि में क्या हो रहा है? इसी देश की सेना से इस देश को कौन बचायेगा?

थोडी भी अक्ल होती, तो यह सारा हिस्सा ग्रामदानी ही बनाते, शांति सेना खडी करते और .. "

इसी बीच एक पतला दुबला आदमी आगे बढा और बाबा के पैर छूने लगा। उसे लोगों ने हटाया और दूर ढकेलने की कोशिश की। बाबा ने कहा कि "इसे क्यों तंग करते हो।" फिर बोले "कितना निर्बल उसका शरीर है, कोई जान ही नहा जान पडती। सीमा क्षेत्र म अगर ऐसे ही लोग रहेंगे, तो इसकी क्या हालत होगी ? इसीलिए मै कहता हूँ कि ग्राम दान हो ताकि सभी लोग सुखी हों। और आपस के भेदभाव हट और सुरक्षा का दूसरा मोर्चा खडा हो—वैचारिक मजबूत मोर्चा। फिर कोई सेना भी आपको नहीं हटा सकती है।

व्यापार और अहिंसा

दोपहर को ११ बजे बाबा अणु व्रत सम्मेलन म गये। वहाँ मुनि धनराजजी ने अपने भाषण म कहा कि "सयम के बिना विकास असम्भव है। अणु व्रत और सर्वोदय दोनों एक दूसरे के बहुत नज्दीक हैं।" इसके बाद बाबा का प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि "अणु व्रत के माने है 'ग्रामदान'। ग्रामदान से भौतिक और नैतिक दोनों तरह का उत्थान होता है। जैन-समाज में अहिंसा को मानते हैं और उसे सत्य से भी ज्यादा महत्त्व देते हैं। मुझे इस प्रकार का सोचना खतरनाक लगता है। आखिर अहिंसा की कसौटी सत्य के आधार पर ही हो सकती है। जैन समाज को यह भी सोचना है कि वह अहिंसा को तो मानता है, लेकिन उसके द्वारा व्यापार म बहुत शोषण चलता है। अहिंसा और शोषण का मेल नहीं है। जैन-समाज के आहार म स्पष्ट फर्क देखते हैं। जहाँ दूसरे व्यापारी मांसाहार करते हैं, जैनी नहीं करते। जैसे आहार मे आपकी विशेषता स्पष्ट दीखती है, वैसे ही व्यापार में भी दीखनी चाहिए और व्यापार शोषण मुक्त चलना चाहिए।"

भारत और कामनवेल्थ

दोपहर में कार्यकर्ता सभा मे पूछा गया कि "क्या भारत को अब

राष्ट्रमण्डल में रहना चाहिए, उससे निकल आना, अलग होना, भारत के लिए ठीक होगा या नहीं ?" बाबा ने कहा कि "कामनवेल्थ (राष्ट्रमण्डल) एक फोरम है, ब्रिटेन की जायदाद नहीं। अगर आप निकल आते हैं, तो आप साबित कर देते हैं कि वह ब्रिटेन की मालकियत है। आज राष्ट्रमण्डल में सबसे बड़े आप हैं। आप उसमें से क्यों निकलें ? अगर उसने गलत काम किया है, तो आप उसे ही क्यों नहीं निकाल देते ? लेकिन ब्रिटेन का इतना गुनाह नहीं माना जायगा, क्योंकि राष्ट्रमण्डल में दोनों हैं—आप भी और पाकिस्तान भी। वह कहेगा कि हमने नानएलाइन्ट, तटस्थ रहने की, सन्तुलन रखने की, कोशिश की। राष्ट्रमण्डल से दक्षिणी अफ्रीका को निकाल दिया गया। अगर कोई ऐसा गुनाह ब्रिटेन का हुआ हो, तो उसे भी निकाल दें। आप क्यों निकलें ? लेकिन यह समझ लीजिये कि तटस्थता का ठीका केवल आपका नहीं है।

"इसे कामनवेल्थ कहा जाता है। लेकिन 'कामन' (सर्वसाधारण) है कोई 'वेल्थ' (राष्ट्र) ? मैंने ब्रिटेनवालों से, जो एक बार मुझे यात्रा में मिले थे, कहा था कि 'आप सेकेन्ड लैंग्वेज (द्वितीय भाषा) के तौर पर हिन्दी क्यों नहीं पढ़ाते ? चाहे टोकन के तौर पर ही कहो एक घंटा रोज चले। यह हमने अपना फ्यूचर टाँका है। अगर आपमें ताकत हो तो कह सकते हैं कि राष्ट्रमंडल में हिन्दी क्यों नहीं होनी चाहिए' !"

४ बजे के करीब जब बाबा सभा में जानेवाले थे तो महादेवीताई ने कहा कि "आपका एक जगह बैठना ठीक होगा।" इस पर बाबा बोले : "अगर हमें १०० ग्रामदान रोज मिलें तो एक जगह बैठने को तैयार हैं। लेकिन दीखता है कि चुनाव के पहले तक तो रुकने का सवाल है नहीं। ...मालूम नहीं आगे क्या होनेवाला है। अच्छा है, जरा कसौटी होगी।"

एक खतरनाक दिन

शाम की प्रार्थना सभा में १० ग्रामदान दिये गये और १७५२) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "आज का खतरनाक दिन

है। जाहिर हुआ है कि पूर्वी पाकिस्तान मे आज "क्रश-इण्डिया" दिन मनाया जायगा। यानी भारत का खात्मा-दिन। अभी क्या खात्मा है ? क्या भारत का खात्मा पाकिस्तान कर सकेगा ? अगर भारत का खात्मा होगा, तो वह पाकिस्तान का खात्मा होने पर ही होगा। इस तरह का आन्दोलन चलाना बेवकूफी मानी जायगी। यह बहुत गलत बात है। एक जमाने में जिन्ना साहब ने जाहिर किया था कि योम-निजात (डिली-वरेन्स डे) मनायें। उसमें हजारों लोग कतल हुए। हजारों लड़कियाँ भगायी गयीं। वह दिन मुक्ति का दिन नहीं, अशान्ति का दिन साबित हुआ। तब से आज तक दोनों देशों मे अशान्ति जारी है।

यह जो दिन मनाया जा रहा है, यह कृपा पूर्वी पाकिस्तान पर क्यों लादी जा रही है ? पश्चिमी पाकिस्तानवाले डरे हुए हैं कि कहीं पूर्वी पाकिस्तान अलग राष्ट्र न बन बैठे। इसलिए भारत का द्वेष पैदा करके उनका दिल दूसरी तरफ मोडना चाहते है। इसे बहुत खतरनाक चीज मानता हूँ कि इधर युद्ध विराम जाहिर किया गया और उधर उस प्रकार का आन्दोलन चलाया जा रहा है। हम भगवान् से प्रार्थना करे कि उनको सद्बुद्धि दे।"

जिले का तीसरा पडाव कटिहार मे था। रास्ते मे दो ग्रामदान मिले। कटिहार के निवासियो से बाबा ने कहा कि "यहाँ इस नगर में समग्र भारत का दर्शन होता है। कटिहार को कटिबद्ध होना चाहिए कि यहाँ शान्ति-सेना खडी करें और पक्षमुक्त, सेवायुक्त नगरपालिका बनाकर नगर-स्वराज्य का नमूना पेश करे।"

दोपहर को कार्यकर्ता सभा मे बाबा ने बताया कि "हमारा १४-१५ साल से सत्याग्रह ही चल रहा है। आजकल के सियासतदाँ बाबा को सद्भावनावान् मगर बेवकूफ आदमी मानते हैं। अगर आप यह समझते है कि बाबा अक्लवाला है, तो आप इस काम को उठा लीजिये। लाखों की तादाद में ग्रामदान होंगे तो बाबा के शब्द मे ताकत आयेगी और सियासतदाँ पर भी असर पड़ेगा।"

इस चर्चा के बाद मनिहारी प्रखंड के मित्रों ने जाहिर किया कि १८ दिसम्बर तक हम पूरे प्रखंड का दान प्राप्त करने का संकल्प करते हैं। बाबा बोले: "अच्छी बात है, लेकिन १८ दिसम्बर तक क्यों? जल्दी होना चाहिए, सवाल तीव्रता का है।"

शाम की सभा में ३६ ग्रामदान दिये गये और कटिहार के नगर-प्रमुख ने १००१) की थैली पेश की। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "आपने ३६ का बड़ा आँकड़ा सुनाया। मुझे छोटा आँकड़ा चाहिए—एक प्रखंड दान, दो प्रखंड दान। जब तक पूरा प्रखंड-दान न मिले, तब तक चैन नहीं लेनी चाहिए।

प्रखण्ड-दान

"प्रखंड-दान होने पर जनता की शक्ति और सरकार की शक्ति दोनों मिल जायेंगी, अद्वैत होगा। व्यापारी महाजन लोग भी ग्रामदान में शामिल हों। उनकी योजना-शक्ति का लाभ ग्रामदानी सभा को मिलना चाहिए। मेरी सिफारिश है कि ग्रामसभा को वे जो पैसा दें, तो सूद की बजाय वे घटाव की प्रथा चलायें। यानी १००) देकर एक साल बाद ९४) वापस लें। इस तरह ६ फीसदी घटाव जोर-शोर से चले। यह करके देखें तो उनको आनन्द आयेगा, उनकी प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी और उनका व्यापार भी उन्नत होगा। यह चीज अन्दाज करने की नहीं, अनुभव करने की है।"

अन्त में बाबा ने प्रखंड-दान की माँग की और कहा कि "एक भी प्रखंड-दान हो, तो बाबा उसे डंके की चोट पर जाहिर करेगा। इसके आगे प्रखंड-दान चलना चाहिए।"

रानीपतरा में

दिवाली के दिन हमारा पड़ाव श्री वैद्यनाथ बाबू के सर्वोदय आश्रम (रानीपतरा) में था। पौने सात बजे बाबा वहाँ पहुँचे। वहाँ बाबा ने कहा कि "ऐसे स्थानों को देखकर मैं डर जाता हूँ। यहाँ विश्वरूप दर्शन होता है। आश्रम है तो खाने के लिए अनाज चाहिए। इसलिए खेती उधर

हो। फिर कपडा तो जरूर पहनेंगे ही, इसलिए कताई से लेकर बुनाई तक भी सब चाहिए। फिर दूध के लिए गाय चाहिए और गाय मर जाय, तो उसके लिए चर्मालय होना चाहिए। हरिजनों के उद्धार का काम होना चाहिए। आरोग्य के प्रयोग तो होंगे ही। इस तरह एक एक चीज होती जाती है और विश्व-दर्शन खडा हो जाता है। साथ मे दूसरे तीसरे ग्रामोद्योग चाहिए। यह चाहिए वह चाहिए।

"इस विश्व-दर्शन के गुनहगार महात्मा गाधी हैं। लेकिन एक उनमें बडी खूबी थी, जिसे मे उनकी सबसे बडी शक्ति मानता हूँ। वेद मे सूर्यनारायण का वर्णन आया है कि वह चारों ओर किरण फैला देता है। वह महिमा की बात नहीं है। महिमा की बात यह है कि शाम को किरण समेट लेता है, अपने मे समा लेता है। यह जो सूर्यनारायण की शक्ति है—किरण जाल फैलाना और फिर उसे समेट लेना—यही महात्मा गाधी मे थी। उन्होंने जितने आश्रम खडे किये, उतने बन्द भी किये। बारडोली का प्रस्ताव हुआ, बहुत बडे आन्दोलन का आयोजन हो रहा था। और जरा देखा कि लोग गलती कर रहे हैं, तो सारा का सारा आन्दोलन एक दम समेट लिया। उनके सारे राजनीतिक साथी गुस्सा भी हो गये। सब दूर लोग कहने भी लगे कि गाधी निष्फल हो गया, गाधी का 'फेल्योर' हो गया। लेकिन गाधीजी समझते थे कि मैं सफल हूँ। जैसे फैलाने मे सफल, वैसे ही समेटने मे भी सफल। यह उनमें अद्भुत शक्ति थी।

"बडा भारी फैलाव करना और फिर समेट लेना, बडी ताकत का काम है। हम उतनी ताकत कहाँ से लायें। बाबा सोचता है कि तुम्हें दूध चाहिए तो तुम गोरक्षा मत करो, उसे दूसरा करे। एक सेर के १२ आने के बजाय एक रुपया दे दो—१२ आने दूध के और ४ आने झझट मुक्ति के। यह विचार ही इतना रमणीय और सुन्दर है कि इसके सोचने में बडा आनन्द है।" (सब लोग हँसने लगे और बाबा भी हँस पडे) फिर बोले · "अभी हमने आपका आश्रम देखा नहीं है। सारा देखने जायेंगे।

नये लोगों को सामने लायें

"मान लीजिये गांधीजी में जो शक्ति थी, वह भी नहीं है और बाबा के पास जो युक्ति है, वह भी नहीं है। आपके पास दोनों न हों और विश्वरूप-दर्शन भी खड़ा कर दिया जाय तो फिर तीसरी चीज होनी चाहिए। अपना खलीफा तैयार करना चाहिए। अपना काम दूसरे लोगों को सिपुर्द करना चाहिए'''। अपने यहाँ ऐसी मिसाल श्री श्रीकृष्णदास जाजूजी की है। उन्होंने कृष्णदासजी को तैयार किया। उनके सिपुर्द जिम्मेदारी कर दी। खुद सलाह देते रहे। इस तरह हम सबको करना चाहिए कि एक निश्चित समय के बाद जिम्मेदारी नहीं उठायेंगे। हम आशा करते हैं कि यह आश्रम प्रयोगशाला का काम देगा और यहाँ से अच्छे कार्यकर्ता, अध्ययन सम्पन्न और चरित्र-सम्पन्न कार्यकर्ता, निकलेंगे।"

दोपहर को ११।। बजे आश्रम के सर्वोदय पुस्तकालय के पुस्तक-भवन, श्रीकृष्ण-सदन का उद्घाटन समारोह हुआ। उसकी अध्यक्षता बिहार के मुख्यमन्त्री श्री कृष्णवल्लभबाबू ने की। अपने उद्घाटन भाषण में बाबा ने कहा कि "श्रीबाबू राजनीति में व्यस्त रहते थे, कभी ग्रस्त भी हो जाते थे, लेकिन कुल मिलाकर मस्त रहते थे। उनका अध्ययन और पूजा-पाठ रोज बड़ी फजर चलता था।'''स्वाध्याय से जीवन में स्फूर्ति बनी रहती है।"

श्री कृष्णवल्लभबाबू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि "अध्ययन उसी तरह जरूरी है, जिस तरह रेलगाड़ी के लिए इंजन।" बिहार विधान-सभा के स्पीकर श्री सुधांशुजी ने कहा कि "स्वाध्याय का मतलब है अपने को पढ़ना, चिन्तन मनन का प्रभाव रक्त पर भी पड़ता है।"

रानीपतरा से जाते समय दो बजे के करीब मुख्यमंत्रीजी बाबा से मिलने आये। उन्होंने बताया कि "ग्रामदान का आर्डिनेन्स प्रकाशित हो गया है और जल्दी ही उसके नियम आदि भी बन जायँगे।" फिर बोले कि "आप जब भी बुलायेंगे मैं चला आऊँगा।"

नित्य-धर्म और नैमित्तिक धर्म

कार्यकर्ता सभा में सर्वोदय-आश्रम के अध्यक्ष श्री सरजूबाबू ने पूछा कि "क्या सारा खादी का काम बन्द करके ग्रामदान में कूद पडना चाहिए ? ऐसी हालत में कत्तिनों और बुनकरों का क्या होगा ?" बाबा ने कहा "हमारी बात का साररूपेण अर्थ लगाना चाहिए। चालू काम के लिए जितना न्यूनतम जरूरी हो, उतना रखकर बाकी छोड दें। बाबा ने माना है कि आप सब अक्लवाले और व्यवहारवाले लोग हैं। इसलिए जितना न्यूनतम रखना आवश्यक होगा, उसके अलावा बाकी सब बन्द कर दगे और चले आयेंगे। नित्य धर्म जो होता है, उसे नैमित्तिक धर्म तोडता है। नैमित्तिक कार्य के आने पर उतनी देर के लिए नित्यकार्य खंडित करना पडता है। सध्या के लिए बैठा है, पास में आग लग जाती है, तो सध्या छोडकर उसे तुरन्त बुझाने जाना चाहिए। जो यह समझेगा कि यह भी एक कार्य है, वह भी एक कार्य है, दोनो नित्य-धर्म है, तो उसको कोई आकर्षण नहीं होगा। लेकिन जिसमें तीव्रता होगी, वह नित्य-कार्य छोडकर नैमित्तिक कार्य के लिए चला जायगा।"

ग्रामदान की कसौटी

शाम की सभा मे ५० ग्रामदान दिये गये। इसमें वेलोरी पचायत भी शामिल है, जिसमे रानीपतरा गॉव पडता है। अपने प्रवचन में बाबा ने खुशी जाहिर की कि "दिवाली के दिन यहाँ का कार्यक्रम रखा गया। आश्रम को शक्ति सचार का केन्द्र बनना चाहिए। आश्रम के पीछे जो मूल विचार है, वह सयम का है। सामान्यतः लोगों का रुख सयम की तरफ नहीं रहता। यह बहुत खतरनाक बात है। सयम की प्रतिष्ठा आश्रम की प्रतिष्ठा है। आश्रम का जीवन इस प्रकार का हो कि आस पास के लोगों को पता चले कि आदर्श क्या है, तो दूसरे लोग उसका अनुसरण करेंगे। ऐसा होने पर ग्रामदान आदि काम बहुत मामूली साबित होंगे।

चाहिए, तभी 'स्मगलिंग' चोरी से निर्यात आदि रुकेगा। अगर सीमा पर पुलिस की चौकी कायम करते हैं, तो उन चौकियों की चौकीदारी कौन करेगा? अगर मिलिटरी खड़ी करते हैं, तो बहुत महँगी पड़ेगी। लेकिन अगर ग्रामदान होता है, तो ग्रामदानी ग्राम-सभा गाँव के आयात-निर्यात पर नियंत्रण रख गलत चीजों को रोक सकती है। इसलिए सारा सीमा का इलाका ग्रामदानी बन जाना चाहिए।"

एक स्थानीय श्रीमान् ने बताया कि पंचायतों के सरपंच और मुखिया लोग ही गलत व्यापार को बढ़ावा देते हैं। बाबा ने कहा कि "मैं जानता हूँ और इसी वजह से ग्रामदान और जरूरी हो जाता है।"

यह आसुरी बुद्धि !

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में एक भाई ने पूछा कि "सीमा पर अहिंसा क्यों नहीं सफल होती?" बाबा ने कहा: "कमी अहिंसा की शक्ति में नहीं, हमारे अन्दर ही है। पहले यह करके दिखलाइये कि आंतरिक झगड़ों का हल शांति-सेना कर लेती है और पुलिस और सेना की जरूरत नहीं पड़ती। इसके बाद विदेशी हमलों का सामना करने की शक्ति आयेगी।" एक भाई ने जब पूछा कि "अपना ध्यान लड़ाई की तरफ दिया जाय या ग्रामदान की तरफ?" तो बाबा बोले: "सवाल यह होना चाहिए कि ध्यान लड़ाई की तरफ या खाने की तरफ। लेकिन आपका खाना तो चलता ही है, खिलाना ही बन्द हुआ है। कैसी आसुरी बुद्धि है।"

हवा बिगड़ी है, हृदय नहीं

शाम की सभा में १५ ग्रामदान मिले और ४३०१) की थैली। अपने प्रवचन मे बाबा ने कहा कि "शिकायत की जाती है कि इधर भ्रष्टाचार बहुत बढ गया है। और उधर लोग भूदान, ग्रामदान देते है, मालिकी छोडते हैं, थैलियाँ देते हैं। जिसे दुर्जन कहा जाय, ऐसा एक भी मनुष्य बाबा को नहीं मिला। इसका मतलब यह नहीं कि सभी साधु है। लेकिन सबके हृदय पर एक अमिट छाप है। हृदय को

जो भी ऐसे आश्रम में रह जाय, वह जहाँ भी जायगा, क्रान्ति करेगा, चारों ओर आध्यात्मिक विद्या का साक्षात् नमूना पेश करेगा।

"लोग पूछते हैं कि ग्रामदानी गाँव में विकास कैसे होगा? मेरी दृष्टि में केवल अन्न-उत्पादन वृद्धि काफी नहीं है। वह देखना हो तो अमेरिका जाइये। दुर्जन गाँव में भी उत्पादन बढ़ सकता है। ग्रामदान की कसौटी यह है कि वहाँ प्रेम, पारस्परिक भावना और धर्म-वृत्ति बढ़ रही है या नहीं।"

श्री गौरीबाबू भी आज दिनभर साथ रहे। उन्होंने बाबा से आग्रह किया कि शाम का भोजन शुरू कर दें, अन्यथा स्वास्थ्य पर असर पड़ने का डर है।

सवेरे ९॥ बजे बाबा के पास श्री वैद्यनाथबाबू और सरजूबाबू आकर बैठे और आगे के कार्यक्रम के बारे में पूछा। १८ दिसम्बर तक का तो कार्यक्रम बन ही चुका है। बाबा ने कहा कि "अगर कोई पड़ोसी प्रदेश पन्द्रह दिन में दो हजार ग्रामदान देने की तैयारी करे, तो हम हवा-पानी बदलने के लिए वहाँ जाने को तैयार हैं। उसके बाद फिर बिहार में आ जायँगे। सो उनसे पूछा जाय कि राजी हैं या नहीं।"

अगले दिन रानीपतरा से निकलने पर कस्वा नामक गाँव में २५६) की थैली मिली। आगे चलकर अररिया में ७ ग्रामदान दिये गये। बाबा ने कहा कि "यह तो प्रेम के चिन्ह पर आपने बयाना दिया। हमें यकीन है कि पूरा माल मिलेगा।" नौ बजे बाबा फारबिसगंज पहुँचे। रास्ते में करीब १८ फाटक बनाये गये थे। दो फाटकों पर उर्दू में 'खुश आमदेद' लिखा हुआ था। मुसलमान भाइयों ने उत्साह के साथ स्वागत किया।

स्मगलिंग का उपाय

फारबिसगंज से नेपाल की सीमा १० मील पर ही है। बाबा ने इसका जिक्र करते हुए कहा कि "पूरा-का-पूरा सीमा प्रदेश ग्रामदान में आना

चाहिए, तभी 'स्मगलिंग' चोरी से निर्यात आदि रुकेगा। अगर सीमा पर पुलिस की चौकी कायम करते हैं, तो उन चौकियों की चौकीदारी कौन करेगा? अगर मिलिटरी खडी करते हैं, तो बहुत महँगी पड़ेगी। लेकिन अगर ग्रामदान होता है, तो ग्रामदानी ग्राम-सभा गाँव के आयात-निर्यात पर नियन्त्रण रख गलत चीजों को रोक सकती है। इसलिए सारा सीमा का इलाका ग्रामदानी बन जाना चाहिए।"

एक स्थानीय श्रीमान् ने बताया कि पंचायतों के सरपंच और मुखिया लोग ही गलत व्यापार को बढ़ावा देते हैं। बाबा ने कहा कि "मैं जानता हूँ और इसी वजह से ग्रामदान और जरूरी हो जाता है।"

यह आसुरी बुद्धि!

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में एक भाई ने पूछा कि "सीमा पर अहिंसा क्यों नहीं सफल होती?" बाबा ने कहा "कमी अहिंसा की शक्ति में नहीं, हमारे अन्दर ही है। पहले यह करके दिखलाइये कि आंतरिक झगडों का हल शांति-सेना कर लेती है और पुलिस और सेना की जरूरत नहीं पडती। इसके बाद विदेशी हमलों का सामना करने की शक्ति आयेगी।" एक भाई ने जब पूछा कि "अपना ध्यान लडाई की तरफ दिया जाय या ग्रामदान की तरफ?" तो बाबा बोले: "सवाल यह होना चाहिए कि ध्यान लडाई की तरफ या खाने की तरफ। लेकिन आपका खाना तो चलता ही है, खिलाना ही बन्द हुआ है। कैसी आसुरी बुद्धि है!"

हवा बिगड़ी है, हृदय नहीं

शाम की सभा में १५ ग्रामदान मिले और ४३०१) की थैली। अपने प्रवचन मे बाबा ने कहा कि "शिकायत की जाती है कि इधर भ्रष्टाचार बहुत बढ गया है। और उधर लोग भूदान, ग्रामदान देते हैं, मालकी छोडते हैं, थैलियाँ देते हैं। जिसे दुर्जन कहा जाय, ऐसा एक भी मनुष्य बाबा को नहीं मिला। इसका मतलब यह नहीं कि सभी साधु हैं। लेकिन सबके हृदय पर एक अमिट छाप है। हृदय को

चीरकर देखा जाय तो क्या मिलेगा ? करुणा, प्रेम, दान । यह ठीक है कि भ्रष्टाचार है, लेकिन वह हवा से आया है, हृदय से नहीं । हवा बिगड़ी हुई है । समाज की रचना, अर्थ-शास्त्र बिगड़ गया है । पर ग्रामदान से सारी रचना ठीक हो जायगी और सर्वोदय समाज बनेगा । मेरा आग्रह है कि जितना सीमा-प्रदेश है, वह कुल-का-कुल ग्रामदान में आना चाहिए । पूर्णिया, सहर्षा, दरभंगा, यहाँ से लेकर कश्मीर तक और आगे राजस्थान-कच्छ तक और उधर आसाम तक—सीमा के सारे गाँव ग्रामदान में आ जायँ । ग्रामदान का देश की रक्षा के लिए बहुत बडा उपयोग है ।"

श्री जयदेव भाई समन्वय-आश्रम से बवासीर के इलाज के लिए पटना गये थे । वहाँ उनका आपरेशन हुआ और अब उनका स्वास्थ्य अच्छा है । कटिहार पड़ाव पर वे वापस आ गये और बाबा की सेवा में लग गये ।

२६ अक्तूबर को सवेरे छह बजे बाबा फारबिसगंज से निकले । रास्ते में रानीगंज में आठ ग्रामदान मिले और २०२) की थैली । इसके बाद भवानीपुर में १२ ग्रामदान हुए और ५०१) की थैली । पौने दस बजे रुपौली पहुँचे । वहाँ स्वागत में 'संत परम हितकारी' वाला भजन हो रहा था । बाबा ने कहा कि "संतों में और हममें फर्क यह है कि संत लोग जहाँ परलोक के भले की बात कहते थे, वहाँ हम इस लोक की, आपके भले की और आज की बात कहते हैं । ग्रामदान में देरी नहीं करना है ।"

वर है गाँव, कन्या है सरकार

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "हमारा काम तो शादी लगा देने का है, गृहस्थी चलाने का नहीं । वर है गाँव और कन्या है सरकार । उसके लिए हमने क्षेत्र खोल दिया । हमारा या सर्व सेवा संघ का काम तो सलाह देने और प्रशिक्षण आदि का है । गृहस्थी चलाने की जिम्मेदारी है आपकी ।''''''ग्रामदानी गाँव की ग्राम-सभा भटियासुर

मर्दिनी की तरह ग्रामचंडी, सहस्रभुजावाली ग्रामदेवी होगी। अगर देश की गरीबी आप मिटा लेते हैं और समाज में एक रास्ता ले आते हैं, तो चीन या पाकिस्तान का हमला करना संभव नहीं। इस पर भी अगर वह हमला करेंगे तो हार खायेंगे और मार खायेंगे।"

शाम की सभा में १० ग्रामदान दिये गये और १००००) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "बिहार में मुश्किल से १०० में २० लोग पढ़े लिखे होंगे। उनमें स्त्रियाँ तो प्रतिशत तीन या चार ही पढ़ी लिखी होंगी। उनमें भी अगर शहरों को अलग कर दें तो गाँवों में १०० स्त्रियों में औसत २ या तीन शिक्षित होंगी। इसलिए भूदान क्या है, ग्रामदान क्या है, ग्राम-स्वराज्य क्या है, यह समझानेवाले लोग गाँव गाँव और घर घर में संदेश पहुँचायें।

व वा नि..घी तु चू

अपने गाँव की आज हालत क्या है? कान है, आँख है, हाथ है, पाँव है, लेकिन सारे गाँव का एक मन नहीं है। इसीलिए हाथ किधर जाते हैं, पाँव किधर पड़ते हैं, मेल नहीं। ग्रामदान से सब लोग मिल जुलकर ग्राम सभा बनायेंगे। यह हमारा मन होगा। हम सारे हाथ, पाँव, आँख, कान आदि हो जायेंगे और ग्रामसभा को सत्ता देंगे। वह गाँव-सभा गाँव के लिए सब तरह का इन्तजाम करेगी। थोड़े में कहा जाय तो—ब, बा, बि, बी, बु, बू, बच्चे, बूढ़े, बेवा, बीमार, बेकार—ग्रामसभा बच्चों की चिन्ता करेगी, बूढ़ों की चिंता करेगी, बेवाओं की चिन्ता करेगी, बीमारों की चिंता करेगी, बेकारों को काम देने की चिंता करेगी। हाथ की पाँचों उँगलियों की तरह इन पाँचों को याद रखिये। आप जो ४० वाँ हिस्सा हर साल देंगे और सरकार से जो मदद आयेगी, उसका उपयोग ग्रामसभा करेगी। इस तरह ग्रामदान से सामाजिक विषमता मिटेगी और आर्थिक विषमता घटेगी।"

खपैली से निकलने पर घमदहा में ११ ग्रामदान मिले। बाबा ने वहाँ कहा कि "आप लोग दूसरे गाँव में जाइये और ग्रामदान की बात समझाइये,

तो वहाँ के लोग भी ग्रामदान करेंगे।" आठ बजे बाबा बनमनखी के पड़ाव पर पहुँचे। रास्ते में एक भयानक दृश्य दिखायी पड़ा—एक माता सर पर पटसन का बोझ लिये है और बच्चे की उँगली पकड़े चली जा रही है।

राष्ट्र में सबसे बड़ी समस्या

पड़ाव पर पहुँचने पर बाबा ने इस बात पर बड़ा दुःख जाहिर किया कि "इस इलाके में पटसन पैदा करके और गाड़ियों में लाद लादकर बाहर भेजते हैं। इस पटसन से शहरवालों की भूख नहीं मिटेगी। उन्हें अन्न चाहिए और देहातवालों को भी अन्न चाहिए। पैसा तो लफंगा है और उसका भाव बदलता रहता है। अगर अनाज पैदा करना है, तो यह सब तरीका बदलना होगा। आपका कल्याण न जूट से होगा और न झूठ से होगा।"

दोपहर को दो बजे कार्यकर्ताओं की सभा में बाबा ने कहा: "जो लड़ाई चली, वह ठीक नहीं चली। अगर लम्बी चलती, तो लोगों को पता चलता कि लड़ाई क्या है। और तब ग्रामदान की आवश्यकता महसूस होती।...भूखे पेट न भजन हो सकता है और न लड़ाई लड़ी जा सकती है। ऐसी लड़ाइयाँ हुई हैं, जब सिपाहियों ने खाना न मिलने पर मारे हुए सिपाहियों की रसोई कर ली और खा लिया।... राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्या सबको खाना पहुँचाना है। यह तभी होगा जब मालिक, मजदूर और महाजन में परस्पर सद्भावना और विश्वास हो। इसीके लिए ग्रामदान है।"

शाम की सभा में २६ ग्रामदान दिये गये और २००१) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "ग्रामदान ऐसी चीज नहीं, जो टोकन या प्रेम-चिह्न के तौर पर दे दिया। वह तो आर्थिक और सामाजिक जीवन के बदलने की योजना है। आर्थिक विषमता घटनी और सामाजिक विषमता मिटनी चाहिए। आध्यात्मिक मूल्य सामने आयें।

परस्पर सहकार बढ़े। यह तुरन्त होना चाहिए। जो इसकी तीव्रता महसूस करेंगे, वह इसमें लग जायगे और बिना इसे पूरा किये चैन नहीं लेंगे। वे हनुमान् का काम करगे "राम काज साधे बिना मोहि कहाँ विश्राम।"

वह मक्खी और यह मच्छर!

बाबा ने आगे कहा "सामाजिकता का लाभ लेकर पाकिस्तान हमला करता है। अयूब साहब ने कुछ रोज पहले कहा ही था,'ला इला इल्लिल्ला मुहम्मद व रसूल्लुल्ला।' पर इस लडाई म मुहम्मद साहब को तकलीफ देने की क्या जरूरत थी? लेकिन भारत के भेदभाव का लाभ उठाकर वे यहाँ के लोगा को उभाडना चाहते थे। अभी अभी भुट्टो साहब तो साफ बोले कि 'हमने इन गवाँरों पर आठ सौ साल राज्य करके सभ्यता सिखायी, दो सौ साल अंग्रेजों ने सिखायी और अभी भी सीखे नही।' इसका मतलब साफ है कि हिदुस्तान के लोगों म वैरभाव बढ़े और झगड़ पैदा हों। कहते है, 'हजार साल लडगे।' पर हजार साल लडने के लिए जिन्दा भी रहेंगे? ज्यादा बोलनेवाले करते कुछ नहीं। वह बदखुडकी होती है। बोलने म वीर होते हैं। उनके बोलने से दूसरे लोग भडक जाते और गलत काम कर बैठते हैं। भारत की विषमता से पाकिस्तान को बल मिलता है। जिस तरह गदगी पर मक्खियाँ आ जाती हैं, उसी तरह भारत की सामाजिक विषमता के मैल पर पाकिस्तान की मक्खी जोर मार रही है। मक्खी को तो उडाना ही होगा। उसके लिए सेना है, लेकिन गदगी भी हटानी पड़गी। वरना मक्खी फिर से आकर बैठेगी। वह मक्खी तभी हटेगी, जब सामाजिक विषमता मिटेगी।

"चीन का हमला गरीबी और आर्थिक विषमता के बल पर है। वह मक्खी और यह मच्छर। दोनों को अलग अलग गदगियाँ पसद हैं। मैं चीन के लोगों के खिलाफ नहीं हूँ। वहाँ जो राज्यकर्ता जमात है, वह भारत की गरीबी से लाभ उठाना चाहती है। वे समझते हैं कि अगर

भारत में असंतोष होगा, बगावत होगी तो आरमी आफ लेबरेशन या मुक्ति-सेना वहाँ पहुँचकर क्रान्ति करायेगी, मुक्ति करायेगी। चीन मुक्ति करानेवाला साबित होगा।

"भारत की जो यह दो न्यूनताएँ हैं, कमियाँ हैं, उनका लाभ पाकिस्तान और चीन लेना चाहते हैं। सेना से आप कब तक मुकाबला कीजियेगा? हजार करोड़ का खर्च लगाना संभव नहीं है। इसलिए मच्छर-मक्खी उडाने के साथ-साथ गंदगी को भी खतम करना होगा। ग्रामदान से दोनों काम एक साथ सधने की योजना है।"

चार दिन सहर्षा जिले मे बिताने के बाद पूर्णिया जिले का आखिरी और आठवाँ पड़ाव पहली नवम्बर को कुर्सेला में था। रास्ते में बाबा वैद्यनाथबाबू के गाँव बरेटा में कुछ समय के लिए ठहरे। इसका ग्रामदान हो चुका है। १० बजे कुर्सेला पहुँचे। बाबा ने कहा कि "हमें सिंह का पराक्रम और चींटी का संगठन चाहिए। अब आश्रम में बैठने का समय नहीं है। गांधी-विचार के प्रचार मे सब लोग निकल पड़ें।"

मन्दमति सर्वोदय

जिले का आखिरी पड़ाव होने के कारण दोपहर की कार्यकर्ता-सभा बहुत ही शानदार थी। श्री रघुवंश बाबू ने अपनी कोठी के लान में एक बड़ा शामियाना तनवा दिया था। सारे जिले के मित्र आये थे। सबके चेहरे पर उत्साह था। एक सवाल के उत्तर में बाबा ने कहा : "समझ में नहीं आता कि सरकार गल्ले में लगान क्यों नहीं लेती? उसको प्रोक्योरमेंट कम करना पड़ेगा। इधर तो सरकार पैसा लेगी, उधर बेचने को मजबूर करेगी। लगान गल्ले में क्यों नहीं लेती है, यह तो बिल्कुल आसान काम है। आश्चर्य यह होता है कि चीन ने इस चीज को लागू किया है। इतने बड़े ७० करोड़ के देश में यदि यह हो सकता है, तो भारत में क्यों नहीं हो सकता? मेरे ख्याल से सर्वोदयवाले मूढ़ हो गये हैं, मन्दमति बन गये हैं। उनको आवाज उठानी चाहिए, ग्राम-पंचा

मतवालों को आवाज उठानी चाहिए कि प्रति एकड के हिसाब से कितना गल्ला लेना है, यह तय किया जाय। बात ऐसी है कि देश में जो कांग्रेसवाले हैं, वे चूँ नहीं करते। मुँह सी लिया है। जो विरोधी पार्टियाँ हैं, वे मुँहफट हैं। उनकी कौन सुनता है? बचे सर्वोदयवाले–वे मन्द मति हैं, ऐसी हालत है। अगर गाँव गाँव में यह आवाज उठे कि लगान गल्ले में लिया जाय, तो सरकार इनकार नहीं कर सकेगी।"

जिला पचायत परिषद् के अध्यक्ष श्री वासुदेवबाबू यात्रा में कई रोज साथ रहे। उन्होंने बाबा को लिखकर दिया कि "मैं एक हफ्ता का समय अगले महीने में दूँगा।" बाबा ने खुशी जाहिर कर कहा कि "सात दिन में अगर चसका लगा तो फिर आगे भी वे समय देंगे। लेकिन उनके सात दिन देने का मतलब मैं यह लगाता हूँ कि उनके पास जितनी ताकत है, वह सबकी सब सात दिन लगेगी, यानी जिले की सारी पचायत इस काम के लिए पिल पडेगी।"

इस पर वैद्यनाथबाबू ने कहा "अगर सब पचायतवाले सात दिन दें तो जिला दान हो सकता है।"

हारिये न हिम्मत

आखिर में किसी भाई ने लिखकर दिया कि "अगर ग्रामदान सफल नहीं होता तो क्या होगा?" बाबा ने मुस्कराते हुए कहा "बडा अजीब सवाल है। आप शादी करते हैं तो यह नहीं सोचते कि शादी सफल नहीं होगी तो क्या किया जायगा? मुझे इस विषय में खुद को काफी शका आयी कि पता नहीं कि वह चाडालिनी होगी या कैसी होगी, इसलिए मैंने डर के मारे नहीं किया। जहाँ मैं डरता रहा, वहाँ आप हिम्मत करते हैं। फिर इतने हिम्मतवाले होकर इस तरह का सवाल क्यों?"

यह सुनकर सब हँस पडे और एक भाई कहने लगे कि "बाबा में अद्भुत शक्ति है। गम्भीरता के साथ विनोद का लाजवाब मेल है।"

शाम की सभा में ९८ ग्रामदान दिये गये। इस तरह बाबा की पूर्णिया-यात्रा में ३१४ ग्रामदान मिले और वहाँ अब कुल ग्रामदान ४६५ हो गये। जिले में कुल पड़ावों की थैली १७३८०)५३ पैसे हुई। इस सभा में जिला-कांग्रेस के अध्यक्ष, जिला पंचायत परिषद् के अध्यक्ष और भारत सेवक समाज के मंत्री ने आश्वासन दिया कि ग्रामदान के काम को पूरा करेंगे।

ग्रामदान और अहिंसा

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "आज दुनिया की यह स्थिति है कि हिंसा से उसका विश्वास हट गया है। लेकिन अहिंसा का कोई तरीका सूझता नहीं। एक तरफ यूनो का आसरा देखती है, दूसरी तरफ सब राष्ट्र अपने हथियार बढ़ा रहे हैं। हमें यकीन है कि ग्रामदान से अहिंसा के अन्दर विश्वास बढ़ेगा और उसकी राह खुलेगी।"

रात को पूर्णिया जिले के कार्यकर्ता-मित्रों की बैठक हुई, जिसमें आगे के काम के बारे में विचार किया गया। ऐसा लगता था कि एक जिले के नहीं, बल्कि एक प्रान्त के साथी बैठे हैं। वैद्यनाथबाबू हर ब्लाक का नाम लेते जाते थे और उसके मित्र उठकर आगे १५ दिसम्बर तक ग्रामदान प्राप्त करने की संख्या बोलते जाते थे। लगभग ५०० ग्रामदान की तैयारी दिखलायी गयी। सबमें बड़ा उत्साह नजर आया और वह दिन दूर नहीं, जब सारे पूर्णिया जिले में

ग्रामदान 'मेजर डिफेन्स' है   : १२ :

"हमारे लिए यह स्थान एक पुण्य-तीर्थ हैं, क्योंकि भूदान यात्रा के सिलसिले में घूमते हुए महात्मा लक्ष्मीनारायण का यहाँ देहान्त हुआ था। बिलकुल अन्तिम समय तक भूदान की सेवा उन्होंने की और किसी खास लम्बी बीमारी के कारण नहीं, सहज भाव से दो तीन घंटे में, दिन-भर का सारा कार्यक्रम पूरा करने के बाद वे भगवान् के दरबार में पहुँच गये। बहुत भावमय उनका हृदय था। जितना उनका भाव था, उतनी ही उनमें हिम्मत थी। दोनों होते हुए उनमें अपार नम्रता भी थी। महात्मा लक्ष्मीबाबू करुणा-सागर थे। उनकी विशेषता थी कि उनसे कोई डरता नहीं था। अभयदान वही है, जिससे सामनेवाला मनुष्य निर्भय हो जाय। इस अर्थ में लक्ष्मीबाबू पूरे निर्भय थे।...भगवान् की आज्ञा के अनुसार गये। वे गीता के प्रेमी थे और उसी आदर्श के अनुसार जीवन बिताने की कोशिश करते थे। मृत्यु भी इसी प्रकार हुई। बहुत ही धन्य है उनका जीवन!...भूमि की समस्या टालकर अगर खादीवाला काम करता है तो उसकी खादी के लिए पृष्ठभूमि नहीं मिलेगी। इसलिए हम चाहते हैं कि सारे खादीवाले गाँव ग्रामदान में आ जायँ और पूरे दरभंगा जिले का ग्रामदान हो जाय। महात्मा लक्ष्मीबाबू की स्मृति में यह सबसे अच्छा स्मारक होगा। हम उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।"

दरभंगा यानी डर-भंगा

इन शब्दों के साथ गुरुवार, ४ नवम्बर को बाबा ने दरभंगा जिले में प्रवेश किया। पहला पड़ाव रोसड़ा में था, जहाँ आठ मई

१९५८ को श्रद्धेय लक्ष्मीबाबू का देहावसान हुआ था। रास्ते में बलिया बाजार से आते हुए मुँगेर जिले के एक बड़े कसबे मझौल में थोड़ी देर के लिए बाबा ठहरे। रोसड़ा में उन्होंने कहा कि "दरभगा यानी दरभंगा-जो डर है, वह दूर करें और बिना डर के यह जिला ग्रामदान हो।"

एक गाँव भी खादीमय नहीं

आज सवेरे यात्रा के लिए निकलने से पहले बाबा ने श्री गोपालजी शास्त्री से पूछा कि "क्या कोई एकआध गाँव ऐसा होगा, जहाँ केवल खादी ही लोग पहनते हो? दरभंगा जिले में तो ऐसा गाँव होना चाहिए, क्योंकि वहाँ खादी का काम बहुत फैला हुआ है।" शास्त्रीजी ने बताया कि "ऐसा कोई गाँव नहीं है, जहाँ के लोग खादी के अलावा दूसरा कपड़ा इस्तेमाल ही न करते हों।" यह सुनकर बाबा को बहुत दुःख और आश्चर्य हुआ।

खादी में तरीका बदलना होगा

अपने प्रवचन में इसका हवाला देते हुए उन्होंने कहा : "खादी को ४५ साल हो गये। गांधीजी की मदद थी। आज सरकार भी मदद कर रही है। इतनी मदद मिलने पर भी आज मुश्किल से कुल कपड़े का सवा प्रतिशत खादी है। अगर इसी तरह प्रयत्न जारी रहे और मदद मिलती रही तो सवा की बजाय एक या पौन प्रतिशत हो जायगा। इसलिए आपको अपना तरीका ही बदलना होगा। पुराने तरीके से जितना हो सकता था, उतना हो रहा है। लेकिन अब इससे आगे नहीं चलेगा। अब खादी ग्रामदान के बल पर ही टिक सकती है। सरकार से आपको मदद मिल सकती है, संरक्षण नहीं। संरक्षण तो तभी मिलेगा, जब गाँव के लोग संकल्प करें। संरक्षण ग्राम-स्वराज्य की भावना से ही मिलेगा। ग्राम-संकल्प का संरक्षण होने पर खादी हिन्दुस्तान के पाँच लाख गाँवों में फैलेगी। इस तरह अब खादी को बढ़ाना होगा।"

जमीन बेचना ग्रामद्रोह है

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा मे बाबा ने कहा कि "जमीन की मालिकी को मैं पाप मानता हूँ। महर्षि टॉल्स्टॉय की एक किताब है, जो हिन्दी मे भी छप गयी है, यह कैसा अन्धेर उसम उन्होंने बताया है कि हवा, पानी और रोशनी की तरह जमीन की भी निजी मालिकी नहा हो सकती। मालिकी का अर्थ होता है, तीन तरह के अधिकार : १. काश्त का, २. विरासत का और ३. बेचने का। ग्रामदान में काश्त और विरासत के हक कायम रहते हैं। बेचने का हक छोड दिया जाता है। फिर भी गाँव के अन्दर गाँव-सभा की इजाजत से जमीन बेची जा सकती है। बाहर जमीन बेचना ग्राम द्रोह है। अगर गाँव की जमीन बाहर चली जाय तो किसी तरह का प्लानिंग नहीं हो सकता। इसलिए ग्रामदान मे वह अधिकार ग्राम सभा को समर्पित कर दिया जाता है।"

शाम की आम सभा में २४ ग्रामदान दिये गये और ३२६३) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि 'गगा और हिमालय के बीच का यह प्रदेश बहुत उदार प्रदेश है। यहाँ का तो हर गाँव ग्रामदान मे आना ही चाहिए। दरभगा जिले की आबादी ४४ लाख है और मुजफ्फरपुर की ४१ लाख। दोनो मिलकर ८५ लाख हो जाते हैं। इससे कम आबादी के देश दुनिया में मौजूद हैं। पर अपने भारत में अनेक भाषाएँ हैं और अनेक जातियाँ, पथ तथा धर्म हैं। इसलिए हमारी जिम्मेदारी है कि अपना दिल चौडा बनायें और पूरे गाँव को परिवार का रूप दें।

पूरे के गुण गाओ

"आज आपने २४ ग्रामदान सुनाये। हम इतने से समाधान नहीं। पूरा जिला ग्रामदान होना चाहिए।" इसके बाद बाबा सभा में ही नानक का भजन गाने लगे :

"पूरा प्रभु आराधिया, पूरे के गुण गाऊँ।"

और फिर श्रोताओं से भी गवाने लगे—

"नानक पूरा पाया, पूरे के गुण गाऊँ।"

इसके बाद गवाया—

"२४ के मत गाओ, पूरे के गुण गाओ।
नानक पूरे के गुण गाओ।"

इस तरह यह भजन गवाकर बाबा ने अपना प्रवचन समाप्त किया। रोज की तरह ५ मिनट मौन प्रार्थना हुई।

अगले दिन सवेरे ६ बजे रोसड़ा से निकलकर राजेन्द्र आश्रम (मुसहर टोला) में गये, जहाँ लक्ष्मीबाबू का 'अन्तिम निवास रहा था। फिर इर्म्बैकमेंट पर होते हुए समस्तीपुर के रास्ते में हासा नामक स्थान मे ठहरे, जहाँ श्री रामशरणजी उपाध्याय की निगरानी में नयी तालीम का एक प्रसिद्ध केन्द्र चलता है। १४ अगस्त सन् १९५४ को पिछली बार बाबा यहाँ आये थे। यहाँ वट का एक बड़ा भारी पेड़ है, जिसके नीचे बैठकर वर्ग लगा करते हैं।

नयी तालीम सत्य है

नयी तालीम के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए बाबा ने कहा : "अब सरकार ने शिक्षा के लिए एक कमीशन नियुक्त किया है। पुरानी तालीम का परिणाम ध्यान मे आ रहा है। उसने सारे देश को निर्वीर्य बना दिया है। गांधीजी की नयी तालीम बुनियादी तालीम है। सरकार ने कुछ अंश में उसे अपनाया। लेकिन ऊपर की तालीम पहले जैसी ही रखी। तो हो गया 'ट्रैंगुलर' बुनियाद और उस पर 'क्वाड्रैंगुलर' मकान। जो बुनियाद बनायी गयी, उस पर मकान नहीं खड़ा किया गया और जो मकान खड़े थे, उनको बुनियाद नहीं मिली। इधर बेबुनियाद मकान और उधर बेमकान बुनियाद। दोनों चीजें अलग-अलग हो गयीं। परिणाम जो होना था, वही हो रहा है। लेकिन

मायूस होने की बात नहीं है। 'सत्यमेव जयते' उन्होंने कबूल किया है। नयी तालीम सत्य है।

"बड़ी खुशी हुई आप सब लोगों से मिलकर और यहाँ आकर। वर्षों से आप उपेक्षित रहे हैं, फिर भी भक्ति करते हैं तो रामजी के बड़े प्यारे है। जिन्हें भक्ति का प्रतिफल मिल गया, उनके खाते में कुछ नहीं बचा। लेकिन आपके नाम पर रामजी के खाते में बहुत कुछ है। भगवान् की कृपा आप पर होनेवाली है, यह सोचकर आपको अन्त समाधान होना चाहिए।"

रामदेवबाबू की याद

९। बजे बाबा समस्तीपुर पहुँचे। वहाँ उन्होंने कहा कि "पिछली मर्तबा हम यहाँ पैदल चलकर आये थे। लेकिन इस वक्त मोटर से आये यानी हम डिग्रेड हुए। कुछ लोग मानते हैं कि बाबा को अब अकल आयी है कि मोटर में चल रहा है और अपग्रेड हुआ है, लेकिन हमारी निगाह में हम डिग्रेड ही हुए हैं। जो आनन्द पहले आता था, वह नहीं है। लेकिन ग्रामदान का आन्दोलन चलाना है और उसका विचार समझाना है, इसलिए लाचार होकर मोटर से आना पड़ा।"

देश के अनन्य खादी-सेवक और बिहार के अनोखे रचनात्मक जननायक, स्वर्गीय रामदेवबाबू का गाँव नजदीक ही पड़ता है। उनकी याद करते हुए बाबा ने कहा कि "पहली पद यात्रा में लगातार वे हमारे साथ थे। उन्होंने सब प्रकार की हमारी रक्षा की। वैद्यनाथ धाम में हमें बचाने के लिए उन्होंने खूब प्रहार सहे। अगर वे सारे प्रहार मुझे सहने पड़ते, तो शायद भूदान-यात्रा ही खतम हो जाती। रामदेवबाबू कहते थे कि इस प्रहार के वक्त उन्हें अन्दर से कोई क्रोध नहीं आया। अत्यन्त शांति से उन्होंने सब बर्दाश्त किया। हम आशा करते हैं कि रामदेवबाबू ने जिस उत्कटता और लगन से सेवा की, उसमें सबको प्रेरणा मिलेगी।"

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "ग्रामदान होने पर और ग्राम-सभाएँ बनने पर उन्हें सर्वोदय मंडल का रूप मिलेगा। आज तो सर्वोदय मंडल और सर्व सेवा संघ हवा में है। ग्रामदान से उनको बड़ा भारी आधार हासिल होगा।"

महाजनों से अपील

शाम की सार्वजनिक सभा बाबा की अब तक की बिहार-यात्रा की सबसे बड़ी सभा थी। समस्तीपुर का पटेल-मैदान खचाखच भरा था। ५० हजार के ऊपर ही लोग रहे होंगे। ७५ ग्रामदान दिये गये और १७५११) की थैली भेंट की गयी। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा : "जमीन की मालिकी को मैं हराम मानता हूँ और इसीलिए ग्रामदान में उसका विसर्जन है। ग्रामदानी गाँवों की जो ग्रामसभा बनेगी, उसमें महाजनों को ४०वाँ हिस्सा और उनको कर्ज भी देना चाहिए। सूद की बजाय वे ६ प्रतिशत घटाव कबूल करें। १३ साल की पदयात्रा के दौरान में भारत का जो मुझे अनुभव हुआ है, उसके बल पर यह कहना चाहता हूँ कि मुझे यह आशा है कि मेरी इस माँग को भारत का हर महाजन कबूल करेगा। इससे बढ़कर दान और धर्म हो ही नहीं सकता।.......अक्सर कहा जाता है कि जमीन की बिक्री बन्द होने पर जमीन पर महाजन पैसा नहीं देंगे। यह खयाल गलत है। जमीन को अपने हाथों से पकड़ना है और मालिकी को ग्रामसभा के हाथों।"

आज ध्वजाबाबू पटना से आये और बाबा से मिले। बाबा ने उनसे कहा कि "अब ग्रामदान की बात पुरानी हो गयी। प्रखंड-दान शुरू हुआ है। हमने कहा है कि प्रखंड-दान और अखंड-दान होना चाहिए।"

मेजर डिफेन्स

६ नवम्बर को समस्तीपुर से बहेड़ा के रास्ते में स्वागत के लिए जगह-जगह भीड़ होने के कारण लगभग ३५ मील का फासला सवा

तीन घंटे में तय हो सका। पहुँचने पर स्वागताध्यक्ष महोदय ने कहा कि "आप ग्रामदान को 'डिफेन्स मेजर' कहते हैं। लेकिन हमें तो यह 'मेजर डिफेन्स' मालूम होता है। इससे गाँव गाँव मजबूत किला बनेगा।"

बाबा को यह शब्द बहुत पसन्द पड़ा और उन्होंने कहा कि "आपकी बात सही है, क्योंकि असली डिफेन्स तो गाँव का है, बार्डर का डिफेन्स तो गौण चीज है। अब आपको प्रखंड दान में लग जाना चाहिए। अगर दो-चार गाँव ग्रामदान होते हैं और आसपास के सब गाँव ग्रामदानी नहीं हैं, तो उन दो चार गाँवों को नुकसान भी पहुँच सकता है। इस लिए पूरा प्रखंड दान होना चाहिए। ग्रामदान से खादी के लिए एक बुनियाद बन जाता है। दरभंगा जिले में खादी का काम बहुत चलता है, इसलिए यहाँ ग्रामदान की अत्यन्त आवश्यकता है।"

दोपहर की कार्यकर्ता-सभा में एक भाई ने कहा कि "जब तक पूरा जिला ग्रामदान में न आये, तब तक आप हमारे दरभंगा जिले में क्यों न रहें?" बाबा बोले "अच्छा सुझाव है। एक दफा बिहार भर घूम लेने के बाद १९ दिसम्बर को हम आगे के लिए सोचेंगे और देखेंगे कि किस जिले की तैयारी है। अगर बयाना के तौर पर आप दरभंगा जिले से तब तक दो हजार ग्रामदान कर देते हैं, तो यहाँ आने का हम विचार कर सकते हैं।"

भिक्षा नहीं, दीक्षा

शाम की सभा में ६० ग्रामदान मिले और ६८००) की थैली। लेकिन ग्रामदान की जो सूची बनी थी, उसमें यह जाहिर नहीं किया गया था कि गाँव की आबादी, क्षेत्रफल आदि कितना है। यह गाँव ५ प्रखंडों में से थे। बाबा ने कहा "एक एक प्रखंड से थोड़े थोड़े गाँव लेना भिक्षा के तौर पर ग्रामदान करना है। लेकिन हम भिक्षा लेने नहीं, दीक्षा देने आये हैं। हम सारे समाज को दीक्षा देना चाहते हैं कि सारा गाँव एक परिवार बने, मिल-जुलकर रहे और सबके दुःखी की सबसे

ज्यादा चिन्ता की जाय।" इसके बाद उन्होंने कहा कि "महात्मा गांधी ने बुद्धि, धन, जमीन-जायदाद आदिवालों के सामने ट्रस्टीशिप का जो सिद्धान्त रखा था, उसीका अमल ग्रामदान में है। अपने पास जो भी सम्पत्ति, बुद्धि या साधन-शक्ति होती है, सब कसौटी के लिए है, ताकि दूसरों के लिए काम आये।"

बाबा ने सभा में खद्दर पहननेवालों से हाथ उठवाये, तो १५ हजार की भीड़ में लगभग ४०० हाथ उठे। बाबा ने कहा कि "हमें इससे समाधान नहीं है। दरभंगा जिला कुल का कुल खद्दरपोश होना चाहिए। यह ग्रामदान से नहीं होगा। हर ग्राम ग्रामदान में आये, वहाँ खादी बने और पहनी जाय तथा शांति-सेना खड़ी हो।"

बहेड़ा में श्रीमती फूलमाया देवी और उनकी दोनों पुत्रियाँ बाबा से मिलीं, अपने हाथ से उन्होंने २५० नं० का सूत कातकर दिखाया। श्रीमती फूलमाया बहन बारीक कताई में सारे देश में शिरोमणि हैं। वे ५०० नं० का सूत भी कुशलता से कात लेती हैं।

आनेवाले युग का नेतृत्व बहनें करेंगी

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में एक भाई ने पूछा कि "क्या ग्रामदान से भूख की समस्या हल होगी?" बाबा ने कहा कि "इसमे दो बाते हैं : १. पैदावार बढनी चाहिए और २. उत्पादन का विवतरण ठीक तरह होना चाहिए। उत्पादन बढने के साथ-साथ सही ढग से वितरण बहुत जरूरी है। ग्रामदान से ये दोनो बाते सधेंगी। गॉव की खेती का नियोजन ग्राम-सभा करेगी और फिर लोग उत्साह से अपनी अपनी खेती करेंगे। फिर ग्रामसभा को अपनी फसल का ४०वाँ हिस्सा हर साल देंगे, जिससे ग्राम-कोष बनेगा और पैदावार अच्छी होने पर मजदूरों को मजदूरी भी ज्यादा देंगे। इस तरह वितरण की भी ठीक व्यवस्था होगी।"

क्योटी से तीन मील पर विशपी नाम का गाँव है, जो सुप्रसिद्ध कवि विद्यापति की जन्मभूमि है। कपिल मुनि का स्थान कपिलेश्वर यहाँ से ५ मील पर है।

पिता लक्षाधीश और बेटा ?

ग्राम की सभा मे स्वागताध्यक्ष श्री नारायणदास एम० पी० ने २२ ग्रामदान किये और ५२५१) की थैली दी। अपने प्रवचन मे बाबा ने कहा कि "यह जो ग्रामदान दिये गये, उन्हें मैं तूफान नहीं मानता। आपको करीब दो महीने का समय मिला, तो यहाँ काफी काम होना चाहिए था। यहाँ बताया गया कि इस स्थान के पास विद्यापति होगये, कपिल मुनि हो गये। हुए और गये—आये और गये। एक आदमी था, वह कहता था कि मेरे पिता लक्षाधीश थे। उससे पूछा गया कि 'भाई, तुम क्या करते हो?' बोला, 'हम भीख माँगते हैं।' बेटा है भिक्षाधीश, लेकिन पिता थे लक्षाधीश। 'लेकिन' को क्या चाटते हो? इसका कोई अर्थ नहीं। पिता से बढकर बेटे को होना चाहिए। इसलिए आपको उत्साह से लगकर प्रचण्ड दान हासिल करना चाहिए।"

बाबा के प्रवचन के बाद श्री नारायणबाबू की *विनती पर श्री महा-*देवीताई ने भी व्याख्यान दिया। उन्होंने बहनों से आगे आने की अपील

की और सभा में आये हुए लोगों से अनुरोध किया कि "सर्वोदय-साहित्य का अध्ययन, मनन करें। इससे उन्हें कायम का सच्चा सत्संग हासिल होगा।"

अगले दिन वयोटी में सवेरे ही कुछ लोग जमा हो गये और प्रजातंत्र के बारे में बाबा से पूछने लगे। बाबा ने कहा कि "दल-विहीन प्रजा का उतना महत्त्व नहीं है, जितना ग्रहविहीन प्रजातंत्र का। दल होने में हर्ज नहीं, लेकिन दलदल हानिकारक है।"

मरीज खादी बन्द करें

सवेरे आठ बजे बाबा जयनगर पहुँचे, जो भारत-नेपाल-सीमा पर एक बड़ी मंडी है। रास्ते में कपसिया नाम के खादी-केन्द्र में ठहरे, जो बारीक मसलिन काम के लिए मशहूर है। वहाँ बहुत महीन कताई होती है। बाबा ने कहा कि "किसी संग्रहालय के लिए थोड़ा बारीक सूत कात लिया जाय या भगवान् की मूर्ति को पहनाने के लिए कात लिया जाय तो समझ में आता है। लेकिन अमीरों के लिए इस तरह मेहनत करके बारीक माल पैदा करने की बजाय मैं आत्महत्या करना पसंद करूँगा। मेरी राय में तुरंत इसमें बदल करना होगा, वरना आप सब खतम हो जायँगे।"

कपसिया-केन्द्र के व्यवस्थापक ने बाबा को ६० नं० का एक सूती थान दिया। धन्यवाद के साथ बाबा ने उसे वापस कर दिया और कहा कि "ऐसी खादी पहनने पर लोगों को शंका आयेगी कि बाबा मिल का कपड़ा पहने हैं या खद्दर। खद्दर भी पहनें और शंका भी बनी रहे, यह ठीक नहीं। या फिर बाबा को अपने माथे पर लिखना होगा 'खद्दरपोश'। इसलिए इस थान को आप अपने पास रखिये और इसे गरीबों के लिए इस्तेमाल कर सकें तो अच्छा है।" यह कहकर बाबा ने वह थान वापस कर दिया।

युनाइटेड स्टेट ऑफ सर्वोदय रिपब्लिक

जयनगर पहुँचने पर बाबा ने कहा कि "हम सब लोग दिल्ली पर अवलम्बित होकर पूरे परावलम्बी हो गये हैं। स्वराज्य की हरारत बच्चे बच्चे को महसूस होनी चाहिए।...आज अपने यहाँ समाज नही, जमाव है। हमे गाँव गाँव में ग्रामदान करके सर्वोदय रिपब्लिक खडी करना है और यह भारत 'युनाइटेड स्टेट ऑफ सर्वोदय रिपब्लिक' (सर्वोदयवादी जनतान्त्रिक संघराज्य) बनाना है।"

दोपहर को श्री तुलसी मेहरजी के कपास फार्म के व्यवस्थापक श्रीगोपालमान श्रेष्ठ नेपाल से बाबा से मिलने आये और कपास का नमूना भी पेश किया, जो बाबा को बहुत पसद आया। तुलसी मेहरजी का रक्सौल मे मिलने का कार्यक्रम था।

कार्यकर्ता-सभा मे एक भाई ने पूछा कि "जीवन सुखमय कैसे हो?" बाबा ने कहा कि "जीवन सुख और दुःख से परे रहना चाहिए और चित्त में समत्व या समभाव होना चाहिए। इसका उपाय यही है कि दुःख और सुख दोनो को बाँट लो और पुरुषार्थ करो।"

जयनगर या हारनगर ?

शाम की आम सभा में ४१ ग्रामदान और ७००१) की थैली दी गयी। बाबा ने कहा कि "व्यक्तिगत दान करने की आदत हम लोगों में मौजूद है। वह एक तरह का सौदा है। उसमे इस लोक मे कीर्ति पाने की इच्छा रहती है और परलोक मे अच्छे स्थान की। तो, यह पुण्याचरण सकाम हो जाता है। इससे समाज को कोई लाभ नहीं मिलता। भाप अगर खुली छोड द तो बेकार चली जाती है। लेकिन अगर उसे इंजन मे बन्द किया जाय तो वह रेलगाडी खीच सकती है। इसी तरह अगर दान योजनापूर्वक किया जाय, तो उससे शक्ति पैदा होती है। यह कल्पना ग्रामदान के अन्दर है। यहाँ ग्रामदान होना जरूरी है,

क्योंकि यह सीमा पर है, नहीं तो यह द्वारनगर बन सकता है। सीमा के सारे नगर ग्रामदान में आने चाहिए।

जयनगर के पड़ाव पर शाम के समय एक डॉक्टर साहब ने बाबा को एक पत्र में लिखकर दिया कि "सेहत को देखते हुए आपके लिए जरूरी है कि एक जगह स्थिर होकर बैठें।" बाबा कुछ नहीं बोले और वह परचा रख दिया। लेकिन इसका हवाला उन्होंने अगले दिन ९ नवम्बर को सुबह बेनीपट्टी पहुँचने पर अपने प्रवचन में दिया और कहा कि "हमें तो इस काम में थकान जरा भी नहीं आती। राम का बाण जैसे निकल गया, वैसे निकले हैं और लक्ष्य पर ही पहुँचकर चैन लेंगे, *लेकिन अगर भगवान् की इच्छा होगी, तो वह बीच में भी उठा सकता है।*"

११ बजे करीब वैद्यनाथबाबू, गौरीबाबू, मुनिजी (श्री बाबूलाल मित्तलजी) और हरविलासबहन बाबा से मिलने आये। कम जमीन-वाले ग्रामदान होने पर गौरीबाबू ने अपनी परेशानी जाहिर की। बाबा ने कहा कि "यह तो समुद्र है, नदियाँ भी आयेंगी, नाले भी।" वैद्यनाथ-बाबू बोले : "कानूनी तौर पर इन ग्रामदानों में कोई एतराज नहीं है।" बाबा बोले कि "यह झगड़ा सत्य विरुद्ध प्रेम का है। दोनों का हक है।"

बैलजोड़ी के सहारे कब तक ?

दोपहर की कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने बताया कि "हम ग्रामराज्य बनायेंगे, इसमें से 'ग' को हटाओ। 'ग' यानी गर्व और अभिमान, तो रामराज्य हो जायगा।...मुझे ग्रामदान से कम फिकर खादी की नहीं है। आज वह बेबुनियाद मकान की तरह है।...यह तालाब सूखता जा रहा है। मैं उसे बहता हुआ चश्मा बनाना चाहता हूँ।'

बहुत-से कांग्रेस के मित्र भी मौजूद थे। उनमें से एक ने पूछा कि "हमारे लिए आपका क्या आदेश है ?" बाबा ने कहा : "मैं आपको क्या आदेश दे सकता हूँ ? आपके अध्यक्ष, श्री राजाबाबू गहर्गा जिले में

हमारे साथ रहे। उन्होंने जाहिर किया कि ग्रामदान होने पर कांग्रेस का प्रजातान्त्रिक समाजवाद का उद्देश्य सफल होगा। उससे कांग्रेस की ताकत बनेगी। देश भी तो बनेगी ही। थोडे दिनों मे चुनाव आयेगा। अब तक के चुनावों मे आपको दो चीजों ने काम दिया—बैलजोडी और प० नेहरू। अब प० नेहरू का बहुत बडा आधार चला गया। उस हालत में बैल आपके पास बाकी बचा है।" सब हँसने लगे और एक दूसरे को देखने लगे।

एप्रोच का सवाल

शाम की आम सभा में ५६ ग्रामदान मिले और ७२३४) की थैली। १५ ग्रामदान रास्ते मे हुए थे, इस तरह आज ७१ ग्रामदान मिले। बाबा ने कहा कि "हमारे कार्यकर्ता श्रीमानो के पास नही जाते। मन मे अविश्वास रखना गलत है। जनता कल्पवृक्ष है और श्रद्धा से जो माँगेंगे, वह मिलेगा। कम्युनिस्ट भी उनके पास नहीं जाते, लेकिन वे तग करते हैं। ये हैं अक्रियावादी, तो वे हैं विक्रियावादी। लेकिन आश्चर्य यह है कि इनका चीन पर विश्वास है।" इस पर स्थानीय एम० एल० ए० ने (जो दक्षिणपथी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं) बाबा को परचा भेजा कि "हमें चीन का हमदर्द बताकर आप अन्याय करते हैं।" इस पर बाबा बोले: "कम्युनिस्ट पार्टी के दो टुकड़े हो गये हैं, एक हैं चीनवादी दूसरे रूसवादी लेकिन भारतवादी कोई नहीं। आज के अविश्वास को विश्वास मे कैसे परिवर्तित कर, यही क्रांति है। सवाल एप्रोच का है। सब पर विश्वास रखकर श्रद्धा के साथ जाना चाहिए, तो सुन्दर परिणाम आये बिना नहीं रहेंगे।"

आज कार्तिक पूर्णिमा का दिन था। काशी से श्री जगदीश मिश्र आये थे, जो सर्व सेवा सघ के प्रधान कार्यालय में काम करते हैं। उनका गाँव, दामोदरपुर नजदीक ही था। वे मुझे तथा अन्य साथियों को वहाँ लिवा ले गये। दामोदरपुर मे सब लोगों से भेंट हुई और ग्रामदान पर चर्चा भी चली। बडा सुन्दर कार्यक्रम रहा।

पाँच काम

अगले दिन सवेरे वेनी-पट्टी से निकलने के पहले बाबा ने मंगल वेला में कहा कि "निर्माण की जिम्मेदारी गाँव की अपनी है और है सरकार की हमारे तो पाँच काम हैं: १.ग्रामदान प्राप्त करना, २. उन्हें पक्का करना ३. साहित्य-प्रचार करना, ४. तालीम या प्रशिक्षण देना और ५. सलाह-मशविरा देना। फिर, छठा भी एक काम यह है कि आश्रमों के आस-पास ग्रामदानवाले नमूने के गाँव बनाना।"

पौने सात बजे बाबा मधुबनी पहुँचे। यह 'खादी का मैनचेस्टर' माना जाता है। आस-पास के इलाके में हजारों करघे और चरखे चलते हैं। ध्वजाबाबू ने वहाँ बड़े स्नेहपूर्वक व्यवस्था की थी। इस मौके पर सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध-समिति की बैठक भी वहाँ रखी गयी थी।

११ बजे प्रबंध-समिति के सदस्य बाबा से मिले। बाबा ने कहा कि "मैं जितना ग्रामदान के लिए चिंतित हूँ, उससे ज्यादा खादी के लिए हूँ। मेरी मृत्यु के बाद ग्रामदान तो जरूर होंगे, लेकिन खादी का क्या होगा, कह नहीं सकता।...अहिंसा का 'प्योर साइंस' तो बन चुका है। हमें उसका 'अप्लाइड साइन्स' तैयार करना है।

खादी में सम-वेतन

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में सारे कार्यकर्ता सपरिवार मौजूद थे। उनमें से कुछ भाइयों ने ग्रामदान में काफी काम किया है। प्रबन्ध समिति के सदस्य भी मौजूद थे। बड़ा सुन्दर समागम था। शुरू में ही वह सवाल पूछा गया जो आज बिहार के सारे खादी-जगत् के मानस में गूँज रहा है। वह यह कि 'खादी-कार्यकर्ताओं को सम-वेतन देने का जो आपका प्रस्ताव था, वह आज की स्थिति में कहाँ तक ठीक है?'

मुस्कराते हुए बाबा ने कहा: "वह प्रस्ताव अपनी जगह कायम है। लेकिन उसमें ६०) से १००) वाली जो धारा है, उसमें कुछ फर्क

करने की जरूरत है। इस अरसे में मँहगाई आदि बढ़ने के कारण ६०) के ९०) और १००) के १५०) होने चाहिए। बाकी प्रस्ताव अपनी जगह रहेगा।" यह सुनकर सबके चेहरे पर आनन्द की लहर दौड़ गयी।

मुझे ज्यादा चिन्ता खादी की है

अपनी बात जारी रखते हुए बाबा ने कहा कि "अब यह करने में खादीवालों को क्या तकलीफ होगी, मैं नहीं जानता। मैंने तो कत्तिनों की मजदूरी भी बढ़ाने के लिए कहा था और यह भी बढ़ाने के लिए कह रहा हूँ। यह नहीं होता तो दोनों का शोषण होता है। शोषण भी हो और खादी भी हो तो उसका कोई अर्थ नहीं। कहा जा सकता है कि वेतन और मजदूरी बढ़ने पर खादी की बिक्री कैसे होगी? खादी का ढेर लग जायगा। बेचनेवालों के सामने यह झमेला है ही। इसके लिए खादी का स्वरूप ही बदलना होगा। मुझे ग्रामदान की जितनी चिंता है, उससे कहीं ज्यादा चिंता खादी की है। अगर मेरी मृत्यु के बाद भी ग्रामदान का काम करने को बचा होगा तो लोग उसे पूरा करेंगे। लेकिन खादी पर शंका आती है। अगर आप उसका ढंग नहीं बदलेंगे, तो मेरी मृत्यु के बाद उसे खतम ही समझ। इसलिए अच्छा हो कि खादी का दावा हम जल्द-से जल्द सिद्ध करें।"

हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में प्रेम हो

शाम की आम सभा म १२७ ग्रामदान मिले और ११,५२२ रुपये की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि तुलसीदासजी कह गये हैं कि 'बिनु भय होयू न प्रीत।' अजीब बात बतायी। यह उल्टा दीखता है। लेकिन हमें आशा है कि भारत और पाकिस्तान के बीच भय तो पैदा हो चुका है, इसलिए अब प्रीति भी बन जायगी। एक दूसरे को डर रहेगा कि हम एक दूसरे को दबा नहीं सकते, अब प्रेम के सिवा कोई चारा नहीं। बहुतों को लगता है कि अब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान

का मेल नहीं होगा। लेकिन यह इतिहास के खिलाफ बात है। अब तो प्रेम का आरम्भ होगा। हम चाहते हैं कि दोनों देश मजबूत बनें और एक दूसरे की ऐसी धाक बन जाय कि प्रेम के बिना गति ही न रहे।

"मेरा अपना एक दर्शन है। मैं मानता हूँ कि अहिंसा निर्भयों के लिए है। जिनके हृदय में कंप होता है, उनके लिए अहिंसा नहीं है। निर्भय चित्त को ही अहिंसा का मर्म समझ में आ सकता है। इसलिए हम ग्रामदान की प्रक्रिया लोगों के सामने रख रहे हैं कि सारा गाँव निर्भय हो जाय और प्रेम से रहे। उससे अहिंसा की पक्की बुनियाद बनेगी। मैं चाहता हूँ कि हमारे देशवासी निर्भय बनें और द्वेष न रखें। निर्भय और निर्वैर वृत्ति से काम करें। निर्भयता और निर्वैरता दोनों इकट्ठे हुए बिना अहिंसा नहीं पनपेगी।"

ब्रह्म-विद्या की भूमि में

अन्त में बाबा ने कहा कि "मिथिला में ब्रह्म-विद्या का जन्म हुआ था। ब्रह्म-विद्या का निर्भयता से अत्यन्त निकट का सम्बन्ध है। जहाँ भय है, वहाँ ब्रह्म-विद्या नहीं रह सकती। यह भूमि ब्रह्म-विद्या की भूमि है। मेरा विश्वास है कि ब्रह्म-विद्या का प्रकाशन ग्रामदान द्वारा ही होगा।"

शाम को बाबा के पास पिछले महीने के काम का लेखा-जोखा हुआ। बाबा को बिहार में आये दो महीने पूरे हो रहे थे। पिछले महीने में ३०० गामदान मिले और प्रतिदिन १० का औसत रहा। लेकिन ११ अक्टूबर से १० नवम्बर तकवाले महीने में ११५४ ग्रामदान मिले जिनका औसत ३७ का रहा। इससे पता चलता है कि तूफान की हवा बन रही है।

अगले दिन सबेरे एक घंटा बाबा प्रबन्ध-समिति के साथ बैठे। उसमें उन्होंने कहा: "मेरी भारतीयता वेदमूलक है, जो विश्व-व्यापक है।''' मैं टीका कम किया करता हूँ, यह मेरा अपना दर्शन है। इसे मैंने 'वाक्-शक्ति' नाम दिया है।"

सवा सात बजे बाबा मधुबनी से निकले। रास्ते में रहिका के खादी केन्द्र में ठहरे। वहाँ अम्बर चरखे पर बारीक कताई हो रही थी। बाबा ने कहा कि गाँव गाँव को वस्त्र स्वावलम्बन का सकल्प लेना चाहिए।

दरभगा जिले का आखिरी पडाव लहेरिया सराय मे था, जो दरभगा शहर का हिस्सा है। वहाँ बाबा ९॥ बजे पहुँचे। ११ बजे कम्युनिस्ट मित्र मिलने आये। बेनीपट्टी की सभा मे बाबा का जो शाम को प्रवचन हुआ था, उससे उनको समाधान नहीं हुआ और उन्होंने बाबा से मिलने की इच्छा जाहिर की। शाम को जब वे पडाव पर आये तो प्रार्थना हो चुकी थी और बाबा सोने जा रहे थे। इसलिए ११ नवम्बर को लहेरिया सराय में मिले।

कम्युनिस्ट मित्रों के साथ

बाबा ने कहा कि "हम उस दिन कम्युनिस्टों के बारे में नहा बोल रहे थे। हमारा इशारा एक 'मेन्टेलिटी' की तरफ था। छोटे टोलों म लोग जाते है, लेकिन बड़े गाँव में नहीं। यह एक तरह का अविश्वास है। कम्युनिस्टों ने तो अविश्वास की 'फिलासफी' ही बना रखी है। मैं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी पर कुछ नहीं कह रहा था, बल्कि क्लासवार को कहता था। कहने का मतलब यह था कि बड़े गाँव को नहीं छोडना चाहिए और विश्वास के साथ सबके पास जाना चाहिए।"

कम्युनिस्ट भाई बोले कि "हम यह मानते हैं, हमारा यह विश्वास है कि साम्यवाद की दुनिया में जीत होगी और मानव जाति के लिए वही एक मात्र रास्ता है। ग्रामदान आदोलन को हम उसका पूरक मानते हैं और इसी नाते उसमें साथ भी देते हैं।" इस पर बाबा ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि "आपकी मदद के लिए धन्यवाद है। आपका जो विश्वास है, आपको वही रखना चाहिए। आपने ग्रामदान को पूरक माना है, इसके लिए मैं बहुत शुक्रगुजार हूँ। अपना सिद्धान्त छोडकर आप इधर आयें, यह मैं नहीं चाहता।"

उससे कोई लाभ नहीं। हम कहते है कि ग्रामदान का काम पूरा होने दीजिये, फिर देखिये कि कितनी बेदखली बाकी रहती है।"

दोपहर को कार्यकर्ता गोष्ठी मे बाबा बोले कि "जमीन बेचकर काम करने के माने हैं, कपड जलाकर हाथ तापने की कोशिश करना। उससे चन्द मिनटों के लिए राहत मिलेगी लेकिन फिर और ज्यादा ठढक लगेगी।" एक भाई ने बताया कि "आन्दोलन मे लगे कार्यकर्ताओ के कुटुम्बों की बडी दुर्दशा है।" बाबा ने कहा कि "आपका यह बडा भाग्य है कि बचपन से आप इस आन्दोलन में लगे है। तुकाराम, कबीर, तुलसीदास, पैगम्बर मुहम्मद और खलीफा उमर सबके परिवार बडी चिंताजनक हालत मे ही रहे।"

स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ

ग्राम की आम सभा मे स्वागताध्यक्ष श्री देवकीनन्दन सिंह, एम० एल० सी० ने कहा कि 'वह दिन दूर नहीं, जब सारे दरभगा जिले का ग्रामदान होगा।" आज ३४ ग्रामदान मिले और १४,७००) की थैली। अपने प्रवचन म बाबा ने बताया कि "पहले तो नया विचार सामने आता है, फिर वाणी में प्रेरणा आती है और मनुष्य बोलने लगता है। इसके बाद कृति का आरम्भ होता है। आपने अभी जिला दान की बात सुनी। मुझे विश्वास है कि यह होकर रहेगा और जल्दी होगा।

"मनुष्य के जीवन म तीन चीज होती है १ स्वार्थ २ परार्थ और ३. परमार्थ। मैं यह नहीं चाहता कि आप स्वार्थ की चिन्ता न करें, जरूर करें। लेकिन उसका क्षेत्र घर से लाकर गाँव तक बढा दें। परार्थ कोई अलग चीज नहीं है। परार्थ करना दूरदर्शी स्वार्थ है। अगर दूसरों को देंगे तो अपने आप भी पायेंगे। कबीर साहब ने बताया है :

> पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
> दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।।

"घर मे दाम बढ़ने से और नौका मे पानी बढ़ने से खतरा ही खतरा है। नौका को पानी चाहिए लेकिन नौका के बाहर। दाम चाहिए लेकिन समाज में। ग्रामसभा के पास पैसा हो और आपकी बैंक बन जाय।"

लक्ष्मीबाबू की प्रेरणा

तीसरी चीज है, परमार्थ। परमार्थ तब होता है, जब अपना अहंकार छोड़ देते हैं और अपना काम परमेश्वर को समर्पण कर देते है। माँ बच्चे की सेवा करती है, लेकिन कहती है कि मैं तो कुछ नहीं करती। इसी तरह हर गाँव मे ग्राम-सभा ग्राम-माता बनेगी और उसके द्वारा ग्राम-राज्य आयेगा। लेकिन हमें अहंकार न हो कि हम ग्रामराज्य ला रहे हैं। ग्रामराज्य शून्य होने पर स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ तीनों होने पर, ग्रामराज्य से गर्ववाला 'ग' निकाल दिया तो रामराज्य हो जायगा। मुझे सारा दृश्य दीख रहा है कि बिहार में सामाजिक और आर्थिक क्रांति का आरम्भ हो गया है और वह पूरी होकर रहेगी। लक्ष्मीबाबू की स्मृति में यह पूरा दरभंगा जिला ग्रामदान मे आना चाहिए।"

शाम को कई मित्र बाबा के पास बैठे हुए थे। बाबा के कन्धे पर जयदेवभाई मालिश कर रहे थे। बाबा ने कहा कि "अगर सारे बिहार का दान होता है, तो हमें न देश मे और कहीं जाने की जरूरत होगी और न देश के बाहर ही।"

दरभगा जिले की आठ दिन की इस यात्रा मे ४५४ ग्रामदान मिले और ७१,२७७) की थैली। बाबा की इस यात्रा में सबसे ज्यादा और बढ़ा हुआ नम्बर दरभंगा जिले का ही रहा। वहाँ खादी का काम भी बहुत बड़े पैमाने पर चलता है। आनन्द की बात है कि खादी के मित्रों ने इस आन्दोलन को उठा लिया है। मधुबनी मे जिलेभर के कार्य-कर्ताओं के सामने बोलते हुए श्री ध्वजाबाबू ने ९ नवम्बर की रात में कहा था कि "हम तो जीवन के जुआरी हैं। लक्ष्मीबाबू ने और उनके साथ हम सबने

खादी का काम खड़ा किया, फिर सरकार ने उसको खतम कर दिया। लेकिन यह दुबारा फिर खड़ा हो गया। अब अगर यह स्वाहा होता है तो आप कोई चिन्ता न करें। ४०-५० लाख या करोड़ दो करोड़ के घाटे की परवाह मत कीजिये। खादी तभी टिकेगी, जब ग्रामदान होगा। बिना ग्रामदान के न खादी बचेगी और न हम आप बचेंगे। इसलिए बाबा जो कह रहा है, उसका मर्म समझिये और निष्ठापूर्वक ग्रामदान के काम में कूद पड़िये। खादी दुबारा खड़ी हो जायगी।"

इस तरह दरभंगा जिले में एक नयी प्रेरणा काम कर रही है। कौन जाने कि भू-क्रांति में यह बिहार का और सारे देश का ज्योति स्तम्भ साबित हो। ●

भयानक दशा है और वह अन्दर से अत्यन्त अरक्षित है। इसलिए ग्रामदान में देर नहीं करनी चाहिए।

उत्पादन कैसे बढ़ेगा ?

मुजफ्फरपुर जिले का पहला पड़ाव नरसिंहपुर में था, जहाँ बाबा लहेरिया सराय से पौने आठ बजे पहुँचे। स्वागत के लिए सिंचाई मंत्री श्री महेशबाबू आये थे। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "ग्रामदान में समाज की ओर से व्यक्ति की स्वतन्त्रता की रक्षा होती है और व्यक्ति की ओर से समाज को मिल्कियत का समर्पण होता है। दोनों के मेल के कारण ग्रामदान उत्पादन बढ़ाने और ग्राम व्यवस्था के लिए सबसे बेहतरीन साधन बन गया है। अगर किसीको इससे बेहतर तरीका सूझता हो, तो वह बताये, तो मैं ग्रामदान छोड़कर उस तरीके को अपनाने को तैयार हूँ। उत्पादन बढ़ाने में दो चीज बहुत जरूरी हैं। एक तो जड़-संयोग यानी अच्छा पानी, बीज-खाद आदि की व्यवस्था। दूसरी चेतन-संयोग यानी मालिक, मजदूर और महाजन तीनों का अच्छी तरह संयोग हो। केवल जड़-संयोग अगर हो और चेतन संयोग न रहे, तो काम नहीं बनेगा। चेतन-संयोग का काम सरकार नहीं कर सकती। सरकार अस्पताल खोल सकती है, लेकिन सेवा की भावना पैदा नहीं कर सकती। स्कूल और कॉलेज खोल सकती है, लेकिन अध्ययनशीलता पैदा नहीं कर सकती। गुणों को पैदा करना, चेतन को पैदा करना, सरकार के हाथ का कार्य नहीं। ग्रामदान से यही चेतन-संयोग सधेगा।

"ग्रामदान होने पर खादी बढ़ेगी। सरकार खादी को मदद देती है, लेकिन संरक्षण नहीं देती और बिना संरक्षण के खादी नहीं बढ़ेगी। यह संरक्षण गाँव गाँव ग्रामदान होने और ग्रामसभा बनने पर ही मिलेगा। तीसरी चीज है पीला साफा। हर गाँव में दस बारह शांति-सैनिक हों। इस तरह बिहार में दस लाख शांति-सैनिक हो जायँ, तो फिर अशांति का कोई भय नहीं रहेगा। ग्रामदान, खादी और शांति सेना तीनों मिलकर एक परिपूर्ण विचार बनता है।"

ग्रामदान में देरी घातक सिद्ध होगी : १३ :

"७० साल के ऊपर बाबा की उमर हो चुकी। गृहस्थी में वह कभी नहीं पड़ा। न शादी की, न बाल-बच्चे हैं उसके पीछे रोनेवाले। न कोई उसकी अपनी जायदाद या मिलकियत है। फिर उसे किसी बात की परवाह क्यों होनी चाहिए? लेकिन वह आपको समझाना चाहता है कि भारत खतरे में है। आपको सावधान करना चाहता है, डराना नहीं। चीन और पाकिस्तान के हमले का डर नहीं है, डर है अन्दर के हमले का। बाहर का तो निमित्त हो जाता है। बाहर के हमले का सामना आसान होता है, लेकिन अन्दर के हमले का सामना करना उतना आसान नहीं। अगर अन्दर ही अन्दर देश में असन्तोष बना रहता है तो वह बहुत खतरनाक साबित होगा। यह मत कहियेगा कि बाबा ने यहाँ ग्राम-स्वराज्य की बुनियाद डाली, लेकिन हम उसके बाद काम नहीं कर सके। यहाँ कहा गया कि महात्मा गांधी ने सन् १९२० में एक शिक्षण संस्था की नींव डाली, लेकिन आप कुछ कर नहीं सके। ४५ साल बाद आप यह कह रहे हैं। आश्चर्य लगता है कि नजदीक ही गंगा और गंडक का संगम है। उसमें जाकर आप कूद पड़ते। कौन रोकता था आपको! इसलिए अब नींद से जाग जाइये और तीव्रता के साथ इस काम में लग जाइये। ग्रामदान में देरी करना अत्यन्त घातक सिद्ध होगा।"

उपर्युक्त उद्‌गार बाबा ने मुजफ्फरपुर जिले के आखिरी पड़ाव हाजीपुर में अपने प्रार्थना-प्रवचन में प्रकट किये। इस जिले में आठ दिन यात्रा चली—१२ तारीख से १५ तारीख तक और फिर २४ नवम्बर से २७ तक। जिलेभर में उन्होंने यही चेतावनी दी कि देश की बड़ी

भयानक दशा है और वह अन्दर से अत्यन्त अरक्षित है। इसलिए ग्रामदान में देर नहीं करनी चाहिए।

उत्पादन कैसे बढ़ेगा ?

मुजफ्फरपुर जिले का पहला पडाव नरसिंहपुर में था, जहाँ बाबा लहेरिया सराय से पौने आठ बजे पहुँचे। स्वागत के लिए सिंचाई मंत्री श्री महेशबाबू आये थे। अपने प्रवचन मे बाबा ने कहा कि "ग्रामदान में समाज की ओर से व्यक्ति की स्वतन्त्रता की रक्षा होती है और व्यक्ति की ओर से समाज को मिल्कियत का समर्पण होता है। दोनों के मेल के कारण ग्रामदान उत्पादन बढाने और ग्राम-व्यवस्था के लिए सबसे बेहतरीन साधन बन गया है। अगर किसीको इससे बेहतर तरीका सूझता हो, तो वह बताये, तो मैं ग्रामदान छोडकर उस तरीके को अपनाने को तैयार हूँ। उत्पादन बढाने मे दो चीज बहुत जरूरी हैं। एक तो जड-सयोग यानी अच्छा पानी, बीज खाद आदि की व्यवस्था। दूसरी चेतन-सयोग यानी मालिक, मजदूर और महाजन तीनों का अच्छी तरह सयोग हो। केवल जड-सयोग अगर हो और चेतन सयोग न रहे, तो काम नहीं बनेगा। चेतन-सयोग का काम सरकार नहीं कर सकती। सरकार अस्पताल खोल सकती है, लेकिन सेवा की भावना पैदा नहीं कर सकती। स्कूल और कॉलेज खोल सकती है, लेकिन अध्ययनशीलता पैदा नहीं कर सकती। गुणों को पैदा करना, चेतन को पैदा करना, सरकार के हाथ का कार्य नहीं। ग्रामदान से यही चेतन-सयोग सधेगा।

"ग्रामदान होने पर खादी बढेगी। सरकार खादी को मदद देती है, लेकिन सरक्षण नहीं देती और बिना सरक्षण के खादी नहीं बढेगी। यह सरक्षण गाँव गाँव ग्रामदान होने और ग्रामसभा बनने पर ही मिलेगा। तीसरी चीज है पीला साफा। हर गाँव में दस बारह शांति-सैनिक हो। इस तरह बिहार में दस लाख शांति सैनिक हो जायँ, तो फिर अशांति का कोई भय नहीं रहेगा। ग्रामदान, खादी और शांति-सेना तीनों मिलकर एक परिपूर्ण विचार बनता है।"

इस प्रवचन के बाद महेशबाबू ने बाबा से कहा कि "मैं विचार को अच्छी तरह समझ गया और ग्रामदान-आन्दोलन में पूरा सहयोग करूँगा।"

यह खतरनाक परमेश्वर

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "अपने यहाँ 'पंच-बोले परमेश्वर' चलता था। लेकिन अब चला है 'चार बोले परमेश्वर' और 'तीन बोले परमेश्वर।' यह परमेश्वर पश्चिम से आया और बड़ा खतरनाक है। इसके कारण जहाँ-तहाँ टुकड़े हो गये हैं।"

शाम की आम सभा में २५ ग्रामदान दिये गये और १५१५) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "भारत का राष्ट्राभिमान विश्व-प्रेम की बराबरी में आता है। यहाँ १५ भाषाओं और ७ धर्मों के लोग इकट्ठा हैं। हमारा गणतन्त्र दुनिया में सबसे बड़ा है, जिसमें चुनाव स्वतंत्र रूप से होते हैं, न्याय की अदालतों पर कोई दबाव नहीं है और मत-प्रकाशन या विचारों की आजादी है। हमारी यह शक्ति ही कमजोरी बन सकती है। इसलिए बहुत जरूरत है कि देश में एकता रहे और गरीबी मिटे।···" खादी के बारे में बोलते हुए कहा कि "पं० नेहरू ने इसे स्वराज्य की पोशाक कहा था। अब हमें इसे ग्राम-स्वराज्य की पोशाक बनाना है। गाँव-गाँव का ग्रामदान होने पर लोग खादी के लिए संकल्प करेंगे और गाँव का हर मनुष्य खादीधारी बनेगा······ हर गाँव में हर मनुष्य खादी पहने, हर गाँव में शांति-सैनिक हों और हर गाँव में लोग परिवार की तरह रहें और मिल-जुलकर काम करें। ये तीनों बातें होने पर ही गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य होगा और राष्ट्र मजबूत होगा। इसलिए हम चाहते हैं कि सारा जिला ग्राम-स्वराज्य में आ जाय।"

क्रान्ति की पुकार

अगले दिन मंगलवेला में बोलते हुए बाबा ने नरसिंहपुर में कहा कि "कभी-कभी उपचार में रोगी को और भी ज्यादा कमजोर किया

जाता है। इसे 'प्रोसेस आफ एलिमिनेशन' कहते हैं। इस प्रोसेस में थोडी देर के लिए खादी का कम होना भी सभव है। लेकिन उससे डरना नहीं है। क्रातियाँ हमेशा खतरे मे कूदकर होती हैं। अगर पुराने ढग से काम होगा तो खादी बढनेवाली नहीं, बल्कि खतम होनेवाली है।"

६ बजे नरसिंहपुर से निकलकर ठीक ९ बजे बाबा सीतामढी पहुँचे। कॉलेज के हाल म स्वागत-सभा थी। दीवार पर लिखा हुआ था कि 'सोचा हुआ नहीं, किया हुआ काम आता है।' बाबा ने कहा कि "अब कहने की बात नहीं, करने की बात है। अगर इस प्रखड का ग्रामदान होता है, तो भारत में उसकी महिमा गाने का मौका मिलेगा।"

संतति-नियोजन से हानि

दोपहर को ११॥ बजे हरविलासबहन (अध्यक्ष, गुजरात सर्वोदय मण्डल) और प्रबोध चौकसी (जो काशी में गाधी विद्या-स्थान में काम करते हैं) ने बाबा को प्रश्न लिखकर दिये। बाबा ने कहा कि "हम तो परमेश्वर का नाम लेकर निकले हैं नहीं तो शाति से ब्रह्म विद्या-मदिर में बैठे थे। उस हालत में बिहार के लोगों को देखकर प्रेरणा हुई। यहाँ के खादी-कार्यकर्ता रिवोल्टिंग माइण्ड के हैं, झोंकनेवाले हैं।" फिर सतति नियोजन के बारे मे बाबा ने विचार प्रकट करते हुए उसे बहुत हानिकारक बताया और कहा कि "पति-पत्नी-सयोग की जो पवित्रता है, उसी पर यह प्रहार है। साथ ही माता के आत्म-तत्त्व का भी हनन होता है।"

दो बजे जब बाबा कार्यकर्ता-सभा में पहुँचे तो कुछ भाइयो ने कागज दिया, जिसम यह शिकायत की गयी थी कि 'हमसे धोखे मे ग्राम-दान लिया गया और बताया नहीं गया।' बाबा ने कहा कि "ऐसा नहीं होना चाहिए। जो लोग ग्रामदान मे शामिल नहीं होना चाहते, उसे उन पर लादा नहीं जायगा। यह अपनी मरजी की बात है। कार्यकर्ताओं को समझना चाहिए कि इस तरह दस्तखत लेने में

कोई सार नहीं, क्योंकि बाद में ग्रामदान की पुष्टि के लिए सरकारी तहकीकात होगी। उसमें जो टिकेंगे, वे ही ग्रामदान मान्य होंगे। अगर बाद में यह मालूम हुआ कि फलाँ जगह के ग्रामदान कच्चे थे, तो उसमें कार्यकर्ताओं की बदनामी और बड़ी फजीहत होगी। इसलिए बहुत सावधानी की जरूरत है।"

रोज यात्रा में बाबा को जो थैली मिलती है, उसके उपयोग के बारे में किसी भाई ने सवाल पूछा तो बाबा ने कहा : "इसका उपयोग ग्राम-दान में ही किया जाता है। कार्यकर्ताओं को चाहिए कि लोगों के सामने बाकायदा हिसाब पेश करें, ताकि सबको पता चले कि किस तरह उप-योग किया जा रहा है।"

असम के दो भाई ११ तारीख से साथ थे। आज जाते समय वे बाबा से मिले और बोले कि "पदयात्रा में जो आनन्द था, वह इस यात्रा में नहीं।" बाबा ने कबूल किया और कहा कि "मोटर-यात्रा में हम अपने को अपग्रेड नहीं, डिग्रेड समझते हैं। ईश्वर का इशारा समझकर मोटर-यात्रा शुरू की।" उन मित्रों से कहा कि "असम में यह काम होना चाहिए।"

हनुमान्-जयन्ती के दिन शादियाँ हों

शाम को आम सभा में ४१ ग्रामदान दिये गये, ११ हजार की थैली और सूत की कुछ गुंडियाँ भी थीं। स्वागताध्यक्ष ने कहा कि "हमने १५१ का इरादा किया था, लेकिन बाद में अपनी शक्ति देखकर ५१ का तय किया। पर उसमें भी १० कम रह गये।" अपने प्रवचन में बाबा बोले कि "मुझे तो ४१ जैसा बड़ा आँकड़ा भी नहीं चाहिए। एक छोटा-सा आँकड़ा काफी है। अपने एक प्रखंड का दान करेंगे तो मुझे बड़ा आनन्द होगा।"

इसके बाद बाबा ने कहा कि "बिहार में अक्सर यह सवाल उठता है कि ग्रामदान में जमीन की मालकियत ग्राम-सभा को सुपुर्द करने पर शादी

मे क्या करेंगे ? मेरी समझ मे नहीं आता कि लड़के को लड़की चाहिए और लड़की को लड़का, तो फिर उसमें क्या बाधा है ? कहते हैं, सामान चाहिए, पैसा चाहिए। इसका एक बड़ा सुन्दर हल है, वह यह कि गाँव की कुल शादियाँ हनुमान् जयन्ती के दिन होनी चाहिए। शनि, मंगल, राहु, केतु आदि जितने ग्रह हैं वे सबके सब और सूर्य भी हनुमान् से डरता है। सारे ग्रह हनुमान् जयन्ती के दिन एक दम अनुकूल हैं। महावीर के सामने किसीकी कुछ नहीं चलेगी। रामजी का काम भी हनुमान् के बिना नहीं होता। तुलसीदासजी राम के बहुत भक्त थे, लेकिन उन्होंने भी संकट के समय प्रार्थना संकटमोचनकी की और 'हनुमान चालीसा' लिखा। इसलिए हमारा सुझाव है कि महावीर जयन्ती पर शादी करो और कोई ज्योतिषी इसके खिलाफ कहे तो उसे बाबा के सामने खड़ा कर दो। मुसलमानों की शादी उसी दिन हो। कुरान से फातिहा पढ़ा तो मुसलमान की शादी हो गयी और वेद से मंत्र बोले तो हिन्दू की शादी। डबल आशीर्वाद हासिल होगा। किसीका कुछ नुकसान नहीं। ईसाइयों की शादी उसी दिन हो सकती है। इस तरह सबको सबके आशीर्वाद मिलेंगे।

'किसी शादी मे कम आनन्द, कम उत्सव मनाया जाय और किसी मे ज्यादा, यह गलत और धर्म के विरुद्ध बात है। शादी संतान प्राप्ति के लिए होती है। दरिद्र के घर में दरिद्री का जन्म होना और श्रीमान् के घर बड़े का जन्म होना कोई जरूरी नहीं। शंकराचार्य दरिद्र के घर मे पैदा हुए और महात्मा गौतम बुद्ध राज घराने में। इसलिए गरीब हो या अमीर, हर शादी को बराबर आशीर्वाद मिलना चाहिए, बराबर उत्सव होना चाहिए। उस हालत में संतान कल्याणकारी उत्पन्न होगी और सबका मंगल होगा।"

शाम को ध्वजाबाबू ने बाबा से स्थानीय सरकारी अधिकारियों की भेंट करायी। बाबा ने उनसे कहा कि "हम आप सबका सहयोग चाहते हैं। इसका हमें 'टोटल एफर्ट' करना है।"

कालेज के प्रिन्सिपल तथा कुछ शिक्षक भी बाबा से मिले। बाबा ने माँग की कि "चालीस के पीछे एक शिक्षक ग्रामदान में लगे और उसके वेतन का भार बाकी शिक्षक मिलकर उठायें।"

खुद गतिमान् हो जाइये

१४ तारीख को सवेरे सीतामढ़ी में किसीने पूछा कि "आंदोलन को गतिमान् कैसे बनाया जाय?" तो बाबा बोले : "खुद गतिमान् हो जाइये। अपने को गतिमान् बनाने से आंदोलन आगे बढ़ेगा।"

आज पुपरी में पड़ाव था। दूरी केवल १६ मील की थी। रास्ते में बिहार खादी ग्रामोद्योग-संघ के बाजपट्टी केन्द्र के मकान की बुनियाद रखवायी गयी। बाबा ने कहा कि "जो काम हमसे यहाँ कराया जा रहा है, उसीके लिए हम बिहार आये हैं। ईंट रख देने से मकान की बुनियाद खड़ी हो जायगी, लेकिन खादी की बुनियाद ग्रामदान से ही खड़ी होगी।"

चार तरह के प्रवाह

पुपरी पहुँचकर स्वागत-सभा में बाबा बोले कि "चार प्रवाह होते हैं : पहला, व्यक्ति का स्वार्थ-प्रवाह; दूसरा, समाज का प्रवाह; तीसरा, काल का प्रवाह और चौथा, ईश्वरीय संकल्प का प्रवाह। इनमें ईश्वरीय संकल्प का प्रवाह और काल-प्रवाह दोनों ग्रामदान के अनुकूल हैं। समाज का प्रवाह आधा अनुकूल है और व्यक्ति असमंजस में है। हमें विश्वास है कि यहाँ काम होगा।"

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "आज जो चल रहा है, उससे वर्ग-संघर्ष जरूर बेहतर है। लेकिन बाबा के पास उससे भी बेहतरीन चीज है। उससे वर्ग-निराकरण होगा। दरअसल हिन्दुस्तान में वर्ग हैं ही नहीं। यह वर्ग-संघर्ष की बात यूरोप से आयी है। हमें तो आपस में प्रेम फैलाने का काम करना है। गरीब ग्रामदान से डरते हैं कि

कहीं अमीर लोग ग्रामदान द्वारा उनको दबाना न शुरू कर दें। अमीर यह डरते हैं कि ग्रामसभा में बहुमत होने के कारण गरीब हमें न दबायें। इससे बाबा इस नतीजे पर पहुँचता है कि ग्रामदान उत्तम काम है। बाबा दोनों के हाथ मिला रहा है।"

पंडित नेहरू को श्रद्धांजलि

आज शाम की आमसभा साढ़े तीन बजे शुरू हुई। १५ गाँव ग्रामदान में मिले। जिनमें पाँच की आबादी एक हजार से ऊपर है। इन पाँचों में दो गाँव दो हजार से ज्यादावाले हैं। थैली ५००१) की दी गयी। अपने प्रवचन में बाबा ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि "वे इतिहास के बहुत बड़े आदमी माने जायँगे। बँटवारे के समय बड़ी मुसीबत आयीं, लेकिन पण्डितजी ने हिम्मत के साथ काम किया। सबसे बड़ी बात यह कि भारत की एकता कायम रखी। निरन्तर उसी कोशिश में लगे रहे। किसी जमात, प्रान्त, भाषा, धर्म के लिए उन्हें कोई पक्षपात नहीं था। सबसे समान व्यवहार और समान प्यार करते। दूसरे देशों के साथ भी प्रेम का व्यवहार रखने की कोशिश करते। जो जो देश आजाद हो रहे थे, उनकी आजादी के लिए उन्होंने अपना बल दिया और इस प्रकार शान्ति की ताकत बनाने में पूरा योगदान किया। पण्डितजी द्वेष-मुक्त और निर्वैर थे। जैसे पुराने जमाने में महाराज अशोक हो गये, उसी कोटि के पंडित नेहरू थे।"

बाबा से पंडितजी की आखिरी मुलाकात महाप्रभु ईसा की जयन्ती के अवसर पर, २५ दिसम्बर, १९६२ को नवग्राम (प० बंगाल) में हुई थी। उसका जिक्र करते हुए बाबा ने बताया कि "शाम को हम दोनों की सभा हुई। थोड़े में मैंने विचार रखा और फिर पंडितजी ने अपना भाषण किया। उन्होंने कहा कि "बाहर से चीन के हमले का मुकाबला करना आसान है, लेकिन देश के अन्दर अन्दर गरीबी का सवाल हल करना मुश्किल है। उसके लिए ग्रामदान से बहुत मदद

मिलेगी। इसलिए आप ग्रामदान में शामिल हों।" पंडितजी का यह प्रसंग सुनाकर बाबा ने अपील की कि "प्रखंड-दान कीजिये, अखंड-दान कीजिये, बिहार-दान कीजिये।"

१५ नवम्बर को आठ बजे बाबा मुजफ्फरपुर पहुँचे। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के प्रधान कार्यालय, सर्वोदय ग्राम में निवास था। बाबा ने वहाँ कहा कि "सौ आदमी पीछे एक शान्ति-सैनिक यानी मुजफ्फरपुर में, जिसकी आबादी सवा लाख है, १२०० पीले साफे होने चाहिए।"

कायर का नहीं काम रे !

११ बजे ध्वजाबाबू और संघ के प्रमुख कार्यकर्ता बाबा से मिले। बाबा ने उनसे कहा कि "आप जितना समेट सकते हैं, उतना समेटकर ग्रामदान में लग जायँ।"

सिर पर बाँध कफन जो निकले, बिनु सोचे परिणाम रे।
कायर का नहिं काम रे !

"मेरी यह अपेक्षा नहीं कि सब काम छोड़कर, फूँककर चल पड़े। लेकिन जितना हो सके, उतने, ज्यादा-से-ज्यादा कार्यकर्ता आप निकालें। फिर यह भी हो सकता है कि सबको अनुभव होना चाहिए और जिन पर बहुत जिम्मेदारी है उन पर लगातार छोड़ भी नहीं सकते। इसलिए कुछ कार्यकर्ताओं को दो महीने के लिए भेजा। फिर वे वापस आ गये और दूसरों को दो महीने के लिए भेजा, इस तरह होना चाहिए। कार्यकर्ताओं के शिक्षण की दृष्टि से भी यह अच्छा होगा।"

बाबा ने आगे कहा कि "चुनाव से मेरे काम में जरा भी फर्क नहीं पड़ता। एक दफा तमिलनाड में मुझे कुछ लोगों ने कहा कि अभी चुनाव का जोर है तो १५-२० दिन आप एक जगह ठहरिये, यात्रा कुछ दिन बन्द रखिये। उस समय मैं वेदों का अध्ययन कर रहा था। तो मैंने उनसे कहा कि आज सुबह मैं वेदाभ्यास करता था, तो मेरे हाथ पर एक मक्खी बैठ गयी। अब उसके लिए क्या मैं वेदाभ्यास बन्द कर दूँ। मक्खी

को मैंने यों उड़ा दिया और वेदाभ्यास जारी रखा। तो यह चुनाव तो मस्ती है। हम इसमें भाग लेते नहीं। लेकिन कोई अगर ग्रामदान का लाभ चुनाव के लिए ले और चुनकर आये तो हम उसका द्वेष नहीं होना चाहिए।"

सिक्किम के मित्रों के साथ

इसके बाद सिक्किम के सात युवक खादी कार्यकर्ता (जिनमें ५ भाई और दो बहिन थी) बाबा से मिले। साथ में श्री वीरेन्द्र प्रसाद वर्मा (सहायक सचालक सिक्किम खादी ग्रामोद्योग प्रशिक्षण-योजना) भी थे। सौभाग्य से श्री वैद्यनाथ चौधरीजी भी मौजूद थे।

सिक्किम के मित्रों ने वहाँ जो काम चल रहा है, उसकी लिखित जानकारी दी। उसे पढ़कर बाबा बोले "हम चाहते हैं सिक्किम और भूटान में खादी का जोरदार काम चले। दोनों हमारी सीमा में हैं। वहाँ के गरीबों को अगर मदद पहुँचती है तो सब लोग प्रसन्न रहेंगे। अगर सीमा पर लोग प्रसन्न रहते हैं, तो देश बलवान् बनता है। इसलिए सिक्किम और भूटान में खादी का काम खूब चले और वे हमारे 'गुड विल मिशन' बनें।"

श्री वैद्यनाथबाबू ने बताया कि "इनके खादी-काम को मदद नहीं मिल रही है। शायद बन्द करने की नौबत आ जाय।"

इस पर बाबा ने कहा "सीमा प्रदेश बचाने के लिए लाखों रुपया खर्च करना पड़ता है। तब सरकार खादी-काम के लिए भी खर्च करे तो अच्छा है। बाबा की सिफारिश है कि कमीशन उसे मदद करे। खादी कमीशन का क्षेत्र तो भारत है। इस हालत में सिक्किम को मदद देने के लिए भारत-सरकार को आगे आना चाहिए। सुरक्षा विभाग उसे मदद दे।"

इसके बाद बाबा बोले "यह जो हिन्दुस्तान का बजट बनता है, तो १००० करोड़ रुपये सेना पर खर्च बताया जाता है। पाकिस्तान भी

लगभग ३०० करोड़ रुपये सेना पर खर्च करता है। दोनों तय कर लें कि पाकिस्तान के गरीबों के लिए हिन्दुस्तान एक हजार करोड़ रुपया खर्च करेगा और पाकिस्तान जरूरत पड़ने पर हिन्दुस्तान के गरीबों के लिए तीन सौ करोड़ रुपये खर्च करेगा। आज जो भय-खाते चल रहे हैं वे प्रेम खाते हो जायँ। इसे रस्किन ने नाम दिया है—"वाइंग पैनिक आफ ईच अदर।"

वैद्यनाथबाबू ने बताया कि "संकट के काल में रिलीफ आदि की मदद देते हैं।" बाबा ने कहा कि "हाँ, ऐसा होता है। कुछ प्राकृतिक संकट आ जाता है, तो थोड़ी मदद देते हैं। लेकिन खादी को तो अच्छी तरह मदद करनी चाहिए और सिक्किम और भूटान में यह काम खूब बढ़ना चाहिए।"

आज कटक से माता रमादेवी और आचार्य हरिहरदास का तार बाबा के पास आया—"रिस्पेक्टफुली इनवाइटेड उड़ीसा २००० ग्रामदान।" बाबा ने तय किया है कि २१ दिसम्बर से १६ जनवरी तक का समय उड़ीसा में देंगे और १७ जनवरी को फिर बिहार लौट आयेंगे।

महिलाएँ सत्याग्रह करें

तीसरे पहर कार्यकर्ता-सभा में सर्वोदय ग्राम के मित्र सपरिवार जमा थे। कतिनों की तरफ से सवाल आया कि ग्रामदान के लिए हम तो तैयार हैं, लेकिन हमारे घर के पुरुष तैयार नहीं होते। बाबा ने कहा कि "इसके लिए तो महात्मा गांधी ने प्रेम का शस्त्र दिया है। आप सत्याग्रह करें तो पति-देवता पर असर पड़ेगा। आप खाना खुद न खाकर उनको खिलायेंगी तो उनका हृदय पसीजेगा। रोज बराबर उनको रसोई बनाकर दीजिये, प्रेम से परोसिये और खुद न खाइये तो पतिदेव जल्दी ही ग्रामदान को राजी हो जायेंगे।"

शाम की आम सभा में बिहार के सिंचाई-मंत्री श्री महेशबाबू ने १५ ग्रामदान और १०००१) की थैली भेंट दी। अपने प्रवचन में बाबा ने

कहा कि हमें पथ मुक्त नगर पालिका बनारस नगरी में नगर स्वराज्य लाना है, और गाँव में ग्राम स्वराज्य।

काल-पुरुष की माँग

"मेरी आशा है कि बिहार ग्रामदान होगा। लेकिन लोग कहते हैं कि बाबा को इतनी उतावली क्यों है। धीरे धीरे काम होने में बाबा का कुछ नहीं बिगडता। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि काल पुरुष को धीरज नहीं है। वह धीरज रखने को तैयार नहीं है। आप काल पुरुष से प्रमाण-पत्र लाइये कि आज से १० साल तक कहां कुछ शांति या बिगाड नहीं होगा, तो मैं धीरज रखने को तैयार हूँ। बाडुंग सम्मेलन की आप को याद होगी। बड़ी आशाएँ बाँधी गयी थी कि अफ्रीका और एशिया एक होगा। उस समय मैंने कहा था कि टुकड़ों में सोचना खतरनाक होता है। कुल दुनिया एक होनी चाहिए। खैर, आप जानते हैं कि परिणाम क्या आया। बाडुंग की स्प्रिट ही एक धक्के में खतम हो गयी। इससे आप समझ सकते हैं कि जमाना कितनी तेजी से बदल रहा है। आज जरूरत तीव्रता की है। गौतम बुद्ध ने कहा है कि 'धर्म का काम अगर तेज गति से नहीं होता, तो पाप को प्रोत्साहन मिलता है।'

'इसलिए अब देर की गुंजाइश नहीं है। कानून में कहा जाता है कि 'जस्टिस डिलेड इज जस्टिस डिनाइड' (न्याय में देरी करना न्याय से वंचित करना है), उसी तरह मैं कहता हूँ कि 'ग्राम स्वराज्य डिलेड इज ग्राम-स्वराज्य डिनाइड'–(ग्राम स्वराज्य में देरी करना ग्राम-स्वराज्य से वंचित करना है)। इसलिए मुझे जल्दी है। परिस्थिति का कोई भरोसा नहीं। भारत के आस-पास आप क्या देखते हैं? पाकिस्तान में सैनिक राज्य है। बर्मा, नेपाल, चीन, इंडोनेशिया, रूस, मिश्र आदि का भी यही हाल है। आपके इर्द गिर्द सैनिक राज्य हैं। आक्रमण से बचाने के लिए आपने सेना बढ़ायी है। लेकिन अगर सेना का ही आक्रमण हो, तो सेना से आपको कौन बचायेगा। उस समय ये जो मिट्टी के पुतले, जिन्हें 'मिनिस्टर'

नाम दिया जाता है, कमजोर साबित होंगे। इसलिए मुझे उतावली है। रात-दिन यही चिन्ता है कि देश कैसे सुरक्षित और मजबूत बने। भगवान् ऐसी तीव्रता आप सबको दे।"

इसके बाद आठ दिन चम्पारन जिले में बिताने के बाद २४ नवम्बर को मुजफ्फरपुर जिले के मोतीपुर गाँव में पड़ाव था। बाबा वहाँ पौने आठ बजे पहुँचे। उन्होंने कहा कि "इस जगह के लोगों में जोड़ने की वृत्ति मालूम पड़ती है—मोतीहारी से 'मोती' और मुजफ्फरपुर से 'पुर' लेकर आपने मोतीपुर बनाया है। इसी तरह हमारा काम एक दूसरे को जोड़ने का है।"

साढ़े ग्यारह बजे श्री नवलबाबू, जो इस क्षेत्र के रहनेवाले हैं और बिहार में राज्य-मंत्री हैं बाबा से मिले। उन्होंने बताया कि "जिस तरह कांग्रेसवाले भूदान आंदोलन में लगे थे, उस जोर-शोर के साथ ग्रामदान में नहीं लगे हैं।" बाबा बोले कि "फिर भी मैं लोगों के उपकार मानता हूँ, जो इसमें समय दे रहे हैं। अगर प्रान्तीय कांग्रेस ग्रामदान का संकल्प जाहिर करने का प्रस्ताव करती है, तो अच्छा होगा और काम बढ़ेगा।"

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में एक भाई ने पूछा कि "एक क्षेत्र लेकर नमूने का काम कर दिखलाने का अच्छा असर पड़ेगा!" बाबा बोले कि "यह तो क्रान्ति करनेवाले आदमी को रोकने की युक्ति है। उससे जनकल्याण का काम होगा, क्रान्ति रुक जायगी। इसलिए ऐसे मोह-जाल में मैं कभी नहीं फँसता। हमें समझ लेना चाहिए कि निर्माण का काम ग्रामसभा और सरकार का है।"

अठारह साल तो निकल गये

शाम की आम सभा में ४ ग्रामदान दिये गये और ६३७१) की थैली। बाबा ने अपने प्रवचन में कहा : "मुझे इसका आश्चर्य नहीं कि राजनीतिक पक्षों को ग्रामदान का काम उठाने में समय लग रहा है। उनका दिमाग उलटे रहता है। उलटे दिमाग को आसान चीज भी

है, जितना यूरोपवालों का गया। आत्मज्ञान की भी हम तोते की तरह रटन लगाते हैं, लेकिन उसे खो बैठे हैं। वह ग्रन्थों में रह गया है। अगर विज्ञान अध्यात्म के अंकुश में रहे, तो खूब प्रगति होगी। ग्राम-दान से बुनियाद बनती है, जिसके आधार पर मकान खड़ा किया जा सकता है।"

दिन में ११ बजे से कार्यकर्ता-सभा हुई। बाबा ने बड़े दुःख के साथ कहा कि "अन्न, सुरक्षा और शिक्षा तीनों में बड़ी-'बंगलिंग' हुई है। अब कुछ चेतना आ रही है और इन चीजों पर ध्यान दिया जा रहा है।... लगान गल्ले में लिया जाय और पैसे की शकल में लेना बन्द हो। अगर लोग लगान में सोना देंगे तो आप लेंगे या नहीं? अनाज तो सोने से भी ज्यादा बहुमूल्य है।"

मनुभाई पंचोली के साथ

दोपहर को दो बजे मनुभाई पंचोली के साथ बातचीत हुई। बाबा ने कहा कि "गुजरात और सौराष्ट्र में काम चलना चाहिए, लेकिन मेरी इन्तजारी न की जाय।" उन्होंने कुछ आध्यात्मिक प्रश्न भी पूछे थे। बाबा ने बापू का अनुभव देते हुए कहा कि "सन् १९३२ में हरिजन-उपवास के पहले बापू का संवाद हुआ था और स्पष्ट आज्ञा मिली थी। इसी तरह से दर्शन भी हो सकते हैं। कुंदर दीवान ने अपनी एक किताब 'विनोबा के जंगम विद्यापीठ' में मेरे कुछ अनुभवों का जिक्र किया है।...इनरवाइस या दर्शन सब कुछ संभव है, क्योंकि कोई मर्यादा नहीं हो सकती।"

आज पड़ाव पर इस बात की बड़ी चर्चा रही कि इस क्षेत्र में ग्राम-दान का विरोध किया गया है और एक जगह तो कार्यकर्ता से ग्रामदान के संकल्प-पत्र आदि कागजात भी छीन लिये गये।

सामाजिक प्रेरणा

शाम की आम सभा में नवलराय ने १० ग्रामदान भेंट किये और ५००१) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "हजारों वर्षों की

पराधीनता के कारण हम लोग अक्सर उदासीन रह जाते हैं और कोई खास प्रेरणा नहीं होती। लेकिन अब स्वराज्य के बाद सामूहिक प्रेरणा बननी चाहिए। कुछ लोगों ने स्वार्थ की प्रेरणा से कुछ काम किया। अब ग्रामदान द्वारा सामाजिक प्रेरणा आयेगी।"

काल करे सो आज कर

क्षेत्र के विरोध का हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि "मैं सुनता हूँ कि लोग विरोध करते हैं, तो मुझे बड़ा उपकार मालूम होता है। विचार से विरोध करें और उनके विचार में लेनेलायक कुछ हो, तो हम ले सकते हैं। नहीं तो उनकी दुरुस्ती कर सकते हैं। यह हमारा धंधा ही है, विचार परिवर्तन का। बार बार समझाना हमारा धर्म और हमारा धंधा है। तो यह सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। विरोधी लोगों को हम दावत देते हैं और कहते हैं कि चर्चा करने के लिए आ जाइये। हम खुले दिल से चर्चा करेंगे। अगर मैं कन्वर्ट हुआ, तो मैं आपके साथ हो जाऊँगा और आप 'कन्वर्ट' हुए तो आप इस काम में लग जाइये।

"अगर गाँव गाँव ग्राम स्वराज्य होता है और गाँव के लोग गाँव का आयोजन करते हैं, तो उत्पादन बढ़ेगा। अब नन्दाजी कह रहे हैं कि सन् १९७१ के बाद हम अनाज बाहर से नहीं मँगवायेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा करनी चाहिए। पर ऐसी प्रतिज्ञा से क्या होनेवाला है? प्रतिज्ञा करनेवाले भी क्या तब तक सुनिश्चित रहनेवाले हैं? इसलिए '*काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।*' हम कहना चाहते हैं कि यह आन्दोलन बिहार और भारत के लिए तारनहार है। इसके अलावा और कुछ करना ही नहीं पड़ेगा, ऐसा मैं नहीं कहता। लेकिन इससे बहुत काम होगा।"

महावीर स्वामी की देन

अगले दिन ६। बजे बाबा सरैया से निकलकर १९ मिनट में वैशाली के प्राकृत, जैन शास्त्र तथा अहिंसा शोध-संस्थान पहुँच गये। वहाँ संस्थान की ओर से उनका स्वागत किया गया और उसके प्रकाशन

भेट किये गये। बाबा ने अपने प्रवचन में कहा कि "महावीर स्वामी की पद्धति प्रहार की नहीं, उपहार की थी। उनकी एक विशेष जीवन-दृष्टि थी, जिसे 'मध्यस्थ-दृष्टि' कहा जायगा। विचार का आग्रह रखना भी हिंसा हो जाता है।" उन्होंने यह भी कहा कि "यहाँ अहिंसा की व्यापक शोध होनी चाहिए और ग्रामदान को 'अप्लाइड साइंस' का प्रयोग मानना चाहिए।"

८॥ बजे बाबा पड़ाव पर पहुँचे। उन्होंने कहा कि "अभी तक जो छिटपुट-ग्रामदान मिले, वह तो बटोरना है। पहले कदम के तौर पर यह ठीक है। लेकिन अब तो इसके आगे पीले साफेवालों की नियमित सेना बननी चाहिए, जो बाकायदा आगे बढ़े और प्रखंड-दान और अखंड-दान प्राप्त करे।"

कार्यकर्ताओं की सभा में बाबा ने कहा कि "मनुष्य के विकास में बाधक चीज व्यापक आत्म-भावना का न होना है। हमें उम्मीद है कि ग्रामदान से यह भावना व्यापक बनेगी और मनुष्य का विकास भी होगा।"

मांसाहार मिटा दें

आज की सभा में १० ग्रामदान दिये गये और १६०५) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "महावीर स्वामी के चरण-चिह्नों पर ही हमारा यह ग्रामदान का आन्दोलन है। वैशाली क्षेत्र के सब लोगों पर जिम्मेदारी आती है कि वे पीला साफा पहनें और ग्रामदान के लिए पराकाष्ठा का प्रयत्न करें। इस क्षेत्र से मांसाहार भी मिट जाना चाहिए। आज भी यहाँ नियमित रूप से मांस खानेवाले बहुत थोड़े लोग हैं। चाहे वे कभी-कभी खाते हों, पर वह भी स्वेच्छा से बन्द होना चाहिए।

मध्यस्थ दृष्टि चाहिए

आज के जमाने में मध्यस्थ दृष्टि की बहुत आवश्यकता है। सभी कहते हैं कि लड़ाई हम इसलिए करते हैं, ताकि लड़ाई बन्द हो। सत्य

बडा बदमाश होता है। उसका थोडा अंश इधर होता है, तो थोडा उधर भी। पूरा सत्व किसीके पास नहीं होता। सत्याग्रही बनने के पहले हमें सत्यग्राही बनना पड़ेगा। महावीर परम कारुणिक, अत्यन्त अनाग्रही और मध्यस्थ दृष्टि-सम्पन्न थे। मैं देखना चाहता हूँ और वे भी देखना चाहते होंगे कि यहाँ की प्रजा में महावीर के कुछ लक्षण दीख रहे हैं या नहीं।"

अन्त में बाबा ने कहा : "आपको इस क्षेत्र में तीन बातें करनी हैं। १. पीला साफा पहनिये, २. पूरा प्रखंड दान दीजिये और ३. मांसाहार छोड़िये। इसमें शराब तो छोड़नी ही होगी, कहने की जरूरत नहीं। हमें विश्वास है कि इस क्षेत्र में ग्रामदान का काम पूरा होगा।"

सर्वोदय की पोलिटिकल फिलासफी

जिले का आखिरी पडाव हाजीपुर में था। ७ बजे बाबा वहाँ पहुँचे। गांधी स्मारक निधि की बिहार शाखा के संचालक श्री सरयू बाबू ने स्वागत करते हुए खेद प्रकट किया कि "क्षेत्र में ज्यादा काम नहीं हो सका।" अपने प्रवचन में बाबा ने राजनीति दर्शन प्रकट करते हुए कहा कि "अगर देश में जनतंत्र को सुरक्षित रखना और गरीबों को ऊपर उठाना है, तो समाज में एक के बाद एक अंकुश लगाने होंगे। सेना पर अंकुश लगना चाहिए सिविल शासन का, सिविल शासन या सरकार पर अंकुश होना चाहिए जनता का और जनता पर अंकुश होना चाहिए नैतिक मूल्यों का। दुःख की बात है कि शिक्षा, देश-रक्षा और अनाज उत्पादन, इन तीनों महत्त्वपूर्ण चीजों में १८ साला में बहुत गफलत की गयी है। ग्रामदान से जनता का अंकुश सरकार पर आयेगा और नैतिक मूल्यों का अंकुश जनता पर होगा।"

कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने अमेरिकन राजदूत चेस्टर बाउल्स का यह उद्धरण देते हुए कहा कि "भारत ने अपनी भूमि-समस्या के साथ न्याय नहीं किया। कांग्रेस इसमें नाकामयाब साबित हुई है। लेकिन

मैं कहता हूँ कि ग्रामदान से समस्या का समाधान होगा।"..."दान' शब्द की व्याख्या करते हुए बाबा ने कहा कि "इसमें दो अर्थ छिपे हैं : अपना थोडा काटना और फिर दूसरे को देना। इसलिए ग्रामदान बहुत अच्छा शब्द है और इसे बदलने की जरूरत नहीं।"

पौने तीन बजे श्री दीपबाबू बाबा से मिलने आये। उन्होंने कहा कि "अनाज उत्पादन की अपनी योजना मे हम लगे हैं और क्षेत्र में अच्छी खाद, बीज आदि आये, इसकी कोशिश है। ग्रामदान के मेरिट्स पर हमें कोई शंका नहीं है।" बाबा ने कहा कि "इस काम को गति देने की कोई जिम्मेवारी हम आप पर नहीं डालते। आपका तो आशीर्वाद चाहते हैं। आपकी व्यक्तिगत जमीन किसी गॉव मे हो, तो वह ग्रामदान में समर्पण होनी चाहिए।"

मोमबत्ती दोनों सिरों से जल रही है

सवा तीन बजे बिहार के राजस्व-मंत्री श्री वीरचन्द्र पटेल बाबा से मिलने आये और कहा कि "शीघ्र ही ग्रामदान विकास-कमिश्नर की नियुक्ति हो जायगी।" बाबा ने कहा कि "५ अप्रैल, १९६६ डेट लाइन है। तब तक १० हजार ग्रामदान बिहार मे होना चाहिए। इसलिए हमने तय किया है कि अपना प्रत्येक क्षण इस काम के लिए देंगे। मोमबत्ती दोनों सिरों से जल रही है।"

शाम की सभा में १२ ग्रामदान दिये गये और ५००१) की थैली। अपने प्रवचन मे बाबा ने कहा कि "अनाज-उत्पादन के लिए जड़-संयोग चाहिए, चेतन-संयोग चाहिए और बुद्धि-संयोग भी चाहिए। बुद्धि-संयोग का मतलब है कि जमीन को तम्बाकू से मुक्त करना होगा, जूट घटाना होगा, चावल की तराशी बन्द करनी होगी, आदि।"

चीनवाद का सामना कैसे करें?

चेतावनी देते हुए बाबा ने कहा कि "अगर गॉव-गॉव मे असतोष रहेगा, तो गॉव-गॉव में चीन घुस-पैठ करेगा। इसे कोई रोक नहीं

सकेगा। सीमा पर खडी सेना गाँव गाँव में चीनवाद रोकने में असमर्थ साबित होगी। आज आप क्या देख रहे हैं ? मैं आपसे क्या कहूँ ? चीनवाद कैसे पैदा हो रहा है। जहाँ जहाँ भूख होती है, वहाँ वहाँ कम्युनिज्म आता है, चीनवाद आता है। चीन के अनुकूल लोग केरल में मौजूद हैं, बंगाल में मौजूद हैं। बंगाल की सीमा पर, सिक्किम पर और भूटान पर थोडा हमला हो जाय और इधर पाकिस्तान की ओर से थोडा हो जाय, तो बीच के अपने थोड़े-से प्रदेश को बचाने की जिम्मेवारी आप पर आयेगी। उसमें अगर आपकी थोडी हार हो जाय, तो गाँव-गाँव में उपद्रव खडा हो जायगा। चीन के प्रवेश का पूरा डर रहेगा, उसे कैसे रोकेंगे? अत गाँव गाँव मजबूत बनाइये। अन्यथा भारत खतरे में है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि जल्दी ग्रामदान कीजिये **'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब'।"**

मुजफ्फरपुर जिले की यात्रा म १५२ ग्रामदान मिले और ४,४९५) की थैली। हाल ही म यहाँ ग्रामदान का काम शुरू हुआ है और अनुकूलता पैदा हुई है। कुछ विरोध भी है, जिससे पता चलता है कि लोग ग्रामदान की गम्भीरता को समझ रहे हैं। श्री ध्वजाबाबू इसी जिले के निवासी हैं और बिहार खादी ग्रामोद्योग सघ का प्रधान केन्द्र भी मुजफ्फरपुर म ही है। हम यकीन है कि खादीवालों की शक्ति इस जिले में सर्वत्र लगेगी और यह जिला भू क्रांति का एक आला नमूना पेश करेगा। ०

महात्मा गांधी का स्वप्न साकार हो : १४ :

"यह आपका जिला बहुत मशहूर है। एक जमाना था, जब नील-वाले गोरों का जुल्म चलता था। उनकी बड़ी-बड़ी कोठियाँ थीं। वे लोगों को बहुत चूसते थे। गांधीजी यहाँ आये। उन्होंने लोगों की ताकत बनाई और सत्याग्रह द्वारा जुल्म मिटा दिया। यहाँ एक भावना बनी और सारे भारत में चम्पारन का नाम फैला। कन्याकुमारी से हिमालय तक चम्पारन का जय-जयकार हुआ। चम्पारन की लड़ाई में बिहार के अपने प्यारे नेता श्री राजेन्द्र बाबू भारत को मिले। राजेन्द्र बाबू ने चम्पारन का इतिहास लिख रखा है। उनके जैसे चम्पारन का यश गानेवाले निकले। इसका यश चारों तरफ फैल गया और आखिर स्वराज्य प्राप्त हो गया। अब हम सोचते हैं कि जिस चम्पारन ने सारे भारत का नेतृत्व किया, अगुआ बना, क्या यह ग्रामदान में पिछड़ा रहेगा? इसमें भी उसे अगुआ बनना चाहिए। इसलिए सारा का सारा चम्पारन जिला ग्रामदान में आ जाय।"

इन शब्दों के साथ (जो मदेशी की प्रार्थना-सभा में १६ नवम्बर की शाम को प्रकट किये गये) बाबा ने चम्पारन जिले में प्रवेश किया। साढ़े सात बजे बाबा मुजफ्फरपुर से मदेशी पहुँचे। स्वागत-सभा में ही उन्होंने पीले साफे की माँग की और कहा कि "जितने लोग सभा में ही बैठे हैं, वे सब पीला साफा पहन लें।" स्वागताध्यक्ष श्री विपिन बिहारी वर्मा, एम० पी० बाबा की बगल में बैठे थे। उन्होंने तुरन्त ही पीला साफा मँगवाया और बाँध लिया। बाबा को बहुत खुशी हुई और कहा कि "जैसा श्रेष्ठ लोग आचरण करते हैं, वैसे ही समाज भी अनुसरण करता है।"

पंचायतें ग्रामदान करें

९ बजे चम्पारन के कलेक्टर और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट बाबा से मिलने आये। बाबा ने उनसे कहा कि "यह जिला गांधीजी का जिला कहलाता है। चम्पारन के सत्याग्रह ने सारे भारत को जगाया। चम्पारन से आशा होती है कि गांधीजी के विचार का दर्शन नजर एक मे यहाँ होना चाहिए। आपके जिले मे पचायतों का अच्छा काम हुआ है। लेकिन पचायते सेवा का स्थान न रहकर सत्ता का अग बन गयी हैं। यह बात हमने बारह साल पहले इसी जिले मे पचायतों के एक शिविर म कही थी। उसका सयोजन करनेवाले भाई (श्री चद्रबली राव) यहाँ बैठे है। तो अब हम चाहते हैं कि पचायत ग्रामदान का प्रस्ताव कर और हर गाँव ग्रामदान मे आ जाय। आप सबको इस काम में मदद करनी है।"

इसके बाद विपिन बाबू और अन्य मित्र मिले। विपिन बाबू ने बाबा से कहा कि "आप दिल्ली आइये और सारे ससद सदस्यों का आवाहन कीजिये।" बाबा बोले कि "बिहार ग्रामदान हो जाय तब।"

तमिलनाड का उत्तरदायित्व

११॥ बजे तमिलनाड के सुप्रसिद्ध जनसेवक और सर्व सेवा सघ के क्षेत्रीय मत्री श्री जगन्नाथन्‌जी बाबा के पास आये और तमिलनाड के लिए उनको निमन्त्रण दिया। वे सर्व सेवा सघ की प्रबन्ध समिति की बैठक म मधुबनी आये थे। उसके बाद बिहार का आदोलन देखने के लिए छपरा जिले म चले गये और अब बाबा से आकर मिले।

बाबा ने उनसे कहा कि "अच्छा हुआ कि आपने बिहार के काम का थोडा निरीक्षण कर लिया। बिहार में जिस प्रकार की अनुकूलता है, उसी प्रकार, मुझे लगता है कि, तमिलनाड में भी है। और भी दो चार प्रान्त हैं, जहाँ अनुकूलता है। अब यह पुरुषार्थ का विषय है कि हर प्रान्त अनुकूल बने। लेकिन पुरुषार्थ के अलावा ट्रेडिशन या परम्परा भी होती है। तो तमिलनाड का ट्रेडिशन भोदान-उद्गमय और ग्राम स्वराज्य के अनु

कूल है। जो तमिल-साहित्य मैं पढ सका हूँ, खास करके तिरुकुरल, वह ग्रामभावना के लिए बहुत अनुकूल है। इसलिए मुझे विश्वास है कि वहाँ प्रखण्ड-दान चल सकता है।

"एक बात और है कि श्री कामराज का मस्तिष्क क्रान्तिकारी है। यद्यपि वे कांग्रेस में हैं और उन्हें कांग्रेस के अपने व्यवस्थापन-कार्य में काफी समय देना पड़ता है, फिर भी उनके मस्तिष्क की रुझान क्रांति की तरफ है। तमिलनाड में ग्रामदान के काम के लिए यह भी एक बड़ी अनुकूलता होगी, ऐसा मैंने माना है। तो, दक्षिण भारत माने अभी तो तमिलनाड। हाँ मैंने कहा है निर्मला को कि वहाँ जितना समय दे सकती हो, दे और तमिल भी सीख ले। भाषा सीखने में वह होशियार है। कुछ तो सीख ही लेगी। इस तरह 'इमोशनल इंटीग्रेशन' का भी कुछ काम बनेगा।"

जगन्नाथन्‌जी ने कहा कि "हर प्रान्त में सर्वोदय-कार्यकर्ता और खादी-कार्यकर्ता, दोनों में अच्छा मेलजोल नहीं है। बिहार में भी ऐसा ही देख रहा हूँ। इसलिए सोचता हूँ कि तमिलनाड के सर्वोदय-मंडल और सर्वोदय-संघ दोनों एक हो जायँ। इस सम्बन्ध में आपकी राय जानना चाहता हूँ।"

बाबा बोले : "सर्वोदय-मंडल और सर्वोदय-संघ में थोड़ा फर्क रहता है। यहाँ भी है। दोनों संस्थाओं को एक करने और बड़ी संस्था की दो शाखाएँ बनाने में मुझे शंका है। इसके लिए शायद अभी ठहरना होगा। ग्रामदान जब काफी तादाद में हो जायँ, तब ये दोनों एक हो सकते हैं। क्योंकि फिर सर्वोदय-मंडल संघ के स्तर पर आ जायगा। आज खादी का मुख्य काम प्रोडक्शन या उत्पादन के आधार पर है। ग्रामदान में मदद देते हैं, लेकिन ढाँचा प्रोडक्शन का है, यानी बिक्री का।

"यहाँ बिहार में खादीवालों का मस्तिष्क जरा क्रान्तिकारी है। वे इस बात के लिए तैयार हुए हैं कि उत्पादन कुछ घट जाय तो हर्ज नहीं। मेरे

खयाल से तमिल्नाड मे इस प्रकार का मस्तिष्क वी० रामचन्द्रन् का भी है। ज्यादा ग्रामदान हो जायँ तो दोनों का 'कोआर्डिनेटेड एफर्ट' अच्छा चलेगा। तब इन दोनों सस्थाओं का एक होना ज्यादा अच्छा होगा।"

जगन्नाथन्जी का निमन्त्रण

जगन्नाथन्जी ने बाबा को तमिल्नाड आने के लिए दावत दी। बोले: "हम चाहते हैं कि सर्वोदय-सम्मेलन के बाद मार्च के आखिर मे या अप्रैल में आप तमिल्नाड आयें, तब तक हम दो हजार ग्रामदान प्राप्त कर लेंगे। अच्छा हो, अगर सारे भारत में तूफान खडा करने के लिए एक बार पूरे भारत में आपका भ्रमण हो जाय।"

इस पर बाबा बोले: "बिहार आने के पहले बीच के समय के लिए मैंने कहा था कि जो प्रान्त चाहे मुझे ले ले, तो महाराष्ट्र ने एक महीना लिया और २५० ग्रामदान हुए। फिर यहाँ आते हुए मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में भी थोडा काम हुआ। अभी सोचा है कि तीन हफ्ते छुट्टी लेकर बाहर जाऊँ। मेरी हाजिरी मे यात्रा के लिए काम काफी करना पडता है, उसका दबाव भी आता है। फिर दूसरे प्रान्त में यह काम होगा, उसका प्रभाव बिहार पर पड़ेगा, बिहार का दूसरे प्रान्त पर पड़ेगा। इस लिए ट्रायल के लिए यह बीच का रास्ता निकाला है। अगर अच्छा परिणाम आया, तो एक प्रान्त में ज्यादा दिन या केन्द्र मे रहकर दूसरे प्रान्तों में जा सकते हैं। सोचने का विषय है।

"मेरे मन मे यह भी है कि जिले के जिले अगर ग्रामदान मे आ जायँ, तो दूसरी जगह नहीं जाना पड़ेगा। पूरा जिला ग्रामदान मे आना क्रान्ति का 'क्लाइमेक्स' माना जायगा। यह तभी होगा, जब जिले से सब रुचि के लोग काफी दिलचस्पी लगें। अगर प्रखण्ड-दान भी होता है, तो बडी बात होगी। जिला अगर दान मे आ जाय, तो अपनी क्रांति 'फुलफिल्मेंट' के करीब समझिये।

"यहाँ चम्पारनवालों से हमने सबेरे की सभा में पीले साफे के लिए कहा। बड़ा मजा आया। आपने देखा कि हमारे पास जा नेता बैठे हुए थे, उन भाई ने फौरन पीला साफा लगाया।

"मैं अपने को फ्यूचर प्रोग्राम में बाँधता नहीं। सीलोनवालों ने बुलाया है, उस काम के लिए वहाँ जाना भी ठीक है। भारत के काम का असर वहाँ पड़ेगा, वहाँ का असर भारत पर पड़ेगा। अपना मस्तिष्क मैंने फ्ल्यूइड रखा है, फ्रोजेन नहीं। सोचूँगा, बाँधता नहीं अपने को।"

दिनभर जगन्नाथन् हम लोगों के साथ रहे। उनको यही चिंता है कि ग्रामदान का तूफान कैसे लाया जाय और यह आम जनता का आन्दोलन कैसे बने। हाल ही में मदुरा के मीनाक्षी-मंदिर की जमीन के सिलसिले में उन्होंने सफलतापूर्वक सत्याग्रह चलाया। अब वे अपना ध्यान ग्रामदान तूफान की तरफ दे रहे हैं। हमे यकीन है कि तमिलनाड में कुछ सफल परिणाम आयेंगे।

दोपहर को २ बजे कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने बताया कि "हमे अहिंसा की शक्ति खड़ी करनी है, जो दंड-शक्ति से भिन्न और हिंसा की शक्ति की विरोधी होगी। आज आम तौर से दो शक्तियाँ मानी जाती हैं : १. दण्ड-शक्ति और २. हिंसा-शक्ति। हम तीसरी शक्ति खड़ी करना चाहते हैं, जिसे 'जन-शक्ति' कहेंगे और जिसका आधार होगा अहिंसा। फिर भी यह जनशक्ति दंड-शक्ति से भिन्न होगी, लेकिन उसकी विरोधी नहीं होगी। फिर भी हिंसक शक्ति की विरोधी अवश्य होगी।"

भंगी-मुक्ति

आज गाजीपुर के श्री चिन्तामणि भाई मिलने आये। वे वर्षों से भंगीमुक्ति के काम में लगे हैं। बाबा ने कहा कि "ग्रामदान होने पर ग्राम-सभा गाँव में भंगीमुक्ति कर सकती है और इस तरह गाँव-गाँव में यह चीज फैल सकती है। शहरों में तो सेप्टिक पाखाने बनने चाहिए, ताकि

वहाँ भंगी की जरूरत ही न पड़े। शहर के भंगी भाई-बहनों को दूसरे काम और उद्योग धन्धे मिलने चाहिए। हम उन्हें जमीन देने को तैयार हैं।"

एक अमेरिकन मित्र के साथ

आज एक अमेरिकन भाई बाबा से मिले। यह युवक नवयुवक जगत् में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का एक नया संगठन खड़ा करने को उत्सुक है। उन भाई ने बाबा से जिज्ञासा प्रकट की कि "किस तरह यह काम करना सम्भव होगा ?" अंग्रेजी में जवाब देते हुए बाबा ने कहा "आपका विचार बहुत सुन्दर है। आज दुनिया राजनीति और धर्मों से तंग आ गयी है। मैंने कितनी बार कहा है कि इस आणविक युग में कट्टरपंथी धर्म की बजाय रूहानियत या अध्यात्म आयेगा और सारी राजनीति—राष्ट्रीय राजनीति, दलगत राजनीति, भेदगत राजनीति की बजाय विज्ञान आयेगा। अगर अध्यात्म और विज्ञान का मेल बैठ जाता है, तो इस दुनिया में स्वर्ग उतर सकता है। हम विज्ञान का स्वागत करते हैं, लेकिन उस पर अंकुश अध्यात्म का होना चाहिए।"

आन्तरिक शक्ति कैसे बढ़े ?

इसके बाद अमेरिकन नवयुवक ने पूछा कि "जब मैं एक नया काम उठा रहा हूँ, तो मेरा विरोध भी होगा, लोग मजाक भी उड़ायेंगे। तरह तरह से सतायेंगे भी। इन सबका सामना करने के लिए आन्तरिक शक्ति कैसे पैदा हो ?" बाबा ने बाइबिल का उद्धरण देते हुए कहा "वे लोग मुबारक हैं, जो सताये जाते हैं। आन्तरिक शक्ति पैदा करने के लिए मेरा सुझाव है कि आप रोजाना कुछ समय चिन्तन में लगायें। रात्रि में सोते समय और सवेरे उठने के बाद थोड़ा शान्ति से ध्यान करें और यह अनुभव करने की कोशिश करें कि मैं शरीर से भिन्न हूँ। हम सारी दुनिया को देखते हैं, लेकिन अपने को नहीं देख पाते। हमारी आँखें बाहर की तरफ देखती हैं, अन्दर की तरफ नहीं। जिस तरह

रोजाना शरीर के लिए स्नान जरूरी है, उसी तरह मस्तिष्क के लिए ध्यान है। इससे हृदय-शुद्धि होगी और आप सारी यातनाओं का बिना किसी दिखावे के मुकाबला कर सकेंगे। महाप्रभु ईसा ने बताया है कि बुराई का मुकाबला मत करो। मुकाबला करने पर बुराई मजबूती पकड़ती है, लेकिन उसकी अवहेलना करने पर वह खतम हो जाती है।"

शाम को यह भाई मुझसे कहने लगे कि "बाबा जो भूमि का दान माँगता है, उससे समाज-रचना कैसे बदलेगी ?" मैंने उनको समझाया कि "अब भूमिदान ही नहीं, बल्कि ग्रामदान माँगा जाता है, जिसमें स्वामित्व का विसर्जन होता है और वह समाज के सिपुर्द कर दिया जाता है।" थोड़े विस्तार के साथ उनको ग्रामदान की सब बातें समझायीं तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने कहा : "यह तो मुझे मालूम ही नहीं था। ग्रामदान-आन्दोलन बहुत ही वैज्ञानिक और क्रान्तिकारी है !"

शाम की आम सभा में विपिन बाबू ने १४ ग्रामदान भेंट किये और ११५१) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "महात्मा गांधी का यह जिला है और इससे उनके स्वप्नों को साकार करना चाहिए। हर गाँव ग्रामदान में आये और ग्रामसभा में महाजन भी शामिल हों। महाजनों को चाहिए कि ग्राम-सभा को कर्ज दें और १००) देकर ९४) खुशी से लें।"

बाबा ने सभा में हाथ उठवाये कि जिन लोगों को १००) देकर ९४) लेना पसन्द हो, वे हाथ उठायें। बहुत-से हाथ उठ गये। बाबा ने खुशी जाहिर की और कहा कि "अगर यहाँ यह हो जाता है, तो सारा चम्पारन खड़ा हो जायगा।···हर गाँव में ग्राम-सभा बच्चे, बूढ़े, बेवा, बीमार और बेकारों की चिंता करेगी।" बाबा ने सामने बैठे एक बच्चे को बुलाया और अपने पास बिठा लिया। फिर उससे पूछा कि "ग्रामदान होने पर ग्रामसभा क्या करेगी ? किसकी चिन्ता करेगी ?"

उस लड़के ने जवाब दिया : "बच्चे, बूढ़े, बेवा, बीमार और बेकार !" बाबा ने कहा : "देखिये, यहाँ का बच्चा ग्रामदान समझ गया। हमें उम्मीद है कि इसके आगे चम्पारन जिले में काम होगा।"

विवेक की जरूरत

अगले दिन सवेरे महेशी से निकलने के पहले श्री जगन्नाथन्‌जी बाबा से विदाई लेने आये। बाबा ने उनसे कहा कि "अभी हिन्दुस्तान पाकिस्तान की लड़ाई के कारण कई झगड़े जो अन्दर अन्दर चलते थे, रुक गये हैं। लेकिन पूरी शान्ति होगी तो झगड़े फिर से खड़े होंगे। पजाब में पजाबी सूबा, महाराष्ट्र मे गोवा, बेलगाँव, दक्षिण मे हिन्दी और तमिल भाषा, केरल म कम्युनिस्ट पार्टी और राज्यपाल शासन और असम में सीमा प्रदेशों का झगड़ा, नागा-समस्या, ऐसी हर जगह कोई-न-कोई समस्या खड़ी होगी। उसम हम 'रैशनल ऐटीच्यूड' लेना होगा। पजाबी सूबे के लिए मैंने अपनी सम्मति दे दी है, क्योंकि विभाजन के कारण तीन भाषाओं के साथ अन्याय हुआ है। बगाली ९ करोड की भाषा थी, उसके दो भाग हुए। एक बाजू कोई पाँच करोड लोग, तो दूसरी बाजू कोइ चार करोड। फिर पाकिस्तान मे हिन्दू भी हैं और हिन्दुस्तान म मुस्लिम भी। हिन्दू एक बाजू और मुसल्मि एक बाजू ऐसा नहीं हुआ। उधर एक करोड हिन्दू और चार करोड मुसल्मान, तो इधर लगभग तीन करोड हिन्दू और एक करोड मुसल्मान हैं। फिर कश्मीर का मामला रहेगा। पाकिस्तान की बात भी अब सामने आयी है। उधर पजाबी पर उर्दू का दबाव है, तो इधर हिन्दी के दबाव की कोशिश हो रही है। अब यहाँ पजाबी भाषा पर द, तो उसमें चार जिले ऐसे हैं, जहाँ लगभग पूरी हिन्दी ही चलती है, इसलिए वह उचित नहीं। इसलिए पजाबी सूबा बनाया जाय। उसकी सीमा तय करना कमीशन का कार्य होगा। जब मराठी, गुजराती भाषा के प्रान्त हैं, तो पजाबी सूबा क्यों नहीं होना चाहिए ?"

अंग्रेजी का मोह छोड़ना होगा

इसके बाद बाबा ने कहा कि "एक जमाना था कि संस्कृत भारत को जोड़ने का काम करती थी। लेकिन संस्कृत कभी भी हिन्दुस्तान की आम जनता की भाषा नहीं बन सकती। इसलिए संस्कृत का स्थान हिन्दी ने ले लिया है। हमें हिन्दी को मान्य करना होगा।···आज जो अंग्रेजी चली है, उससे आपकी डिप्लोमेसी खतरे में है। राष्ट्रसंघ वगैरह में हमें अंग्रेजी में उत्तम बोल सकनेवाले ही भेजने पड़ते हैं। पर वे अंग्रेजी उत्तम बोलते हैं, इसलिए डिप्लोमेसी के भी विशेषज्ञ होते हैं, ऐसा नहीं। फिर जिनके सामने वे बोलते हैं, उनकी मातृभाषा अंग्रेजी होती है। हमें कितनी भी अच्छी अंग्रेजी आये, उनको जितनी अच्छी आती होगी उतनी तो आयेगी नहीं। हमारे प्रतिनिधि रूस में जाते और अंग्रेजी में बातें करते हैं, तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। चीन में आप जायँ और अंग्रेजी बोलें, तो वे मानेंगे कि आप साम्राज्यवादियों के साथी हैं।"

हर बच्चा पीला साफा पहने

सवा छह बजे बाबा महेशी से निकले और फिर बूढ़ी गंडक नाव से पार की। नौ बजे ढाका पहुँचे। वहाँ उन्होंने कहा कि "सब लोग पीला साफा पहनें, गाँव-गाँव का ग्रामदान हो और गाँव के लोग अपना कपड़ा बनायें। हर गाँव में शांति-सेना बने। गाँव का हर मनुष्य, हर बच्चा पीला साफा पहने। जिस दिन बच्चा पैदा हुआ, उसी दिन उसे पीला साफा बाँध दिया जाय, तो उसे शान्ति की, अहिंसा की दीक्षा मिलेगी। पीला साफा याने निर्भयता, निर्वैर, शान्ति, अक्रोध है। इसकी दीक्षा बच्चे को भी मिले।"

साढ़े ग्यारह बजे तुल्सी मेहरजी बाबा से मिले और नेपाल आने की दावत दी। बाबा ने कहा कि "नेपाल में यात्रा करने की मेरी इच्छा

अवश्य है, लेकिन कब आ सकूँगा, यह निश्चय नहीं। फिर आ भी सकूँगा या नहीं, यह भी नहीं जानता।"

कार्यकर्ता-सभा में एक भाई ने कहा कि "चम्पारन जिले में करीब साढ़े तीन हजार एकड़ भूदान मिला है। उसका वितरण अभी तक नहीं हुआ। इसका असर ग्रामदान पर पड रहा है। भूदान के कार्य कर्ताओं को वितरण का काम कठिन लग रहा है। ऐसी हालत में क्या किया जाय ?" बाबा ने कहा . "यह काम कठिन है। इसमें कोई शक नहीं। इसलिए मैंने तीन साल पहले ही सुझाव दिया था कि ग्राम पचायत को जमीन बॉटने का अधिकार दिया जाय और वह लोगों की साक्षी में बँटे, ग्राम पचायत की मदद से जमीन बाँटी जाय। तदनुसार प्रान्तीय भूदान वितरण कमेटी के अध्यक्ष ने पचायतों से मदद माँगी थी, यहाँ भी माँगी होगी। सब पचायतों को अधिकार दिया था कि वे जमीन बाँटें और उसका प्रमाण पत्र प्रान्तीय कमेटी को भेज दें। गाँव-सभा बनाकर सबकी साक्षी मे जमीन बाँटें। खैर, अभी तक यह नहीं हुआ। लेकिन अब ग्रामदान मे यह बहुत आसान होगा। उसमे पहले जिन्होंने ग्रामदान दिया है, उनको दुबारा देना नहीं पड़ेगा। दी हुई जमीन का बँटवारा न हुआ हो, तो वैसी अर्जी दी जाय तो फिर से जमीन देने की जरूरत नहीं होगी। इसके आगे वितरण का अधिकार पटनावाली समिति को नहीं, गाँव की ग्रामसभा को दिया है। जमीन गाँव-सभा के द्वारा बाँटी जायगी। इस योजना मे जो दोष आता है वह हमने ग्राम दान में रखा ही नहीं है।"

ग्रामदान सागर है

ग्राम की सभा मे १३ ग्रामदान मिले और १७७६) रुपये की थैली। बाबा ने ग्रामदानवाला कागज देखा तो पता चला कि इन तेरह गाँवो का क्षेत्रफल ४१ एकड है, उनमें से एक गाँव २४ एकड का है और बाकी १२ गाँव १७ एकड में आ जाते हैं। इनमे भी एक गाँव में

९ डिसमल जमीन थी, दूसरे में १४ डिसमल। बाबा को यह देख बहुत दुःख हुआ। उन्होंने सभा में ही कहा कि "यह न तूफान है, न क्रांति। यह कोई काम नहीं, न कोई ढंग है, गलत काम किया गया है।" फिर उन्होंने कहा कि "गाँव की मालिकी का दावा करना पाप और अधर्म है। ग्रामदान मे जो स्वामित्व-विसर्जन होता है, उसमें खेती और विरासत के हक कायम रहते हैं। लेकिन जमीन गाँव के बाहर बेचने पर पाबंदी है। इसे मैं ग्रामद्रोह मानता हूँ। इसलिए कोई डरने की बात नहीं। ग्रामदान में बड़े मालिक हों या छोटे; किसीको कुछ खोने का नहीं है।'''''ग्रामदान सागर है, जिसमें नदियाँ भी आयेंगी और नाले भी। इसलिए विश्वास-पूर्वक लोगों के पास जाना चाहिए। फिर आप देखेंगे कि बड़े गाँव मिलेंगे और गांधीजी का सपना सार्थक होगा।"

सबेरे ६ बजे निकलकर बूढ़ी गंडक पार की। साढ़े सात बजे बाबा मोतीहारी पहुँच गये। निवास की व्यवस्था प्रजापति-आश्रम में की गयी थी, जहाँ १९१७ में बापू ठहरे थे और भारत में 'सत्याग्रह' का सूर्योदय हुआ था।

नाममात्र की आजादी

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "दिन-पर-दिन देश की स्थिति कठिन हो रही है। अनाज बाहर से मँगवाना पड़ रहा है। शस्त्रास्त्र बाहर से मँगवाये जा रहे हैं। अक्ल भी बाहर से मँगवानी पड़ती है। अभी भारत में तालीम कैसी दी जाय, इस विषय की एक कमेटी बनायी गयी है। उसमें भारत के बाहर के भी लोग हैं। सार यह कि अक्ल ी बाहर से मँगवानी पड़ती है और इसीका नाम है आजादी। नाममात्र ी आजादी है यह! इस तरह तो देश उत्तरोत्तर गुलाम बनता जायगा। ाबादी बढ़ेगी, पर जमीन बढ़ेगी नहीं, ग्रामोद्योग बढ़ेंगे नहीं, बारिश हीं होगी तो सारा मामला खतम हो जायगा। इस साल बारिश बहुत

कम है, तो अकाल पडेगा। फिर से अमेरिका से अनाज मँगवाना पड़ेगा। कहा जाता है कि अनाज बाहर से नहा मँगवायेंगे, लेकिन अकाल पडा तो जरूर मँगवायेंगे। इसलिए यह सारा काम गाँव को करना होगा। यह तब होगा, जब गाँव गाँव के लोग एक परिवार के रूप में रहें और गाँव अपनी योजना खुद बनाये। इसलिए हिन्दुस्तान की आजादी की, लोकशाही की रक्षा करनी है। हिन्दुस्तान म समाजवाद लाना है, तो आप सब लोगो को देश मजबूत बनाना चाहिए। नहीं तो यह स्मारक क्या करनेवाला है? हमारे पूर्वज महान् थे। पर आप कैसे हैं? तो बोले कि 'हम बकार है।' बेहतर होता, अगर गाधीजी का नाम ही यहाँ नहा रहता, तो आप जैसे हैं, वैसे भी चल सकता। लेकिन अब इतना बड़ा नाम यहाँ डूब जाय, तो चपारन की कितनी तौहीनी है! मामला जरा ठडा, सर्द देखता हूँ। चाहता हूँ कि यहाँ जरा चेतना आ जाय और नया पुरुषार्थ हो।"

ब्लाकवालों से

साढे ग्यारह बजे जिले के कुछ अधिकारी बाबा से मिलने आये। उनम से एक ने लिखकर दिया कि "ग्राम पचायत और ग्रामदान में क्या फर्क है?" बाबा ने कहा कि "ये सब अशिक्षित लोग हैं। मैंने देखा है कि सरकारी नौकर बिलकुल अशिक्षित होते हैं। उनके शिक्षण के लिए कैम्प खोलने चाहिए, ऐसा अनुभव जे० पी० को भी आया है। ये लोग रिप वान विंकिल (Rip Van Winkle) की तरह पुराने जमाने म सोये हैं। इन्हें जगाने के लिए पाकिस्तान और चीन प्रस्तुत हैं। मुझसे डे साहब कहते थे कि ग्रामदान से कम्युनिटी बनती है और उसके बाद ही कम्युनिटी डेवलपमेन्ट हो सकता है। तो आप जो कुछ कर सकते हों, मदद कर।"

ग्रामराज्य और अहिंसा

दोपहर को कार्यकर्ता सभा में एक भाई ने पूछा कि "क्या ग्रामराज्य

संग्रह का पाप

शाम की आम सभा में ८ ग्रामदान जाहिर किये गये और १९०६) रुपये की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "एक दूसरे से मिलजुलकर रहने के लिए शास्त्र का आदेश है। गीता में भगवान् ने कहा है कि जो संग्रह करेगा, वह चोर है। वेद ने आगे बढ़कर यहाँ तक कहा है कि जो संग्रह करता है, वह अपना वध, अपनी हत्या हासिल करता है। इसका अनुभव चीन को और रूस को आ गया है। क्या भारत को भी यही प्रतीति करनी है? इसलिए आपको सावधान हो समझना चाहिए कि ग्रामदान में सबका भला है।"

शिक्षा के बारे में बोलते हुए बाबा ने कहा कि "केन्द्र सरकार ने शिक्षा में २५ प्रतिशत कटौती सुझायी है। लेकिन बिहार सरकार ५० प्रतिशत के लिए तैयार है। हम तो कहते हैं कि १०० प्रतिशत होनी चाहिए और यह रद्दी तालीम जितनी जल्दी बन्द हो, उतना अच्छा है। उद्योग और ज्ञान दोनों इकट्ठा चलें, तभी शिक्षा लाभदायी होगी। गांधी-जी की आवाज चीन ने सुनी और वहाँ आधा समय काम और आधा समय मजदूरी (हाफ-हाफ स्कूल) चलते हैं।···अपने देश में जबर्दस्त अज्ञान भरा है। यह सब दूर करना है, इसीलिए जल्दी से जल्दी ग्रामदान होना चाहिए।"

१९ तारीख को पौने आठ बजे बाबा रक्सौल पहुँचे, जो भारत और नेपाल की सीमा पर है। यहाँ से काठमाण्डू को पक्की सड़क जाती है।

रक्सौल पहुँचने पर बाबा ने कहा कि "सीमा-क्षेत्र में प्रेम पैदा करना, एकता लाना और लोक-शक्ति का निर्माण करना बहुत जरूरी है। यह इलाका ग्रामदान में आना चाहिए, शांति-सेना खड़ी होनी चाहिए और खादी ग्रामोद्योग भी खूब चलने चाहिए।···छोटे-छोटे गाँवों का ग्रामदान करना व्यर्थ प्रयास है। मैं हिसाब करूँगा कि ग्रामदान

होने पर देश में अहिंसा का राज्य चलेगा ?" बाबा ने कहा : "अगर देश की रक्षा का सवाल है, तो ग्रामराज्य आज की सरकार को नहीं हटाता। ग्रामराज्य गाँव-गाँव मे होगा और देश की सरकार पर उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व होगा। लेकिन यह समझने की बात है कि गाँव की रक्षा के लिए ग्रामराज्य में शातिसेना काफी होगी। अगर सवाल पूछने का यह मतलब हो कि ग्रामराज्य के बाद राष्ट्र हिंसा का रास्ता अपनायेगा या अहिंसा का ? तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप मिलकर क्या तय करते है। इसमें बाबा की सलाह आप पूछ सकते हैं।......अगर ग्रामराज्य बनता है, तो अन्दर ही अन्दर हिंसा नहीं होगी। पुलिस को गोली चलाने का मौका नहीं आयेगा। भारत की अपनी शक्ति बढ़ जायगी। उस हालत में भारत सरकार अहिंसक राज्यों की अहिंसक सरकार होगी। फिर उस हालत में फौज भी खत्म कर सकते हैं। लेकिन आज की हालत मे यदि शस्त्र छोडेंगे तो सरकार नहीं टिकेगी। ग्रामदान के हर गॉव मे ग्रामदान होने के बाद किसी देश को इतनी हिम्मत नही होगी कि भारत पर आक्रमण करे। अगर आक्रमण करेगा तो विश्व-युद्ध छिड़ जायगा। आज यह सोचा जाता है कि अगर हम शस्त्र छोड दें तो पाकिस्तान हमला कर देगा। इसी तरह पाकिस्तान सोचता है कि भारत हमला कर सकता है। रूस, अमरीका भी इसी तरह सोचते हैं। मानो कोई मानव है ही नहीं, सब जंगली जानवर है, जो एक दूसरे से डरते हैं। इस तरह तो न हिंसक राज्य चलेगा न अहिंसक।

"मान लीजिये कि अगर ग्रामराज्य की सरकार सेना खड़ी करती है तो करे, बाबा नहीं रोकेगा। आज भी बाबा ने कहाँ रोका है। बाबा से पूछने आओगे तो कहेगा बेवकूफ हो। नाहक सेना पर पैसा खर्च करते हो। *ग्रामस्वराज्य के बाद आपकी बहुत बड़ी नैतिक और आन्तरिक* ताकत बनेगी और उसका असर दुनिया पर पड़ेगा।"

तीसरे पहर श्री श्रीमन्‌जी और मदालसा बहन बाबा से मिले।

संग्रह का पाप

शाम की आम सभा मे ८ ग्रामदान जाहिर किये गये और १९०६) रुपये की थैली। अपने प्रवचन मे बाबा ने कहा कि "एक दूसरे से मिलजुलकर रहने के लिए शास्त्र का आदेश है। गीता मे भगवान् ने कहा है कि जो संग्रह करेगा, वह चोर है। वेद ने आगे बढकर यहाँ तक कहा है कि जो संग्रह करता है, वह अपना वध, अपनी हत्या हासिल करता है। इसका अनुभव चीन को और रूस को आ गया है। क्या भारत को भी यही प्रतीति करनी है? इसलिए आपको सावधान हो समझना चाहिए कि ग्रामदान में सबका भला है।"

शिक्षा के बारे मे बोलते हुए बाबा ने कहा कि "केन्द्र सरकार ने शिक्षा में २५ प्रतिशत कटौती सुझायी है। लेकिन बिहार सरकार ५० प्रतिशत के लिए तैयार है। हम तो कहते हैं कि १०० प्रतिशत होनी चाहिए और यह रद्दी तालीम जितनी जल्दी बन्द हो, उतना अच्छा है। उद्योग और ज्ञान दोनों इकट्ठा चलें, तभी शिक्षा लाभदायी होगी। गाधीजी की आवाज चीन ने सुनी और वहाँ आधा समय काम और आधा समय मजदूरी (हाफ हाफ स्कूल) चलते हैं। अपने देश में जबर्दस्त अज्ञान भरा है। यह सब दूर करना है, इसीलिए जल्दी-से-जल्दी ग्रामदान होना चाहिए।"

१९ तारीख को पौने आठ बजे बाबा रक्सौल पहुँचे, जो भारत और नेपाल की सीमा पर है। यहाँ से काठमाण्डू को पक्की सडक जाती है।

रक्सौल पहुँचने पर बाबा ने कहा कि "सीमा-क्षेत्र मे प्रेम पैदा करना, एकता लाना और लोक शक्ति का निर्माण करना बहुत जरूरी है। यह इलाका ग्रामदान में आना चाहिए, शांति-सेना खडी होनी चाहिए और खादी ग्रामोद्योग भी खूब चलने चाहिए।" "छोटे-छोटे गाँवों का ग्रामदान करना व्यर्थ प्रयास है। मैं हिसाब करूँगा कि ग्रामदान

तभी माना जाय, जब ७०० आबादी हो और रकबा ३००-३५० एकड हो। छोटे-छोटे टोलों का ग्रामदान लेने से कोई उपयोग नहीं। मैं आपको आगाह कर देना चाहता हूँ कि बाबा को आप ठग नहीं सकते।"

१० बजे के करीब उड़ीसा के ईश्वरलाल व्यास और हरमोहन पटनायक बाबा से मिले। उड़ीसा के कार्यक्रम का नक्शा लेकर आये थे। बाबा ने तय किया कि वे २१ दिसम्बर को उड़ीसा मे प्रवेश करेंगे और २६ दिन समय देकर १६ जनवरी को फिर से बिहार आ जायेंगे। लेकिन जमशेदपुर में अस्वस्थ हो जाने के कारण बाबा को जमशेदपुर मे रुकना पड़ा और २१ दिसम्बरवाला उड़ीसा का कार्यक्रम स्थगित हो गया।

मोतिहारी से श्रीमन्‌जी, मदालसा बहन और तुलसी मेहरजी बाबा के साथ थे। तीनों का आग्रह था कि बाबा नेपाल चलें। बाबा ने कहा कि "हमारा आगे का कार्यक्रम बिहार के काम के ऊपर निर्भर करेगा।" मदालसा बहन ने अनुरोध किया कि "गर्मियों में नेपाल आयें तो अच्छा रहेगा!"

संयुक्त राष्ट्रसंघ और सेना

रक्सौल में दोपहर के समय बाबा ने श्रीमन्‌जी से बातचीत के दौरान मे कहा कि "सयुक्त राष्ट्रसंघ को चाहिए कि या तो अपनी कोई सेना न रखे या रखे तो शातिसेना रखे। आज जो उसने अपनी सेना रखी है, उससे बडी सेना अमेरिका की है और रूस की है। यह छोटी सेना रखकर बिलकुल गलत काम किया है। अगर संयुक्त राष्ट्रसंघ सेना नही रखता, तो उसकी नैतिक शक्ति बढ़ेगी। या फिर एक सूरत यह हो सकती है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ ही सेना रखे और दुनिया के जितने राष्ट्र है, वे सब अपनी-अपनी सेना उसे समर्पित कर दे। लेकिन यह तो तभी होगा जब विश्व-राष्ट्र बनेगा।"

मिलवालो का जुल्म

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में एक भाइ ने बताया कि "चम्पारन मे जब नीलवाले जुल्म करते थे, तो गाधीजी ने आकर उसमें से लोगों को छुडाया। अब यहाँ चीनी की मिलवाले जुल्म कर रहे हैं, तो आप चम्पारन जिले में रह जायँ और हमें उनसे मुक्त करा दें।" बाबा ने जवाब दिया कि "हम आज ह और कल नहा। लेकिन इसका उपाय हम बता चुके हैं, ग्रामदान। वह नहीं करोगे और बाबा यहाँ रहेगा तो भी कुछ नहीं होगा। इसलिए बाबा तो कल यहाँ स चला जायगा। आपको ज्यादा से ज्यादा गाँव ग्रामदान म लाने चाहिए और प्रखड दान प्राप्त करना चाहिए। अगर आप प्रखड-दान लाते हैं, तो मजाल नहीं कि कोई आप पर जुल्म करे।"

एक अन्य सवाल के जवाब मे बाबा ने कहा कि "ग्रामदान करना ही आध्यात्मिक विद्या का आरम्भ है। क 'का' कि 'की' सीखगे तब तो पुस्तक पढ़ेंगे, आध्यात्मिक विद्या का आरभ है त्याग। उसके बाद और आगे बढ़गे। सब लोग इकट्ठा बैठगे, प्रेम करेंगे, प्रेम करना सीखेंगे। जो परमात्मा आपमें है, वही हममें है। चाहे कोइ किसी जाति का हो, हिंदू हो या मुसलमान, सबमें एक ही परमात्मा है। आखिर में इस प्रकार की भावना उसमे आयेगी। इसलिए यह ब्रह्मविद्या का आरम्भ है। ग्रामदान ब्रह्मविद्या की, अध्यात्म विद्या की प्रवेशिका है।"

बदमाश यह समितियाँ!

सहयोगी समिति के बारे म बाबा ने बताया कि "इनके द्वारा तो बलवान् लोग आपस में मिलकर निबलों को सताते ह।" पजाब की एक मिसाल देते हुए उन्होंने कहा कि "वहाँ सरकार ने ३० एकड का सीलिंग किया था। एक आदमी के पास ३०० एकड जमीन थी। उसने अपने परिवार के दस लोगों के नाम उस जमीन को लिखवा लिया। लेकिन सहयोगी समिति एक परिवार से नहीं बन सकती थी। इसलिए

पड़ोस के एक आदमी को मिलाया। उसके पास ६० एकड़ जमीन थी। इस तरह दो परिवारों की एक सहयोगी समिति बनी और सरकार की मदद भी मिली। ऐसी बदमाश समितियाँ हैं ये सहयोग-समितियाँ! दूसरों को ठग सकते हैं, लेकिन अन्तरात्मा को नहीं। इनकी ग्रामदान के साथ कोई तुलना नहीं हो सकती। उनका ग्रामदान के साथ कोई मेल नहीं।"

नीचेवालों को उठायें

शाम की प्रार्थना-सभा में आज कोई ग्रामदान जाहिर नहीं हुआ। थैली ३२११) की थी। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "नेपाल के साथ भारत का पुराना सम्बन्ध है। नेपाल, ब्रह्मदेश और लंका तीन देशों से भारत के सम्बन्ध अच्छे हैं। लेकिन चीन और पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं बन सके हैं, वे भी बनने चाहिए।''शास्त्रों में कहा है कि *जब महाराज युधिष्ठिर भारतवर्ष लाँघकर स्वर्गारोहण के लिए हरि-*वर्ष याने मंगोलिया से गुजर रहे थे, तो उनके पाँचों साथी गिर पड़े। रास्ते में मंगोलिया का एक कुत्ता साथ हो गया। स्वर्ग के द्वार पर उसे प्रवेश नहीं दिया गया, तो धर्मराज ने भी अन्दर जाने से इन्कार किया। इसी तरह आज जो सबसे नीचे हैं, उनको अगर नहीं उठाया गया, तो देश को बड़ा अभिशाप होगा और वह छिन्न-भिन्न हो जायगा।''दुःख की बात है कि भगवान् का नाम लेने के लिए सब अलग-अलग हो जाते हैं। हमारी इस मूर्खता पर भगवान् को दया आती होगी। हमें एक दूसरे की प्रार्थना में शरीक होना चाहिए और मौन-प्रार्थना का भी अभ्यास डालना चाहिए।"

भारत मित्र बनना चाहता है

अगले दिन सबेरे ही श्रीमन्‌जी और मदालसा बहन बाबा से बात करने लगे। श्रीमन्‌जी ने नेपाल के महाराजाधिराज की नैनीताल पर लिखी हुई एक कविता दिखायी। महाराजाधिराज हाल ही में एक सप्ताह नैनीताल रहे थे। बाबा ने उस कविता को पढ़ा और फिर पीठ पर यह *लिख दिया :*

"राजा भी हो और कवि भी। ऐसा संयोग अक्सर देखने को नहीं मिलता। कारण जाहिर है। राजा होता है भारी और कवि को चाहिए भार-मुक्तता। दोनों योग जिसको सधे, उसे अनासक्ति कुछ सधी होनी चाहिए।

"महाराजाधिराज की कविता पढ़कर प्रसन्नता हुई।"

रक्सौल —विनोबा का जय जगत्
२०-११-'६५

इसके बाद श्रीमन्जी ने पूछा कि "नेपाल के हमारे काम के बारे में और क्या आदेश है?" बाबा ने उसका भी लिखित उत्तर दिया। वह इस प्रकार है :

"काम की दिशा ठीक है। भारत एशिया का या दुनिया का, या किसी देश का नेतृत्व करना नहीं चाहता। मित्र बनना चाहता है।"

६ बज चुके थे। बाबा अगले पड़ाव के लिए रवाना हो गये। सवा आठ बजे बाबा वृन्दावन आश्रम पहुँचे। इसकी स्थापना पंडित प्रजापति मिश्र ने सन् १९३६ में की थी और २ मई से ९ मई १९३९ तक बापू की मौजूदगी में यहाँ गांधी सेवा संघ का अधिवेशन हुआ था। बाबा ने कहा कि "यह स्थान तो हमारे बाप की इस्टेट है। हम अपने बाप के घर आये हैं। ऐसे स्थान पावर हाउस बनने चाहिए और यहाँ से शक्ति का संचार होना चाहिए।"

९ बजे करीब क्रिश्चियन मिशन के बालिका विद्यालय की लड़कियाँ बाबा से मिलने आयीं। बाबा ने कहा कि "जब हम केरल में थे, तो वहाँ की चारों चर्चों ने हमें लिखकर दिया था कि भूदान का काम ईसामसीह के चरण चिह्नों पर है। हम आशा करते हैं कि आप सर्वोदय साहित्य का अध्ययन करेंगी और जो कुछ हो सकता है, ग्रामदान के लिए करेंगी।"

नेताओं का सम्मेलन

कार्यकर्ता-गोष्ठी मे बाबा से किसीने कहा कि "एक बार आप सर्वदलीय सम्मेलन क्यों नहीं बुलाते ?" बाबा ने उत्तर में ऋग्वेद की एक ऋचा (मन्त्र) सुनायी :

"गोमायुरेको अजमायुरेकोः
पृश्नीरेको हरित एक एषाम् ।
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः ।

यानी ये कह रहे हैं कि सर्वदलीय सम्मेलन बुलाना चाहिए । ऐसा एक वार्षिक सम्मेलन वेद मे आता है, मेंढकों का सम्मेलन । इसका नाम है 'मंडूक-स्तुति' । जब बारिश बरसती नहीं, तब यह मंडूक-स्तुति गाते हैं तो बारिश आती है । तो, ऐसा सम्मेलन हर साल एक बार होता है ।''' 'गोमायुरेकः'—एक चिल्लाता है 'डरॉव डरॉव' 'अजमायुरेकः'—दूसरा चिल्लाता है, 'टरॉव टरॉव' । एक है पी० एस० पी० वाला मेंढक, दूसरा है कांग्रेसवाला मेंढक । फिर 'हरित एक एषाम्'—एक है पीला साफा-वाला मेंढक, एक है काला साफावाला, एक है 'पृश्नीरेको'—स्पॉटेड । सबके नाम तो एक ही है मेंढक, लेकिन 'विरूपाः' एक दूसरे के खिलाफ हैं । ऐसा सम्मेलन हर साल एक बार होता है और सब चिल्लाते रहते हैं । तो ये भाई सलाह दे रहे हैं कि तुम भी ऐसा एक सम्मेलन बुलाओ । ऐसा एक सम्मेलन हमने बुलाया था सन् १९५७ में येलवाल मे । उसमें देश की सब पार्टियों के बड़े-बड़े नेता आये थे और सबने दो दिन तक ग्रामदान के विचार पर चर्चा की और एकमत से प्रस्ताव पास किया कि यह अच्छा विचार है और सबको इसमें सहयोग देना चाहिए । तो सब पार्टियों ने हमें हरा झंडा दिखा दिया है कि आप काम करें, आपको सहयोग मिलेगा । तब ऐसा सम्मेलन हर साल बुलाना बेकार होगा ।"

बाहर की मदद

आम सभा में दो ग्रामदान जाहिर किये गये । उनमें एक तो वृन्दावन गाँव है, जिसकी आबादी २७२ और रकबा ११५ एकड़ है ।

दूसरे गॉव की आबादी ३२५ है और रकबा ८१ एकड है। बाबा ने खुशी जाहिर की कि "यह छोटा-सा आरभ किया गया और आगे इस सारे क्षेत्र को ग्रामदानी बनाने का वचन भी दिया है। आम तौर से आश्रमों के पास के गॉव ग्रामदान मे नहा आते, क्योंकि लाडले बच्चों की तरह वे बिगड जाते हैं। जिस तरह एक किलो दूध के लिए एक चम्मच जामन काफी है, उसी तरह गॉव को थोडी सी बाहर की मदद मिलनी चाहिए। लेकिन आज होता यह है कि गाव के एक किलो पानी म बाहर का दो किलो दूध मिला दिया जाता है, तो दही कैसे बनेगा ?"

अगले दिन सवेरे वृन्दावन आश्रम के कार्यकर्ता और नयी तालीम विद्यालय के सम्बन्धित लोग बाबा के पास जमा हो गये। एक प्रश्न के उत्तर म बाबा ने कहा कि "श्रद्धा यानी आरभ, जिससे मनुष्य मनन करता है, मनन की प्रेरणा मिलती है। 'श्रद्धा' का मतलब है अनुकूल चिंतन की प्रेरणा। और 'विश्वास' यानी जिसके हाथ मे अपने को सौंप सकते है। श्रद्धापूर्वक शुरू करो और विश्वासपूर्वक पहुँचो, तो आपको खण्ड-दान और अखड दान मिलेगा।

हिमालय के दर्शन

आज फासला लगभग १४ मील का था। ६॥ बजे निकलकर ७॥ बजे नरकटियागज पहुँच गये। आश्रम से कुछ दूर पर वह स्थान भी बाबा ने देखा, जहाँ गाधी सेवा सघ की बैठक के सिलसिले मे २ मई से ९ मई १९३९ तक बापू वृन्दावन ठहरे थे। आज दृश्य बहुत सुन्दर था। रास्तेभर हिमालय पहाड का दर्शन हुआ।

बाबा ने अपने भाषण में कहा कि "जिस हिमालय की ऊँचाई ३० हजार फुट थी और जिसे पार करना मुश्किल था, आज वह केवल ३० हजार फुट ही रह गयी है। इसलिए विज्ञान की माँग है कि ग्राम को परिवार का रूप दिया जाय और उधर विश्वराज्य बनाया जाय।

"इस विश्वराज्य का हिन्दुस्तान, चीन, जर्मनी, रूस, अमेरिका

एक-एक सूबा होगा और बिहार, बंगाल, केरल आदि होंगे एक-एक जिले, हमें ऊपर के स्तर पर विश्वराज्य और नीचे के स्तर पर ग्रामराज्य बनाना है। इसके लिए आप सबको पीला साफा लगा लेना चाहिए। ये सब काम इस जिले में होना है। चंपारन गांधीजी का जिला कहलाता है। गांधीजी की आत्मा यह जरूर चाहेगी कि यह जिला ग्रामदान में आ जाय।"

तिमप्पाजी का उपवास

इन्हीं दिनों एक खबर मिली कि कर्नाटक के सुप्रसिद्ध नेता श्री तिमप्पा नायकजी उपवास कर रहे हैं। हाल ही में मैसूर-राज्य ने अपनी नशाबन्दी नीति में कुछ ढिलाई की है। उसके इस निर्णय से दुखी होकर ही श्री तिमप्पाजी ने दो सप्ताह का उपवास किया। जब इसकी सूचना बाबा को मिली, तो उन्होंने उन्हें निम्नलिखित तार भेजा :

"वृद्धावस्था में आपके उपवास पर मुझे बड़ी चिंता है। मुझे आशा है, आप पानी अधिक मात्रा में ले रहे होंगे। भगवान् आपको यह तप सहन करने की शक्ति दे।" (मूल अंग्रेजी)

नरकटियागंज में ११॥ बजे क्षेत्र के कुछ विशिष्ट लोग बाबा से मिले। उन्होंने उनसे कहा कि "यह क्रांति का आन्दोलन है। इनकलाब लाना है। देश की परिस्थिति गम्भीर है। आप जो इस क्षेत्र के रहनेवाले हैं, उनको परिस्थिति का भान होना चाहिए और प्रखण्ड-दान का जो आपने संकल्प जाहिर किया है, उसे पूरा करना चाहिए।"

देश में आलस्य

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "आज देश में आलस्य छाया है। सरकारी दफ्तरों में मुश्किल से २॥ घण्टे काम होता है और चार घण्टे खेतों में। ग्रामदान मालिक और मजदूर में प्रेम लायेगा और उत्पादन बढ़ेगा।" ग्रामदानी और अग्रामदानी का भेद पूछा गया तो बाबा ने बताया कि "उतना ही भेद है, जितना उन दो आदमियों में जिनमें से

एक की नाक से साँस बह रही हो और दूसरे से नहीं। एक के लिए खिलाने पिलाने की व्यवस्था करनी होगी, दूसरे के लिए श्मशान ले जाने की तकलीफ उठानी होगी। हमने बीसवें हिस्से की जो माँग की है, वह आन्दोलन में गिरावट नहीं है, क्योंकि पहले छठा हिस्सा माँगते थे। अब साथ साथ ग्रामसभा को मालिकी समर्पण की भी माँग करते हैं। यह क्रांति का काम है।"

ग्राम की आम सभा में ९ ग्रामदान दिये गये और ११४८) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "वाल्मीकि ने रामचन्द्र का वर्णन करते हुए उपमा दी है कि उनमें समुद्र के जैसी गम्भीरता है और हिमालय के जैसी स्थिरता। आज विज्ञान के जमाने में स्थिरबुद्धि की बहुत ज्यादा आवश्यकता है। लड़ाई में क्षोभ नहीं चल सकता। इसीलिए महात्मा गांधी ने स्थितप्रज्ञ के श्लोक प्रार्थना में शामिल किये। ग्रामदान में समर्पण-योग है। हरएक को अपनी शक्ति के अनुसार देना है।"

२२ तारीख को ६ बजे नरकटियागंज से निकलकर सवा आठ बजे बाबा बगहा पहुँचे। उन्होंने कहा कि "पीला साफा सर पर बाँधने के माने हैं, 'सर पर बाँध कफन जो निकले वीरों की यह बात है भाई।' इसलिए क्रांति के काम के लिए निकल पड़े।"

दोपहर को कार्यकर्ता सभा में बाबा ने कहा कि "स्वराज्य के पहले जो नौकर थे, वे देशसेवक नहीं माने गये। बल्कि जब गांधीजी ने असहयोग जाहिर किया, तो कुछ सरकारी नौकर नौकरी छोड़कर चले आये और बाकी सारे देशद्रोही ही साबित हुए। लेकिन स्वराज्य के बाद से सब नौकर देशसेवक हैं। इसलिए शिक्षितों में से बड़ी तादाद में नौकरी में निकल जाते हैं। कुछ राजनीतिक पक्षों के झगड़े में फँस जाते हैं। दोनों को बाद कर जो बचते हैं, वे हमारे पास आते हैं। इस काम में वे ही लोग टिकेंगे, जिनमें क्रांति की भावना और वैराग्य का गुण होगा।"... कार्यकर्ताओं के वेतन में विषमता के बारे में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बाबा ने कहा कि "आज की हालत में इसकी शिकायत

नहीं होनी चाहिए। हमें विषमता की तरफ नहीं देखना है। मत्सर आदि नहीं करना है। ज्यादा त्याग अगर करना पड़े तो संतोष करना चाहिए।"

अनाज के ६ दुश्मन

शाम की आम सभा में ५ ग्रामदान दिये गये और १५०७) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "गोरखपुर की तरह चंपारन जिले में भी चीनी की मिलें हैं। हमें भय है कि आगे जाकर गल्ले और गन्ने की लड़ाई न हो। मनुष्य के ६ रिपुओं—काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सर की तरह गल्ले के भी ६ रिपु हैं। इनमें दो तामसी हैं, तम्बाकू और चाय। दो राजसी हैं, जूट और कपास। दो सात्त्विक हैं मूँगफली और गन्ना। आज हिन्दुस्तान की सबसे बेहतरीन जमीन तम्बाकू में चली जाती है। चाय और जूट की तो दुःखद कहानी है। देश के बँटवारे के बाद भारत में जूट के उत्पादन को प्रोत्साहन दिया गया, क्योंकि जूट-मिलें इधर थीं और जूट की ज्यादातर खेती पूर्वी बंगाल में होती थी। उधर पाकिस्तान में जूट की मिलों को बढ़ावा दिया गया, क्योंकि मिलें भारत के हिस्से में पड़ गयी थीं। परिणाम यह हुआ कि जूट का उत्पादन दुगुना हो गया और उसके दाम दुनिया के बाजार में गिर गये। पैसा भी नहीं मिला और गल्ले से भी हाथ धोना पड़ा। आजकल बारीक कपड़े का रिवाज होने के कारण कपास में बेढ़ी जमीन जा रही है। मूँगफली वारनिश और रोगन (पेंट) में इस्तेमाल करते हैं। चीनी का उत्पादन भी बढ़ा है। लेकिन चीनी बाहर भेजना और गल्ला बाहर से मँगाना बड़ा महँगा सौदा है। अगर देश को अन्न में स्वावलम्बी होना है, तो यह सारी नीति बदलनी होगी।"

एक जिले में एक व्यक्ति प्रखर हो

अगले दिन सबेरे की मंगल-बेला में बाबा ने कहा कि "हम यह नहीं देखते कि कितने ग्रामदान मिले। बल्कि यही देखते हैं कि कौन मनुष्य मिला। ऐसे व्यक्तियों को मैं याद किया करता हूँ। एक-एक

जिले के लिए एक एक व्यक्ति भी हो जाय, जैसे वैद्यनाथ बाबू पूर्णिया, जगन्नाथन् मदुराई, ब्रह्मदेव कानपुर, क्षितीश मेदिनीपुर, तो आगे काम बढ़ेगा। आन्दोलन में वे ही लोग बल देंगे, जिन्हें अन्दर से स्फूर्ति होगी।"

अशोक का सन्देश

पौने ९ बजे बाबा अरेराज पहुँचे। रास्ते में बेतिया में बहुत भीड़ थी। वहाँ पाँच मिनट के लिए उतरे और ग्रामदान की माग की। रास्ते में एक अशोक-स्तम्भ भी देखा। अपने भाषण में बाबा ने कहा कि "गौतम बुद्ध के हाथ में राज्य था। लेकिन क्रान्ति करनी थी, तो उन्होंने राज्य छोड़ दिया। सत्ता के द्वारा थोड़ी सेवा हो सकती है, क्रान्ति नहीं—यह सदेश अशोक का स्तम्भ दे रहा है। आपको मिलकर काम करना चाहिए।"

चंपारन जिले का यह आखिरी पड़ाव था। इस क्षेत्र के प्रमुख नागरिक, श्री विभूति नारायण मिश्र लोकसभा के सदस्य हैं और पार्लियामेंट की कांग्रेस पार्टी के मन्त्री भी। वे खास तौर से बाबा से मिलने के लिए कल दिल्ली से आये और आज बाबा से मिले। बाबा ने उनसे कहा कि "सितम्बर १९०७ में येलवाल (मैसूर) में जो ग्रामदान परिषद् हुई थी, उसमें विभिन्न पक्षों के नेता मौजूद थे। उसमें डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, पंडित नेहरू, पंडित गोविन्दवल्लभ पंत, श्री ढेबर भाई, श्री ई० एम० एस० नम्बूदरी पाद, श्री गंगाशरण सिंह आदि आये थे। इन सबने ग्रामदान का समर्थन किया था और देश से अपील की थी कि इस कार्यक्रम को उठा लें। लेकिन इस पर भी अगर आपका मतभेद हो, तो हम खुशी से बात करने को तैयार हैं। आप इस सम्बन्ध का कुछ साहित्य देख लीजिये और हमें स्वतन्त्र रूप से समय दीजिये, फिर आपसे चर्चा करेंगे। अगर हम कन्वर्ट हो गये तो हम फर्क करेंगे और आप कन्वर्ट हो गये तो आप फर्क करें।

समाजवाद और सर्वोदय

आज की कार्यकर्ता-गोष्ठी बहुत ही रोचक रही। तरह तरह के ९

पूछे गये। समाजवाद और सर्वोदय का अन्तर बताते हुए बाबा ने कहा कि "रूस और चीन में समाजवाद है, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य नहीं। अमेरिका में व्यक्ति-स्वातंत्र्य रखा है, लेकिन समाजवाद नहीं। सर्वोदय में व्यक्ति-स्वातंत्र्य के साथ-साथ समाज के लिए अर्पण की भावना भी है। सर्वोदय समाजवाद और लोकशाही दोनों का गुण है।"

पूर्वजन्म और प्रज्ञा

पूर्वजन्म और गरीबी-अमीरी के बारे में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बाबा ने कहा कि "पूर्वजन्म के परिणामस्वरूप आपको यह जन्म और प्रज्ञा मिलती है, इसका गरीबी-अमीरी से कोई वास्ता नहीं। शंकराचार्य गरीब कुल में हुए और गौतम बुद्ध राजघराने में। जन्म के पश्चात् फिर अपने पुरुषार्थ पर सारा निर्भर करता है।"

नारी-उन्नति

एक बहन ने पूछा कि नारी-उन्नति नहीं हो रही है, तो बाबा ने कहा : "कुछ तो बात सही है, लेकिन निराश होने की बात नहीं। अपने देश में सबसे बड़े नेता उत्तर प्रदेश में होते हैं। वहाँ अनुयायी कम, नेता ज्यादा हैं। लेकिन जहाँ बड़े-बड़े पुरुष थक गये, महान् नेतृत्व भी थक गया, वहाँ एक नारी मुख्यमन्त्री है। रथी, महारथी झगड़ते हैं, लड़ते हैं और क्षीण होते जाते हैं। इसलिए नारी को मौका मिला है। आगे भी स्त्रियों को मौका मिलनेवाला है, क्योंकि पुरुष तो लड़नेवाले ही हैं।" यह सुनकर सब हँस पड़े।

चर्चा के अन्त में बाबा ने कहा कि "आज का आखिरी दिन है। दुबारा इस जिले में कब आयेंगे, कह नहीं सकते। इसलिए यह अन्तिम यात्रा ही माननी चाहिए। लेकिन अगर आप १०० ग्रामदान रोज देने की तैयारी करें, तो फिर आना भी हो सकता है। इस जिले पर हमारी बड़ी श्रद्धा है। आप परिश्रम कीजिये तो उसके सुन्दर परिणाम जरूर आयेंगे।"

शाम की आमसभा में श्री ध्रुव नारायण त्रिपाठी, मन्त्री कांग्रेस-

कमेटी ने स्वागत किया। १३ ग्रामदान दिये गये और ११२१) रुपये की थैली।

चावल तराशना देश द्रोह है

अपने प्रवचन मे बाबा ने इस बात पर दुःख जाहिर किया कि "मिलों मे चावल की पालिशिंग होने पर लगभग १४ प्रतिशत उसका पोषण तत्त्व कम हो जाता है। इसलिए मिलवालो को सरकार कह रही है कि चावल ज्यादा मत तराशो, ४ प्रतिशत तक तराशो। मेरी समझ मे नहीं आता कि हाथकुटा चावल क्यों न चलाया जाय और मिलें बन्द क्यों न की जायें? क्या कारण है इसका, सिवा इसके कि मिलवाले आज पार्लियामेंट में बैठे हैं और लोग ऐसे बेवकूफ बने है कि तराशे हुए सफेद चावल ही उन्हें अच्छे लगते है। कहा जाता है कि तराशे चावल ज्यादा दिन टिकते हैं। यह ठीक ही है, क्योंकि उनमें पोषण इतना कम हो जाता है कि कीडे भी उन्हे खाना नहीं चाहते। लेकिन पोषण निकल जाने से ये पचने मे भी भारी हो सकते हैं। हाथकुटा चावल बनेगा, तो उसमे एक परसेंट पोषण निकल जायगा। बाकी पोषण रहेगा तो वे पचने मे अच्छे होंगे। मैंने दोनों चावल चलाये है। किसानों ने हाथ-कुटा चावल ही पसन्द किया। कहा कि यह खाने से पट मे शाति रहती है और उससे ताकत महसूस होती है। अवश्य ही बिना कुटा चावल पकाने में देरी लगती है, लेकिन अगर भाप पर पकाया जाय, तो बहुत मुलायम मक्खन जैसा बनता है। मैंने उसे इसी तरह पकाकर खिलाया तो लोगों ने बहुत पसन्द किया। जिस हिन्दुस्तान में १० प्रतिशत अनाज कम हो, वहाँ चावल मे १४ प्रतिशत ताकत कम करना तो गुनाह माना जाना चाहिए। सरकार की ओर से जाहिर होना चाहिए कि यह देश-द्रोह है। इसका मतलब है १४ प्रतिशत अनाज को फेंकना।

"हमारे प्रधान मत्री सलाह देते है कि एक दिन का खाना छोडना चाहिए। पर क्या इससे देश खडा हो जायगा? एक दिन खाना छोडा, ...

तो दूसरे दिन मनुष्य ज्यादा खा सकता है। इसलिए यह नाटक कारगर नहीं होगा। यह ठीक है कि उससे लाभ होगा। एक भावना तैयार होगी कि हम देश के लिए खाना छोड़ रहे हैं। लेकिन इधर १४ प्रतिशत ताकत घटायी जाय, जिन्दा चावल को तराश करके मुर्दा बनाया जाय और उधर १० प्रतिशत अनाज कम पड़े।

मालिक आप हैं

"सरकार ये चीजें कब बन्द करेगी मालूम नहीं, लेकिन ग्रामदान द्वारा आप इसे सँभाल सकते हैं। अगर लोग कहेंगे कि हमें मिल का चावल नहीं चाहिए, तो आप पर कौन जबरदस्ती करनेवाला है? लेकिन शहर के लोग आज उसके आदी बन गये हैं। इसलिए ग्रामीणों को समझा दिया जाय तो वे जरूर बिनाकुटा चावल पसंद करें। लेकिन यह सब मैं किसके सामने रखूँ? सरकार की जो सरकार है, उसके सामने रखता हूँ। सरकार की सरकार आप हैं। आपने सरकार को कुछ साल के लिए नौकरी पर रखा है और मालिक आप हैं। मान लीजिये, ग्रामदानी गाँव बनता है और गाँव तय करता है कि अपने गाँव के लिए हाथ-कुटा चावल इस्तेमाल होगा। उधर सरकार चाहे जो करे, हम हाथ-कुटा चावल ही इस्तेमाल करेंगे तो गाँववालों को ताजा चावल और पुष्टि मिलेगी। इसीका नाम है 'ग्राम-स्वराज्य'।"

केवल दो सरकारें

अन्त में बाबा ने कहा कि "अगर आपको भगवान् प्रेरणा दे, तो यह किये बिना आपको चैन नहीं पड़ेगा। इसीलिए मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ। वही मेरी सरकार है। उसके बाद दूसरी सरकार है, आप लोग! इसलिए भगवान् के बाद मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। और तीसरी सरकार दिल्ली की है। वह सुने न सुने, उससे मैं नहीं कहता। नम्बर एक की सरकार भगवान् और नम्बर दो की सरकार आप लोग! तो हम-आप भगवान् से शक्ति लेकर निकलेंगे और प्रखंड-दान लायेंगे।"

शाम को प्रान्तीय कांग्रेस के मन्त्री श्री ध्रुवबाबू और चंपारन की जिला कांग्रेस के अध्यक्ष श्री सुदामाबाबू बाबा से मिले। उन्होंने ग्राम-दान के काम में लगने का और सहयोग देने का आश्वासन दिया।

चंपारन जिले की आठ दिन की यात्रा में ६४ ग्रामदान हुए। अभी तक इधर विचार-प्रचार भी बहुत कम हुआ है। बाबा जब २४ तारीख को सवेरे अरेराज से विदा हो रहे थे, तो जिले के कार्यकर्ताओं ने मिल-कर उनको बताया कि "हम पाँच प्रखंड दान प्राप्त करने का संकल्प करते हैं। विशेषकर वृन्दावन आश्रम के पास पूरी शक्ति लगाने का हमने तय किया है।" यह बड़ी आशाजनक चीज है। वृन्दावन आश्रम आगे चल-कर शक्ति का स्रोत साबित होगा और सारे जिले के सामने बापू के स्वप्नों को साकार करने का उदाहरण रख सकेगा। ●

राजेन्द्रबाबू की स्मृति में : १५ :

"यह जिला अपनी खास हैसियत रखता है। भारत को इसने महान् नेता दिये हैं राजेन्द्रबाबू, मजहरुल हक, जयप्रकाशजी। राजेन्द्रबाबू बहुत बड़े समाज-सेवक, सत्यनिष्ठ, भूत-दया-सम्पन्न, अत्यन्त नम्र, परम साधु, सरल व्यवहार करनेवाले, ऊँचे स्थान पर रहने पर भी यह अभिमान रखनेवाले नहीं कि ऊँचे स्थान पर हैं, किसान से एकरूप, महात्मा गांधी के अत्यन्त प्रिय, हमारे आदरणीय रहे।......यहाँ आते-आते मेरे ध्यान में आया कि अगर पूरा-का-पूरा सारन जिला ग्रामदान में आता है, तो इससे बढकर राजेन्द्रबाबू का कोई स्मारक नहीं। पटने में इनका स्मारक संग्रहालय देखा। इन दिनों ऐसे स्मारक का रिवाज पड़ गया है। लेकिन इतने बड़े महापुरुष का स्मारक एक छोटे मकान से नहीं हो सकता। इसलिए जब राजेन्द्रबाबू के स्मारक की बातें मेरे सामने निकली, तो मैंने कहा कि पैसे इकट्ठा करने में मेरी दिलचस्पी नहीं है। गाधीनिधि को आखिरी स्मारक-निधि मानना चाहिए। इसके आगे जो स्मारक हों, वे कार्यरूप में हों। राजेन्द्रबाबू का सच्चा स्मारक सारन जिला पूरा-का-पूरा ग्रामदान हो, यही हो सकता है।"

उपर्युक्त उद्‌गार २८ नवम्बर को छपरा नगर की विशाल सार्वजनिक सभा में बाबा ने प्रकट किये। उनका यह विचार बहुत लोकप्रिय हुआ और एक दिन तो जब बाबा पड़ाव पर पहुँच रहे थे तो रास्ते में लोगों ने कहा :

"गाँव गाँव में गूँजे नारा।
ग्रामदान हो जिला हमारा॥

गाँव गाँव में गूँजे नारा।
ग्रामदान हो सारन हमारा॥

हाजीपुर से निकलकर गंडक पार करने के बाद बाबा जब छपरा पहुँचे, तो सरकिट हाउस में स्वागत के लिए बहुत-से लोग जमा थे। कुछ बरामदे में बैठे थे, कुछ खुले में और कुछ नीचे खड़े थे। बाबा ने कहा : "हमारे सामने श्रेणी विभक्त समाज का दर्शन हो रहा है। हमारा काम है कि इन तीनों का मेल हो और एक परिवार की तरह रहकर सभी समाज की उन्नति में लगें। एक-दूसरे के प्रति गाँव में सहानुभूति और प्रेम होना चाहिए। आप सब पीले साफे लगाये।"

शिक्षित लोग और नारी

११ बजे कार्यकर्ता-सभा में सवाल पूछा गया कि "नारी के प्रति मनुष्य का व्यवहार शासक का होना चाहिए, अगर नहीं तो क्यों?" बाबा ने कहा : "शासक तो अपने प्रति ही होना चाहिए। जो खुद का शासन नहीं करता, वह दूसरे का शासन क्या करेगा? उसका गुलाम हो जायगा। मैंने देखा है कि स्त्रियों पर शासन चलानेवाले हमेशा स्त्रियों से शासित होते हैं और बिल्कुल उनके गुलाम रहते हैं। खासकर शिक्षित लोग ज्यादा गुलाम होते हैं। आपको अपनी नींद पर काबू नहीं, स्वप्न पर काबू नहीं, वाणी पर काबू नहीं, इंद्रियों पर नहीं, तो किस पर सत्ता चलायेंगे?"

हमारा दावा

आम सभा में आज ८ ग्रामदान जाहिर किये गये। बाबा ने कहा कि "यह भिखमंगा कार्यक्रम हो गया। इससे मेरा कोई समाधान न होगा, न देश का होगा। इससे लोकक्रांति नहीं होगी। मेरा समाधान तब तक नहीं होगा, जब तक सारन का पूरा जिला ग्रामदान में न आ जाये। फिर यह तो राजेन्द्रबाबू का जिला है। उनका पटने में एक स्मारक मैंने देखा, लेकिन उनका सच्चा स्मारक तो छपरा (सारन) जिले भर का ग्रामदान ही

हो सकता है।'' हमारा दावा है कि ग्रामदान आन्दोलन में सबका लाभ है। अगर कोई जरा भी नुकसान दिखला दे, तो हम आन्दोलन वापस लेने को तैयार है। जमीन की मालकियत आप पकड नहीं सकते। आपके हाथ कमजोर हैं। जमीन की खरीद-बिक्री ग्रामद्रोह है। आप जमीन पकड़िये अपने हाथों से और जमीन की मालिकी सौंपिये ग्रामसभा के हाथों में।"

बाबा ने माँग की कि "छपरा जिले से कम-से-कम सौ परिवार पीछे एक समाज-सेवक निकले और इस तरह यहाँ एक सेना खड़ी हो जाय, जो शान्ति-स्थापना और ग्रामदान का काम करे।" अन्त में बाबा ने जिला ग्रामदान के लिए हाथ उठवाये तो हजारों हाथ उठ गये। बाबा ने कहा कि "सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ। इसे पूरा करने के लिए आपको थोड़ा त्याग करना होगा।"

शब्द की महिमा

२९ तारीख को ८॥ बजे बाबा शाहपुर पहुँचे, जहाँ एक स्कूल में निवास था। उन्होंने कहा कि "सारे जिले का ग्रामदान करने के लिए लग जाइये। इसके साथ-साथ शान्ति की रक्षा के लिए शान्ति-सेना खड़ी करनी है और ग्रामोद्योग भी बढ़ाने है। जो शब्द मुख से निकलता है, वह फिर पूरा होता रहता है, क्योंकि उसमें परमेश्वर की शक्ति जुड़ जाती है। जैसे 'क्विट् इण्डिया' वैसे ही 'जिला-दान'। अब इस कल्पना को मूर्तरूप देना है।"

कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "सर्वोदय के चार प्रश्न ये हैं : १. गाँववालों का असर सरकार पर कैसे पड़ेगा, २. सरकार का असर सेना पर कैसे पड़ेगा, ३. राष्ट्र का असर विश्व पर कैसे पड़ेगा, और ४. जनता पर नैतिक मूल्यों का असर कैसे पड़ेगा ?

सारन में ग्रामदान जरूरी

शाम की सभा में लगभग ३ बजे से श्री महादेवी ताई ने साहित्य के

अध्ययन और स्त्री शक्ति खडी करने पर भाषण किया। फिर सवा तीन बजे बाबा यहाँ पहुँचे। ६३ ग्रामदान दिये गये और ३००१) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि पॉच साल में एक दफा आपके पास वोट मॉंगने के लिए आते हैं और आप तय करते हैं कि चाकरी के लिए किसे रखा जाय। आप खुद मुख्तियार हैं। यद्यपि गॉव म रहनेवाले आप लोग ८० प्रतिशत हैं और २० प्रतिशत शहरों में रहते हैं, फिर भी सरकार पर रग शहरों का ही है। इसका कारण यही है कि आपके वोट बँट जाते हैं और ताकत नहीं बनती। लेकिन अगर एक एक गाँव का पूरा-का पूरा परिवार बनाते हैं, तो किसीकी आपके सामने कुछ नहीं चलेगी।' छपरा जिले में तो ग्रामदान के बिना काम चल ही नहीं सकता। यहाँ प्रतिव्यक्ति १.५ एकड जमीन है, यानी पॉच मनुष्यों के परिवार के पास एक एकड जमीन और प्रति वर्गमील जनसख्या २१४८ है। ऐसी हालत मे अगर गॉव गाँव से आयोजन नहीं होता और गॉव की जमीन गॉव के बाहरवाले ले लेते है, तो बेकारी बढेगी और जबरदस्त असन्तोष पैदा होगा। इसलिए यहाँ के लिए ग्रामदान बहुत जरूरी है।"

आज भी बाबा ने हाथ उठवाये तो हजारों हाथ उठे। बाबा ने कहा "यह प्रस्ताव पास हो गया। सारन जिला पूज्य राजेन्द्रबाबू की स्मृति मे ग्रामदान में लाना है। जिन्होंने ने हाथ उठाये हैं, उनको ग्रामदान के लिए कोशिश करनी चाहिए और अपने आप भी उसमे शरीक होना चाहिए।"

कृष्णराज भाई आज पडाव पर शाम को पहुँचे। दिन मे ये जिला विकास अधिकारी के साथ माँझी गये थे, जहाँ प्रखण्ड के दान की विस्तृत योजना बनी।

अगले दिन ६ बजे बाबा शाहपुर से निकले। रास्ते में बसन्तपुर गॉव में ठहरे, जहाँ ४ ग्रामदान भेट किये गये। बाबा ने वहाँ के लोगो से कहा कि "आपको मिलकर रहना चाहिए। आपस में झगडा नहीं करना चाहिए और दूसरे गॉव का ग्रामदान हासिल करना चाहिए।"

स्कूलों में विद्या नहीं

गौरैया कोठी में पड़ाव था, जहाँ बाबा ८। बजे पहुँचे। निवास की व्यवस्था एक स्कूल में की गयी थी। बाबा ने कहा कि "हमारे देश में जहाँ-तहाँ विद्यालय खड़े हैं और लोगों ने उसके लिए काफी त्याग भी किया है। मकान बनाने के लिए जमीन दान देते हैं और बड़े उत्साह से स्कूल खड़े करते हैं। बिहार में तो हमने यह भी देखा है, जहाँ एक स्कूल भी अच्छी तरह नहीं पनप सकता, वहाँ दो-दो स्कूल खोल रखे हैं। गाँव में दो अलग-अलग पार्टियों के लोग होते हैं, तो दोनों पार्टियाँ अपना-अपना अलग स्कूल खोल लेती हैं। जैसे दो पार्टियों के दो झंडे, वैसे ही दो स्कूल!

"स्कूलों में विद्याभ्यास कराते हैं तो अंग्रेजी खूब रटाते हैं। फिर शिकायत करते हैं कि लड़कों की अंग्रेजी बहुत कमजोर है। मैं उनसे कहता हूँ कि आप लोगों ने गलती की। उसे सुधारिये, तब आपके लड़कों को अंग्रेजी आयेगी। आपने कहा था कि 'क्विट् इण्डिया' 'भारत छोड़ो', पर अब कहना चाहिए 'रिटर्न इण्डिया' (भारत लौटो)। तब आपके बच्चे बहुत अच्छी अंग्रेजी सीख लेंगे। बिलकुल अंग्रेजों जैसा उच्चारण करेंगे। क्या कहा जाय? ऐसी निकम्मी विद्या भारत में चल रही है। हमें बड़ा आश्चर्य हो रहा है। आप शायद जानते हैं कि मैं था कालेज में। मुझे वहाँ सब चीजें मिलीं, लेकिन विद्या नहीं। तब मैंने कालेज छोड़ा और घर भी छोड़ा और ब्रह्मविद्या की खोज में निकल पड़ा। बाहर मुझे बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ। मैं आज जो थोड़ा-सा काम कर सकता हूँ, वह इसलिए कि मैं कालेज छोड़कर निकला। सिवा क्रांति के ताकत नहीं आती। यह आज हमारी शिक्षा का हाल है। बहुत बड़ा बंग्लिंग इस मामले में हुआ है।"

यह कैसा दान-धर्म?

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में एक भाई ने पूछा कि "क्या स्वामित्व-

विसर्जन के बिना सत्य, प्रेम, करुणा पर अमल नहीं हो सकता ?" बाबा ने कहा "अगर हो सकता, तो क्यों नहा हुआ ? सरकार और सहयोग के नाम पर देश मे जो चला है, उसे आत्मवचना नही तो और क्या कहा जाय ? अब ये लोग मुझे ठगना चाहते हैं। बात यह है कि हममें जो सज्जन है, वे बिल्कुल नीरस ओर दुर्बल हो गये हैं। एक तरफ से शोषण चलता है, तो दूसरी तरफ दान धर्म, ताकि वैकुण्ठ मे गुजाइश हो जाय और नये-नये पाप करने के लिए लाइसेंस भी मिल जाय, यह कोई धर्म है ?"

मानव-समाज का विकास

शाम की सभा मे ४ ग्रामदान मिले, वे ही जो सुबह रास्ते में मिले थे। ३२१५) की थैली दी गयी। बाबा ने कहा कि "मानव-समाज जैसे जैसे आगे बढ़ता गया, उसका विचार भी आगे बढता गया और उसे नये नये शब्द मिलते गये। एक जमाने मे कुल दुनिया मे धर्म सस्थापन का जोर था। फिर मध्ययुग में ईश्वर की भक्ति की प्रेरणा चली। उसके बाद विज्ञान आया और ऐसी हवा चली कि हर देश को आजादी की तमन्ना हुई। जगह जगह आजादी की लड़ाइयाँ चलीं। मानव मानव में स्वाधीनता की भावना आयी। भारत मे एक अजीब घटना हुई। अंग्रेजों ने उसे नि शस्त्र बना रखा था, जिससे या तो वह हमेशा के लिए पराधीन रहता या अहिंसा की शक्ति खडी करता। यह एक ऐतिहासिक आवश्यकता हो गयी। महात्मा गाधी इसके निमित्त बनकर आये और उन्होंने एक नया शब्द दिया 'सत्याग्रह'। इससे राजनैतिक स्वाधीनता की कुजी हाथ लगी। अब इसके बाद आर्थिक और सामाजिक स्वाधीनता के लिए सर्वोदय' और 'साम्यवाद' दो शब्द सामने हैं।"

साम्यवाद में फूट

बाबा ने आगे कहा "ये दोनों शब्द मानव को समझा रहे हैं कि तुम्हारा किसमें भला है। एक कहता है कम्युनिज्म में, तो दूसरा सर्वोदय

में। आज कम्युनिज्म के अन्दर फूट पड़ गयी है, उसके दो टुकड़े हो गये हैं। एक रूस का साम्यवाद है, तो दूसरा है चीन का साम्यवाद। भारत में भी साम्यवादियों में ऐसे ही दो टुकड़े हो गये हैं। जब किसी विचार में टुकड़े पड़ना शुरू होते हैं, तब समझना चाहिए कि वह विचार गिरनेवाला है और दूसरा टिकनेवाला है। साम्यवाद मे ये दो टुकड़े होने का कारण यह है कि विज्ञान मे आणविक शक्ति की खोज हुई और यह शक्ति हिंसा-शक्ति ही नहीं, अति-हिंसा या संहार-शक्ति है। लेकिन वह मूढ़ है कि किसी एक के साथ नहीं रहती। जब यह देखा कि वह पतिव्रता नहीं है, इसमें निष्ठा नहीं है, किसीके साथ में रह सकती है, तब ध्यान आया कि इसके आधार पर हम कम्युनिज्म फैला नहीं सकते। अब कम्युनिज्म फैलेगा तो गुणों के अनुसार ही फैलेगा। यह बात रूस की समझ में आ गयी। चीनवालों ने ऐसा नहीं सोचा। वे अब भी मानते हैं कि हिंसा से ही साम्यवाद फैल सकता है। इस तरह साम्यवाद में दो टुकड़े पड़ गये।"

इस तरह साम्यवाद की वर्तमान फूट के कारणों का विश्लेषण करके बाबा ने कहा : "इस हालत में हमे सर्वोदय का झंडा खड़ा करना है, अन्यथा हमें साम्यवाद के खिलाफ लड़ने के लिए एक भी वीर नहीं रहेगा और फिर से पूँजीवादी विचार जोर पकड़ेगा। भारत को अहिंसा के शस्त्र से आजादी प्राप्त हुई और वह शस्त्र दुनिया के सामने रखा। अब भारत को आर्थिक और सामाजिक आजादी भी उसी अहिंसा के रास्ते से प्राप्त करना और वह शस्त्र दुनिया के सामने रखना है। इसीलिए बाबा की यात्रा चल रही है। इस संदर्भ में आपको ग्रामदान समझना होगा। एक-एक ग्रामदान आणविक शक्ति का दर्शन है। इसी दृष्टि से ग्रामदान की ओर देखिये।"

पहली दिसम्बर को मंगल बेला में बाबा ने बताया कि "ईश्वर-प्राप्ति का सरल उपाय यही है कि उसके लिए अपने अन्दर इच्छा जगे और

इच्छा जगे तो दरवाजा खुला रखना चाहिए। भगवान् खुद अन्दर आना चाहता है।"

सच्चा स्मारक

पौने आठ बजे बाबा इथुआ आ पहुँचे। उन्होंने कहा कि "जब से मैंने छपरा जिले में प्रवेश किया, तभी से राजेन्द्रबाबू की स्मृति में जिला-दान की बात रख रहा हूँ। असली स्मारक वह होता है, जो जनता के जीवन में दाखिल हो। सारा भारत ग्रामदानी भारत हो, तभी राजेन्द्रबाबू का सच्चा स्मारक होगा। सारे भारत को ग्रामदान के लिए बहुत बड़े पुरुषार्थ की जरूरत होगी। लेकिन अगर बिहार का ग्रामदान हो जाय, तो भी बड़ी क्रान्ति मानी जायगी। इसका आरंभ सारन से होना चाहिए।

"सारन जिले में २५ लाख गाँव हैं। औसत परिवार १५ का माने तो भी २ लाख परिवार होंगे। परिवार से एक व्यक्ति के हिसाब से २ लाख सेवक निकलने चाहिए। लेकिन इतने नहीं तो कम से कम एक हजार सेवक तो मिलने ही चाहिए। वे ग्रामदान का काम करें तो उसका असर राजनीति पर, चुनाव आदि सब पर पड़ेगा और सच्चे जनतन्त्र की स्थापना में मदद मिलेगी। आजकल तो वोट के नाम पर आदमी का अधिकार ही छीन लिया गया है। मूर्ति पूजा की बजाय पार्टी पूजा चलती है। ग्रामदान से सब नक्शा बदलेगा। इसलिए सब मिलकर जोर लगाइये।"

सबै भूमि गोपाल की

दोपहर को ११ बजे कार्यकर्ताओं की सभा हुई। बाबा ने कहा : "आज जो सरकार पर हमारा अंकुश नहीं है, इसका कारण यह है कि हम उस पर अंकुश रखने लायक नहीं हैं। अगर पराक्रम कर और ग्रामदान हासिल करें, तो सरकार की मदद पूरी मिलेगी, लेकिन दखल नहीं रहेगा।" एक भाई ने पूछा कि "जब 'सबै भूमि गोपाल की' है, तो ग्रामदान

की क्या जरूरत है ?" बाबा ने कहा : "आपका मतलब यह है कि सब भूमि गोपाल की और इसके बाद मेरी। मैं कहता हूँ, सब भूमि गोपाल की और उसकी तरफ से गाँव की। नम्बर एक में भगवान् की जमीन है और नम्बर दो में ग्रामसभा की और नम्बर तीन में आपकी। इसलिए बाबा दान माँग रहा है। बिना ग्रामदान के भारत नहीं टिकेगा। आज समझ में नहीं आया तो बाबा की मृत्यु के बाद आयेगा।"

शाम की आम सभा में क्षेत्र की तरफ से श्री प्रभुनाथ तिवारी ने स्वागत किया। पास ही में उनका गाँव है, जो ग्रामदान में आ चुका है। प्रभुनाथजी प्रान्तीय कांग्रेस की तरफ से सारे बिहार में कांग्रेस-जनों को ग्रामदान की तरफ मुखातिब करने का काम करते हैं। आज ३३ ग्रामदान दिये गये और ११११) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "बारह साल पहले मैं यहाँ भूदान लेकर आया था। भूदान से आगे ग्रामदान है और ग्रामदान से आगे है ग्रामदान तूफान। यह सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति का काम है।"

लेवी और ग्रामदान

बाबा ने आगे कहा : "आज बिहार में लेवी की बात चलती है। उद्देश्य यह है कि अनाज इकट्ठा करेंगे और फिर बाँटेंगे, कुछ शहरवालों को और कुछ गाँववालों को भी। एक बाजू छोटा किसान है और दूसरी बाजू सारी सरकार। एक-एक किसान से लेने में बहुत बड़ा अन्याय हो सकता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि आप ग्रामदान कीजिये और अपनी जमीन की मालिकी ग्रामसभा को सिपुर्द कर दीजिये। फिर उसके बाद सरकार से व्यवहार किसान को नहीं, ग्रामसभा को करना पड़ेगा। ग्रामसभा से सरकार पूछेगी कि कितना अनाज बढ़ती है, तो ग्रामसभा गाँव की आवश्यकताभर रखकर—एक साल के लिए नहीं, बल्कि दो साल के लिए गाँव की खातिर अनाज रखकर—जो अनाज बचेगा, उतना जाहिर करेगी और वह सरकार को देगी। अलग-अलग किसान को देने की

जरूरत नहीं। इसलिए लेवी के बारे में हमने जो ग्रामदान का उपाय सुझाया है, उस पर तुरन्त अमल करना चाहिए।

केवल दस प्रतिशत

"जवान लोग पूछते हैं कि बाबा तो बूढा है, फिर भी इतनी तीव्रता क्यों ? अरे भाई, बाबा बूढा है, इसीलिए तो तीव्रता है। आप जवान हैं, तो आराम से धीरे चलेंगे, लेकिन बाबा को दीख रहा है कि चीन और पाकिस्तान का सकट भारत पर है, तब भी आपका प्रधानमत्री एक शब्द नही बोल रहा है, दो शब्द बोल रहा है—'जय जवान, जय किसान'। इतनी देर बाद किसान याद आया। अब तक तो कारखाने खोलते रहे—चित्तरजन, मनोरजन, बुद्धिरजन बहुत कर डाला, अब जब भजन का मौका आया, तो किसान की याद आयी।

"लेकिन विद्वान् लोग अभी नही समझे है। वे इस खयाल मे हैं कि बाहर से अनाज आ जायगा। कहते है, केवल १० प्रतिशत अनाज कम है, ज्यादा नहीं। इसका मतलब क्या होगा ? ४८ करोड लोग भारत मे हैं। १० प्रतिशत यानी चार करोड अस्सी लाख, लगभग बिहार की आबादी। तो इनके कहने का मतलब यह है कि अगर बिहार के लोग सिर्फ एक साल के लिए खाना छोड दें, तो भारत को पूरे सालभर खाना मिलेगा।" १० प्रतिशत को इन्होने छोटी चीज समझ रखा है। फ्रास की आबादी लगभग पॉच करोड है। मान लीजिये, कुल फ्रास को सालभर खाना न मिले, वह हालत भारत की आज है। कितना भयानक अर्थ इस १० प्रतिशत का होता है ! ऐसी हालत में गाँव-गॉव मे अनाज बढाना है, तो ग्रामदान के अलावा कोई भी दूसरा चारा आपके पास नहीं है। इसीलिए बाबा को तीव्रता है।"

देवरिया जिले के तमकुही रोड नामक गॉव के डाक्टर हरिहर प्रसाद पाडेय अपने कुछ मित्रों के साथ आये और शाम को बाबा से मिले। उन्होंने बताया कि "पिछले पाँच साल से वहाँ स्वाध्याय चल रहा

है और सर्वोदय-पात्र का भी काम होता है। बाबा को यह जानकर बहुत खुशी हुई और उन्होंने कहा कि "देवरिया तो बाबा राघवदास का जिला है।......आपको साहित्य-प्रचार का काम आगे और बढ़ाना चाहिए।"

गुरुवार तारीख २ दिसम्बर की मंगल वेला में हथुआ में हथुआ राज के मैनेजर और कुछ अन्य लोग बाबा से मिले। बाबा ने कहा कि "हमने आशा यह रखी थी कि राजा लोग राजनीति के पक्षों से अलग रहेंगे, घर-गिरस्ती से भी दूर रहेंगे और जनसेवा में लग जायेंगे। लेकिन वे हमारा मतलब समझे नहीं। वे पक्षों में पड़ गये और जनता की सेवा भी नहीं कर सके।"

वन-मैन रूल

"जनतंत्र के बारे में बोलते हुए बाबा ने कहा कि "इसमें बहुमत के नाम पर अल्पमत का राज्य चलता है। प्रधानमन्त्री की ताकत आप देखते हैं। पुराने किसी राजा से कम नहीं होती। आजकल पाँच साल में इतना काम हो सकता है, जितना पचास साल में मुश्किल था।...... 'वन-मैन रूल' होता है। उस हालत में अगर देश में अन्दर से असंतोष है, गाँव-गाँव में भेदभाव और झगड़े हैं, परदेश से आक्रमण की संभावना है और सेना की प्रतिष्ठा भी है, तो सेना हावी होने की गुंजाइश पैदा हो जाती है। यद्यपि भारत में यह होना बहुत आसान नहीं है। इसलिए नागरिक नेतृत्व मजबूत होना चाहिए और इस पर जनता का, नैतिक मूल्यों का अंकुश रहना चाहिए।"

जनतंत्र और ग्रामदान

हथुआ से भोरे जाने के रास्ते में मिसर बतरहा गाँव में १२ ग्रामदान मिले। सवा सात बजे बाबा पड़ाव पर पहुँच गये। स्वागत-सभा में उनके बैठने के लिए चौकी पर जो चादर बिछी थी, उस पर शेर का चित्र बना था। बाबा ने कहा : *"यह व्याघ्र-आसन मिलिटरी है और इस पर बाबा*

बैठा है, मिलिटरी पर जनता की सरकार बैठी है। अगर ये व्याघ्र महाशय सामने खड़े हो जायँ, तो सारी सभा बिखर जायेगी। कारण आज सकट-काल में लोकतन्त्र को अपने पर विश्वास नहीं रह पाता है। सच्चा लोकतन्त्र अभी तक कहीं स्थापित नहीं हुआ है। इसके लिए तो शक्ति खड़ी करनी होगी। आज प्रातिनिधिक लोकतन्त्र चलता है। होना यह चाहिए कि प्रत्यक्ष लोकतन्त्र हो और ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता नीचे के स्तर पर हो। ऊपर की सत्ता कम-से कम हो और को-आर्डीनेशन, यातायात और अन्य ऐसे कामो के लिए हो। आज तो वह सर्वेसर्वा बनी है, कहलाती है 'वेल्फेयर स्टेट'। लेकिन मैंने उसे 'इल्फेयर' नाम दिया है, जो प्रधानमन्त्री या मुख्यमन्त्री के अनुसार चलता है। पुराने राजाओं जैसी हालत है। अगर अकबर का राज्य है तो लोग सुखी हैं, अगर औरगजेब का है तो दुःखी। देखिये बिहार में गोवधबन्दी है, लेकिन शराब मुक्ति है। उधर गुजरात में शराबबन्दी है, लेकिन गोवध जारी है। अब आपसे पूछा जाय कि क्या बिहार के लोकमत मे और गुजरात के लोकमत में इतना फर्क है? क्या बिहार के लोग शराबबन्दी के अनुकूल नहीं और गुजरात के लोग गोवध के खिलाफ हैं? बात यह है कि मिनिस्टरों को जैसा सूझता है, करते हैं। इससे ध्यान मे आयेगा कि आज लोकतन्त्र नाम-मात्र का है और वास्तव में लोगों की कुछ नहीं चलती। लोगों की तभी चलेगी, जब वे अपनी शक्ति खड़ी करेंगे। इसका माध्यम ग्रामदान है।

"ग्रामदान से आपकी राजनीति का लोकनीति में परिवर्तन होगा। उसके आधार पर ग्राम स्वराज्य खड़ा होगा और लोगों की शक्ति बढ़ेगी। ग्रामदान से समग्र क्रान्ति होगी। इस क्रान्ति के लिए बिहार का वाता-वरण बहुत अनुकूल है।"

नाम-स्मरण

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा मे एक प्रश्न के उत्तर मे बाबा ने कहा कि "जिस तरह मीठे का अपना गुण होता है, उसी तरह नाम स्मरण में

अपनी भक्ति है। नाम-स्मरण शाब्दिक क्रिया न मानी जाय। शाब्दिक क्रिया से थकान आती है। नाम-स्मरण अखण्ड सावधानता का सूचक है।···साम्यवाद में प्रेम है, करुणा है, लेकिन सत्य नहीं है, क्योंकि जिस सत्य पर उसने आधार रखा है, वह मिथ्या वस्तु है। जहाँ सत्यबुद्धि नहीं, वहाँ समत्व नहीं।"

शाम की आम सभा में १२ ग्रामदान, रास्ते से १३ और इस तरह कुल २५ ग्रामदान जाहिर किये गये और १६५१) की थैली। बाबा ने ग्रामदानों की तरफ इशारा करते हुए कहा कि "तेरह ग्रामदानी गाँवों की आबादी २६३० है और शामिल हैं २१६१, तो ७५ प्रतिशत हो गये। लेकिन कुल रकबा है २२६१ और ग्रामदान में आये हैं ५३० एकड़ यानी २५ प्रतिशत।···जाँच होने पर तो ये ग्रामदान टूटेंगे। इसलिए समझना चाहिए कि जो भी आप काम करें, वह पक्का हो।

कलकत्ते में गो-वध !

बाबा ने आगे कहा कि "आज १८ साल के स्वराज्य के बाद बिहार में प्रतिव्यक्ति सवा छटाक दूध है। इसमें घी, मिठाई आदि सब चीजें शामिल हैं। इसीमें से बीमारों, बच्चों और बूढ़ों को भी मिलता है।··· फिर बिहार में और क्या हो रहा है ? यहाँ की अच्छी-से-अच्छी गायें कलकत्ते की यात्रा के लिए जाती हैं, वहाँ आठ महीने दूध देती हैं और बाद में कसाई के पास भेज दी जाती हैं। बंगाल में गो-वधबन्दी कानून नहीं है। इस तरह अच्छी-से-अच्छी गायें खतम होती जाती हैं। कलकत्ते की हालत तो पूछिये नहीं। बहुत दुःख होता है हमें इस बात का कि हमारे देश की गायें कलकत्ते जाकर कट जायँ। हमारे अपने राज्य में यह सब क्यों होना चाहिए ? मैं यह कहता था कि अनाज भी पूरा नहीं, दूध भी पूरा नहीं, सबसे नीचे का जो तबका है उसकी कोई चिंता नहीं। कहीं-कहीं तो वे गुबरी खाते हैं। मुझे विश्वास नहीं होता था। लेकिन जब उत्तर प्रदेश के दौरे में बाबा राघवदास ने सबूत दे दिया,

तो मानना पडा। गाय के गोबर मे से अन्न निकाल-निकालकर उसकी रोटी बनाते हैं, यह हालत है। नीचे के लोगों को उठाना है। उनका उदय होना चाहिए। इसका नाम है अन्त्योदय यानी सर्वोदय।"

राजेन्द्रबाबू के गॉव में

तीन दिसम्बर को सवेरे मंगल बेला में बाबा ने पूछा कि "क्या रास्ते में जीरादेई पडता है ?" बताया गया कि "सडक से ढाई मील पर छूट जायगा।" इस पर बाबा ने कहा कि "कोई बात नहीं, हम वहाँ जायंगे।" ६ बजे भोरे से निकलकर पौने आठ बजे बाबा जीरादेई पहुँचे। यह राजेन्द्रबाबू का गॉव है। पहले से सूचना न होने के कारण घर पर कोई नहा था। लेकिन गाँव के लोग तुरन्त जमा हो गये। बाबा ने कहा कि "हम आज यहाँ आये, ताकि इस स्थान का दर्शन कर और आप सबको आज राजेन्द्रबाबू की जयती के दिन भक्तिभाव से अपने प्रणाम करें। हम आशा करते हैं कि यह जिला ग्रामदान में आयेगा और जीरादेई के लोग इस स्थान को तीर्थक्षेत्र बनायगे।"

बाबा राघवदास

सवा आठ बजे बाबा भैरवा पहुँचे, जहाँ कुष्ठाश्रम में निवास की व्यवस्था की गयी थी। यह आश्रम दिसम्बर १९-३ से चल रहा है। बाबा राघवदास की प्रेरणा से ही यहा काम शुरू हुआ। बाबाजी को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए बाबा ने कहा कि "बाबा राघवदास बडे दयालु पुरुष थे, ब्रह्मचारी, सेवानिष्ठ। गाधीजी की प्रेरणा से वे सार्वजनिक जीवन में आये। जब वे भूदान के लिए निकले तो लगभग १'० सस्थाओं से उन्होंने इस्तीफा दिया। किसीके वे अध्यक्ष थे, किसी के मत्री और किसीके सदस्य, तो किसीके सरक्षक। जैसे भगवान् अनेक रूप धारण करता है, वैसे ही बाबा राघवदास के अनेक रूप थे। आलस्य तो उनमें था ही नहीं। इससे भी बडी बात यह थी कि अहकार उनको छू तक नहीं गया था। इतना निरहकार और नम्र मनुष्य मुश्किल

से मिलता है। वे बच्चे की तरह निर्विकार भाव से हँसते। वे विरले पुरुष थे। आखिर वे इतनी संस्थाओं से निकले और फिर भूदान में लग गये। मैंने कहा कि 'एक प्रांत की आसक्ति क्यों?' तो फिर वे उत्तर प्रदेश को छोड़कर मध्य प्रदेश चले गये। सारे भारत में घूमने का उनका विचार था।···आखिर मध्य प्रदेश में घूमते-घूमते भूदान के काम में बीमार पड़ गये और वहीं उनकी मृत्यु भी हो गयी। उनका बड़ा रमणीय चरित्र और अनुकरणीय जीवन था। उनकी प्रेरणा से यह संस्था शुरू हुई है। वे अनेक सद्‌गुणसम्पन्न थे। गरीबी में रहते थे और गरीबों में समरस हो गये थे। उन्हें हम अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।"

कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "लक्ष्मी तो विष्णु की दासी है। पैसा पिशाच है। धनवानों के धन की कीमत काल्पनिक है। अनाज की कीमत वास्तविक है।"

तो सम कौन ?

एक भाई ने कहा कि "कांग्रेस के नेताओं का आचरण अच्छा नहीं है, इसी वजह से देश की प्रगति नहीं हो रही है।" बाबा बोले कि "अजीब बात है कि आप यह कहना चाहते हैं कि आपका आचरण अच्छा है, दूसरों का खराब है। हर कोई कहता है कि दूसरे का आचरण अच्छा नहीं है। सूरदासजी ने कहा—'मो सम कौन कुटिल खल कामी।' लेकिन हम लोग क्या बोलते हैं—'तो सम कौन कुटिल खल कामी।' वह बेचारा अन्धा था, उसे ज्ञान नहीं था। हम आँखवाले समझते हैं 'तो सम कौन ! तो सम कौन !' बेहतर यह हो कि 'मो सम कौन' चले तो कुटिलता में स्वावलम्बन हो जायगा, परावलम्बन क्यों ? अपना परीक्षण हम खुद करें, परिमार्जन करें तो अच्छा होगा। तब प्रगति भी होगी।"

दो बजे के करीब दादा धर्माधिकारी और ध्वजाबाबू आये। आश्रम में कृष्णवल्लभबाबू और श्रीमती सुचेता कृपालानी के भी आने की तैयारी थी। लेकिन ये दोनों नहीं पहुँच सके।

महारोग और ग्रामदान

शाम की आम सभा में कुष्ठाश्रम के अध्यक्ष श्री ध्वजाबाबू ने स्वागत किया। १२ ग्रामदान दिये गये और ३६००) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "हमें बिहार में प्रवेश किये पौने तीन महीने हो रहे हैं। इस अरसे में लगभग पौने तीन हजार ग्रामदान हुए हैं। धीरे धीरे वेग बढ़ रहा है और हम विश्वास करते हैं कि बिहार में ग्रामदान क्रान्ति होकर रहेगी। भारत में लगभग १ प्रतिशत से ज्यादा महारोगी हैं और इस सारन जिले में तो ७ प्रतिशत है। ३६ लाख की यहाँ की आबादी है। लगभग ७० हजार महारोगी होंगे। उन सबके लिए इस तरह के कुष्ठ आश्रम की व्यवस्था करना असंभव है। लेकिन अगर गाँव गाँव का ग्रामदान होता है, तो हजार आबादी के गाँव में २० महारोगियों के लिए प्रबन्ध जरूर किया जा सकता है। जो शुरू के मामले हैं, वे तो निश्चित ही दुरुस्त हो सकते हैं।"

ग्रामदान का विचार समझाते हुए उन्होंने माँग की कि "ग्रामदानी सभा को महाजन लोग और दूसरे लोग मदद करें। १००) देकर ९४) एक साल के बाद कबूल करें।" बाबा ने पूछा कि "यह विचार जिनको मंजूर हो वे हाथ उठायें।" तो २० २५ हाथ उठ गये। बाबा ने कहा कि "यह अच्छी बात है कि आपने समझ बूझकर हाथ उठाये। जब एक गाँव में इतने हाथ उठते हैं, तो इससे पता चलता है कि सारन जिले में हजारों लोग इसके लिए मिलेंगे।" फिर बाबा ने जिलादान के लिए भी हाथ उठवाये, तो सब के सब हाथ उठ गये, कुछ ने तो दोनों हाथ उठाये। इस पर बाबा ने कहा कि "सारा जिला ग्रामदान आप करते हैं, तो बहुत आनन्द की बात होगी। राजेन्द्रबाबू का बड़ा उत्तम स्मारक होगा।" फिर बाबा ने पीले साफे के लिए हाथ उठवाये, तब भी सबने हाथ उठा दिये। बाबा ने कहा कि "आप पीला साफा लगा लीजिये और गाँव गाँव में शांति सेना खड़ी कीजिये।"

गाँव-गाँव में गूंजे नारा

अगली मंगल बेला में बाबा ने कहा कि "हिन्दू-धर्म की मुख्य चीज वर्ण-व्यवस्था नहीं, बल्कि आश्रम-व्यवस्था है। वर्ण-व्यवस्था को त्रैकालिक नहीं माना है। कृतयुग में तो एक ही वर्ण था, 'हंसवर्ण'। आश्रम-व्यवस्था हिन्दू-धर्म की एक खास व्यवस्था है। लेकिन आजकल उसकी तरफ न ध्यान देते हैं, न कोई चिंतन करते हैं।......अपनी त्रुटि-निवारण के लिए परीक्षण करना चाहिए। रोज सोने के पहले लेटे-लेटे दोषों की याद करें और कल न करने का संकल्प करें और हरि-स्मरण करके सो जायँ। आत्म-परीक्षण और सतत सावधानता की आवश्यकता है।"

"गाँव गाँव में गूँजे नारा,
ग्रामदान हो जिला हमारा।
ग्रामदान हो सारन सारा।"

सुन्दरता कहाँ ?

यह नया उद्घोष भैरवा से सिवान आते हुए आज सुना गया। बाबा जब सीवान पहुँचे, तो वहाँ खादी-ग्रामोद्योग-संघ के केन्द्र में बड़ी तादाद में पीला साफा पहने बहन-भाई स्वागत के लिए मौजूद थे। बाबा ने कहा कि "बड़ा ही मंगल दृश्य है। शांति-सेना में बहनों के रहने से उसका बहुत असर होगा। लेकिन आज बहनों को घर में तिजोरी की तरह बन्द रखा जाता है, जो ठीक नहीं है। कुछ बहनें पीले पत्थर या रंगीन मोती आदि को पहनना सुन्दरता समझती हैं। लेकिन सुन्दरता जड़ पदार्थ में नहीं, चेतन आत्मा में होती है।......अगर बहनें शांति-सेना को अपना लेंगी, तो शांति-व्यवस्था के लिए न गोली चलेगी, न पुलिस और मिलिटरी की जरूरत रहेगी।"

बाबा ने आगे कहा : "आज रास्ते में जिलादान का नारा सुना। शब्द की बड़ी महिमा है। 'भारत छोड़ो' का अनुभव हम सबको है।

एक चीज जब शब्द के रूप में आती है, तब फिर वह वास्तविक रूप में भी आ जाती है।

'इसके लोग पूछते हैं कि क्या सब ग्राम ग्रामदान होंगे? तो मैं उनसे पूछता हूँ कि आपको इसमें शंका क्यों आती है। मैं पूछूँ कि 'क्या सबके सब लोग मरेंगे?' तो आप कहेंगे कि 'हाँ मरने के लिए १०० प्रतिशत वोट हैं, कोई आगे जायेगा तो कोई पीछे।' तो हम पूछते हैं कि जब मरने के लिए १०० प्रतिशत वोट हैं, तो जीवन के लिए कम क्यों? ग्रामदान तो जीवन है।"

ओंकार की तीन मात्राएँ

बाबा ने आगे कहा : "ओंकार की तीन मात्राएँ होती हैं 'अ उ म'। 'ओम् सह नाववतु····· मा विद्विषावहै।'—हमारे बीच द्वेष नहीं होता है तो आपस का द्वेष दूर होगा और प्रेम बढ़ेगा। 'सह वीर्यं करवावहै' —हम सब एकसाथ पराक्रम करेंगे। पीस आर्मी शांति-सेना की स्थापना करके सब एकसाथ पराक्रम करेंगे। 'सह नौ भुनक्तु'-भगवान् सबका एकसाथ पालन करे। उसके लिए ग्रामोद्योग खड़े करेंगे। इस तरह यह त्रिविध कार्यक्रम ओंकार की तीन मात्राएँ है। ओंकार की तीन मात्राओं पर हमने एक पुस्तक लिखी है। वह हमारी पहली पुस्तक है। कोई ४२ साल पहले लिखी होगी। ये तीन मात्राएँ जीवनव्यापी कैसे काम करती हैं, इसका वर्णन उसमें है। तो, हमारे कार्य में सारा प्रणव ओम् प्रकट हो रहा है। उसमें पूर्ण जीवन होता है। ग्रामदान, खादी और शांतिसेना—यह प्रणव-जप करो। यह हमारे आंदोलन का प्रणव-जप है। यह जप होता है और सारन जिला ग्रामदान हो जाता है, तो वह राजेन्द्रबाबू का अति उत्तम स्मारक होगा।"

दोपहर की कार्यकर्ता सभा में बाबा के आने के बाद लाउड स्पीकर ही फेल हो गया और बीस मिनट बाबा के व्यर्थ चले गये। उसके बाद बाबा ने कहा कि "मेरी एक भावना है, उसे लेकर मैं निकल पड़ा हूँ।

मुझे चिंता नहीं कि कोई साथ आता है या नहीं। ऊपर परमेश्वर है, नीचे जनता और बीच में मैं खड़ा हूँ—इतना ही मेरे लिए बस है।

खादी की आखिरी लड़ाई

"भागवत में भगवान् बोल रहे हैं, अवधूत से कह रहे हैं 'स्थितकृत्य-शेषः'—मेरा एक काम बाकी रह गया है। उतना काम करके मैं जाऊँगा। वह कौनसा कृत्य शेष रह गया है? तो अपने कुल का संहार करना है। भगवान् का वही बचा हुआ काम था, जिसे पूरा करके वे गये। वैसे ही मेरे मन में है कि एक दफा इस कुल का संहार हो जाय। इस पार या उस पार, जो होगा सो होगा। 'अब तो बात फैल गयी जानै सब कोई।' तो आखिर खादी खतम होनी है, तो जल्द-से-जल्द खतम हो जाय। नाहक सरकार की मदद क्यों माँगने जायें? सरकार से कहा जाय कि युद्ध के लिए खर्चा करने की जरूरत है, तो खादी को अब मदद करने की आवश्यकता नहीं। अगर ऐसा समय आया तो मैं ही यह कहने के लिए आऊँगा। फिर भी सरकार बेवकूफ हो और खादी को कुछ मदद देती रहे तो दे। लेकिन मैं समझाऊँगा कि अब इसकी जरूरत नहीं। यह बात मैंने बंगाल में कही थी, जब कि नवद्वीप में खादीवालों की सभा हुई थी। मैंने उनको कहा था कि अब एक बार आखिरी लड़ाई लड़ लें। लेकिन आखिरी लड़ाई की मेरी वह भाषा खादी के बारे में थी, ग्रामदान के बारे में नहीं। फिर बिहारवालों से मैंने कहा कि तूफान उठाते हो, तो मैं बिहार आने के लिए तैयार हूँ। उन्होंने 'हाँ' कहा। मैं यहाँ आया, यह समझकर कि ग्रामदान की यह आखिरी लड़ाई है।"

पंचायतों की रचना अभारतीय है

विस्तार के साथ बाबा ने ग्राम-पंचायत की योजना पर अपने विचार रखे और कहा कि "मुझे इनसे कभी कोई आशा नहीं थी। जिस ढंग से ये पंचायतें बनी हैं, उस पर मैंने १२ साल पहले चंपारन में ही कहा था कि यह विकेन्द्रित शोषण-योजना है। ग्राम-पंचायत सत्ता का टुकड़ा है,

उसम सेवा का अश नहीं। पचायतों में राजनीतिक पक्षों ने घुसपैठ की है। पचायत की सारी रचना अभारतीय है। इसमे मेजॉरिटी, माइनॉरिटी चल्ती है। इसकी वजह से झगड़े और मत्सर बढ़ता है। पचायतो से मत्सर का राष्ट्रीकरण हुआ है। राजस्थान और आन्ध्र से मुझे जानकारी मिली है कि वहाँ लोग पचायतों से तग हैं। अगर ग्राम पचायत अपना विसर्जन ग्रामदानी सभा मे तय करे, तो उससे उसकी हस्ती बढ़ेगी।"

बहनों का स्वर्णदान

इसके बाद बाबा ने पीले साप की माँग की और कहा कि "बहनों को यह काम उठा लेना चाहिए। उनको इस मामले मे पुरुषों का नेतृत्व करना चाहिए। लेकिन वे सोना, चाँदी, पत्थर के फेर मे पडी हैं और उसीको सौन्दर्य समझ बैठी हैं। अगर हिम्मत से इन्हें छोडें, तो समाज की अगुवाई कर सकती हैं।" इस पर कुछ बहनों ने अपने कान के तथा अन्य जेवर निकालकर बाबा को दिये। बाबा ने कहा कि "यह आपने बहुत अच्छा किया। अब आप आजाद हो गयीं और समाज का नेतृत्व कर सकगी।" (बाबा ने वह जेवर ध्वजाबाबू के हवाले कर दिये।)

शाम की आम सभा मे स्वागताध्यक्ष श्रीमती सर्वदा दाऊदी (प्रधानाचार्या, गर्ल्स हायर सेकडरी स्कूल) ने अपने भाषण में कहा कि "हम ग्रामदान के लिए हार्दिक प्रयत्न करगे और अपने प्राणों की आहुति देने का सकल्प करते है।" ११ ग्रामदान मिले और ६०३२) ५६ पैसा की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "अमीरों की जिन्दगी में न इज्जत है, न लज्जत। मैं जो रास्ता बना रहा हूँ, उसमें उनको बहुत थोडा देना पड़ेगा और पायेंगे बहुत ज्यादा। वे ग्रामदानी ग्राम-सभा में शामिल हो जायँ और उसको अपनी योजना शक्ति और बुद्धि का लाभ दें। इसके अलावा उसको कर्जा भी दें। सूद की बजाय ६ फीसदी

घटाव को कबूल करें।" बाबा ने उसके लिए हाथ उठवाये, तो सैकड़ों हाथ उठ गये। इसके बाद जिलादान के लिए भी हाथ उठवाये, तो सबके सब लोगों ने हाथ उठा दिये। फिर बाबा ने कहा कि "मेरा समाधान हो गया, क्योंकि इस सभा मे जो आपके स्थानीय रिपोर्टर बैठे हैं, उन्होने भी दोनों हाथ उठाये। मुझे यकीन है कि यह पूरा जिला ग्रामदान मे आयेगा।"

कम्युनिज्म और सर्वोदय

अगले दिन मंगल वेला मे बाबा से एक भाई ने पूछा कि "कम्युनिज्म और सर्वोदय में क्या अतर है?" बाबा ने कहा कि "इस विषय में श्री किशोरलाल भाई ने एक बड़ी सुन्दर पुस्तक लिखी है—'गाधी और मार्क्स'। उसे मैंने २०-२५ पन्ने की प्रस्तावना दी है। उसे जरूर पढ़ना चाहिए। इस समय तो इतना ही कहूँगा कि कम्युनिस्ट डरे हुए हैं। उनमे हिम्मत नहीं रही। वे समाज पर, मानव पर भी विश्वास नहीं रख सकते। इसलिए नीचेवालों को खड़ा करके ऊपरवालों का विरोध करते हैं। सबका मेल हो और एकरस समाज बनेगा, यह विश्वास उन्हें नहीं है। लेकिन यह विश्वास सर्वोदय का आधार है।"

रविवार, ५ दिसम्बर, ६ बजे सीवान से निकलकर साढ़े आठ बजे बाबा ताजपुर पहुँचे। इस क्षेत्र में पिछले ६ दिन से ग्रामदान की कोशिश चल रही है। श्री जलेश्वर दुबे इस जिले के अनुभवी सेवक हैं और इसी क्षेत्र के रहनेवाले हैं। उन्होंने अपने गाँव का ग्रामदान कराया और फिर माँझी ब्लाक के ग्रामदान में जुट गये। काशी के सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र से श्री जगदीश मिश्र और अखिल भारत शांति-सेना मंडल कार्यालय से श्री सतीशचन्द्र दुबे, श्री अमरनाथ भाई भी आकर इसमें लगे। सर्व सेवा संघ की मासिक पत्रिका 'नयी तालीम' में काम करनेवाले श्री कृष्णकुमार भाई भी इस मुहिम मे लग गये। उनका घर इसी क्षेत्र में पड़ता है।

गाधी-घर गॉव-गॉव में हो

ताजपुर मे ठहरने की व्यवस्था गाधी घर में की गयी थी। वहाँ पहुँचने पर बाबा ने कहा कि "भारत के पाँच लाख गाँव में, हर गाँव मे गाधी घर होना चाहिए, लेकिन वह ईंट, चूने, पत्थर का नहीं, सत्य, प्रेम और करुणा का बनेगा। नाम महिमा अपार है, इसमें कोई शक नहीं, इससे कुछ प्रेरणा भी मिलती है। लेकिन असली गाधी घर तो वही होगा, जो सत्य, प्रेम और करुणा के आधार पर खडा होगा।

"आज भारत में सब कहीं समाजवाद का जोर है। समाजवाद मे मनुष्यों का पूरा अधिकार होता है, लेकिन भारत के समाजवाद मे गाय, बैल भी शामिल हैं। हम सबका उदय चाहते हैं। लेकिन आजकल कुछ एकागी वृत्ति हो गयी है और लोग एक एक चीज को लेकर चिपके रहते हैं। मान लीजिये, मैं अपनी जीभ काटकर आपके सामने रख दूँ और आप अपने कान काटकर रख द, तो कटी जीभ बोलेगी नहीं और न कटा कान सुन पायेगा। जीभ तभी बोलती है, जब प्राण शक्ति के साथ जुडी रहे और कान तभी सुनते हैं, जब प्राण शक्ति के साथ जुडे रहे। गाधीजी के नाम पर अलग अलग सेवाएँ चलती हैं हरिजन सेवा, गो सेवा, खादी सेवा। अलग अलग चलने के कारण उनमे प्राण नहीं है। इसलिए जमाना आया है, जब सारी सेवाएँ जुट जायें और सामूहिक सेवा की जाय। सबकी ताकत जहाँ एक होकर लगती है, तब काम होता है। छोटी-छोटी सेवा अब नही चलेगी। पहले सब मिलकर सामाजिक क्रान्ति कर डालिये और फिर आपकी सब चीज पनप उठगी। गाँव-गाँव का ग्रामदान होने पर हर गाँव गाधी घर बनेगा। केवल गाधीजी का नाम नहीं, उनका काम चलेगा।"

डरकर ग्रामदान मत दें

कार्यकर्ता-सभा में किसीने कहा कि "यहाँ ग्रामदान डरा धमकाकर लिये जा रहे है।" बाबा ने कहा कि "डरा धमकाकर भूदान तो लिया जा सकता है। लेकिन ग्रामदान कैसे, यह मुझे मालूम नहीं। बाद

में जब सरकार जाँच को आयेगी तो ऐसे गाँव नहीं ठहरेंगे। लेकिन मेरी सलाह है कि अगर आपको भय दिखाता हो तो उसे सुनते ही पीटना शुरू कर दें। भय या लोभ से कोई काम न करें। कोई अगर जरा-सा दबाव दिखाये तो इनकार कर दें। जो भी आप काम करें, समझ-बूझकर करें। ग्रामदान जोर-दबाव का काम नहीं, खुशी-मरजी का सौदा है।"

शाम की सभा में श्री जलेश्वर दुबे ने बताया कि मांझी ब्लाक के ११६ गाँवों में से ८७ में फार्म भरवाये जा चुके हैं और ४७ का ग्रामदान हो गया है। जिला सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री विश्वनाथ शर्मा ने बताया कि कुछ रास्ते में और कुछ यहाँ, दोनों को मिलाकर ९६४) की थैली दी गयी।

सत्य-संकल्प

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "जो भी लोग ग्रामदान-प्राप्ति के लिए जाते हैं, उनको प्रेम से बातें समझानी चाहिए। लोगों को डराकर, लोभ बताकर या किसी तरह का दबाव डालकर ग्रामदान लेना गलत है।......तीन चीजें हैं—सत्य, प्रेम और करुणा, इन पर हमें ध्यान देना है। सत्य यह है कि जमीन की मालिकी किसी मनुष्य की नहीं हो सकती। जमीन ही हमारी मालिक है। देह मिट्टी में मिलनेवाली है। इसलिए मिट्टी की मालिकी हम पर है, यह सत्य है। दूसरी बात है प्रेम। घर में जो प्रेम है, उसे सारे गाँव में फैलाना है। और उसके लिए थोड़ा-थोड़ा त्याग भी करना है।...... तीसरी चीज है करुणा। उसका मतलब है कि दूसरे के लिए कुछ करना।"

अंत में बाबा ने जिलादान के लिए हाथ उठवाये। सारे हाथ उठ गये। बाबा ने कहा कि "यह सत्य-संकल्प है और भगवान् उसे पूरा करने का आपको बल देगा।"

सभा के बाद बाबा सीधे नयागाँव चले आये। दूरी लगभग आठ मील की थी। ऐसा इसलिए किया गया कि दूसरे दिन सबेरे सोनपुर से जहाज द्वारा गंगा पार करके दानापुर जल्दी पहुँचा जा सके।

ट्रस्टीशिप की पुकार : १६ :

"पूँजीपतियों, महाजनों और व्यापारियों के पास बुद्धि है, टैलेन्ट है, उनका जीवन काफी सादा होता है और वृत्ति भी उदार होती है। फिर भी उनकी ताक्त नहीं बन रही है, क्योंकि वे कतराते हैं। वे सरकार से डरते हैं, कम्युनिस्टो से डरते हैं, चोरों से डरते हैं, आम लोगों से डरते हैं। अब वे बाबा से भी डरने लगेंगे तो बिना डर का कौन सा स्थान उनके लिए रहेगा ? मैं समझाना चाहता हूँ कि सर्वोदय से आपको कभी नहीं डरना चाहिए। सर्वोदय से आपकी इज्जत बढेगी, आपके हाथ मे नेतृत्व रहेगा। आज आप काफी त्याग करते हैं, तीर्थयात्रा के लिए पैसा खर्च करते हैं, ब्राह्मण भोजन कराते हैं, जगह-जगह स्कूल, अस्पताल, धर्मशाला और मन्दिर बनवाते हैं। एक तरफ यह सब करते हैं तो दूसरी तरफ अपना व्यापार चलाते रहते हैं और दवाओं तथा खाद्य वस्तुओं तक में मिलावट करते हैं। बीमारों के लिए अस्पताल खोलेंगे, लेकिन जिन कारणो से बीमारियाँ होती हैं, उन्हें तोडने के लिए मदद नहीं करगे। यही कारण है कि उनके दान धर्म से ताकत नही बनती, वह सब हवा में उड जाता है। सबसे नीचे के तबके तक आपकी मदद पहुँच ही नहीं पाती। मध्यम श्रेणी के, ऊपरवाले उससे लाभ उठाते हैं। ताकत तभी बनेगी, जब आपका दान धर्म सबसे नीचे के लोगों को ऊपर उठाने में लगे। इसीलिए यह ग्रामदान है, जिसमें मदद करने से आपकी इज्जत बढेगी और समाधान भी होगा। मैं आपकी ताक्त बनाना चाहता हूँ।

सर्वोदय का गणित

"मेरा एक विचार है। वह यह कि माना यह जाता है कि पब्लिक सेक्टर जितना बढ़े, उतना अच्छा है। कोशिश यह है कि यह पब्लिक सेक्टर ५० से ६० और प्राइवेट सेक्टर ५० से ४० हो जाय: ५० + ५० = १०० की बजाय ६० + ४० = १००। इसी तरह प्राइवेट सेक्टर कम होता जाय और पब्लिक सेक्टर बढ़कर पूरा १०० हो जाय: १०० + ० = १००। लेकिन सर्वोदय मानता है: १०० + १०० = १००। यह सर्वोदय का गणित है। यह गणित आपको अजीब मालूम होगा, जो कांग्रेस, कम्युनिस्ट और अन्य सब पार्टियों के गणित से भिन्न है। इसके पीछे आशा यह है कि प्राइवेट सेक्टर ट्रस्टीशिप के सिद्धांत को उठा ले और पब्लिक सेक्टर बन जाय। अगर पूँजीपति ट्रस्टी के नाते काम करें, तो सारा प्राइवेट सेक्टर पब्लिक सेक्टर में बदल जायगा और कोई द्वन्द्व नहीं रहेगा। इसलिए मेरी अपील है कि आप मालिकों के पास जो धन है, योजना-शक्ति है, उसे आप ट्रस्टी के नाते इस्तेमाल कीजिये और ग्रामदान को मदद देने के लिए सामने आ जाइये। इससे आपकी बहुत बड़ी ताकत बनेगी।"

डालमियानगर में पहुँचने पर १४ दिसम्बर को बाबा ने इन मार्मिक शब्दों में देश के श्रीमानों से अपील की।

शाहाबाद जिले की यात्रा ७ तारीख से १४ तक चली। दानापुर से ६ बजे निकलकर बाबा पौने आठ बजे जिले के सदर मुकाम आरा पहुँचे। रास्ते में जैन-कालेज के छात्रों ने दस-दस गज की दूरी पर खड़े होकर दो मील तक स्वागत किया। निवास जैन-कालेज में ही था। यहाँ प्रधानाचार्य श्री रायजी ने सारी व्यवस्था बड़े उत्साह के साथ की थी।

भारत के मूल्य

स्वागत-सभा में ज्यादातर छात्र थे, जो एन० सी० सी० की वर्दी पहने थे। बाबा ने कहा कि "सारा तरुण-समाज देखकर बड़ा आनन्द

होता है कि ये रक्षा के सैनिक बनने जा रहे है। भारत के कुछ अपने मूल्य हैं, जिनकी रक्षा करनी ही होगी। अपने यहाँ कहा गया है कि 'दुर्लभं भारते जन्म मानुष्यं तत्र दुर्लभम्।' इस देश मे जन्म पाना बडा पुण्य है, यह तो मामूली बात हो गयी। लेकिन कहते हैं कि भारत में मनुष्य का जन्म पाना और भी दुर्लभ है। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत में चींटी या पशु पक्षी का भी जन्म पाना सौभाग्य है, फिर मनुष्य का जन्म पाना तो और भी बडा भाग्य है। मैं सोचता था कि ऐसा क्यों कहा गया है? ध्यान में आया कि मानव ने अहिंसा की प्रथम खोज इसी देश मे की। वह खोज क्या है? खेती की खोज। पहले मनुष्य मासाहार करता था, खेती के बाद अन्नाहार पर आया। यह अहिंसा की बडी भारी खोज है। पश्चिम के समाजवाद मे हर व्यक्ति की पूरी रक्षा है। लेकिन भारत का समाजवाद इसके आगे जाता है और उसमे गाय आदि का भी स्थान है। मानव को जितना रक्षा का हक है, उतना ही गाय को भी।

"अपने शास्त्रों मे कहा गया है : 'वसुधैव कुटुम्बकम्।' कुटुम्ब नहीं, 'कुटुम्बकम्' है यानी छोटा सा कुटुम्ब कहा गया है। आजकल तो रेडियो एस्ट्रॉनॉमी का विज्ञान निकला है। वह बताता है कि पृथ्वी जैसी ५० लाख पृथ्वियाँ होगी। सृष्टि इतनी विशाल है, अनन्त है। ''समझना चाहिए कि इस जमाने मे छोटे छोटे नही टिकेंगे। सारा विश्व एक राष्ट्र बनेगा। उधर विश्वराज्य, तो इधर गाँव का परिवार बनाकर ग्रामराज्य।"

बरमा के शरणार्थियों से

कार्यकर्ता-सभा में बर्मा से आये एक शरणार्थी ने लिखा है कि "हमें यहाँ सरकार खाना पीना नहीं दे रही है, तो हम बर्मा वापस चले जायँगे और वहाँ के नागरिक बनकर रहेंगे।" बाबा ने कहा कि "अगर आप बर्मा जायँगे, तब भी वहाँ अपनाये नहीं जायँगे। सरकार शरणार्थियो को खिलायेगी कहाँ तक? इसका इलाज तो ग्रामोद्योग ही है।"

बाबा ने कहा : "भ्रष्टाचार कुछ लोग जरूर करते हैं, लेकिन उसका"

शिष्टाचार बन गया है। परमेश्वर की दुनिया में अगर दुराचारियों की बहुसंख्या हो, तो परमेश्वर से इस्तीफा देने को ही कहना होगा।"'पटरी सतोगुण की हो, उस पर इंजन रजोगुण का चले और उसके पीछे डिब्बे तमोगुण के हों।"

तीन बजे सभा के लिए जाते हुए बाबा ने महाराजा कालेज में सन् १८५७ के अमर शहीद कुँवरसिंह को याद में एक ज्योति जलायी और अशोक का पेड़ लगाया। उन्होंने कहा कि "वीरों की स्मृति में हमें उनकी बाह्य कृति का नहीं, बल्कि उनके गुणों का और चारित्र्य का अनुकरण करना चाहिए।"

प्रार्थना-सभा में स्वागताध्यक्ष, प्रिन्सिपल साहब ने कहा कि "हम जिला-दान का संकल्प करते हैं और बाबा को आश्वासन देते हैं कि जब *अगले फेरे में वे यहाँ आयेंगे, तो पूरे जिले का दान भेंट करेंगे।"* आज पाँच ग्रामदान दिये गये और इत्तफाक की बात कि सबेरे और शाम की थैलियों की रकम मिलाकर १८५७) की हुई।

संख्यासुर से बचें

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "हर जगह बहुमत और अल्पमत का जोर है। तीन बनाम दो, प्रस्ताव पास! इसके कारण एक असुर जन्मा है, जिसे मैंने 'संख्यासुर' नाम दिया है। यह पश्चिम से आया है और बड़ा खतरनाक साबित हो रहा है। इसके कारण गाँव-गाँव और जगह-जगह टुकड़े पड़ रहे हैं। ग्रामदान में इसकी बजाय सर्वसम्मति या सर्वानुमति चलेगी और कन्सेन्सस से काम होगा।

"यहाँ बताया गया कि कुल रकम १८५७) होती है, लेकिन इतने से कुँवर सिंह का कोई स्मारक नहीं बन सकता। १८५७ ग्रामदान हों, तब कुछ समाधान होगा। इसके लिए जो राजी हों, वे हाथ उठायें।" हजारों हाथ उठ गये। बाबा ने कहा: "यह प्रस्ताव पास हो गया और अब आपको इस काम में जुट जाना है।"

हिन्द-पाकिस्तान संघ

८ दिसम्बर को मंगल वेला में आरा में ही एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बाबा ने कहा कि "हिन्द पाकिस्तान संघ बने, लेकिन बनाया न जाय। बनायें तो हम एक एक गाँव को बनायें। अजीब बात है कि हिन्दुस्तान के लोग रूस-अमेरिका की, हिन्दुस्तान पाकिस्तान की बात करते हैं, लेकिन अपने गाँव की तरफ ध्यान नहीं देते। यह ख्याली पुलाव न पकायें। कार्य सिद्धि चर्चा से नहीं, ठोस काम से होती है। गाँव गाँव को एक बनायें। भारत को एक बनाय तो पाकिस्तान को विश्वास हो जायगा।...हिन्दुस्तान पाकिस्तान के मसले तब हल होंगे, जब वे प्रेम से एक होंगे। दोनों का संघ बने यह मैं चाहता हूँ, लेकिन बनाया जाय, इसका मैं समर्थन नहीं करता।"

उर्दू नागरी लिपि में भी लिखें

उर्दू साहित्य के बारे में बोलते हुए बाबा ने कहा कि "उर्दूवालों से मेरी सिफारिश है कि अपने साहित्य का उर्दू लिपि के साथ-साथ देवनागरी में भी प्रचार करें। उर्दू बड़ी उम्दा जुबान है। हम चाहते हैं कि उर्दू के अच्छे लफ्ज हिन्दी में दाखिल हो जायँ और उर्दू की मदद से हिन्दी अच्छी बने, व्यापक बने। उर्दूवालों को नोटिस देना चाहता हूँ कि अगर वे उर्दू जुबान को टिकाना चाहते हैं, तो वे नागरी लिपि को भी अपना लें। अन्यथा वह धीरे धीरे खत्म हो जायगी। बहुत-से शब्द जो आज हिन्दी में चलते हैं, बन्द हो जायेंगे और हिन्दी उत्तरोत्तर संस्कृतमय हो जायगी। संस्कृत से शब्द लेना कोई गलत नहीं, पारिवारिक शब्द लिये ही जायेंगे। लेकिन जो उर्दू में अच्छे शब्द हैं, वे हिन्दी में जरूर आने चाहिए। इसलिए यदि उर्दू नागरी लिपि में लिखी जाती है, तो उर्दू का खमीर हिन्दी को मिलेगा। उर्दू को भी कुछ शब्द हिन्दी से लेने चाहिए। उर्दू में कहते हैं 'रस्मुलखत', इसकी जगह 'लिपि' शब्द बहुत सीधा सादा है। वह उर्दू में लिया जाय। इस तरह आपस में एक-

दूसरे से शब्द लेने पर उर्दू फिर से भारत की मिली-जुली भाषा बनेगी। उससे देश की एकात्मता बढ़ेगी।"

जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जगन्नाथ बाबू ने बताया कि "बाबा, हमने प्रस्ताव किया है कि हमारी जिला कांग्रेस-कमेटी ग्रामदान के काम को निरतर जारी रखेगी।" बाबा ने इस पर कहा कि "निरंतर इसको जारी रखने की क्या बात है। दो-तीन महीने इसमें अच्छी तरह लग जाइये और पूरा जिला या कम-से-कम १८५७ ग्राम हासिल कर डालिये।"

९ दिसम्बर को पीरो में कार्यकर्ताओं की सभा में जीने का सर्वोत्तम मार्ग बताते हुए बाबा ने चार चीजें कहीं : "१. शरीर-परिश्रम से खेती करके उत्पादन करें, २. सतत नाम-स्मरण करें, ३. आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करें, और ४. आस-पास के दुखियों की जितनी हो सके, सेवा करें। मुक्ति के लिए सत्य, प्रेम, करुणा के साथ-साथ निर्भयता और इन्द्रिय-संयम भी चाहिए।···घर-घर साहित्य पहुँचाने का काम हो।"

स्वर्गीय वल्लभस्वामी

आज दो बजे मित्र-मिलन का कार्यक्रम हुआ। श्रद्धेय वल्लभस्वामी के देहांत को आज एक साल पूरा हुआ। बाबा ने लगभग २० मिनट का प्रवचन दिया और कहा कि "अध्यात्म-विचार का सार एक शब्द में गुण-ग्रहण है। गुणवर्धन, गुण-गौरव, गुण स्मरण, गुण-मार्जन, गुण-ग्रहण। वल्लभस्वामी इसमें लगभग अद्वितीय कहे गये। चित्त से अलग होने का अभ्यास हमें करना चाहिए।" बाबा ने कहा कि "इस दिन क्या कार्यक्रम करना होगा, इस पर आप थोडा सोचें। मैं ही हमेशा बोलूँ, यह कोई कार्यक्रम नहीं। कोई भी चित्तशुद्धिकारक कार्यक्रम हो।"

शाम की आम सभा में कोई भी ग्रामदान नहीं था। थैली में ११११) दिये गये। शुरू में 'सर्वेपि सुखिनः सन्तु' श्लोक गाया गया था। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि 'जब कोई ग्रामदान नहीं है,

गरीबों के लिए कुछ काम नहीं किया है, तब इस तरह बोलना जले पर नमक छिडकना है। इस जिले के लोग बहुत सोये हैं, अब जाग जायँ। नहीं तो ऋषि के वंशज एकदम नालायक साबित होंगे।"

मंगल वेला में बाबा ने कल एक भी ग्रामदान न होने का जिक्र करते हुए कहा कि "यह काम वैतनिक कार्यकर्ता नहीं कर सकता। यह तभी पूरा होगा जब आम लोग इसे उठायेंगे। अभी कांग्रेस ने प्रस्ताव किया है। आरा की सभा में १८५७ रुपये जमा हुए थे तो मैंने सहज ही कहा कि शहीदों की स्मृति रखना है तो उनके लायक काम करना चाहिए और कम-से कम १८५७ ग्रामदान हासिल करें।

यह तालीम हराम है

पौने सात बजे बाबा विक्रमगंज पहुँच गये। ज्यादातर छात्र लोग थे। बाबा ने कहा कि "आज जो तालीम दी जा रही है, वह आराम से दी जा रही है, आराम में दी जा रही है, आराम के लिए दी जा रही है। लेकिन पंडित नेहरू के शब्दों में 'आराम हराम है', तो यह 'तालीम भी हराम' है। अब इसे बदलने की ओर ध्यान गया है, जो अच्छी बात है।'

कार्यकर्ता-सभा में एक भाई ने पूछा कि "अब आप ग्रामदान लेकर आये हैं, जिसे आप 'समग्र क्रान्ति' कहते हैं। लेकिन भूदान में न क्रान्ति थी, न कोई दर्शन। आचार्य नरेंद्रदेव ने भी एक बार आपके भूदान आंदोलन की आलोचना करते हुए इसी तरह के विचार प्रकट किये थे।" बाबा ने कहा कि "बात यह है कि भूदान के गर्भ में ही ग्रामदान मौजूद है। भूदान अपने में कोई पूर्ण विचार नहीं है, एक समग्र विचार का आरम्भ है। करुणा द्वारा समाज का परिवर्तन करना, यही सर्वोदय की प्रक्रिया है, जब कि मत्सर द्वारा समता की स्थापना साम्यवाद की प्रक्रिया है। करुणा का प्रारम्भ भूदान से होता था। भूदान एक बुनियाद थी, जिसके बिना मकान खड़ा नहीं हो सकता। उससे दिल नर्म होने का काम हुआ और अब ग्रामदान द्वारा नर्म दिलों को जोड़ने का सिलसिला चल रहा है।

"आचार्य नरेन्द्रदेवजी ने क्या कहा था, मुझे याद नहीं। लेकिन किसीने कुछ भी क्यों न कहा हो, बिना जीवन-दर्शन के बाबा में १५ साल घूमने की ताकत नहीं हो सकती थी। हाँ, यह कह सकते हैं कि दर्शन तो था, लेकिन दर्शन के प्रकाशन की प्रक्रिया अधूरी थी। लेकिन अगर दर्शन न होता, तो काम जरा भी बढ़नेवाला नहीं था। बिहार में लगभग तीन हजार ग्रामदान हुए हैं। दूसरे प्रान्तों में भी काम हो रहा है। इसका मतलब यह है कि यह प्रक्रिया लोगों में काम कर रही है। दर्शन के अभाव में यह नहीं हो सकता था। एक बात आप जरूर कह सकते हैं, वह यह कि इस दर्शन की कार्ल मार्क्स के जैसी कोई किताब नहीं है। इसलिए आपको शिकायत भी हो सकती है। मगर जैसे-जैसे काम बढ़ रहा है, प्रक्रिया सामने खुलती जाती है। इसलिए उसका पूर्ण दर्शन देखने को आपको नहीं मिला, लेकिन दर्शन इसमें पूरा है।"

विद्यार्थी या परीक्षार्थी

शाम की आम सभा में ६ ग्रामदान दिये गये और १००१) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "आज हमसे विद्यार्थियों ने कुछ सवाल पूछे थे। इस सभा में हम उसकी चर्चा करेंगे। विद्यार्थी का क्या कर्तव्य है? इस सवाल का जवाब विद्यार्थी शब्द में ही मौजूद है। जो विद्या की इच्छा रखता है, वह विद्यार्थी है। लेकिन आज विद्यार्थी हैं नहीं, जो हैं वे परीक्षार्थी हैं। और परीक्षा किसलिए? नौकरी के लिए। अगर कल सरकार लम्बी दौड दौडने या पेड़ पर चढ़ने में क्षमता के अनुसार नौकरी दे, तो ये विद्यार्थी पढना ही छोड़ देंगे और बन्दरों के साथ इनका झगड़ा शुरू हो जायगा। विद्यार्थी को चाहिए कि तीन बातों की विद्या ग्रहण करे : १. एक तो यह अपनी आत्मा को पहचानना है कि हम क्या हैं? भारत-भूमि में मनुष्य-जन्म पाया है, तो हमारा क्या कर्तव्य है, इसकी समझ पैदा हो। इसीको कहते हैं ब्रह्मविद्या। २. शरीर मजबूत होना चाहिए और इन्द्रियों पर काबू होना चाहिए। और

३ वाणी का सम्यक् उपयोग करना आना चाहिए, यानी अपना आशय ठीक ढग से व्यक्त कर सके।"

समाज बनाम जमाव

आगे चलकर बाबा ने कहा कि "अपने यहाँ समाज नहीं, जमाव है। एक-दूसरे के स्वार्थ टकराते हैं। मेरी १५ सेर ताकत है तो आपकी २५ सेर। मैं हारता हूँ, आप जीतते है और देश भी हारता है, क्योंकि उसे ४० की बजाय १० सेर ताकत मिलती है। ग्रामदान से नकशा बदलेगा और सब एक-दूसरे के नजदीक आयगे।"

आज की सभा बडी अव्यवस्थित थी। प्रार्थना के लिए सबको बिठाने में बाबा को ११ मिनट लग गये।

अगले दिन मगलवला मे एक भाई ने कहा कि "सर्वोदय समाज पिछले १४ १५ साल में नहीं बना। आगे बनेगा या नहीं, इसमें शका आती है।" बाबा ने कहा कि "आप किस समाज के है, सर्वोदय समाज के या सर्वनाश समाज के? दूर खड-खडे शका करते हैं और जब आपकी मेजारिटी हो तो सर्वोदय-समाज कैसे बनेगा? सर्वोदय समाज उद्धार नहा कर सकता। उद्धार आपको ही करना है। अगर आप नही करगे तो १५ साल क्या, हजार साल बीतने पर भी नही होगा। सवाल यह है कि आपने कितनी कोशिश की। ५ करोड जमीन की जरूरत थी, तो ४० लाख एकड मिली। इसके बाद ग्रामदान आया, लेकिन आपके जिले में मुश्किल से सवा सौ, डेढ सौ ग्रामदान हुए होगे। जब काम ही नहीं करगे, तो सर्वोदय समाज कैसे बन सकता है?"

पन्द्रह साल मे क्या किया?

"लेकिन मुल्क में भी तो असर नहीं हो रहा है!" दूसरे भाई ने कहा। बाबा बोले "आपकी बात ठीक है। १९०६ म कलकत्ता-काग्रेस में दादाभाइ नौरोजी ने देश को 'स्वराज्य' शब्द दिया। इसके पहले २० साल तक काग्रेस में प्रस्ताव करते थे कि यह दु ख है, वह दु ख है।

स्वराज्य का ध्येय जाहिर होने के बाद लोकमान्य तिलक आये। उन्होंने कहा कि 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' फिर गांधीजी ने सत्याग्रह-आन्दोलन चलाया। एक भावना पैदा हो गयी। 'क्विट् इंडिया' (भारत छोड़ो) का मंत्र दिया, जिसके बाद १९४७ में अंग्रेज चले गये।''' मैं पूछता हूँ कि इन १५ साल में ४५ करोड़ लोगों ने भूदान-ग्रामदान के लिए कितना समय दिया? ४५ करोड़ ही मान लीजिये। तो ३० करोड़ के १५ साल यानी ४५० करोड़ साल का समय आपके पास था। उसमें कितना समय इस काम में लगाया गया? हमें आश्चर्य यह होता है कि अल्प प्रयत्न होने पर भी इतने परिणाम आये। यह काम हम गांधी-निधि को सिपुर्द करते हैं (बिहार गांधी-निधि के संचालक श्री सरजू बाबू मौजूद थे) कि हिसाब करें कि कितना समय इस आंदोलन को मिला है। किसी भाई ने कहा कि "एक करोड़ साल।" बाबा बोले: "एक करोड़ की क्या बात करते हो। एक लाख साल भी नहीं मिला।"

आसक्ति को काटना है

१० दिसम्बर को आठ बजे बाबा ब्रह्मपुर पहुँचे। वहाँ उन्होंने कहा कि "आसक्ति के छूटने की राह नहीं देखनी चाहिए। आसक्ति मरते दम तक बनी रहती है, मर जाओगे तब भी बनी रहेगी। अगले जन्म में भी चिपकी रहेगी। आसक्ति को बरबस काटना होगा। एक उम्र होने के बाद घर-गृहस्थी से अलग हो जाना और पति-पत्नी का भाई-बहन की तरह रहना बहुत कल्याणकारक होगा। महात्मा गांधी ने ऐसा ही किया था।''' मैं शिकायत करता हूँ कि मैं पन्द्रह साल से लगा हूँ, लेकिन आप लोग समय नहीं देते। मुझे नारद की कहानी याद आ जाती है, जिन्हें अपनी भक्ति का बड़ा अहंकार था। लेकिन जब भगवान् ने पानी से भरा बर्तन लेकर प्रदक्षिणा करने को कहा, तो एक बार भी हरि-स्मरण नहीं हुआ। तो आपका बड़ा उपकार है, जो अपने काम में रहते हुए भी इस आन्दोलन में इतना समय देते हैं।"

कार्यकर्ता-सभा मे एक सवाल पूछा गया कि "नैतिकता दिन दिन गिर रही है, इसका इलाज क्या है ?" बाबा बोले "नैतिकता माने क्या ? काम, क्रोध, लोभ, मोह, किस अर्थ मे ? प्राचीन काल म बड बड़ ऋषि काम के ग्रस्त हो गये। क्रोध भी उन दिनो बहुत था। प्राचीन काल जैसा काम, क्रोध आज नहा है। लेकिन आप कह सकते हे कि लोभ कुछ बढा है। इसका कारण यह है कि अर्थ रचना का आधार पैसा बन गया है। और पैसा ऐसी चीज है, जो रोज रोज अपनी बात बदलता है। इसलिए आज की अर्थ रचना बदलनी ही होगी। उसे पैसे के बजाय श्रम के आधार पर खडी करनी होगी। ध्यान आदि की बातें विचित्र हैं। कर्म योग को छोडकर ध्यान करना मेरी समझ में नहीं आता। ध्यान, कर्म और भक्ति, सब एक ही साथ सधने चाहिए।"

आम सभा म चार ग्रामदान दिये गये और ८५१) की थैली। विक्रम गज की चेतावनी के बाद आज की सभा बडी मेहनत से जुटायी गयी थी और सब लोग बड व्यवस्थित ढग से बैठे थे। बाबा ने उसकी तारीफ की। बाबा ने बिहार सरकार को बधाइ दी कि 'पहले उसने ग्रामदान का आर्डिनेन्स चालू किया और अब असेम्बली खुलने पर काग्रेस और विरोधी पक्षों ने सर्वसम्मति से ग्रामदान का बिल भी पास किया।"

आपने कहा कि "ग्रामदान से किसीके हित की हानि नहीं है। अमीर गरीब सभी का इससे लाभ होगा। गॉव की जमीन गॉव के बाहर बेचना ग्रामद्रोह है। जब यह बन्द होगा, तभी गॉव-गाव अपना आयोजन कर सकगे। ग्रामसभा में श्रीमानो को भी शामिल होना चाहिए और वे सौ रुपये देकर चौरानबे कबूल कर।" बाबा ने इसके लिए हाथ उठवाये तो सैकड़ों हाथ उठ गये। उन्होंने कहा "अब आप यह सकल्प करके काम कर कि शाहाबाद जिला ग्रामदान म लाना है। इससे कम में सतोष नहीं करना चाहिए।"

गाधीजी की विशेषता

अगले दिन मगल वेला में बाबा ने बताया कि "अहिंसा बहुत प्राचीन

तत्त्व है। वेद और उपनिषद् में इसका वर्णन है। गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने इस पर जोर दिया। लेकिन गांधीजी की विशेषता यह है कि उन्होंने सामूहिक अहिंसा का प्रयोग किया। अब ग्रामदान द्वारा आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में सामूहिक अहिंसा का व्यापक प्रयोग करना है।"

ब्रह्मपुर से बक्सर आते समय, ११ दिसम्बर को रास्ते में अचानक बाबा की गाड़ी से धुआँ निकलने लगा। पीछे की जीप में मैं, सरजू बाबू और बालभाई बैठे थे। हमें डर लगा कि कहीं बाबा की गाड़ी का इंजन तो नहीं जल गया! बालभाई दौड़े-दौड़े गये। इतनी देर में दयदेव और ताई ने बाबा को बाहर निकाला। ड्राइवर मुरली भाई ने बताया कि अन्दर हॉर्न वाला तार फ्यूज हो गया है और कोई बात नहीं है। थोड़ी देर में उन्होंने ठीक कर लिया और सात बजे बाबा बक्सर पहुँचे।

मनु की दो शर्तें

अपने भाषण में उन्होने कहा कि "हजारों वर्षों से मानव का विकास होता आया है। एक जमाना था, जब राजा आदि कोई नहीं होता था। लेकिन समस्या खड़ी हुई कि दुर्जनों का सामना कैसे करें! तो राजा की कल्पना सूझी और मनु महाराज पहले राजा बनाये गये। उन्होंने दो शर्तें रखीं: एक तो यह कि सर्वसम्मति से मुझे सब लोग कबूल करें, और दूसरे यह कि अगर मुझे कोई दंड देना पड़े तो उसका पाप प्रजा को उठाना पड़ेगा, उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं रहेगी। अर्थ यह है कि वे लोकशक्ति द्वारा सब काम कराना चाहते थे और बहुमति की बजाय सर्व

नया समाज, नया पुरुषार्थ

शाम की सभा में जिला सर्वोदय-मडल के संयोजक, श्री रामेश्वर सहाय ने बताया कि "ग्रामदान सम्बन्धी कागज अभी पूरे नहीं हुए हैं। इसलिए १४ तारीख के पडाव पर पेश किये जायेंगे।" थैली २१०१) की थी।···अपने प्रवचन मे बाबा ने कहा कि "रावण से मुक्ति दिलाने के लिए प्रभु रामचन्द्र को १४ साल यात्रा करनी पडी। अब इस शतमुखी मोहरूपी रावण से, जिसने समाज को ग्रस लिया है, मुक्त करने के लिए मुझ जैसे दुर्बल भक्त को १४ बार १४ साल चलना पड़े, तब भी काफी नहीं है। लेकिन शरीर की दुर्बलता के कारण अब मोटर-यात्रा करनी पड़ रही है। असम में डेढ़ महीने की यात्रा में ९०० ग्रामदान हुए, यहाँ बिहार मे तीन महीने में ३००० । यह फरक परिस्थिति के कारण है।" बाबा ने आगे कहा: "नये समाज के आगे नयी समस्याएँ होती हैं। इसलिए नया पुरुषार्थ करने का मौका मिलता है। दिल्ली और पटना आदि का मुँह ताकना ठीक नही है। अपने पुरुषार्थ को जगाना चाहिए। जो आदमी मेहनत नहीं करते, देवता तक उन पर कृपा नहीं करते। आपको अपना उद्धार खुद करना है और उसके लिए निष्ठा के साथ समाज को एकरस बनाना है। यही दृष्टि ग्रामदान के पीछे है। अगर पूरा बिहार ग्रामदान मे आ जाता है, तो उससे सरकार का रग बदल जायगा। यह आपके पुरुषार्थ को आवाहन है।"

१२ तारीख को बक्सर मे सवेरे मगल वेला मे एक भाई के सवाल के जवाब मे बाबा ने कहा कि "भारत मे आज भय का अभाव नहीं, प्रीति का अभाव है।···महाभारत में हिंसा जरूर की गयी, लेकिन उससे मसले हल नहीं हुए। सबका नाश ही हुआ। धर्मराज तक को थोड़े दिन [illegible] दर्शन करना पडा। आज भी भारत और पाकिस्तान के बीच [illegible] हो गयी और मैंने इसका समर्थन भी किया। लेकिन [illegible] आ है।"

तत्त्व है। वेद और उपनिषद् में इसका वर्णन है। गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने इस पर जोर दिया। लेकिन गांधीजी की विशेषता यह है कि उन्होंने सामूहिक अहिंसा का प्रयोग किया। अब ग्रामदान द्वारा आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में सामूहिक अहिंसा का व्यापक प्रयोग करना है।"

ब्रह्मपुर से बक्सर आते समय, ११ दिसम्बर को रास्ते में अचानक बाबा की गाड़ी से धुआँ निकलने लगा। पीछे की जीप में मैं, सरजू बाबू और बालभाई बैठे थे। हमें डर लगा कि कहीं बाबा की गाड़ी का इंजन तो नहीं जल गया! बालभाई दौड़-दौड़ गये। इतनी देर में जयदेव और हार्ई ने बाबा को बाहर निकाला। ड्राइवर मुरली भाई ने बताया कि अन्दर हॉर्न वाला तार फ्यूज हो गया है और कोई बात नहीं है। थोड़ी देर में उन्होंने ठीक कर लिया और सात बजे बाबा बक्सर पहुँचे।

मनु की दो शर्तें

अपने भाषण में उन्होंने कहा कि "हजारों वर्षों से मानव का विकास होता आया है। एक जमाना था, जब राजा आदि कोई नहीं होता था। लेकिन समस्या खड़ी हुई कि दुर्जनों का सामना कैसे करें! तो राजा की कल्पना सूझी और मनु महाराज पहले राजा बनाये गये। उन्होंने दो शर्तें रखीं: एक तो यह कि सर्वसम्मति से मुझे सब लोग कबूल करें, और दूसरे यह कि अगर मुझे कोई दंड देना पड़े तो उसका पाप प्रजा को उठाना पड़ेगा, उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं रहेगी। अर्थ यह है कि वे लोकशक्ति द्वारा सब काम कराना चाहते थे और बहुमति की बजाय सर्व-सम्मति को मान्यता देते थे। ग्रामदान में ये दोनों बातें हैं।" पीले साफे के लिए बाबा ने अपील की और कहा कि "दरभंगा, मुजफ्फरपुर, चंपारन, सारन से मैं देखता आ रहा हूँ कि वहाँ तो बहुत-से पीले साफे दिखायी पड़ते थे, लेकिन यहाँ इक्का-दुक्का ही हैं।"

नया समाज, नया पुरुषार्थ

शाम की सभा में जिला सर्वोदय मडल के सयोजक, श्री रामेश्वर सहाय ने बताया कि "ग्रामदान सम्बधी कागज अभी पूरे नहीं हुए हैं। इसलिए १४ तारीख के पडाव पर पेश किये जायेंगे।" थैली २१०१) की थी। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "रावण से मुक्ति दिलाने के लिए प्रभु रामचन्द्र को १४ साल यात्रा करनी पडी। अब इस शतमुखी मोहरूपी रावण से, जिसने समाज को ग्रस लिया है, मुक्त करने के लिए मुझ जैसे दुबल भक्त को १४ बार १४ साल चलना पड़े तब भी काफी नहीं है। लेकिन शरीर की दुर्बलता के कारण अब मोटर-यात्रा करनी पड रही है। असम में डेढ़ महीने की यात्रा म ९०० ग्रामदान हुए, यहाँ बिहार म तीन महीने म ३००० । यह फरक परिस्थिति के कारण है।" बाबा ने आगे कहा "नये समाज क आगे नयी समस्याएँ होती हैं। इसलिए नया पुरुषार्थ करने का मौका मिलता है। दिल्ली और पटना आदि का मुँह ताकना ठीक नहीं है। अपने पुरुषार्थ को जगाना चाहिए। जो आदमी मेहनत नहीं करते, देवता तक उन पर कृपा नहीं करते। आपको अपना उद्धार खुद करना है और उसक लिए निष्ठा के साथ समाज को एकरस बनाना है। यही दृष्टि ग्रामदान के पीछे है। अगर पूरा बिहार ग्रामदान म आ जाता है, तो उससे सरकार का रग बदल जायगा। यह आपके पुरुषार्थ को आवाहन है।"

१२ तारीख को बक्सर मे सवेरे मगल वेला में एक भाई के सवाल के जवाब मे बाबा ने कहा कि "भारत म आज भय का अभाव नहीं प्रीति का अभाव है। महाभारत में हिंसा जरूर की गयी, लेकिन उससे मसले हल नहीं हुए। सबका नाश ही हुआ। धर्मराज तक को थोड दिन नरक का दर्शन करना पडा। आज भी भारत और पाकिस्तान के बीच हिंसा अनिवार्य हो गयी और मैंने इसका समथन भी किया। लेकिन इस हिंसा से मसला हल नहीं हुआ है।"

आज फासला ६० मील था। ६ बजे बाबा निकले। पौने आठ बजे रास्ते में नाश्ता लिया और उसके बाद आधा मील, १५ मिनट तक पैदल चले। इस तरह पौने नौ बजे सासाराम नगरी पहुँचे। यह शेरशाह सूरी का जन्म-स्थान है।

लिटिल साइन्स

स्वागत-सभा में एक मानपत्र पढ़ा गया, जिसमें ग्रामदान के अनेक पहलू बहुत कुशलता के साथ रखे गये थे। बाबा जब बोलने लगे तो माइक काम नहीं कर रहा था। इस पर बाबा ने कहा कि "ग्रामदान तो आप समझते ही हैं। उसका आपको ज्ञान है। लेकिन यह विज्ञान जो (माइक की खराबी) प्रकट हो रहा है, वह भारत को बचानेवाला नहीं है— जैसे अंग्रेजी में कहावत है—'लिटिल नालेज इज ए डेंजरस थिंग', उसी तरह *'लिटिल साइन्स इज ए डेंजरस थिंग'*।"

कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने बताया कि अमेरिका की उपज का १४ प्रतिशत अनाज भारत में आता है। मानो भारत के लिए वह अनाज पैदा कर रहा है। यह अत्यन्त चिंता की बात है और भारत को अन्न में स्वावलम्बी होना बहुत जरूरी है। एक अमेरिकन विशेषज्ञ ने कहा है कि भारत के २० प्रतिशत लोग शरीर-परिश्रम के लिए अयोग्य हैं, क्योंकि उनको खाने के लिए पूरी मात्रा में कैलरी नहीं मिलती। २० प्रतिशत यानी ९ करोड़ लोग! कैसी भयानक स्थिति है!"

काशी विश्वविद्यालय का नाम बदलने के सम्बन्ध में एक सवाल का जवाब देते हुए बाबा ने कहा कि "मुझे तो दोनों बाजू से बचपन का खेल चलता दीख रहा है।"

शेरशाह की नगरी में

शाम की सभा में ४ ग्रामदान दिये गये और १८३१) की थैली। बाबा ने कहा कि "यह शेरशाह का गाँव है। हिन्दुस्तान में जो अच्छे बादशाह हो गये, लोगों की सेवा करनेवाले—अकबर हो गया, हर्ष हो

हो गया, समुद्रगुप्त, अशोक, युधिष्ठिर हो गये, उनमें शेरशाह भी थे। यहाँ जैसे अच्छे राजा हो गये, वैसे बुरे भी हो गये। इससे हम लोगों ने सबक सीख लिया कि हुकूमत राजा की नहीं, लोगों की चाहिए। तभी से लोकशाही का जन्म हुआ।

"शेरशाह ने दिल्ली से कलकत्ता तक रास्ता बनाया। उसके पहले उस जमाने में इतना बड़ा रास्ता नहीं था। आज जो ग्रैंड ट्रंक रोड बना है, उसीको जरा ठीक-ठाक करके यह रास्ता बनाया गया। शेरशाह लोक-कल्याण की बराबर चिंता करता था। इसलिए उसका नाम हिन्दू मुसल्मान दोनों लेते हैं। जो अच्छा इन्सान होता है, वही सच्चा हिन्दू है और जो अच्छा इन्सान होता है, वही सच्चा मुसल्मान है। जो अच्छा इन्सान नहीं होता, नेकी पर नहीं चलता, वह नाममात्र का हिन्दू है और नाममात्र का मुसल्मान है। हिन्दू, मुसल्मान, क्रिश्चियन, बौद्ध वही होता है, जो इन्सान के अलावा और होता है। इन्सान से कम जो होंगे, वे चोर होंगे, डाका डालनेवाले होंगे, व्यभिचारी होंगे। वे नाम से भले ही हिन्दू, मुसल्मान, क्रिश्चियन, बौद्ध हों, लेकिन वे नाममात्र के हिन्दू, मुसल्मान, क्रिश्चियन, बौद्ध हैं। यह ठीक है कि फलाने हिंदू ने चोरी की, फलाने मुसल्मान ने डाका डाला, फलाने बौद्ध ने खून किया, फलाने क्रिश्चियन ने व्यभिचार किया, पर यह तो कहने की बात हुई। असल में कहना चाहिए कि फलाने मनुष्य ने यह किया। वह हिन्दू जमात में शामिल था, मुसल्मान जमात में शामिल था, ऐसा कहने में कोई माने नहीं।

"मैं कहना यह चाहता था कि हिन्दू या मुसल्मान इंसानियत से कुछ ज्यादा है। यह बात शब्द ही बतलाता है। मुस्लिम माने भगवान् की शरण जाना, भगवान् के आश्रय में जाना। इन्सान होने के अलावा यह और ज्यादा है। इन्सान तो साधारण मनुष्य है जो नेक रास्ते से चलता है। लेकिन उसके ऊपर जानेवाला, भगवान् की शरण में जाने

वाला मुसलमान है। आप पूछेंगे कि फिर क्या तुलसीदास मुसलमान थे, शंकराचार्य मुसलमान थे ? तो मैं कहूँगा कि जी हाँ, वे मुसलमान थे। हिन्दू का अर्थ क्या है ? हिन्दू यानी 'हिंसया दूयते चित्तम्'···हिंसा से जिसका चित्त दुःखी होता है, वह हिन्दू है। कहीं भी हिंसा हो तो वह बुरा मानेगा। हिंसा करेगा नहीं, करवायेगा नहीं, उसके वश होगा नहीं, वह हिन्दू है। आप पूछेंगे कि क्या फिर मुहम्मद हिन्दू थे ? तो मैं कहूँगा कि जी हाँ, हिन्दू थे। समझने की बात है। यह सारा कुरान में, वेद में आता है।

वेद की शिक्षा

वेद कहता है—'विश्वमानुषः'। जो अच्छा है, भगवान् की शरण में आया है, नेक राह पर चलता है, जो सबकी भलाई सोचता है, वह विश्व-मानव है। तो मुहम्मद कौन थे ? विश्व-मानव थे। तुलसीदास कौन थे ? विश्व-मानव थे। शंकराचार्य कौन थे ? विश्व-मानव थे। यह वेद की शिक्षा है। वेद इसकी ओर नहीं देखता कि परमात्मा का ध्यान किस तरह करना चाहिए। 'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति'···कुरान में भी कहा 'अलहक्'। हिन्दुओं ने कहा 'एकं सत्'। उपासना करनेवाले लोग उनकी नाना प्रकार की उपासनाएँ करते हैं। कोई पूरब की ओर मुँह करके, कोई पश्चिम की ओर मुँह करके, तरह-तरह की उपासना करते हैं। लेकिन उतने से यह हो गया हिन्दू, वह हो गया मुसलमान, ऐसा नहीं। कुरान में भी आया है कि धार्मिकता यह नहीं कि अपना चेहरा इस तरह से नहीं रखा और इस तरह से रखा। वहाँ यह भी कहा है कि देवदूत मुहम्मद से बात कर रहे हैं—हे पैगम्बर, तेरे पहले भी कई पैगम्बर हो चुके हैं, कुछ के नाम तो तू जानता है, कइयों को नहीं जानता। हर जमात के लिए ऐसे पैगम्बर भेजे हैं। कुरान में यह भी कहा है कि 'जितने भी रसूल भेजे गये हैं, उन सबमें हम किसी प्रकार का फरक नहीं करते।' सब रसूलों को हम समान मानते हैं, यह इस्लाम का पैगाम है।

कुरान की सिखावन

"हिन्दुओं ने भी कहा है : 'मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।' (गीता) अर्थात् हे पार्थ ! आदमी किसी भी रास्ते से आ जाय, मेरे पास ही आनेवाला है। बिल्कुल ठीक यही अरबी में तर्जुमा करके कहा जाय तो कुरान में है—"इन कुनतुम इन्न" । यानी तुम सारे मेरी तरफ आनेवाले हो। तुम्हारी रुजुआत हमारी ओर होनेवाली है। कितना हुनहू है !

"तो मैं कह रहा था कि हिन्दू या मुसल्मान नाममात्र के हो जाते हैं। असल में सब एक ही हैं। कोई कहे कि मुसल्मान कितने हैं तो चालीस करोड, हिन्दू कितने हैं तो पैंतीस छत्तीस करोड, ईसाई कितने हैं तो नब्बे करोड ! यह तो कहने की बात है। इतने सारे ईसामसीह के अनुयायी होते, तो ईसा नाचने लगते। अगर ये सारे रसूल यहाँ आकर देखेंगे कि मुसल्मान चोरी कर रहे हैं, हिन्दू डाके डाल रहे हैं, ईसाइ व्यभिचार कर रहे हैं, तो सब कहेंगे कि कम्बख्तो, हमारा नाम क्यों लेते हो, अगर यही करना है ! एक जगह कुरान में आता है, हे पैगम्बरो ! तुम लोगों की एक ही जमात है। जिस जमात में शंकराचार्य हुए, उसी जमात में पैगम्बर हुए, उसी जमात मे नानक हुए, उसी जमात मे गौतम बुद्ध हुए, उसी जमात में ईसा हुए। जितने रसूल, पैगम्बर, वली, नबी, अवतार, धर्मपुरुष हो गये, सब एक जमात के हैं। फिर उन्हें मुसल्मान, सिख, पारसी, हिन्दू, ऐसे तरह तरह के नाम देना बिल्कुल विडम्बना है।"

मजहब तो है सिखाता आपस में प्यार करना

बाबा ने कहा : "भारत में हमें सब जमातों को एक रखना है। यही भारत की विशेषता है। भारतमाता सबका भरण करती है—इसालिए 'भारतम्' कहा है। यहाँ सबका स्वागत है। गुरुदेव गा रहे हैं : 'एशो ए आर्य, एशो ए अनार्य' । अनेक धर्म, अनेक पथ यहाँ हैं। सब यहाँ रह सकते हैं, किसीका किसीसे झगडा नहीं। कवि ने गाया है :

'मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर करना'। लेकिन आपस का वैर न होने से आप धार्मिक नहीं बन जाते। मेरा आप पर प्यार होना चाहिए, तभी धर्म सधेगा। इसलिए शेरशाह की इस नगरी में नया शेर आपके सामने रखता हूँ—'मजहब तो है सिखाता आपस में प्यार करना।'—हर धर्म की अपनी खासियत है। हिन्दू धर्म में सत्य प्रधान, इस्लाम में प्रेम प्रधान, तो बौद्ध धर्म में करुणा प्रधान है। इस तरह सारी उपासना इकट्ठा करके भारत सबका गुण-संग्रह करता है। अगर आप यह दृष्टि समझें और सासाराम में प्रकट करें, तो यह सर्वोदय-नगर बनेगा।"

सभा में ही बाबा को किसीने पर्चा लिखकर दिया कि "सासाराम की म्युनिसिपैलिटी जप्त है।" उस पर दुःख जाहिर करते हुए बाबा ने कहा कि "इसका मतलब है कि आपस मे एक-दूसरे की अक्लें टकरायी हैं और म्युनिसिपैलिटी किसी काम की नहीं रह गयी है। मेरा यह सुझाव है कि नगरपालिका के पुराने सदस्य एक मिली-जुली मीटिंग करें और वहाँ जाहिर करें कि हमने आपस के झगड़े खतम कर दिये, अब पार्टी को भूल जायेंगे। पार्टी की दृष्टि से नगरपालिका में न कोई चुनाव लड़ेंगे और न कोई दूसरा काम करेंगे, बल्कि एक-दूसरे के सहयोग से इस नगर को सुन्दर और सर्वोदय-नगर बनायेंगे। अपना यह प्रस्ताव पास करके पटना भेज दीजिये और उसके अनुसार अमल कीजिये। दो-तीन महीने के बाद आपकी नगरपालिका का जो विशिष्ट अधिकारी है, वह खुद सिफारिश करेगा कि वह नगरपालिका छोड़ दीजिये और यह अब सही ढग से काम करेगी। आपको यह चीज तुरन्त करनी चाहिए।"

काशी से सर्व सेवा संघ प्रकाशन की तरफ से भाई जमनालाल जैन कल आये थे। वे बाबा से मिले और उन्होंने प्रकाशन की नयी पुस्तक 'महावीर वाणी' के लिए बाबा की प्रस्तावना माँगी। बाबा ने उनसे ठहर जाने को कहा। आज सासाराम के पड़ाव पर बाबा ने अपनी प्रस्तावना लिखा दी। वह इस प्रकार है :

महावीर का मुख्य विचार

'महावीर वाणी' के लिए दो शब्द मैं लिखूँ, ऐसी प्रेम की माँग को मैं टाल नहीं सका, यद्यपि तूफानी कार्यक्रम में लगा हूँ। महावीर-वाणी में जो सकलन हुआ है, उसमे जैन आगमो का मक्खन आ गया है। सर्व धर्म-समभाव बढाने के लिए उसका बहुत उपयोग होगा, इसमें मुझे शक नही।

'महावीर वाणी' मैं देख गया हूँ। सचयन मुझे अच्छा मालूम हुआ। लेकिन मेरा सुझाव था कि जैन विद्वानों की एक समिति बने और वह सर्वमान्य चयन लोगो के सामने पेश करे, तो धम्मपद को जो हैसियत हासिल हुई, वह हैसियत उसको प्राप्त होगी। खैर, यह तो जब बने। तब तक 'महावीर वाणी' लोगों मे चलेगी, चलनी चाहिए।

इन दिनों 'सर्व धर्म-समभाव' एक नया शब्द हम लोगो को मिला है। लेकिन महावीर के विचारों का जिनको परिचय है, उनके लिए वह कोई नयी बात नहीं। मेरी निगाह म महावीर सर्व धर्म समन्वयाचार्य है। सत्य का एक एक पहलू लेकर लोगों के सामने भिन्न भिन्न पथ के रूप म एक एक 'नय' पेश किया जाता है। लेकिन पूर्ण सत्य इन सब सत्यांशों का ग्रहण करने पर ही हाथ मे आता है। यह है महावीर का मुख्य विचार। अहिंसा तो उसके पेट में सहज समा जाती है।

मैं आशा करता हूँ, दिलों को जोड़ने में 'महावीर वाणी' का उपयोग होगा।

ग्रामदान तूफान यात्रा
बिहार
१०-१०-६८

—विनोबा का जय जगत्

सवेरे मंगल वेला में सासाराम के मित्रों से बाबा ने पूछा कि "आपमें से कोई मुसलमान हैं या नहीं?" जवाब मिला : "कोई नहीं।" तब पूछा : "कोई हरिजन हैं?"—"सो भी कोई नहीं।" इस पर बाबा ने कहा, "आपके इस सासाराम की भोपाल, हैदराबाद, लखनऊ जैसे स्थानों में गिनती है। अगर यहाँ मुस्लिम कार्यकर्ता नहीं मिलेंगे तो फिर कहाँ मिलेंगे?" फिर बाबा ने पूछा कि "आपमें से कितनों ने हमारी पुस्तक 'कुरान-सार' पढ़ी है?" तो शाहाबाद जिले के २५ कार्यकर्ताओं में से एक का हाथ उठा। बाबा बोले : "कितना आलस्य है! कोई कोशिश नहीं कि दूसरे धर्मों को समझें। बड़े दुःख की बात है। आपको तो सबसे मित्रता करनी चाहिए और अन्योन्य सम्बन्ध रखना चाहिए।"

वानप्रस्थ आश्रम

१३ दिसम्बर को पौने आठ बजे बाबा भभुआ पहुँचे। वहाँ उन्होंने कहा कि "बाहर से तो हमारा पैमाना यह है कि ग्रामदान कितना मिले, लेकिन अन्दर से यह कि दिन में कोई निष्काम सेवक मिला या नहीं। हिन्दू-धर्म में आश्रम-व्यवस्था बहुत ही महत्त्व की है, लेकिन आजकल वानप्रस्थ आश्रम की तरफ कोई ध्यान नहीं देते। मरते दम तक घर के झझटों और विषयासक्ति में फँसे रहते हैं। एक हजार लोगों में कम-से-कम सौ तो वानप्रस्थ अवस्था के लायक होंगे। सौ नहीं, अगर एक भी निकले तो भारत में चार-साढ़े चार लाख निष्काम सेवक निकल सकते हैं।"

उपासना या उपहास?

दोपहर को कार्यकर्ता-सभा में बाबा ने कहा कि "अपने देश में उपासना के नाम पर उपहास चलता है। भारत में भक्ति की बात बहुत ज्यादा होती है, लेकिन उसकी आड़ में खासा ढोंग चलता है। अगर सचमुच भक्ति हो तो दुनिया में और जीवन में उसका प्रकाश पड़ेगा और आँख के सामने देखने को इतना दुःख नहीं मिलेगा। लेकिन भक्ति के नाम से लोग जड, मूढ बन गये हैं।"

मिलिटरी और जनतंत्र

एक विद्यार्थी ने पूछा कि "भारत के पडोसी देशों में मिलिटरी हावी होती जा रही है और यहाँ भी मिलिटरी को खूब प्रतिष्ठा मिल रही है, ऐसी हालत मे हमारे जनतन्त्र को बडा खतरा है। इसका सामना कैसे किया जाय ?" बाबा ने कहा "मिलिटरी राज्य को प्रोत्साहन तीन बातों से मिलता है—जनता में असन्तोष होना, सिविल शासन का कमजोर पडना और मिलिटरी के अन्दर लोगों की आस्था बढना। जनतन्त्र को मजबूत करने के लिए जनशक्ति खडी करनी होगी और लोकमत जाग्रत करना होगा। आज मिलिटरी का राज्य कुटुम्ब से ही शुरू हो गया है। माता-पिता का समझाने के बजाय बच्चे को पीटने पर ज्यादा विश्वास रहता है। देह भावना को दृढ किया जाता है। यह सब बदलना होगा और समाज की विवेक बुद्धि विकसित करनी होगी। नैतिक मूल्यों की सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा कायम करनी होगी। तभी जनतन्त्र मजबूत बनेगा। यह सारी दृष्टि ग्रामदान के पीछे है।"

जय किसान या हार किसान ?

आज दिनभर बूदा बाँदी होती रही। शाम की आम सभा एक स्कूल के बरामदे में की गयी। बाहर खुले मे सैकड़ों लोग खड़े थे। १३ ग्रामदान दिये गये और १८२५) की थैली भेंट की गयी। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि 'मुझे एक पर्चा मिला है, जिसमे शिकायत की गयी है कि भूदान में प्राप्त जमीन जोतनेवालों को जंगलवाले तंग कर रहे हैं। यह नहीं होना चाहिए। जो अनाज पैदा करते हैं, वे हमारे पूजनीय देवता हैं। हम तो खानेवाले हैं और ये पैदा करनेवाले हैं। इनको इसी तरह सताना 'जय किसान' के मन्त्र के खिलाफ होगा। ऐसे मामलों की जाँच होनी चाहिए। जरूरत पड़े तो इसके लिए सत्याग्रह भी किया जा सकता है। भूदान की जमीनवालों को किसी प्रकार सताना देश-द्रोह है। 'जय किसान' की बजाय 'हार किसान' करना है।"

जगजीवनरामजी और प्रद्युम्नजी

बाबा ने आगे कहा : "इस जिले के बहुत बड़े नेता, अखिल भारतीय नेता हैं, जगजीवनरामजी। चार-छह महीने पहले पवनार में वे मुझसे मिले थे। उस समय उनके साथ बातचीत हुई थी। तभी मुझे मालूम हुआ था कि वे इस आन्दोलन को एक क्रान्तिकारी आन्दोलन मानते हैं। वे अभी-अभी यहाँ घूमे और लोगों को यह विचार अच्छी तरह समझाया। आज मुझे उनका टेलीग्राम मिला है कि 'आप हमारे जिले मे आ रहे हैं, उस समय मैं भी आना चाहता था। लेकिन बिमार पड़ गया तो लाचार हो गया। मैंने आपको जल्दी तार नहीं दिया, क्योंकि मैं सोचता था कि मैं ठीक हो जाऊँगा तो चला जाऊँगा। लेकिन यह संभव नहीं दीखता। अभी भी मैं बिस्तर पर हूँ, इसलिए नहीं आ सकता। संभव है, इस काम मे शाहाबाद जिला ज्यादा काम न कर सकेगा। लेकिन यह काम क्रान्तिकारक है और होकर रहेगा।' तो, मैं कहना यह चाहता था कि आपके क्रान्तिकारी नेता इस जिले के हैं। उनका भी आशीर्वाद इस काम को है। तो आप सब लोग इस काम में लग जाइये।"

मंगलवार, १४ दिसम्बर को सबेरे भभुआ में ही बाबा ने श्री प्रद्युम्न मिश्र (आयु ८६ साल) की सेवाओं का जिक्र करते हुए कहा कि "भूदान में उन्होंने बड़े उत्साह से काम किया था। वे इस जिले में हमें ले आये थे और भूदान भी खूब दिलाया। अब वृद्धावस्था के कारण उनकी स्थिति ऐसी नहीं कि ज्यादा दौड़-धूप कर सकें। उनके मार्गदर्शन का लाभ आपको लेना चाहिए।"

सबेरे ६ बजे भभुआ से निकलकर ८। बजे बाबा डालमियानगर पहुँचे। श्री जंग बहादुर सिंह ने लिखित दिया कि "मैं आपके आदेश पर निष्काम सेवा करने का सकल्प लेता हूँ।" बाबा ने बड़ी खुशी जाहिर की और कहा कि "हमें विश्वास है कि इस जिले में और भी सेवक निकलेंगे और काम होगा।"

सर्वोदय विचार को समझाते हुए बाबा ने कहा कि "किसीको तकलीफ देकर किसीका भला नहीं हो सकता। पूँजीवादी समाज में पूँजीवादी लोगों के हाथ में पूँजी होती है और नीचे के लोगों को तकलीफ होती है। एक वर्ग सम्पन्न होता है, तो दूसरा एक वर्ग अत्यन्त दुःखी है। इसके विपरीत कम्युनिस्ट चाहते हैं कि जो वर्ग सुखी है, उसे खतम कर दें, दुःखी करें और जो वर्ग दुःखी है उसको सुखी करें। लेकिन आखिर कोई-न-कोई दुःखी रहेगा ही न? और सुखी दुःखी यह भेद कायम रह ही जायगा। इस भेद से मुक्ति मिलेगी नहीं। सर्वोदय का विचार ऐसा विचार है कि इसमें हम ऊपरवालों का भी भला सोचते हैं और नीचेवालों का भी भला है। दोनों का भला हो, ऐसी इसमें योजना है। इसलिए इसमें सबका सहयोग होना चाहिए।"

पूँजीपति ट्रस्टी बनें

बाबा ने आगे कहा "हमने आशा की थी कि जिस तरह एक किसान, रामचन्द्र रेड्डी सामने आया, जिसने सौ एकड़ जमीन की मालिकी छोड़ी और इसका नाम लेकर मैं सारे हिन्दुस्तान में भूदान ग्रामदान माँगता घूमा—उसी तरह कोई पूँजीपति आगे आयेगा और कहेगा कि इसके आगे से हम अपनी पूँजी के केवल ट्रस्टी बनकर रहेंगे, तब तो मैं भारत में क्रांति कर देता। उससे महाजनों की ताकत बनती। आज महाजनों या व्यापारी के बिना चलेगा नहीं, लेकिन उनको गाली दिये बिना भी कोई नहीं रहेगा। उनकी ताकत नहीं बन रही है। वह तभी बनेगी, जब वे विचार को समझें और साथ साथ जमाने की माँग को भी समझें। इस स्थान की अपनी महिमा है। यहाँ से अगर पूँजीपतियों को प्रेरणा हो जाय कि बिहार में बाबा घूम रहा है, तीन हजार गाँवों के लोगों ने अपने जमीन की मालिकी छोड़ दी, तो हम भी उसकी मदद करें और अपनी पूँजी के ट्रस्टी के नाते समाज की सेवा में पूँजी लगायें और अक्ल भी लगायें, तो यहाँ से यह लेकर मैं सारे हिन्दुस्तान में घूमूँगा।"

आज १० बजे जब बाबा शौच को गये तो बहुत ज्यादा खून आया। गत रविवार और शनिवार को भी खून आया था, लेकिन आज ज्यादा था। डाक्टरों ने सलाह दी कि बैठने का काम कम-से-कम करें और लेटकर आराम ज्यादा करें। इसलिए आज बाबा ११ बजेवाली कार्यकर्ता-बैठक में नहीं गये। उसमें कृष्णराज भाई ने जिले में आगे की काम की व्यूहरचना पर चर्चा की। श्री सरजूबाबू भी मौजूद थे, जो शाहाबाद जिले की यात्रा में आठों दिन साथ रहे।

आज सर्वश्री राधाकृष्ण बजाज, आर० के० पाटिल साहब और सुरेन्द्रजी बाबा से मिलने आये।

आम सभा ४ बजे हुई। उसमें सात ग्रामदान दिये गये और ८५२९) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "पिछले १५ साल में तीन योजनाओं पर अरबों रुपया खर्च हुआ है। उसमें देश की दौलत बढ़ी है। लेकिन कहना पड़ता है कि सबसे नीचे का जो तबका है, वह ऊपर नहीं उठ सका। गाँव-गाँव में जो दीन, परित्यक्त लोग हैं, उनकी ओर ध्यान नहीं दिया जा सका। अब तो भारत पर सेना रखने का ही मौका आया है। उस हालत में नीचे के तबके की ओर ध्यान देने के लिए कम गुंजाइश होगी, ऐसा कहना पड़ता है। ऐसे औसत आमदनी तो बढ़ी है, लेकिन औसत का एक बड़ा इन्द्रजाल है।

औसत का इन्द्रजाल

"हम नागपुर जेल में थे। वहाँ राजनैतिक कैदी थे, दूसरे गुनहगार भी थे। तब जेल में राजनैतिक कैदियों का वजन गिर रहा था। उन्होंने उसकी शिकायत की। वहाँ हर १५ दिन के बाद सब कैदियों का वजन किया जाता था। जब सरकार के पास शिकायत गयी तो सरकार ने तहकीकात के लिए कमेटी मुकर्रर की। पता चला कि १२ सौ कैदियों का मिलकर ५ सौ पौंड वजन बढ़ा है। मतलब यह कि हर कैदी का औसन आधा पौण्ड वजन बढ़ा, जब कि शिकायत की गयी थी कि सौ-सवा सौ कैदियों

का वजन घट रहा है। तो, कमेटी ने कहा कि उस शिकायत में सार नहीं है, क्योंकि जेल का औसत वजन आधा पौण्ड बढा है। इसका नाम है औसत। बात तो सही थी। जिनका वजन घटा था, उनका घटा ही था। उनकी शिकायत भी ठीक थी और औसत भी ठीक था। इसी तरह आज हिन्दुस्तान की औसत आमदनी बढी है लेकिन नीचे के तबके को मदद नहीं पहुँची है।

यह गफलत !

"फिर, अन्न धान्य मे देश को स्वावलम्बी होना चाहिए था। वह कोशिश भी १८ साल म नहीं हुई। हम अनाज, शिक्षा और सुरक्षा के मामले में बिल्कुल गाफिल रहे है। मुझे एडमण्ड बर्क का 'इम्पीचमट आफ वॉरेन हेस्टिग्ज' याद आ रहा है। मैं पूछूँगा कि सरकार की इम्पीचमेंट की जाय—तीन चार्ज लगाये जायें १ अनाज उत्पादन म गडबड नम्बर एक, २ तालीम का ढॉचा नहीं तय किया और १८ साल तक ऐसे ही तालीम दी गयी नम्बर दो, और ३. डिफेन्स के बारे मे असावधानी रखी नम्बर तीन। ये तीनों अभियोग लगा द और अपना चौथा मैं अपनी जेब मे रखता हूँ कि ४ सबसे नीचे के वर्ग की ओर ध्यान नहीं दिया गया। ये चार चार्जेज हैं, लेकिन तीन ही लगाये जायँ, तो क्या होगा ?

दिल्ली में शराब

"वे कहेंगे कि हमें तो जनता ने चुना है और हम तो जनता की सहमति से काम करते है। इसलिए आपको अपनी जिम्मेदारी सम झनी चाहिए। दिल्ली के सहारे बैठे रहना ठीक नहीं। दिल्ली म यमुना के साथ शराब की नदी भी बहती है। विदेशी लोग तो शक म पड जाते हैं कि यह दिल्ली है या उनका अपना पेरिस या लन्दन ! दिल्ली भारतीय सस्कृति और जीवन की प्रतीक नहीं रह गयी है। दिल्ली विल्ली बन गयी है।

चलो देहात

"अगर लाखों गाँव ग्रामदान हो जायँ, तो सरकार का रंग बदल जायगा। जहाँ गाँव-गाँव का ग्रामदान होगा, वहाँ गाँवों की ओर से सर्वानुमति से मनुष्य खड़ा किया जायगा और वह ऊपर पहुँचेगा। इस तरह गाँव द्वारा चुने लोगों की सरकार होगी, तो सरकार पर गाँव का असर होगा। तब आपकी शिकायत का निराकरण भी हो सकता है। अगर यह शक्ति पैदा होती है, तो आप टिक सकते हैं। नहीं तो आप रामभरोसे हैं!

"रामभरोसे भी क्या, दिल्ली भरोसे हैं! अगर गणतन्त्र की दृष्टि से देखा जाय तो दिल्ली आपके आधार पर है। लेकिन आप समझते हैं कि आप दिल्ली के आधार पर हैं। हमें सिद्ध करना है कि दिल्ली आपके आधार पर है। इसलिए इसके आगे हर बात में 'चलो दिल्ली' छोड़ दें और 'चलो देहात' कहें। अगर ग्रामदान का व्यापक आन्दोलन करने में मालिक, मजदूर और महाजन, ये तीनों 'म'कार एक हो जाते हैं, तो यह सहज हो जायगा। तो आप देखेंगे कि अगले चुनाव के पहले भारत का रूप ही बदल जाता है।"

सिम्पैथी चाहिए

आज बाबा की बीमारी सुनकर कई डाक्टर बाबा को देखने आये। बाबा ने कहा कि "मेरी अष्टावक्र जैसी हालत है—सिर में 'वर्टिगो' (vertigo) है, कान बहरा है, आँख कमजोर है, गला सेन्सेटिव है,

डाक्टरों ने सब देखकर एक मल्हम बताया और इसे मलद्वार पर लगाने को कहा। बाबा बोले "मैं अक्सर कहा करता हूँ कि मेरा भरोसा एलोपैथी पर नहीं, होमियोपैथी पर नहीं, नेचरोपैथी या और किसी पैथी पर नहीं, बल्कि सिम्पैथी पर है। मुख्य बात यह है कि चिकित्सक की सद्-भावना का ज्यादा असर होता है।"

१५ तारीख की सवेरे बाबा डालमियानगर से निकले और आठ दिन की शाहाबाद जिले की यात्रा पूरी करके गया जिले के बाराचट्टी नामक स्थान से ढाई मील दूर, सिलबट्टा गाँव मे पड़ाव किया। ●

सारा विहार ग्रामदानी हो : १७ :

"उत्पादन, शिक्षा और देश की रक्षा के बारे में हमारी जो गफलत हुई है, उसे अगर सुधारना है तो एकमात्र उपाय ग्रामदान है। कोई कहेगा कि '*यह बाबा की धुन है, फैड है, आब्सेशन है*', तो मैं *कहता हूँ*, आप इसकी परीक्षा कर लीजिये। विशेषज्ञों से, अर्थ-शास्त्रियों से इसकी परीक्षा करा लीजिये। यह एक अत्यन्त शास्त्रीय प्रमेय है। विज्ञान-युग में अगर आप वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करना चाहते हैं, तो वह एक-एक किसान, एक-एक व्यक्ति नहीं कर सकता। इसके लिए गाँव का एक समूह बनाना होगा और उसके लिए ग्रामदान के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है। यह एक वैज्ञानिक आंदोलन है।"'बिहार के दो प्रसिद्ध नाम हैं : प्राचीन काल में गौतम बुद्ध और अर्वाचीन काल में राजेन्द्रबाबू। भगवान् बुद्ध करुणा के अवतार और राजेन्द्रबाबू जैसा करुणावान मनुष्य भारत में इन दिनों देखने में आया। राजेन्द्रबाबू का

उद्देश्य की पूर्ति मे हम पूरी ताकत लगायेंगे और उनके इस आदोलन को सफल करेंगे।"

सूर्यनारायण और गंगा

गगा पार करते समय सूर्योदय का बडा लुभावना दृश्य दीखा। उसका हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि "सूर्य अत्यन्त समता, मैत्री और सेवाभाव का सर्वोच्च उदाहरण है। उसमें अत्यन्त निर्लिप्तता भी है। यही देखकर भगवान् कृष्ण ने गीता मे कहा है कि मैंने कर्मयोग पहले सूर्य को सिखाया। इसे देख हमारे अन्दर समत्व हो, सेवक भावना हो, अलिप्तता हो, ये सारे विचार मन मे आ रहे है।" फिर गगा पर ध्यान गया। 'गगा तो भारत के लिए इतनी असामान्य है' · कहते-कहते बाबा मौन हो गये और आँखें मूँद लीं। फिर बोले · "लेकिन सूर्यनारायण जहाँ सबके प्रति समभाव रखते है, गगा का भारत के लिए विशेष पक्षपात है। गगा के बारे मे सबसे पहला स्तोत्र वाल्मीकि ने लिखा, फिर शकराचार्य ने, उसके बाद कालिदास ने लिखा और इस जमाने में पडित नेहरू ने लिखा। एक बार पडितजी ने प्रयाग के कुम्भ मेले मे ७० लाख लोग देखे तो लिखा कि 'मै यह देखकर चकित रह गया।' ७० लाख यानी यूरोप का एक देश मानना चाहिए। गगा की महिमा अपार है। भारत में गोदावरी मे स्नान करें, चाहे कृष्णा या कावेरी में। कहते हैं, 'गंगा में स्नान कर रहे हैं।' बडे बडे राजा महाराजा गगा के किनारे आते और अपना सब कुछ तिनके के समान त्याग, तपस्या करते।

पटना सर्वोदय-नगर बने

धीरे धीरे बाबा का ध्यान पटना पर गया : "पटना याद आते ही एकदम महाराजा अशोक की याद आती है। दुनिया में उनसे बढकर दूसरा राजा नही हुआ। उन्होने स्तम्भ खड़े किये, लेकिन वे अपने कीर्ति-स्तम्भ नहीं, धर्मोपदेश के स्तम्भ हैं। 'सबके साथ समान व्यवहार करो, प्रेम और करुणा से बरतो', उन पर यह सारा प्रजा के लिए उपदेश

लिखा है। राजा भी हो और अहिंसा की वृत्ति भी हो, यह बात बहुत दुर्लभ है। लेकिन अशोक में वह चीज थी। इसलिए उन्होंने हमारे सामने अहिंसा का एक बहुत सुन्दर संकेत खड़ा कर दिया, चार सिंह इकट्ठे। यह बहुत अकल की बात है। सिंह से उनका इशारा वीरों से है। जहाँ वीर इकट्ठे होंगे, वहाँ अहिंसा पनपेगी।······ग्रामदान में अहिंसा का राज्य, करुणा का राज्य स्थापित करना है। आज करुणा समाज में मौजूद जरूर है, लेकिन उसमें ताकत नहीं है। वह युद्ध की पोषक है, युद्ध में लज्जत पैदा करती है। संस्कृत में पटने का अर्थ होता है, 'पट्टनम्' यानी नगर। इसलिए यह आदर्श नगर बनना चाहिए, ये सब बातें मेरे ध्यान में आती हैं।"

कार्य बाबा का नहीं, हमारा

राजाबाबू के भाषण का हवाला देते हुए बाबा बोले कि "आपने अभी कहा कि बाबा की उद्देश्य की पूर्ति के लिए काफी ताकत लगायेंगे। राजाबाबू की ग्रामदान में बड़ी निष्ठा है और सहर्षा जिले में मेरे साथ घूमे भी हैं। आपके इस आश्वासन में हम एक फर्क करना चाहते हैं। वह यह है कि 'बाबा के' उद्देश्य की बजाय, आप उसे 'अपना' उद्देश्य समझिये। मेरी तरमीम है कि 'बाबा के' शब्द की जगह 'हमारे' रखा जाय। बाबा बेचारा आज है, कल नहीं। इसलिए इसे आप अपना काम समझकर उठायें, तभी क्रान्ति होगी।"

पौने नौ बजे बाबा दानापुर पहुँचे। वहाँ कार्यकर्ता-सभा में उन्होंने कहा कि "हमारा काम मूलतः क्रान्ति का है। स्वराज्य के बाद बहुत-से लोग सरकारी नौकरी में चले गये। प्रमाणित ढंग से नौकरी करने में भी देश-सेवा है। कुछ राजनीतिक पक्षों में बँट गये। इन दोनों से जो बचे, वे ही सर्वोदय-आन्दोलन में आ सके।······'सर पर बाँध कफन जो निकले, कायर का नहिं काम रे।'—इसमें वे ही लोग आयेंगे, जिनमें वैराग्य-भावना और त्याग की वृत्ति हो।"

ढाई बजे सर्वश्री वैद्यनाथबाबू, गौरीबाबू, ध्वजाबाबू, दीदी प्रभावती, कृष्णराज भाई, दादा धर्माधिकारी, राजाबाबू और अन्य मित्र जमा थे। आगे के कार्यक्रम के बारे में विचार हो रहा था। बाबा ने कहा कि "इसका फैसला जमदोदपुर में होगा।" उन्होंने इशारा किया कि "आगे अकाल की स्थिति बढ सकती है, ऐसी हालत में सम्मेलन करना कहाँ तक ठीक होगा!"

वैज्ञानिक आन्दोलन

शाम की आम सभा में दो ग्रामदान जाहिर किये गये और स्वागताध्यक्ष, श्री रामलखन यादव (मिनिस्टर, पी० डब्ल्यू० डी०) ने ५००१) की थैली भेंट की। बिहार के मुख्यमंत्री श्री कृष्णवल्लभबाबू और कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजाबाबू भी मौजूद थे। बाबा ने अपने प्रवचन में विस्तार से सारे विचार को रखा और कहा कि "शिक्षा, अन्न और सुरक्षा के मामलों में पिछले १८ साल में असावधानी बरती गयी है। ···शिक्षा सरकार के अंकुश से मुक्त रहनी चाहिए। लोग खुद उसे चलायें और सरकार मदद दे और यह देख ले कि कहीं साम्प्रदायिकता और हिंसा तो नहीं सिखायी जा रही है।···अनाज के मामले में रिपवान विंकिल की तरह सोये हैं। लेकिन अब अनाज-उत्पादन के लिए उत्तेजन दिया जा रहा है। हमें भारत की एकात्मता बनानी होगी और गरीबों को दर्शन कराना होगा कि उनके लिए हम जी-जान से कोशिश कर रहे हैं। ···सुरक्षा के लिए सेना का जितना महत्त्व है, उससे कम अन्दर की एकता और एकरसता का नहीं है। ग्रामदान से यह काम सधेगा। यह एक वैज्ञानिक आन्दोलन है। सारा बिहार ग्रामदान में आये।"

हिन्दू राष्ट्रवाद से बचें

मंगलवार, ७ दिसम्बर की मंगल वेला में दानापुर में ही एक मुस्लिम सज्जन बाबा से मिलने आये और कुछ प्रश्न लिखकर दिये। उनमें से

एक यह था कि "हिन्दू राष्ट्र बनानेवाली ताक्तें जोर कर रही हैं। उनका सामना करने के लिए आप क्या हल सुझाते हैं?" बाबा ने कहा कि "यह बात सही है कि ऐसे लोग हिन्दुस्तान में जरूर हैं, जो चाहते हैं कि हिन्दू-राष्ट्र निर्माण हो। लेकिन शुक्र है परमेश्वर का कि ऐसे लोग ज्यादा नहीं हैं और उनकी जमात का भी ज्यादा असर नहीं है। जमहूरियत में इस तरह के विचार रखनेवाले होते ही हैं। लेकिन समझाना यह चाहता हूँ कि मुस्लिम लीग ने कांग्रेस के खिलाफ भारत में जो झगड़ा पैदा किया, उसकी यह प्रतिक्रिया है। डाक्टर अन्सारी, मौलाना आजाद, मजहरुल हक साहब और ऐसे कई नाम लिये जा सकते हैं। ऐसे अच्छे-अच्छे लोग, पूरे ईमानदार, जितना इस्लाम को उतना ही इण्डिया को माननेवाले कांग्रेस में थे। अगर मुस्लिम लीग खड़ी न होती, तो कांग्रेस के खिलाफ हिन्दू-जमात खड़ी नहीं हो सकती थी।" दूसरे सवाल के जवाब में बाबा ने कहा: "हिन्दू धर्म कोई डागमेटिक धर्म नहीं है। इसमें किसी चीज का आग्रह नहीं। इसका एक ग्रन्थ नहीं, एक सन्त नहीं, एक पंथ नहीं। यह व्यापक है। मेरे दर्शन के अनुसार इस्लाम भी वैसा ही व्यापक है। फिर ईसा ने तो स्पष्ट ही कहा है—'आई हैव अदर मेन्शन्स।' यानी मेरा एक मकान नहीं, और कई मकान हैं। हिन्दू धर्म एक समुद्र की तरह है।"

फटनी के लिए हम आये हैं

दानापुर से ६ बजे निकलकर पौने आठ बजे बाबा शाहाबाद जिले के सदर मुकाम आरा पहुँचे। आठ दिन तक शाहाबाद जिले में उनकी यात्रा चली। फिर १५ तारीख को सबेरे वे खिल्वट्टा (गया जिला) आ गये। वहाँ उन्होंने कहा कि "हम बिहार आये हैं तो बोने के लिए नहीं, बल्कि फटनी के लिए। गया जिले में मैं तो समझता हूँ कि फटनी हो चुकी है। हमें खाली सुनना बाकी है कि क्या फसल लाये हैं।"

इधर कई रोज से बाबा को शौच में खून आ रहा है। यह बात पड़ाव पर पहुँचकर जयप्रकाशबाबू को बतलायी। आज दीदी प्रभावती और

जयप्रकाशबाबू दोनों ही आये थे। जयप्रकाशबाबू चिंतित हो उठे और बाबा से उन्होंने अनुरोध किया कि "फिलहाल यात्रा स्थगित कर दें और तबीयत ठीक होने पर कार्यक्रम बनाया जाय।" बाबा ने कहा कि 'कोई चिन्ता की बात नहीं है। मामूली तकलीफ है, दूर हो जायगी। हमने तो गोपुरी में ही कहा था कि अब तूफान-यात्रा में अगर बाबा आराम को कहे, तो आप सब उससे कहियेगा कि अगले पड़ाव तक चल चले, फिर इंतजाम करेंगे।"

आम सभा तीन बजे हुई, जिसमें ४९ ग्रामदान दान दिये गये। गया जिले में इसको लेकर ४८२ ग्रामदान हो जाते हैं। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "यह शुभारम्भ है और इसके आगे प्रखण्ड दान और अखंड दान मिलना चाहिए और पूरा जिला ग्रामदान में आये। निर्माण की जिम्मेदारी जनता और सरकार की है।"

शाम को गया से डॉक्टर आये और उन्होंने कहा कि बाबा को बवासीर की कोई शिकायत नहीं है। केवल मल्द्वार की तकलीफ है। उसके लिए मल्हम आदि बताया। शाम को दूध लेने के लिए भी बाबा से कहा, जिसे बाबा ने मान लिया। श्री राधाकृष्णजी बजाज की होमियोपैथिक दवा कल से चल रही है।

ब्लाकवालों की जिम्मेदारी

१६ दिसम्बर को सबेरे ६॥ बजे निकलकर ८॥ बजे बाबा बगोदर पहुँचे। बेसिक ट्रेनिंग स्कूल में पड़ाव था। बैठने में तकलीफ होने के कारण स्वागत प्रवचन खड़े खड़े दिया और कहा कि "हम आज हैं, कल नहीं। वृद्ध मनुष्य को जाने का हक है। हम यह काम आपको सौंपकर अपना चिंतन परमेश्वर में दिनभर लगाना चाहते हैं। बिहार में हमें तीन महीने हो गये समझ में नहीं आता कि देर क्यों हो रही है। प्रखण्ड-वालों का काम है कि इसके प्रचार में लग जायँ। मध्य प्रदेश में तो बी० डी० ओ० की पोस्ट ही खतम कर दी गयी। अगर प्रखंडवाले

ठीक से काम नहीं करेंगे, तो हमें यह शंका है कि सब प्रान्तों में धीरे-धीरे मध्य प्रदेश जैसी हालत होगी। इधर छोटा नागपुर में छोटे-छोटे गाँव हैं, जहाँ लोगों को तरह-तरह से दबाया जाता है। इसका इलाज यही है कि पूरा इलाका ग्रामदान हो जाय। आप जवान लोग हैं, इस काम को उठा लीजिये।"

बाबा की बीमारी के कारण आज दिनभर कोई कार्यक्रम नहीं रखा गया। शाम की सभा ३ बजे हुई। उसमें हजारीबाग जिला सर्वोदय-मंडल के संयोजक, श्री श्यामप्रकाश ने १०० ग्रामदान भेंट किये और कहा कि "हजार ग्रामदान का संकल्प पूरा करेंगे, जिसमें से २२० हो चुके हैं।" जिला कांग्रेस के अध्यक्ष श्री पुनीतराय ने कहा कि "अपने संकल्प को पूरा करने में अपनी शक्ति जहाँ तक है, उसे लगाने में सचेष्ट रहूँगा।"

भारत के लिए खतरा

बाबा ने अपना प्रवचन खड़े-खड़े ही दिया। उन्होंने कहा कि "सौ ग्रामदान के लिए धन्यवाद है। लेकिन अब आपको काम में लग जाना चाहिए और हर हफ्ते ग्रामदान-प्राप्ति का तार पटना भेजिये। जिस हफ्ते ग्रामदान न मिले, उस हफ्ते भी भेजिये कि नहीं मिले।''यह विज्ञान का जमाना है। जो काम पहले ५० साल में होता था, वह अब ५ साल में हो जाता है। मैं मानता हूँ कि अगर यह काम पूरा नहीं होता, तो भारत के लिए खतरा है। मैं नाहक भयभीत करना नहीं चाहता। जो भय है ही, उसकी तरफ ध्यान खींचना चाहता हूँ।

नयी तालीमवाले अलग क्यों ?

"यहाँ नयी तालीम का विद्यालय चलता है। यहाँ के लोगों ने मुझसे

तालीम का जानकार माना जाता है और वह तेरह साल से घूम रहा है। लेकिन नयी तालीमवालों ने अपने को अलग माना है। वे अब भी अगर समझ जायँ तो बहुत कुछ कर सकते हैं। ये नयी तालीम के शिक्षक पीला साफा क्यों नहीं पहनते? क्या वे शांति-सैनिक नहीं हैं, अशान्ति सैनिक हैं? यहाँ जो वचन दिया गया है, मैं समझता हूँ कि उसका पालन किया जायगा 'रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाइ पर वचन न जाई।

रात को बाबा को शौच के लिए दो बार उठना पड़ा। इसलिए १७ तारीख के सबेरे प्रार्थना के बाद न तो शौच गये और न जलपान लिया। ५॥ बजे ही निकल पड़े और ७ बजे धनबाद पहुँचे। स्वागत-सभा में उन्होंने कहा कि "हमें जो फूल मालाएँ दी गयीं, इनमें से एक मैंने गिनी, तो उसमें ३० ४० फूल निकले, अगर आप इतने ही ग्रामदान की माला देते, तब तो कुछ स्वागत होता। यह प्रेम प्रदर्शन हो गया या प्रेम का नाटक? कुछ लोगों का खयाल है कि 'धनबाद जिले में ग्रामदान कहाँ से होगा?' पर यह गलत है। धनबाद के आसपास जितने गाव हैं, वे ग्रामदान होने के बाद अच्छे बन सकते हैं, अगर उनको मालिकों और महाजनों की मदद मिले।"

११ बजे कार्यकर्ता-सभा रखी गयी थी, लेकिन मादक ही काम नहीं कर रहा था और भीड़ काफी थी। तब वह स्थगित हो गयी। दो बजे व्यापारी भाई मिलने आये। बाबा ने कहा कि "मेरी आपसे कोई माँग नहीं है। केवल विचार देना मेरा काम है। न समझ तो खुशी से बार-बार उसे दूँगा। विचार पर मेरी आस्था है। एक हजार रुपये देकर ९४०) वापस लेना यानी छह प्रतिशत घटाव कबूल करने की बात मैंने रखी है। इससे आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सेवा भी बनेगी। अगर एक व्यापारी भी सामने आता तो उसके नाम से सारे भारत में, जैसे मैंने भूदान का आंदोलन उठाया, 'ट्रस्टीशिप' का आन्दोलन उठा लेता।

जनतंत्र का गला घोंटा जा रहा है

आम सभा में ९ ग्रामदान दिये गये और ८,३३७) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "सेवा-संस्थाओं में राजनीतिक पक्षों का घुसपैठ करना डेमोक्रेसी की क्रश करना, उसे बदनाम करना, उसको कंडेम करना है। मेरी विनती है कि म्युनिसिपैलिटी या सेवा-संस्था के मन्दिर में जाना है, तो राजनीतिक पक्षों के अपने जूते बाहर निकालकर जाना चाहिए।···अगर देश में मालिक-मजदूर का झगड़ा रहा, तो चीनवाद गाँव-गाँव फैलेगा और देश खतम हो जायगा। इसलिए मालिक-मजदूरों का साझा होना चाहिए। तीसरी बात आपको यह करनी है कि सब लोग पीला साफा पहन लें। कम-से-कम हजार के पीछे एक शांति-सैनिक जरूर हो। यानी इस नगर में ७० शांति-सैनिक हों, जो घर-घर से संपर्क करें और दुख-सुख में शरीक हों। ये बातें अगर आप कर लें, तो धनबाद सर्वोदय-नगर बन जायगा।···प्रजातन्त्र में मत्सर का राष्ट्रीयकरण हुआ है। सारी सत्ता ऊपरवालों के हाथ में है। नाम 'समाजवाद' का है, लेकिन है 'स्टेटिज्म' या 'स्टेट कैपिटलिज्म'।··· डेमोक्रेसी का गला घोंटा जा रहा है। लोग अनाथ जैसी हालत में हैं। मुझे यकीन है कि धनबाद जिला ग्रामदान में आयेगा और आप इस शहर को सर्वोदयनगर बनायेंगे।"

बाबा अपने घर में

सबेरे ५॥ बजे निकलकर १८ दिसम्बर को ८७ मील की दूरी तय करके बाबा ८। बजे चांडिल पहुँचे। ठीक १२ साल पहले वे जब बीमार पड़े थे, तो १८ दिसंबर को ही चांडिल में दवा ली थी और बुखार उतरा था। इसके बाद वे यहाँ तीन महीने रहे और सर्वोदय-सम्मेलन भी यहीं हुआ। बाबा चांडिल को अपना घर मानते हैं। लेकिन उन्हें इस बात का बड़ा दुःख था कि जिस घर में तीन महीना रहे थे, उसमें न ठहराकर एक धर्मशाला में ठहराया गया। गाँव के लोगों के आपसी द्वेष के कारण

ऐसा हुआ। अपने स्वागत प्रवचन में बाबा ने समाधिस्थ हालत में कहा कि "पिछली मर्तबा यहाँ बैलगाडी से आया था, आज मोटर से आना पडा। चाडिल का सारा इलाका ग्रामदान में आना चाहिए।"

११ बजे श्री ढेबरभाई और खादी कमीशन के सदस्य बाबा से मिले। उन्होंने कहा कि "खादी को सरक्षण सरकार से नहीं, ग्राम-भावना से मिल सकता है। इसलिए मैं ग्रामदान की माँग करता हूँ।" २॥ बजे भी ये मित्र बाबा से मिले और ग्रामोद्योग के बारे में चर्चा की। इसी दौरान उन्होंने कहा कि "आज जो सतति नियमन चल रहा है, उससे कुल-के-कुल नैतिक स्तर को खतरा है। सारी चीज बहुत रिवोल्टिंग लगती है।"

बाबा को उतावली क्यों ?

आम सभा में ४ ग्रामदान दिये गये और ५१०) की थैली। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "चाडिल का द्वेष मत्सर देखकर मुझे यह अच्छा नहीं लगा। " एक भाई ने पूछा है कि बाबा को बहुत उतावली है। लेकिन बाबा की बात छोड दो। बाबा को काफी सब्र है, लेकिन जमाने को सब्र नहीं। अगर कोई गारटी दे कि पाच साल में हिंसा की शक्तियाँ जोर नहीं करगी, तो मैं भी ठहर सकता हूँ। कोई मुझसे नहीं कह सकता कि आज जो हिन्दुस्तान की स्थिति है, अगले साल बाद क्या होगी। इसलिए अत्यत तीव्रता काम के लिए होनी चाहिए।"''आज जो साहित्य प्रचार चलता है, उससे मेरा समाधान नहीं है। एक छोटी सी चीज लीजिये। आपकी पत्रिका ही कोई हो, जो पाँच लाख गाँवों में पढी या सुनी जाती हो, तब तो मैं कहूँगा कि कुछ प्रचार हुआ।"

जमशेदपुर माने पीले साफा

रविवार, १९ दिसम्बर को सबेरे ६। बजे चाडिल से निकलकर बाबा ७ बजे जमशेदपुर पहुँचे। निवास की व्यवस्था जमशेदपुर महिला कालेज में की गयी थी। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि "जमशेदपुर भारत का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ भारत की सब भाषाएँ, सब धर्म और

जातियाँ मिलेंगी। मेरा खयाल है कि भारत की सब समस्याएँ भी यहाँ मौजूद हैं।''अपने यहाँ पाँच वर्ण बताये गये हैं : रक्त, श्वेत, कृष्ण, पीत और श्याम। भगवान् के शंख का नाम पांचजन्य, जिसमें दुनिया की कुल जमातें आ जाती हैं।''कुछ दिन पहले यहाँ बुरी घटनाएँ घटी थीं। हमने ऐसा किया है, यह नहीं कहते, बल्कि 'हो गया' कहते हैं। हम आशा करते हैं कि दुबारा उसकी आवृत्ति नहीं होगी। सबूत के तौर पर पीला साफा हम यहाँ देख रहे हैं। मेरा सुझाव है कि यहाँ पीला साफा हर व्यक्ति पहने। जमशेदपुर ''पीला साफा।''

खादीवाले अपनी हैसियत समझें

दोपहर को ११ बजे बाबा खादी-कार्यकर्ता सम्मेलन में गये, जो श्री ध्वजाबाबू की अध्यक्षता में हो रहा था। श्री ढेबरभाई भी मौजूद थे। बाबा ने वहाँ कहा कि "मेरे मन में इस जमात के लिए बहुत इज्जत है और प्रेम तो है ही। यह निष्काम सेवकों की जमात है।...वेलफेयर स्टेट का काम अगर अच्छा चलता है, तो भी इल-फेयर है और अगर खराब चलता है, तो वर्स्ट-फेयर है। हमारा काम तो क्रांति करने का है। इससे सरकार का रंग बदलेगा।...मेरे सामने बात आयी कि कश्मीर में काम किया जाय। सोचा गया है कि वहाँ खादीवाले जाकर कुछ काम करें। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि ये खादी कार्यकर्ता यहाँ शांति का काम क्यों नहीं करेंगे? मैंने तो कहा था कि मैं खादीवालों को 'शो-कॉज' नोटिस देता हूँ कि वे पीला साफा क्यों नहीं पहनते? सीमा पर अगर मिलिटरी रखी गयी, तो वह तकलीफ का काम होगा। देश का बचाव मिलिटरी करती है, लेकिन मिलिटरी से देश का बचाव कौन करेगा? डेमोक्रेसी के पास इसका कोई उत्तर नहीं है। मिलिटरी डिक्टेटरशिप के लिए तीन चीजें चाहिए (१) बाहर का हमला हो, (२) उसका मुकाबला करने की शक्ति का भास देश को हो, (३) देश में असंतोष हो और सरकार चलानेवालों के प्रति देश में ज्यादा आस्था न हो।

इस लिए आप देख लीजिये कि आपके यहाँ स्थिति क्या है। मैं आपकी हैसियत की ओर ध्यान दिलाने आया हूँ।

विनोबा-शास्त्री मिलन

एक बजे श्री शास्त्रीजी बाबा से मिलने आये। चार-पाँच मिनट तो और लोग भी खड़े रहे, लेकिन फिर बाबा और शास्त्रीजी एकान्त में डेढ़ घण्टे तक बात करते रहे।

सवा तीन बजे करीब श्री जे० आर० डी० टाटा बाबा को प्रणाम करने आये। जब यह बताया कि श्री टाटा हिन्दी अच्छी तरह नहीं समझते, तो बाबा ने गुजराती बोलना शुरू किया। श्री टाटा ने कहा कि हिंदी से ज्यादा अच्छी तरह गुजराती बोल और समझ लेता हूँ। फिर उन्होंने बाबा को निवेदन किया कि आप स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ दिन यहाँ ठहर जायँ और विश्राम करें। बाबा ने कहा कि कल मित्र लोग आनेवाले हैं और फिर वे ही वैसा तय कर।

आम सभा के लिए जाते हुए रास्ते म बाबा ने साहित्य प्रदर्शनी देखी और श्री अनिलभाई के बनाये हुए चित्र भी। उसी जगह पर श्री सोबनीजी ने पूनी बनाने से लेकर बुनाई तक का अम्बर प्रदर्शन भी किया था।

चार बजे से आम सभा शुरू हुई। शास्त्रीजी और श्रीमती ललिता शास्त्री दोनों मौजूद थे। सभा की अध्यक्षता बिहार के मुख्यमन्त्री श्रीकृष्णवल्लभ बाबू कर रहे थे। विनोबा स्वागत-समिति के अध्यक्ष और टाटा क रेजीडेन्ट डाइरेक्टर श्री आर० एस० पाण्डेय ने दो अभिनन्दन पत्र दिये—एक बाबा को और दूसरा शास्त्रीजी को। उन्होंने ५१,०००) की थैली ग्रामदान-कोष क लिए बाबा को दी और १,००,०००) की थैली राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष के लिए शास्त्रीजी को। जमशेदपुर जिला शांति सेना क संयोजक श्री श्यामबहादुर सिंह ने ३२ ग्रामदान भेंट किये और बिहार में प्राप्त ग्रामदानों की जिलेवार जानकारी दी। अब तक बिहार में कुल ग्रामदानों की संख्या ४,०७८ हो गयी।

है, जिसने ग्रामदान का आर्डिनेन्स बनाया, जैसा कि किसी दूसरी स्टेट ने नहीं किया। फिर असेम्बली शुरू होने पर बिल भी बन गया। इसके अलावा बिहार की प्रादेशिक काग्रेस-कमेटी ने भी इस काम को अपनाते हुए प्रस्तावित किया। दूसरे पक्षों का भी समर्थन हासिल है। अभी सारन जिले में जिलादान का नारा गूँजा। मैंने उद्घोष दिया कि 'चलो देहात'। देहात देहात में ग्राम-स्वराज्य होने से दिल्ली निश्चिन्त होगी। इसलिए 'चलो दिल्ली' की बजाय 'चलो देहात'। मुसल्मान काल में देश गुलाम था, लेकिन देहात आजाद थे। अंग्रेजी राज्य में देश भी पराधीन और गाँव भी पराधीन। इन दिनों तीसरी हालत है, जब देश तो स्वाधीन है, लेकिन गाँव पराधीन है। अब चौथी अवस्था लाना है—देश भी स्वाधीन और गाँव भी स्वाधीन। ''' हमारी सामाजिक विषमता से पाकिस्तान को और अद्वितीय गरीबी से चीन को आकर्षण होता है। अगर गरीबी के खिलाफ जिहाद करें और साम्प्रदायिकता मिटा दें, तो दोनों का मुकाबला सफलता से होगा और कोई हमला करने की हिम्मत नहीं करेगा।'' इस नगर को आपको सर्वोदयनगर बनाना है। हर कोई पीला साफा पहन लें। उससे खूबसूरत भी दीखते हैं।"

विनोबाजी की देन

अपने भाषण में शास्त्रीजी ने कहा कि "मैं आज जमशेदपुर में श्रद्धेय विनोबाजी के दर्शन के निमित्त आया हूँ। मैं समय समय पर इस बात की कोशिश करता हूँ कि मैं उनसे मिलूँ, उनके विचारों को जानूँ और उनसे प्रेरणा प्राप्त करूँ। ''' विनोबाजी देश का एक जबर्दस्त मार्ग दर्शन कर रहे हैं। डेमोक्रेसी प्रजा के अनुसार चलती है। उसकी असली ताकत कानून नहीं, हथियार नहीं, पुलिस नहीं। असली ताकत तो जनता की है और जैसा लोकमत बने, उसके अनुसार सरकार चलती है।'' '''जनमत बनाना, लोगों में आत्म विश्वास पैदा करना, यह काम जो आज आचार्य विनोबाजी कर रहे हैं, वही असली चीज है। वे एक महान् कर्मयोगी हैं। स्वास्थ्य थोड़ा-बहुत निर्बल होते हुए भी वर्षों

बिहार और ग्रामदान

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री कृष्णवल्लभ बाबू ने कहा कि "बिहार में अनाज की कमी का एक कारण यह है कि भूमि की व्यवस्था ठीक नहीं है। विनोबाजी ग्रामदान से उसे ठीक कर रहे हैं। उनके आदेशानुसार बिहार सरकार ने ग्रामदान-ऐक्ट बनाया और विकास के लिए ग्रामदान विकास-कमिश्नर नियुक्त किया है। मैं उम्मीद करता हूँ कि विनोबाजी के नेतृत्व में ग्रामदान का काम दिन-ब-दिन आगे बढ़ेगा। शास्त्रीजी के नेतृत्व में हर भारतीय अपने को ज्यादा ऊँचा उठा हुआ महसूस करता है। बिहार की ओर से मैं विश्वास दिलाता हूँ कि देश की उन्नति के लिए जो कुर्बानी वे माँगेंगे, हम देंगे।"

शास्त्रीजी का अभिनन्दन

इसके बाद बाबा का प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि "आप दो भाइयों का मिलन देख रहे हैं। एक वह है, जिसके सिर पर आप लोगों ने चिंता का पहाड़ रखा हुआ है। लेकिन आपके प्रेम और विश्वास के कारण उस पहाड़ का वहन आसानी से कर रहा है। दूसरा वह है. जो सब प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त है और तटस्थ चिन्तन करता रहता है। इस प्रकार हम बीच-बीच में मिलते रहते हैं। पंडित नेहरू ने जिस तरह भारत को सँभाला, उनके बाद कौन सँभालेगा, इसकी चिन्ता उनके सामने से ही लोग करने लगे थे। मैं शास्त्रीजी को आपकी ओर से धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने शांति और शक्ति का जो सयोग दिखाया, उससे देश की इज्जत दुनिया में बढ़ी है। बावजूद इसके कि मैं अहिंसा में निष्ठा मानता हूँ और यह भी मानता हूँ कि देश-देश के मसले लड़ाई से हल नहीं हो सकते, फिर भी पाकिस्तान-भारत की इस लड़ाई में मैंने भारत का पूरा समर्थन किया, क्योंकि मेरा मानना है कि यह युद्ध भारत पर लादा गया था।"

स्वाधीन देश, पराधीन गाँव

बाबा ने आगे कहा : "बिहार सरकार का मुझे अभिनन्दन करना

है, जिसने ग्रामदान का आर्डिनेन्स बनाया, जैसा कि किसी दूसरी स्टेट ने नहीं किया। फिर असेम्बली शुरु होने पर बिल भी बन गया। इसके अलावा बिहार की प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी ने भी इस काम को अपनाते हुए प्रस्तावित किया। दूसरे पक्षों का भी समर्थन हासिल है। अभी सारन जिले में जिलादान का नारा गूँजा। मैंने उद्‌घोष दिया कि 'चलो देहात'। देहात देहात मे ग्राम-स्वराज्य होने से दिल्ली निश्चिन्त होगी। इसलिए 'चलो दिल्ली' की बजाय 'चलो देहात'। मुसल्मान काल में देश गुलाम था, लेकिन देहात आजाद थे। अंग्रेजी राज्य में देश भी पराधीन और गाँव भी पराधीन। इन दिनों तीसरी हालत है, जब देश तो स्वाधीन है, लेकिन गॉव पराधीन है। अब चौथी अवस्था लाना है—देश भी स्वाधीन और गॉव भी स्वाधीन। हमारी सामाजिक विषमता से पाकिस्तान को और अद्वितीय गरीबी से चीन को आकर्षण होता है। अगर गरीबी के खिलाफ जिहाद करें और साम्प्रदायिकता मिटा दें, तो दोनों का मुकाबला सफलता से होगा और कोई हमला करने की हिम्मत नहीं करेगा। इस नगर को आपको सर्वोत्तम नगर बनाना है। हर कोई पीला साफा पहन ले। उससे खूबसूरत भी दीखते हैं।"

विनोबाजी की देन

अपने भाषण में शास्त्रीजी ने कहा कि 'मैं आज जमशेदपुर में श्रद्धेय विनोबाजी के दर्शन के निमित्त आया हूँ। मैं समय-समय पर इस बात की कोशिश करता हूँ कि मैं उनसे मिलूँ, उनके विचारों को जानूँ और उनसे प्रेरणा प्राप्त करूँ। विनोबाजी देश का एक जबर्दस्त मार्ग दर्शन कर रहे हैं। डेमोक्रेसी प्रजा के अनुसार चलती है। उसकी असली ताकत कानून नहीं, हथियार नहीं, पुलिस नहीं। असली ताकत तो जनता की है और जैसा लोकमत बने, उसके अनुसार सरकार चलती है। जनमत बनाना, लोगों में आत्म विश्वास पैदा करना, यह काम जो आज आचार्य विनोबाजी कर रहे हैं, वही असली चीज है। वे एक महान् कर्मयोगी हैं। स्वास्थ्य थोडा-बहुत निर्बल होते हुए भी वर्षों

उन्होंने पदयात्रा की है। गाँव-गाँव और नगर-नगर में सर्वोदय का संदेश, ग्रामदान और भूदान का संदेश बराबर देते चले आये हैं। उससे देश में महान् जागृति पैदा हुई है, नयी भावना जगी है, इसलिए आज इनकी उपस्थिति हमारे लिए बड़े गौरव की बात है और बल देनेवाली है।''''''वे एक ही कड़ी हैं गांधीजी की। गांधीजी और विनोबाजी, यह जो कड़ी है, वह राजकार्य में पवित्रता लाना चाहती है। सच्ची राजनीति का आदर्श हमारे सामने रख रही है।'''अहिंसा और शान्ति के रास्ते पर चलने का विचार शायद मैं शत-प्रतिशत पूरा न करूँ, लेकिन उस आदर्श को हम सामने हमेशा रखते हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि विनोबाजी का जो संदेश है, कार्यक्रम है, उसमें जितना सहयोग दे सकें, जरूर दें। बिहार-सरकार ने आर्डिनेन्स निकालकर और ऐक्ट बनाकर जो मदद की है, इसके लिए मैं बिहार-सरकार को बधाई देना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि हम ऐसा रास्ता निकालेंगे, जिधर श्रद्धेय विनोबाजी ने ध्यान दिलाया है। ग्रामदान और सरकार का जो काम हो रहा है, उसमें सान्निध्य हो, कोआर्डिनेशन हो और एक को दूसरे की मदद मिले। मुझे आशा है कि हम इस पर विचार करेंगे और किसी-न-किसी नतीजे पर जल्दी पहुँचेंगे।"

श्री शास्त्रीजी ने आगे कहा : "जैसा कि श्रद्धेय विनोबाजी ने कहा, शान्ति और शक्ति का संयोग हुआ है। एक तरफ हम शांति अपना लक्ष्य मानते हैं, लेकिन दूसरी तरफ कोई हमला करे, तो हम बर्दाश्त करनेवाले नहीं हैं। हमारे जवानों और अफसरों ने देश की आजादी की रक्षा के लिए जिस त्याग और बलिदान का परिचय दिया, वह बहुत गौरव की बात है।"

कश्मीरका मसला

"लेकिन हमें किसी तरह का अहंकार नहीं करना है और सारे मसले बड़े ठंडे दिल से और धीरज से हल करने हैं। जैसा कि आचार्य विनोबा-जी ने कहा, शांति लक्ष्य है हमारा, हमारी सरकार का। अभी ताशकन्द

म स्त्र के प्रधानमंत्री के बुलाने पर वहाँ एक मीटिंग होनेवाली है। मैंने भी वहाँ जाना कबूल किया है। प्रेसीडेन्ट अयूब भी आयगे। लेकिन मैं चाहता था प्रेसीडेन्ट अयूब से कहना कि ऐसी बात करने के पहले कुछ हवा बनानी चाहिए, न कि यह कि उधर खिलाफ कारवाई चलती रहे। २३ सितम्बर की लडाई-बन्दी के बाद से राजस्थान में एक जगह नहीं, बल्कि २४ जगह पर पाकिस्तान ने हमले किये और कब्जा करने की कोशिश की है। इससे तो बातचीत का वातावरण नहीं बनता। इस तरह की चीज बन्द होनी चाहिए। हमने कहा है कि हम एक दूसरे के साथ हमला न करने की सन्धि क्यों न कर लें? हमारे मतभेद हैं, झगड़े हैं, लेकिन ये सब बातचीत से, सलाह मशविरे से कान्फरस में तय किये जायँ। आपस म हमले न करने का तय कर लें। लेकिन अभी अयूब साहब ने अमेरिका मे बोलते हुए कहा कि 'पहले कश्मीर म सेल्फ डिटर्मिनेशन की बात या आर्बिट्रेशन मान लिया जाय।' बड बड़े देशों के झगडो को तय करने के लिए साधारणतया ट्रिब्युनल या पच नहीं बैठा करते। कश्मीर का मसला हमारा अन्दर का है, पाकिस्तान का कोई हक कश्मीर पर नही है। ऐसी स्थिति मे हम ताशकन्द जायगे। हम चाहते हैं कि हम दोनों देश अच्छे पडोसी की तरह मिलकर रहें, आपस में घृणा और नफरत का प्रचार न हो, रोजगार व्यापार बढे, आना जाना चले, इसका रास्ता निकालने को हम तत्पर हैं। यूरोप के देश आपस में नहीं लडते और एक हो रहे हैं। पर दु ख है कि एशिया म एक दूसरे से लडते हैं। हमे विश्वास है कि जल्दी ही वह दिन आयेगा, जब चीन और पाकिस्तान अपना रुख बदलेंगे और ऐसा रास्ता पकडेंगे, जिससे एशिया में शांति स्थापित होगी।"

स्वावलम्बन जरूरी है

अन्त में श्री शास्त्रीजी ने कहा "इस जमशेदपुर की नगरी में बड़े-बड़े कल कारखाने हैं, जो बिहार के लिए गौरव की बात है। लेकिन अब हमें बाहर के माल पर निर्भर नहीं करना है। यह ध्यान देने की

उन्होंने पदयात्रा की है। गाँव-गाँव और नगर-नगर में सर्वोदय का संदेश, ग्रामदान और भूदान का संदेश बराबर देते चले आये हैं। उससे देश में महान् जागृति पैदा हुई है, नयी भावना जगी है, इसलिए आज इनकी उपस्थिति हमारे लिए बड़े गौरव की बात है और बल देनेवाली है।......वे एक ही कड़ी हैं गांधीजी की। गांधीजी और विनोबाजी, यह जो कड़ी है, वह राजकार्य में पवित्रता लाना चाहती है। सच्ची राज-

जरूरत है कि कैसे सारा सामान देश में बना लिया जाय। आज हमें स्वावलम्बन का पाठ पढ़ना है, जो श्रद्धेय विनोबाजी पहले से पढ़ा रहे हैं। बड़े कारखाने, लघु-उद्योग, ग्रामोद्योग, सबका समन्वय होना चाहिए और काम करनेवाले और मालिकों के बीच आपस के सम्बन्ध अच्छे रहें और ऐसा मेल-संगठन हो कि किसी तरह का झगड़ा न हो।

यहाँ आपने बहुत उत्साह के साथ स्वागत किया उसके लिए धन्यवाद है। लेकिन मैं समझता था कि सोना वगैरह कुछ ज्यादा मिलेगा। सो उसका नाम भी नहीं है। जब जवान कुर्बानी के लिए तैयार हों, तो भाइयों या बहनों का सोने को दबाकर रखना शोभादायक नहीं। आपका जो उमंग-उत्साह है, उसे मोड़ देना है देश के बनाने में, देश के निर्माण मे।"

सभा के बाद शास्त्रीजी टाटा के कारखाने देखकर फिर बाबा के पास आये और करीब एक घंटे तक बैठे। बाहर आकर जब प्रेसवालों ने आग्रह के साथ पूछा कि 'आप दोनों में क्या बातचीत हुई?' तो शास्त्रीजी ने बताया कि "राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सवालों पर बहुत सी चर्चाएँ हुईं। भारत-पाकिस्तान के सवालों पर आचार्य विनोबाजी ने भारत सरकार के रुख का समर्थन किया और कहा कि "यह लड़ाई भारत पर लादी गयी थी। इसलिए सरकार ने जिस ढंग से व्यवहार किया, उसका समर्थन करता हूँ।" उन्होंने उनको बताया कि "विदेशी आक्रमण के खतरे की संभावना के कारण हमें फौजी तैयारी जारी रखनी पड़ेगी।" ताशकन्द की चर्चा के बारे मे आचार्यजी ने सुझाया कि "इस समस्या का ओवरऑल सोल्यूशन अच्छा होगा, अगर सद्भावना से हो। लेकिन बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि वहाँ क्या होता है।" अनाज की समस्या के बारे में भी चर्चा हुई। अन्न-स्वावलम्बन के हमारे निश्चय का आचार्यजी ने स्वागत किया और गल्ला-वसूली के लिए कुछ सुझाव भी दिये।

लगभग ८ बज रहे थे। प्रार्थना के बाद बाबा सो गये।

अब देरी न हो

दूसरे दिन २० तारीख को सबेरे ६।। बजे बिहार के मित्र बाबा के पास जमा हुए। जिले जिले मे बाबा की यात्रा के बाद उन उन जिले में जो ग्रामदान मिले हैं, उसकी जानकारी दी गयी। इनका जोड ७१८ है और कुल प्रदेश में ४०७८ ग्रामदान हुए। बाबा ने कहा कि "अब १०,००० ग्रामदान मिलने मे देर नहीं होनी चाहिए। अभी पाकिस्तान में एक तूफान आया। डेढ सौ दो-सौ मील की गति से हवा बही, एक दिन मे नहीं, बल्कि चन्द मिनट में पन्द्रह हजार आदमी खत्म हो गये। इसे कहते हैं 'तूफान'। इसी तेजी के साथ काम होना चाहिए। अब बाबा का ऐसा है कि वही बाबा ही प्रॉब्लेम (समस्या) हो गया है। बिहार है। ये लोग सोच रहे हैं कि कोई उपाय किया जाय। लेकिन बिहार में घूमने की बाबा की तैयारी पहले जैसी है। मेरे मन में निवृत्ति का विचार चल रहा है। ७ जून १९१६ को प्रथम बार महात्मा गाधी से मिला था। अब ५० साल होने आ रहे हैं। इच्छा हो रही है कि उनसे इजाजत माँग लूँ। तो, यह एक विचार है, लेकिन मेरा उसके लिए आग्रह नहीं है। "महाराष्ट्र में ज्ञानदेव महाराज की पालकी पंढरपुर ले जाते हैं। मैं समझता हूँ कि सयोग भक्ति मे जितना काम होता है, वियोग भक्ति में उससे ज्यादा होना चाहिए।"

खादी में पीस पोटेन्शियल है

दोपहर को १ बजे खादी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए बाबा ने कहा कि "हमें शक्ति की नहीं, शिव की उपासना करनी है। शिव के साथ शक्ति अपने आप आयेगी। एक बार पूछा गया था कि खादी में वार पोटेन्शियल कितना है, तो मैंने कहा था कि वार तात्कालिक आवश्यकता है, लेकिन पीस (शान्ति) कायम की आवश्यकता है। खादी में वार पोटेन्शियल भले न हो, लेकिन इसमे पीस पोटेन्शियल है। इससे मैंने

'डिफेन्स मेजर' नाम दे दिया है। लेकिन दरभंगा में एक नया शब्द मिला, 'मेजर डिफेन्स'। हम महत्त्वाकांक्षा न रखते हुए नम्रतापूर्वक शिव की उपासना में लग जायँ।"

कश्मीर समिति के सदस्य बाबा से २ बजे मिले। बहुत से प्रश्न थे। उनकी चर्चा करते हुए बाबा ने कहा कि "वहाँ जो खादीवाले जायँ—वे शांति-सेना और साहित्य-प्रचार का भी काम करें। सीजर की पत्नी को शंका से परे होना चाहिए। आप सीजर का काम नहीं करने जा रहे हैं, बल्कि सीजर की पत्नी का काम करने जा रहे हैं।"

जमशेदपुर शांति-सेना समिति के संयोजक और बाबा के जमशेदपुर के कार्यक्रम का भार जिन्होंने कुशलतापूर्वक निबाहा, भाई श्यामबहादुर अपने साथ काम करनेवाले भाइयों और बहनों को लेकर बाबा से मिले। उन्होंने बताया कि सबके सहयोग से जमशेदपुर में कुछ काम करना सम्भव हुआ है। लोगों का प्रेम भी मिला है। बहनों ने बाबा से सन्देश माँगा तो बाबा बोले : "पीला साफा। जमशेदपुर पीला साफा।"

उत्तर प्रदेश के श्री कपिल भाई आये और बलिया सम्मेलन की तैयारी की जानकारी दी। यह भी बताया कि अब उत्तर प्रदेश में भी ग्रामदान की हवा बह रही है। बाबा ने कहा कि "अगर उत्तर प्रदेश जाग गया, तो हिन्दुस्तान निःसन्देह जागेगा।"

गांधी स्मारक-निधि के अध्यक्ष श्री दिवाकरजी और कर्नाटक शाखा के संचालक वणवीजी मिलने आये। नशाबन्दी के बारे में बातचीत चली। बाबा ने कहा कि "यह बड़ा चैलेन्ज है। अगर शराबबन्दी का आन्दोलन कर्नाटक में जोरों से चलता है, और उसमें सफलता मिलती है, तो शक्ति का निर्माण होगा और बाद में ग्रामदान भी मिलेंगे।"

पख्तूनिस्तान की माँग

पख्तून जिर्गा हिन्द की बिहार-शाखा के अध्यक्ष जनाब मुल्तान खान खाँ और मन्त्री जनाब सैयद मुमताज हाशमी अपने कई मित्रों के साथ

मिलने आये। पख्तूनिस्तान की माँग के बारे में बाबा की राय पूछी। बाबा ने कहा कि "इस माँग से हमारी पूरी हमदर्दी है। पहले वे पाकिस्तान में रहने को तैयार थे, अगर भाषा के आधार पर उनका सूबा अलग से बन जाता। लेकिन अब उनको जो अनुभव आया है, वह खराब अनुभव है और अब वे पाकिस्तान में रहना नहीं चाहते। उधर अयूब साहब यह समझते हैं कि अगर भाषावार सूबे बनते हैं, तो पश्चिमी पाकिस्तान में चार सूबे बनाने पड़ेंगे–बलूचिस्तान, सिन्ध, पंजाब और पख्तूनिस्तान। उधर पूरब में होगा पूर्वी बंगाल। उसे बैलेन्स करने के लिए एक यूनिट चाहिए। नहीं तो बंगला का जोर चलेगा। इसलिए उसने एक ही प्रान्त रखा और एक ही भाषा चलायी, पर यह जबर्दस्ती है।"

सुल्तान साहब ने पूछा कि "आपका क्या खयाल है कि खान अब्दुल गफ्फार खाँ को यहाँ बुलाना चाहिए ?" इस पर बाबा बोले कि "खान साहब यहाँ जरूर आ सकते हैं, अगर उनको लगे कि आने से फायदा है। गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया ने भी जाहिर किया है कि आ सकते हैं।"

थोड़ी देर में पटना से डा० मधुसूदन दास और डा० विजयनारायण सिंह हवाई जहाज से आये और बाबा को देखा। जमशेदपुरवाले डॉक्टर भी, जिन्होंने रविवार को देखा था, बुला लिये गये। हम लोगों ने जयप्रकाशजी से पूछा कि "क्या किया जाय ?" जे० पी० ने कहा कि "इसमें तो जो डॉक्टरों की सलाह हो, वैसा ही करना चाहिए।" सब डॉक्टरों ने मिलकर सलाह की और तय किया कि बाबा के स्वास्थ्य को तीन दिन देखेंगे। इस बीच में उन्हें कुछ दवा देंगे। फिर २४ तारीख को पटना से दोनों डॉक्टर आयेंगे और तब आगे का कोर्स निश्चय किया जायगा।

कृष्णराज भाई ने यह फैसला जाकर बाबा को बताया। बाबा ने कहा : "मंजूर है।" जयदेव भाई ने इशारे से कहा कि "पीने की दवा लेनी होगी," तो बाबा बोले : "अरे हाँ, समझ गये। 'आलिया भोगासी

असावे सादर' (यह पद तुकाराम का है, जिसका अर्थ है कि जो भी भोग भोगना पड़े सर ऑखों पर) ।

६ बजने को आये । प्रार्थना हुई और बाबा सो गये ।

रात को उन्हें दो बार शौच जाना पड़ा और २१ ता० को सबेरे बहुत खून आया । मलद्वार पर उन्हें दर्द भी बहुत था । शाम को कम हुआ ।

आठ बजे करीब बाबा महिला-कालेज से पी० डब्ल्यु० डी० के इन्सपेक्शन बैंगलो चले आये । अब यहीं पर निवास करेंगे और डॉक्टरों की सलाह के अनुसार उपचार चलेगा ।

उड़ीसा को सन्देश

श्री मनमोहन भाई १९ तारीख को आ गये थे । २१ को माता रमादेवीजी भी पहुँच गयीं । बाबा के स्वास्थ्य के बारे में जानकर उन्हें बहुत चिन्ता हुई । उड़ीसा में मित्रों को बाबा ने एक सन्देश दिया :

"मुझे दुःख है इस बात का कि ग्रामदान तूफान के सिलसिले में मेरा जो उड़ीसा का कार्यक्रम बना था, वह अचानक व्याधि-प्रादुर्भाव से मुझे फिलहाल स्थगित करना पड़ा है । लेकिन एक बात सहज ध्यान में आती है कि तूफान आता है तो अपने वेग से आता है । वह किसी व्यक्ति-विशेष पर निर्भर नहीं रह सकता । उधर बम्बई के नजदीक थाणा जिले में लगभग पाँच प्रखंड ग्रामदान में आया है और यह बाबा की अनुपस्थिति में हुआ है । तो जाहिर है कि वह तूफान की अपनी गति से आया है । इसी प्रकार उड़ीसा में होगा, ऐसा मुझे विश्वास है । भक्ति-शास्त्रकारों ने माना है कि संयोग भक्ति से वियोग-भक्ति की तीव्रता होती

बिहार में
ग्रामदान के बढ़ते, चरण....
११ सितम्बर ६५ से - २० सितम्बर ६६ तक
२३ मार्च ६६
४ जून ६६
३१ अगस्त ६६
२० सितम्बर ६६
बिहार में तूफान की गति
४ जून ६५
११ सितम्बर ६५
१९ दिसम्बर ६५
२३ मार्च ६६
४ जून ६६
२० सितम्बर ६६

असावे सादर' (यह पद तुकाराम का है, जिसका अर्थ है कि जो भी भोग भोगना पड़े सर ऑखों पर)।

६ बजने को आये। प्रार्थना हुई और बाबा सो गये।

रात को उन्हें दो बार शौच जाना पड़ा और २१ ता० को सबेरे बहुत खून आया। मलद्वार पर उन्हें दर्द भी बहुत था। शाम को कम हुआ।

आठ बजे करीब बाबा महिला-कालेज से पी० डब्ल्यु० डी० के इन्सपेक्शन बँगलो चले आये। अब यहीं पर निवास करेंगे और डॉक्टरों की सलाह के अनुसार उपचार चलेगा।

उड़ीसा को सन्देश

श्री मनमोहन भाई १९ तारीख को आ गये थे। २१ को माता रमादेवीजी भी पहुँच गयीं। बाबा के स्वास्थ्य के बारे में जानकर उन्हें बहुत चिन्ता हुई। उड़ीसा मे मित्रों को बाबा ने एक सन्देश दिया :

"मुझे दुःख है इस बात का कि ग्रामदान तूफान के सिलसिले में मेरा जो उड़ीसा का कार्यक्रम बना था, वह अचानक व्याधि-प्रादुर्भाव से मुझे फिलहाल स्थगित करना पड़ा है। लेकिन एक बात सहज ध्यान में आती है कि तूफान आता है तो अपने वेग से आता है। वह किसी व्यक्ति-विशेष पर निर्भर नहीं रह सकता। उधर बम्बई के नजदीक थाणा जिले में लगभग पाँच प्रखंड ग्रामदान में आया है और यह बाबा की अनुपस्थिति में हुआ है। तो जाहिर है कि वह तूफान की अपनी गति से आया है। इसी प्रकार उड़ीसा में होगा, ऐसा मुझे विश्वास है। भक्ति-शास्त्रकारों ने माना है कि संयोग-भक्ति से वियोग-भक्ति की तीव्रता होती है। मुझे आशा है कि उड़ीसा का अभिक्रम इस तूफान में उस तीव्रतर रूप से प्रकट होगा और सब कार्यकर्ता दुगुने वेग से काम में जुट जायेंगे।"

●

बिहार में
ग्रामदान के बढ़ते चरण....
११ सितम्बर ६५ से - २० सितम्बर ६६ तक
२३ मार्च ६६
४ जून ६६
३१ अगस्त ६६
२० सितम्बर ६६
बिहार में तूफान की गति
२३ मार्च ६६
४ जून ६६
२० सितम्बर ६६

तूफान यात्रा में प्राप्त
ग्रामदान-कोष
(जिला वार)
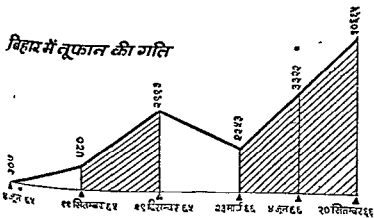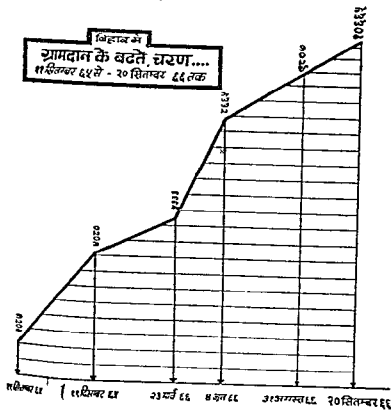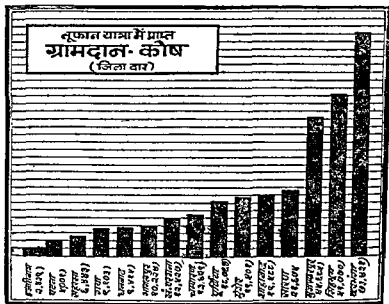
कुल रुपये ३,१८,२६६'००
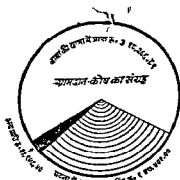
बिहार में ग्रामदान

क्रमांक	जिलों का नाम	ग्रामदान तूफान के पहले के मई १९६५ तक के ग्रामदान	जमशेदपुर पड़ाव तक नये ग्राम दान : २८ मार्च, '६६ तक	३० सितम्बर '६६ तक के कुल ग्रामदान
१.	दरभंगा	२	७२१	१९८५
२.	पूर्णिया	६१	८८४	१८२०
३.	मुंगेर	११२	७६४	१३४८
४.	गया	६७	६११	११०८
५.	हजारीबाग	४३	४०४	८८९
६.	संथाल परगना	८५	५२१	८३१
७.	पलामू	३	१३६	५५८
८.	मुजफ्फरपुर	४	२६८	४५१
९.	सारन	१०	३१४	४५१
१०	भागलपुर	६	३१८	४४५
११.	सहर्षा	२	८०	३१७
१२.	चम्पारन	६	१५४	२३३
१३.	धनबाद	१	१०	१५३
१४.	सिंहभूम	३	५७	१४४
१५.	शाहाबाद	२	४७	९७
१६.	राँची	१	२४	४२
१७.	पटना	—	१२	२४
	कुल	४०७	५,३३०	१०,९००

भारतमें कुल ग्रामदान २७,४८८
२० सितम्बर, १९६६ तक
INDIA
जम्मू-कश्मीर
JAMMU & KASH-MIR
0
हिमाचल प्रदेश
H.P 17
पंजाब
PUNJAB
455
राजस्थान
RAJASTHAN
965
उत्तर प्रदेश
U P
344
बिहार
BIHAR
10665
आसाम
ASSAM 1283
गुजरात
GUJRAT
409
मध्यप्रदेश
M.P.
1628
प. बंगाल
W BENGAL
542
उडीसा
ORISSA
5203
महाराष्ट्र
MAHARASTRA
1987
आन्ध्र
ANDHRA
1665
मैसूर
MYSORE
58
मद्रास
MADRAS
1867
केरल
KERALA
409

भारत में तालुका-दान
(२५ अक्तूबर १९६६ तक)

प्रान्त	जिला	तालुका का नाम
मद्रास	मदुराई	१—मेलूर
	तिरुनेलवेली	२—नानगुनेरी
महाराष्ट्र	ठाणा	१—तलासरी
	"	२—मोखाडा

भारत के प्रखंड-दानों की प्रदेशवार सूची

(२५ अक्तूबर १९६६ तक)

प्रान्त	जिला	प्रखंड का नाम	कुल संख्या
बिहार			२०
	हजारीबाग	१—प्रतापपुर	
	पूर्णिया	२—पूर्णिया-सदर पूर्व	
	दरभंगा	३—सरायरंजन	
	,,	४—वारिसनगर	
	,,	५—उजियारपुर	
	,,	६—समस्तीपुर	
	,,	७—वाजपुर	
	,,	८—झंझारपुर	
	,,	९—कल्याणपुर	
	भागलपुर	१०—बिहपुर	
	,,	११—गोपालपुर	
	,,	१२—नवगछिया	
	मुंगेर	१३—गोगरी	
	,,	१४—साहेबपुर कमाल	
	,,	१५—बलिया	
	पलामू	१६—गारू	
	,,	१७—मनिका	
	मुजफ्फरपुर	१८—मुरौल	
	सारन	१९—माँझी	
	सहर्षा	२०—निर्मली	